॥ श्रीः ॥

विद्याभवन राष्ट्रभाषा ग्रन्थमाला

१०९

राजतरङ्गिणी कोश

(कल्हणकृत राजतरङ्गिणी में आनेवाले नामों और विषयों की व्याख्यात्मक अनुक्रमणिका, सुभाषित और वंशावलियाँ, इत्यादि)

रामकुमार राय

चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी-१

१९६७

प्रकाशक : चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी
मुद्रक : विद्याविलास प्रेस, वाराणसी
संस्करण : प्रथम, वि० सं० २०२३
मूल्य Rs. 6K/2

प्रधान कार्यालय—
चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस
गोपाल मन्दिर लेन,
पो० आ० चौखम्बा, पोस्ट बाक्स ८, वाराणसी-१

THE

VIDYABHAWAN RASHTRABHASHA GRANTHAMALA

109

RĀJATARANGIṆĪ KOS'A

(A descriptive Index of Names and Subjects of Kalhana's Rājataraṅgiṇi, along with a collection of Subhaṣitas and Geneological Tables, etc.)

By

RAMKUMAR RAI

THE

CHOWKHAMBA VIDYABHAWAN

VARANASI-1

1967

First Edition
1967
Price Rs. [redacted]

Also can be had of
THE CHOWKHAMBA SANSKRIT SERIES OFFICE
Publishers & Antiquarian Book-Sellers
P. O. Chowkhamba, Post Box 8, Varanasi-1 (India)
Phone : 3145

विषय सूची

भूमिका

संस्कृत वाङ्मय के इतने विशाल भाण्डागार में उपलब्ध आज केवल राजतरङ्गिणी ही ऐसा ग्रन्थ रह गया है जिसे हम बहुत कुछ एक इतिहास-ग्रन्थ कह सकते हैं—बहुत कुछ ही, सर्वथा नहीं, क्योंकि यद्यपि इसके लेखक ने अपने पूर्वगामी इतिहासकारों की आलोचना करते हुये[1] केवल अपनी ही रचना को एकमात्र प्रामाणिक इतिहास-ग्रन्थ कहा है,[2] तथापि मेरी समझ में इसमें अनेक ऐसे प्रसङ्ग आये हैं, अनेक ऐसे नामों का उल्लेख है, तथा अनेक ऐसी गौण और ऐतिहासिक दृष्टि से प्रायः उपेक्षणीय बातों का समावेश है कि ये सब इस ग्रन्थ की मात्र इतिहास-ग्रन्थ के रूप में प्रामाणिकता तथा उपयोगिता कम कर देते हैं। साथ ही, इसमें प्रस्तुत काल-गणना को भी सर्वथा संगत तथा विश्वसनीय नहीं माना जा सकता। फिर भी, इसमें सन्देह नहीं कि यही एकमात्र ऐसा ग्रन्थ है जिससे हमें महाभारतकाल के धर्मराज युधिष्ठिर के समय—इस समय की गणना के सम्बन्ध में शंका हो सकती है—से लेकर ग्रन्थ-लेखक, के समय तक के बीच हुये काश्मीर के राजाओं का अपेक्षाकृत सर्वाधिक सुसंगत तथा क्रमबद्ध वर्णन मिलता है। एक इतिहासकार के लिये जिन गुणों, जैसे निष्पक्षता, सूक्ष्म दृष्टि तथा ऐतिहासिक सामग्री के ऊहापोह, की आवश्यकता होती है उसे हम इसके लेखक में बहुत अंशों तक विद्यमान पाते हैं। इस ग्रन्थ की एक और विशेषता यह है कि इतिहास-ग्रन्थ होते हुये भी इसे एक उत्कृष्ट महाकाव्य कहा जा सकता है। पात्रों का चरित्र-चित्रण, राजनीतिक तथा सामाजिक स्थितियों का विवेचन, तथा स्वयं कवि के अपने विचार अत्यन्त उत्कृष्ट शैली में व्यक्त हुये हैं। यद्यपि प्रस्तुत कोश में इन विषयों के विवेचन का स्थान नहीं है, क्योंकि इसकी मुख्य रूप से एक सन्दर्भ ग्रन्थ के रूप में रचना की गई है, तथापि इस भूमिका में हम इस ग्रन्थ (राजतरङ्गिणी) तथा इसके लेखक, कल्हण, की कुछ विशेषताओं पर प्रकाश डालने का प्रयास कर रहे हैं।

कल्हण और उनके पूर्वज—

प्राचीन भारतीय लेखकों में यह एक सामान्य विशेषता लक्षित होती है

[1] रा० १.८ और बाद।

कि वे अपने सम्बन्ध में या तो बिल्कुल ही नहीं अथवा अत्यन्त कम विवरण देते हैं। कल्हण भी इसके अपवाद नहीं हैं। किसी अन्य लेखक ने भी कल्हण के सम्बन्ध में कोई विशेष विवरण अंकित नहीं किया है। यहाँ तक कि जोनराज भी, जिन्होंने कल्हण के प्राय: तीन शताब्दी बाद कल्हण द्वारा प्रस्तुत काश्मीर के इतिहास के बाद की घटनाओं को लिखा है, कल्हण का, केवल अपने एक पूर्वगामी होने से अधिक कोई और विवरण नहीं देते। ऐसी परिस्थिति में हमें कल्हण के सम्बन्ध में जो थोड़ा-बहुत विवरण मिलता है वह स्वयं राजतरङ्गिणी से ही उपलब्ध होता है।

राजतरङ्गिणी के प्रत्येक तरङ्ग के समाप्ति लेख—"इति काश्मीरिकमहामात्य-श्रीचम्पकप्रभुसूनोः कल्हणस्य कृतौ राजतङ्गिण्यां..."—से ऐसा प्रतीत होता है कि कल्हण के पिता का नाम चम्पक था, जो राजा हर्ष के राज्यकाल के समय पहले द्वारपति तथा बाद में महामात्य बन गये। चम्पक राजा हर्ष के एक विश्वासपात्र अधिकारी थे और हर्ष के राज्यच्युत होने तथा अन्ततः मृत्यु को प्राप्त होने तक इनका एक सेवक मुक्त ही राजा हर्ष के साथ था। हर्ष के अन्तिम समय का जो सूक्ष्म चित्रण[1] कल्हण ने किया है उससे स्पष्ट रूप से यह प्रगट होता है कि उन्होंने यह विवरण भी अपने पिता के इस सेवक, मुक्त, से ही, जो हर्ष की मृत्यु के बाद एकमात्र जीवित बचा रह गया था, प्राप्त किया होगा। चम्पक के नाम का कल्हण ने सदैव जिस आदर के साथ उल्लेख किया है वह भी इसी बात की ओर संकेत करता है कि वह इनके पिता थे। कल्हण ने यह उल्लेख किया है कि चम्पक प्रतिवर्ष नन्दिक्षेत्र में सात दिनों तक प्रचुर धन व्यय करके अपनी न्यायोपार्जित सम्पत्ति का सदुपयोग करते थे।[2] विवरण की इस सूक्ष्मता से भी ऐसा प्रतीत होता है कि कल्हण चम्पक के पुत्र थे और वे इन तीर्थों में बहुधा अपने पिता के साथ रहते थे। बाद के एक उल्लेख[3] से ऐसा प्रतीत होता है कि चम्पक ११३६ ई० के आस-पास तक जीवित थे।

एक अन्य नाम, जिसका कल्हण ने उल्लेख किया है वह है 'कनक का नाम जिसे चम्पक का छोटा भाई कहा गया है। कनक ने राजा हर्ष से गायन-काल की शिक्षा ली थी और जिस परिश्रम से उन्होंने इस शिक्षा को ग्रहण

---

[1] देखिये रा० ७.१६२४ और बाद।

[2] 'नन्दिक्षेत्रे व्ययीकृत्य प्रत्यब्दं सप्तवासरान्। चम्पकः सफला चक्रे सर्वकालार्जितां श्रियम॥', (रा० ७.९५४)। 'नन्दिक्षेत्रे स तत्राद्यैः प्रणीतश्चम्पकादिभिः', (रा० ८.२३६५)।

[3] रा० ८.२३६५।

ाया उससे प्रसन्न हो कर हर्ष ने उन्हें एक लाख सुवर्ण मुद्राओं का पुरस्कार ाया।[१] चम्पक के भाई होने तथा इसी कारण राजा हर्ष द्वारा इतनी प्रचुर वर्णराशि द्वारा पुरस्कृत होने के तथ्य से ऐसा प्रतीत होता है कि कनक ास्तव में कल्हण के चाचा थे। परिहासपुर को कनक का जन्म-स्थान बताया ाया है और यह भी उल्लेख है कि जब राजा हर्ष ने बुद्ध की प्रतिमाओं का ध्वंस किया तब कनक ने अपने इस जन्म-स्थान की बुद्ध-प्रतिमा को उस ध्वंस से बचा लिया।[२] इन दो बातों से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है क कल्हण की जन्मभूमि परिहासपुर ही थी, और यदि इनका परिवार स्वयं ौद्ध नहीं था, तो भी वह बौद्ध धर्म का आदर अवश्य करता था। परिहासपुर था उसके आस-पास के क्षेत्रों का कल्हण ने जिस विस्तार से उल्लेख[३] किया है ससे भी इस निष्कर्ष की पुष्टि होती है। राजा हर्ष की मृत्यु के बाद कनक ाराणसी चला आया और अपना अन्तिम समय यहीं पुण्यकार्यों में व्यतीत ारने लगा।[४]

कल्हण की जाति:—

इसमें सन्देह नहीं कि कल्हण ब्राह्मण वंश में उत्पन्न हुये थे। जोनराज ा भी कल्हण के लिये द्विज शब्द का ही व्यवहार किया है। स्वयं कल्हण ने ी अनेक स्थलों पर समाज में ब्राह्मणों के स्थान का जिस गर्व तथा आदर के ाथ उल्लेख किया है उससे भी इनके ब्राह्मण होने का ही संकेत मिलता है।[५] एक शैव ब्राह्मण थे यह भी प्रायः निश्चित प्रतीत होता है, क्योंकि राज-रङ्गिणी के प्रत्येक तरङ्ग को इन्होंने अर्धनारीश्वर शिव की वन्दना से ही ारम्भ किया है। नन्दिक्षेत्र, जहाँ इनके पिता चम्पक, प्रतिवर्ष जाते थे, एक शवक्षेत्र ही था। काश्मीरी शैवशास्त्र के एक प्रमुख प्रवर्तक, भट्ट कल्लट[६] का ी कल्हण ने अत्यन्त आदरपूर्वक उल्लेख किया है। इन बातों से इस निष्कर्ष ी पुष्टि होती है कि कल्हण स्वयं एक शैव थे। तथापि काश्मीर में प्रचलित

---

[१] रा० ७.१११७, १११८।

[२] रा० ७.१०९७ और बाद।

[३] देखिये आगे कोश में 'परिहासपुर', वस्था०।

[४] रा० ८.१२ और बाद।

[५] देखिये रा० ४.६३१ और बाद; ५.१६ और बाद; ३.२ और बाद; ८.२२२७ और बाद, इत्यादि।

[६] रा० ५.६६।

तान्त्रिक शैवदर्शन के प्रति इनके हृदय में कोई सहानुभूति नहीं रही प्रतीत होती। इन्होंने तन्त्रिकों पर राजतरङ्गिणी में अनेक स्थलों[1] पर जो व्यंग किये हैं उनसे ऐसा प्रतीत होता है कि यद्यपि ये तान्त्रिकों के दर्शन से पूर्णतया परिचित थे, तथापि उनके प्रति इनके मन में निरादर की भावना के अतिरिक्त और कुछ नहीं था।

दूसरी ओर राजतरङ्गिणी में आये अनेक वर्णनों से ऐसा प्रतीत होता है कि बौद्धमत के प्रति इनके मन में विशेष आदर था। इन्होंने बौद्धों के अहिंसाधर्म, उनकी उदारता, तथा भावनाओं की पवित्रता का प्रायः सर्वत्र उल्लेख किया है।[2] उदाहरण के लिये एक राजा के गुणों की बोधिसत्त्व से तुलना करते हुए आप यह कहते हैं : 'बोधिसत्वोऽसि भूपाल कोऽपि सत्त्वोर्जितव्रतः। कारुण्यं प्राणिषु दृढं यस्येदृक्ते महात्मनः'।[3] स्वयं बोधिसत्व की आपने इन शब्दों में परिभाषा दी है : 'लोके भगवतो लोकनाथादारभ्य केचन। ये जन्तवो गतक्लेशा बोधिसत्वानवेहि तान्'।[4] इसी स्थान पर इन्होंने कृत्याश्रम[5] का जो वर्णन किया है उससे बौद्धों के प्रति इनकी सहानुभूति में कोई सन्देह नहीं रह जाता। पशुवध का निषेध कर देने के कारण राजा मेघवाहन की इन्होंने जो प्रशंसा की है उससे भी इसी मत की पुष्टि होती है।[6] ऐसा भी नहीं था कि ये बौद्धदर्शन की केवल गौण बातों से ही परिचित रहे हों। इसके विपरीत बौद्ध परम्पराओं का इन्होंने गहन अध्ययन किया था जो अनेक स्थलों द्वारा स्पष्ट है।[7] साथ ही ऐसा भी प्रतीत होता है कि बुद्ध की मूर्तियों को यह हिन्दू देवता की मूर्ति मानते थे। इससे ऐसा संकेत मिलता है कि यद्यपि ये बौद्धदर्शन को ब्राह्मण-दर्शनों से भिन्न मानते रहे हो सकते थे तथापि बौद्धों को हिन्दुओं के ही अन्तर्गत रखते थे।[8]

---

[1] रा० ६.११ और बाद; ७.२७८ और बाद; २९५ और बाद; ५२३, ७१२।

[2] देखिये रा० ३. ४–७, २७ और बाद, २५५ और बाद; ५.६४, ११६।

[3] रा० १.१३४; देखिये बाद के श्लोक भी।

[4] रा० १.१३८। देखिये ३.२८; ८.२२३४, २५७४, भी।

[5] रा० १.१३६–१४७।

[6] रा० ३.३–४।

[7] देखिये रा० १.१३५ और बाद, १७५ और बाद; ८.२४०, २२३४।

[8] देखिये रा० ३.३५५, ४६४; ४.२००, २५९–२६३, ५०७; ६.१७२, और बाद, ६९६, १०९७ और बाद; ८.११८४।

राजतरङ्गिणी का रचनाकाल :—

कल्हण ने अपने इस ग्रन्थ को सम्भवतः लौकिक संवत् ४२३४ में आरम्भ करके प्रायः एक वर्ष में समाप्त कर दिया था। इस समय का संकेत स्वयं राजतरङ्गिणी के ही कुछ स्थलों से मिलता है।[1]

कवि के रूप में कल्हण :—

यद्यपि राजतरङ्गिणी को कल्हण नेएक इतिहास-ग्रन्थ कहा है, तथापि इसमें सन्देह नहीं कि स्वयं अपने को वे प्रमुखतः एक कवि ही मानते थे। कवियों के प्रति उन्होंने अपने ग्रन्थ के आरम्भ में इस प्रकार कहा है : ''वन्द्यः कोऽपि सुधास्यन्दास्कन्दी स सुकवेर्गुणः। येनायाति यशःकायः स्थैर्यं स्वस्य च परस्य च ॥'[2] परन्तु इसी के बाद आप पुनः इस प्रकार कहते हैं : 'कोऽन्यः कालमतिक्रान्तं नेतुं प्रत्यक्षतां क्षमः। कविप्रजापतींस्त्यक्त्वा रम्यनिर्माणशालिनः ॥'' श्लाघ्यः स एव गुणवान्रागद्वेषवहिष्कृता। भूतार्थकथने यस्य स्थेयस्येव सरस्वती ॥'[3] इन दोनों ही उक्तियों द्वारा कल्हण ने एक कवि तथा इतिहासकार दोनों के बीच सामञ्जस्य स्थापित करने का प्रयास किया है। जो कुछ भी हो, कल्हण की रचना में वे सभी गुण, जैसे छन्द, अलङ्कारशास्त्र तथा व्याकरण का ज्ञान, प्रचुर मात्रा में विद्यमान हैं। राजतरङ्गिणी से इस बात का पर्याप्त प्रमाण मिल जाता है कि इन समस्त परम्परागत विद्याओं का कल्हण ने गहन तथा विस्तृत अध्ययन किया था। अपने ग्रन्थ के वर्ण्य-विषय के कारण उन्होंने अलङ्कार आदि के प्रचुर प्रयोगों पर नियन्त्रण रक्खा है,[4] किन्तु जहाँ इसका अवसर मिला है उन्होंने इस उत्कृष्टता के साथ इनका प्रयोग किया है कि वह केवल एक कुशल कवि के लिये ही सम्भव है।[5] वास्तव में कल्हण के उत्कृष्ट कवित्व ने ही उनकी रचना में निहित काश्मीर के इतिहास को अब तक सुरक्षित रक्खा है। फिर भी, वर्ण्यविषय की प्रकृति को ध्यान में रखकर उन्होंने आलङ्कारिक तथा काव्यशास्त्रीय

---

[1] रा० १.४४–५३; ८.३४०४।

[2] रा० १.३।

[3] रा० १.४-७।

[4] रा० १.६।

[5] उदाहरण के लिये देखिये रा० १.२०८ और बाद; ३.४१४ और बाद; ५.३४३ और बाद, ३६१ और बाद; ७.९२८ और बाद, १५५७ और बाद; ८.८४२ और बाद, ९४७ और बाद, १३३४ और बाद; इत्यादि। देखिये प्रस्तुत ग्रन्थ के अन्त में दिये गये राजतरङ्गिणी से संकलित सुभाषित भी।

गुणों का केवल यत्र-तत्र तथा अत्यन्त संयत रूप से ही प्रयोग किया है। इसी कारण सम्भवतः हर्षचरित और विक्रमाङ्कदेव प्रभृत अन्य तथाकथित ऐतिहासिक महाकाव्यों की तुलना में राजतरङ्गिणी एक कहीं अधिक ऐतिहासिक ग्रन्थ बन पड़ा।

कल्हण की शैली :—

कल्हण अपनी रचना को गद्य में भी लिख सकते थे। परन्तु, जैसा ऊपर कहा जा चुका है, कल्हण अनिवार्यतः एक कवि थे और इसीलिये उन्होंने काव्य के माध्यम से ही इतिहास को अंकित किया। किन्तु जब हम संस्कृत काव्यों की कल्पना करते हैं तो हमारे सम्मुख परम्परागत काव्यशास्त्रीय गुणों से युक्त और अलङ्कार बहुल काव्य का चित्र उपस्थित हो जाता है क्योंकि इनकी प्रचुरता तथा इनके कुशल समावेश को ही कवि की प्रतिभा तथा उत्कृष्टता का मापदण्ड माना जाता है। इस दृष्टि से कल्हण की शैली भी इन गुणों से रहित नहीं है। परन्तु उन्होंने इस क्षेत्र में संयम से काम लिया है। उन्होंने स्वयं कहा है[1] कि कथा-वस्तु के विस्तार के कारण ही उन्होंने अलङ्कारों तथा विचित्र प्रयोगों का प्रचुरता से नहीं बल्कि केवल स्थान-स्थान पर ही समावेश किया है। अतः यदि हमें परम्परागत काव्यशैली के प्रयोग में कल्हण की दक्षता का उदाहरण देखना है तो उसे हम कुछ विशेष स्थलों पर ही देख सकते हैं—जैसे युधिष्ठिर के राज्य-त्याग, विजेता के रूप में सुस्सल के नगर-प्रवेश, भिक्षाचर के अन्तिम युद्ध आदि के वृत्तान्तों में।[2] इसी प्रकार दुखान्त स्थलों के चित्रण में भी कल्हण की शैली अत्यन्त नाटकीय और सशक्त हो उठी है। उदाहरण के लिये जयापीड के अन्त, तथा ब्राह्मणों के साथ उसके वार्तालाप में हमें अत्यन्त सजीव नाटकीयता का दर्शन होता है।[3] इसी प्रकार राजा अनन्तदेव की शवयात्रा तथा सूर्यमती आदि रानियों के सती होने का वृत्तान्त भी अत्यन्त प्रभावशाली है।[4] किन्तु इन सब से भी बढ़कर, राजा हर्ष के राज्य-त्याग तथा अन्तिम दिनों का वर्णन[5] तो काव्यात्मक गुणों की अभिव्यक्ति में अपनी पराकाष्ठा पर पहुँच गया है। फिर भी यहाँ यह उल्लेखनीय है कि वृत्तान्त की ऐतिहासिकता को भी साथ-

---

[1] रा० १.६।

[2] देखिये रा० १.३६८ और बाद; ५.३४१ और बाद; ८.९४७ और बाद; १७४४ और बाद, इत्यादि।

[3] रा० ४.६४० और बाद।

[4] रा० ७.४६१ और बाद।

[5] रा० ७.१६००—१७१४।

साथ सुरक्षित रखा गया है। सीधी और सरल शैली में वर्णित इस महान् राजा का राज्य-त्याग के पश्चात् केवल अपने दो निष्ठावान सेवकों के आश्रय से लड़खड़ाते हुये मृत्युपथ पर अग्रसर होने, उसकी निःसहायता, अन्य सेवकों और अधिकारियों के उसके विरुद्ध कुचक्र, एक वेश्या की कुटिया में एक अत्यन्त दीह-हीन प्राणी के रूप में शरण लेने, तथा इन समस्त दुर्भाग्यों से घिरे होने पर भी राज्योचित स्वभाव तथा आक्रमणकारियों के सम्मुख वीरता के परिचय आदि की समस्त घटनाओं को मानों चित्रवत प्रस्तुत किया गया है। फिर भी सहस्रों वर्षों के जिस इतिहास का चित्रण करना राजतरङ्गिणी का उद्देश्य है उसको दृष्टि में रखने पर प्रत्येक स्थल अथवा चरित्र का इस प्रकार विस्तृत चित्रण प्रायः असम्भव है। अतः राजतरङ्गिणी का अधिकांश भाग एक प्रकार से प्रायः पद्यबद्ध गद्य ही प्रतीत होता है। स्वयं कल्हण भी इस बात से परिचित प्रतीत होते हैं और इसीलिये काव्य को नीरस होने से बचाने के लिये उन्होंने उपमाओं तथा अन्य अलङ्कारों और व्यंगात्मक उक्तियों का समावेश किया है। इस प्रकार के प्रायः प्रत्येक स्थल का यद्यपि काव्य को नीरसता से रहित करने के लिये समावेश किया गया है, तथापि अधिकांश रूपक आदि सर्वथा मौलिक हैं।[1] वर्णनों के बीच-बीच में दी गई श्लोकबद्ध सदूक्तियों और सुभाषितों का भी उद्देश्य सम्भवतः वर्णनात्मक एकरसता का निराकरण करना मात्र है। इन श्लोकों की रचना अधिक विस्तृत छन्दों में हुई है, औद ये सभी स्थल काव्यात्मक कल्पना की पराकाष्ठा को व्यक्त करते हैं। जहाँ इनका वर्ण्य-विषय सुविदित और पूर्वप्रयुक्त भी है वहाँ भी कल्हण ने अपनी उत्कृष्ट अभिव्यञ्जना शैली के द्वारा उन्हें अद्वितीय बना दिया है। सम्भवतः यही कारण है कि सुभाषितों के अनेक प्राचीन तथा आधुनिक संग्रहों में राजतरङ्गिणी से लिये गये स्थलों की बहुलता है। प्रस्तुत कोश के अन्त में हमने इस प्रकार के सुभाषितों को एकत्र कर दिया है। यद्यपि इनके अतिरिक्त भी अनेक स्थल ऐसे हैं जिन्हें वहाँ स्थान मिल सकता था, तथापि ग्रन्थ विस्तार के भय से हमने केवल प्रमुख तथा अधिक विदग्ध उक्तियों को ही संकलित किया है।

राजतरङ्गिणी अधिकांशतः वर्णनात्मक शैली में ही रचित है, किन्तु यत्र-तत्र वार्तालापात्मक तथा संभाषणात्मक शैली का भी प्रयोग किया गया है। उदाहरण के लिये, उच्चल द्वारा अपने को राज्यसिंहासन का उत्तराधिकारी

---

[1] उदाहरण के लिये देखिये रा० ६.२०९; ७.१०६७, १२२५; ८.१३४, २५२०, २५६०, २५८६, २६३५, २७४७ तथा प्रस्तुत ग्रन्थ के अन्त में संकलित सुभाषित।

सिद्ध करने[1], हर्ष द्वारा अपने शासन की निर्दोषित का प्रतिपादन करने,[2] तथा भिक्षाचर के स्वगत संभाषणों[3] को इस प्रकार की शैली के लिये उद्धृत किया जा सकता है। इसी प्रकार अनन्तदेव और सूर्यमती के वार्तालाप,[4] हर्ष और मन्त्रियों के बीच परामर्श,[5] सैनिकों और डामरों द्वारा भिक्षाचर के पतन पर टीका,[6] जयसिंह तथा भोज के मिलन[7] आदि के प्रसङ्गों में भी ऐसी ही संभाषणात्मक शैली द्वारा कथा को अग्रसर किया गया है। यह भी उल्लेखनीय है कि इसी प्रकार के वार्तालापों और संभाषणों के बीच-बीच में हमें सुभाषितों तथा सदूक्तियों का समावेश मिलता है।

उक्त गुणों के विपरीत भी ऐसी शैलीगत दुरूहता को भी अस्वीकार नहीं किया जा सकता जो कल्हण के वृत्तान्त-कथन को अक्सर दुर्बोध बना देती है। इन दुरूहताओं या जटिलताओं में से कुछ के कारण तो शैलीगत हैं, जैसे दुर्लभ शब्दों के प्रयोग, काव्यात्मक संदिग्धता तथा अस्तव्यस्त विन्यास। किन्तु अधिकांशतः इनका और गहन कारण प्रतीत होता है। कल्हण ने. विशेषरूप से अपनी कृति के उत्तरार्ध में, अक्सर जटिल राजनीतिक परिस्थितियों, कुचक्रों, प्रशासन तथा दरबारी जीवन की घटनाओं, आदि का वर्णन करने का प्रयास किया है। इन विवरणों को उन्होंने जितना ही यथातथ्य तथा सूक्ष्म बनाने का प्रयास किया है उतना ही उनके वक्तव्यों के अभिप्राय को समझना कठिन हो गया है क्योंकि ऐसे स्थल प्राय अलंकृत काव्यशैली में व्यक्त हुये हैं।

इस दुरूहता का एक और कारण यह भी प्रतीत होता है कि कल्हण ने समकालीन काश्मीर के लोगों के लिये ही अपने कृति की रचना की थी, जो स्वयं भी अनेक घटनाओं, प्रचलनों, तथा स्थानीय प्रयोगों से परिचित थे। इसी कारण, जब कल्हण अपने समय की घटनाओं का वर्णन आरम्भ करते हैं तो वह हम लोगों के लिये स्वभावतः दुरूह हो जाते हैं।

अष्टम तरङ्ग में कल्हण के वर्णन की यह दुरूहता सर्वाधिक स्पष्ट रूप से लक्षित होती है। यह तरङ्ग आकार में सबसे बृहत है और इसमें समय-समय

---

[1] रा० ७.१२८१ और बाद।

[2] रा० ७.१४१६ और बाद।

[3] रा० ८.१०२३ और बाद, १४४९ और बाद।

[4] रा० ७.४२३ और बाद।

[5] रा० ७.१३८६ और बाद।

[6] रा० ८.१७०४ और बाद, १७२५ और बाद।

[7] रा० ८.३२१४ और बाद; देखिये ८.२६१३ भी।

पर एक ही व्यक्ति के अनेक ऐसे नाम आते हैं जिनके सम्बन्ध में यह निर्णय कर सकना नितान्त कठिन हो जाता है कि ये सब एक ही व्यक्ति के द्योतक हैं या भिन्न व्यक्तियों के। उदाहरण के लिये बिना किसी समीकरणात्मक संकेत के ही हमें गर्गचन्द, गर्ग, गग्गचन्द्र, और गग्ग नाम मिलते हैं। पाठक अत्यन्त कठिनाई से भी इस बात का निर्णय नहीं कर सकते हैं कि ये सब एक ही व्यक्ति के नाम हैं अथवा अनेक के। इसी प्रकार लोष्ठक के लिये लोठक, और लोठन; राजवदन के लिये वलहर; कोष्ठक के लिये कोष्ठेश्वर; शरद्भासी के लिये शरदिय आदि नामों का प्रयोग बहुधा पाठकों को भ्रमित कर देता है। इन द्विधाओं के अतिरिक्त समय समय पर घटनाप्रसङ्ग में ऐसे नामों का भी प्रचुरता से उल्लेख मिलता है जिनका कोई परिचय नही दिया गया है। अतः ये केवल नाम मात्र रह जाते हैं और इनके द्वारा व्यक्त व्यक्ति के वंश, सम्बन्ध, अथवा पद आदि का कोई निर्णय नहीं किया जा सकता। इस कारण राजतरङ्गिणी और मुख्य रूपसे उसकी आठवीं तरङ्ग अत्यन्त दुरूह तथा कहीं-कहीं उकता देनेवाली तक प्रतीत होने लगती है।

इसी प्रकार ग्रन्थ के अन्तिम अंशों में अनेक स्थल ऐसे मिलते हैं जिनकी संस्कृत तो हीन कोटि की है ही, साथ ही छन्दों में भी त्रुटियां दृष्टिगत होती हैं।[1] इसी प्रकार इन अंशों में पहले कही बातों की ही पुनरुक्तियाँ भी मिलती हैं, जिन्हें अलङ्कारशास्त्र की दृष्टि से उचित नहीं कहा जा सकता।[2] इन सब का कारण सम्भवतः यही प्रतीत होता है कि कल्हण अपनी कृति को दोहरा नहीं सके थे, अन्यथा आरम्भिक अंशों में उन्होंने जिस दक्षता का परिचय दिया है उसे देखते हुये इस बात का कोई अन्य कारण नहीं दिया जा सकता कि इन अन्तिम अंशों का लेखक इतना अकुशल कैसे हो गया।

कल्हण की साहित्यिक पृष्ठभूमिः—

राजतरङ्गिणी में निहित वर्णनों, प्रयोगों, तथा उपमाओं आदि को देखने से इस बात का स्पष्ट संकेत मिलता है कि कल्हण ने अनेक पूर्वगामियों की रचनाओं तथा महाकाव्यों का पूर्णतया अध्ययन किया था। यह अपने ही देश-वासी, बिल्हण, द्वारा रचित विक्रमाङ्कदेवचरित से परिचित थे। उन्होंने एक

[1] उदाहरण के लिये इन स्थलों को देखिये : ८.२७०१, ३०३४, २०३५, ३०७०, ३०७१, ३०९७, ३१२५, ३०३८, ३३१९, ३३७९, इत्यादि।

[2] रा० ८.२७८९, २७९६, २८१०, २८४८ की, क्रमशः ८.१६९, २७४७, ७७६, तथा ११९९ से तुलना कीजिये।

स्थल पर स्पष्ट रूप से विल्हण का नामोल्लेख भी किया है। राजतरङ्गिणी तथा विक्रमाङ्कदेवचरित में शब्दावली आदि की जो समानता लक्षित होती है उसके आधार पर भी कल्हण का बिल्हण की रचना से होने परिचय का स्पष्ट संकेत मिलता है।

इसी प्रकार बाण के हर्षचरित से कल्हण भली भांति परिचित प्रतीत होते हैं। राजतरङ्गिणी तथा हर्षचरित, दोनों में एक ही समान दुर्लभ शब्दों का प्रयोग इस तथ्य की पुष्टि करता है।

इन पूर्ववर्ती काव्यग्रन्थों के अतिरिक्त महाभारत[1] तथा रामायण[2] से भी कल्हण भली-भाँति परिचित प्रतीत होते हैं। इन प्राचीन महाकाव्यों से उनका परिचय इतना घनिष्ट है कि उन्होंने अपने कथन को सशक्त बनाने तथा समान घटनाओं की तुलना करने के लिये प्रायः निष्प्रयास ढंग से और अपने कथा-प्रवाह में बिना किसी प्रकार के व्यवधान के ही इनसे दृष्टान्त दिये हैं। कहीं कहीं तो महाभारत अथवा रामायण की अत्यन्त गौण घटनाओं तक का उल्लेख किया गया है जो इन ग्रन्थों के गहन अध्ययन के बिना सम्भव नहीं है।

कल्हण ने अक्सर अनेक राजाओं के शासनकाल में हुये विभिन्न कवियों तथा विद्वानों का भी उल्लेख किया है।[3] इन उल्लेखों का संस्कृत साहित्य के इतिहास की दृष्टि से पर्याप्त महत्व है। इसमें भी सन्देह नहीं कि कल्हण ने इन विभिन्न कवियों की अभिव्यञ्जना शैलियों से बहुत कुछ, प्रमुखतः व्यंगात्मक शैली को, ग्रहण किया है।[4] कुछ स्थलों पर वराहमिहिर की बृहत्संहिता के

---

[1] महाभारत से उद्धृत दृष्टान्तों के लिये देखिये ये स्थल : रा० १.११९ और बाद; २.९४ और बाद; ३.२७६; ४.७६, १०३, ५२१, ६००, ६२६, ६४१; ७.५१०, ५८५, ८०४, ११६८, १३६५, १४७६, १६१८; ८.३३५, ४६९, ६७०, ९९२, १०९३, ११९९, १२८९, १३५५, २०२५, २१२२, २१७०, २२५६, २२८०, २३०५ और बाद, २३३६, २७८९, २८११, २८४८, २९११ और बाद, २९४८, २९७७, ३४४९।

[2] रामायण से उद्धृत दृष्टान्तों के लिये देखिये ये स्थल : रा० ३.८६; ४.६७, १०७; ६.२२६, ७.१२०२; ८.३३५, १३५५, १५९१, १८०८ और बाद, १३८२, २९७६, ३१५९, ३४४९।

[3] देखिये रा० १.१७८; २.१६; ४.१४४, ४८८ और बाद, ४९५ और बाद, ७०५; ५.२८, ३२ और बाद, २०४।

[4] इस प्रकार के प्रभावित स्थलों के लिये देखिये रा० ३.१८१, २५२; ४.६३५–६३७; ७.११२३ और बाद।

उल्लेख से ऐसा प्रतीत होता है कि कल्हण ज्योतिष-शास्त्र में भी पर्याप्त अभिरुचि रखते थे।[1] इन साहित्यिक कृतियों के अतिरिक्त कल्हण को काश्मीर के बाहर के समकालीन इतिहास का भी ज्ञान रहा प्रतीत होता है। राजतरङ्गिणी के अनेक स्थलों पर उन्होंने इन विदेशी घटनाओं तथा राजाओं आदि का उल्लेख किया है, यद्यपि बहुधा उन्होंने इन विदेशियों पर व्यंग ही किये हैं।[2]

उपदेशक कल्हण:—

राजतरङ्गिणी में प्रचुर मात्रा में ऐसे उपदेशात्मक कथन किलते हैं जिनके द्वारा कल्हण ने अपने नैतिक विचारों को व्यक्त किया है। समस्त सांसारिक विभवों की क्षणभंगुरता, राजाओं के वैभव तथा पदों की अनिश्चितता, नैतिक नियमों का उल्लङ्घन करने वालों को दण्डित करना, विधाता की सर्वशक्तिमत्ता, किन्तु कहीं कहीं विधाता की आलोचना, आदि ऐसे विषय हैं जिनके सम्बन्ध में कल्हण ने, जहाँ अवसर मिला है वहाँ, सदैव अपने उपदेश दिये हैं। इसी प्रकार राजनीति, शासन-व्यवस्था, तथा व्यक्तियों, राजाओं और मंत्रियों आदि के कर्त्तव्याकर्त्तव्य का भी कल्हण ने यथावसर धर्म और नीतिशास्त्र के आधार पर विश्लेषण किया है। अपने इन कथनों को प्रभावशाली बनाने के लिये उन्होंने महाभारत तथा रामायण आदि से भी समानान्तर घटनाओं और प्रसङ्गों के दृष्टान्त दिये हैं। ऐसे सभी उपदेश या तो सीधे उपदेश के रूप में प्रस्तुत अथवा सुभाषित[3] श्लोकों में व्यक्त किये गये हैं।

इस प्रकार के उपदेशात्मक वचन अन्य काव्यों में प्रायः अनुपस्थित हैं। अतः कल्हण को अपने काव्य में इनके समावेश की प्रेरणा कहाँ से मिली यह कह सकना प्रायः कठिन प्रतीत होता है। सम्भव है यह महाभारत तथा रामायण आदि महाकाव्यों का प्रभाव हो जिनमें इस प्रकार के नैतिक उपदेश प्रचुर मात्रा में मिलते हैं, और जिनका कल्हण ने गहन अध्ययन किया था। कारण जो कुछ भी हो ऐसे उपदेशात्मक वचन राजतरङ्गिणी की अपनी एक अत्यन्त उत्कृष्ट विशेषता हैं।

---

[1] रा० १.५५ और बाद; ७.१७२०; ८.७१५।

[2] देखिये रा० ७.१६०९ और बाद, १६१७; ८.२६६, ७८२ और बाद, ८१३ और बाद, ८२४, ९२३, ९४१ ११८२ और बाद, १५२२, १५३७, १९३५ और बाद, इत्यादि।

[3] देखिये प्रस्तुत कोश के अन्त में राजतरङ्गिणी से संकलित सुभाषित।

कल्हण का भाग्यवाद :—

राजतरङ्गिणी के अध्ययन से ऐसा विश्वास हो जाता है कि घटनाओं के निर्माण में भाग्य अथवा विधाता के मतत्त्व को कल्हण प्रायः निर्विवाद रूप से स्वीकार करते हैं। इसमें सन्देह नहीं कि यत्र-तत्र उन्होंने विधाता के विधान के अनौचित्य की भी आलोचना की है,[1] किन्तु, इस बात में उनकी दृढ़ आस्था है कि विधाता की इच्छा के अतिरिक्त और कुछ नहीं हो सकता।[2] पाप और अधर्म को विधाता अवश्य दण्डित करता है। यदि कोई राजा दुराचारी और अधर्मी है तो वह राज्यच्युत हो सकता है अथवा उसका राज्य दुर्भिक्ष, जलप्लावन आदि दैवी विपत्तियों से आक्रान्त हो सकता है।[3] एक स्थान पर तो उन्होंने कश्मीर के राजाओं के पापकर्मों तथा विधाता द्वारा उनके दण्डित होने का एक क्रमबद्ध विवरण ही प्रस्तुत किया है।[4] किन्तु उनका यह भी विचार है कि अधर्मपूर्वक अर्जित सम्पत्ति को भी यदि पुण्यकार्यों में व्यय किया जाय तो अधर्म का निवारण हो जाता है।[5]

अभिचार आदि कर्मों में भी कल्हण का पूर्ण विश्वास प्रगट होता है। हर्ष और सुस्सल की क्रूरताओं और कुशासनों का उन्होंने यह कारण बताया है कि ये राजा दैवविमोहित हो गये थे।[6] यन्त्रणाओं और अधर्मों के विरुद्ध ब्राह्मणों अथवा पुण्यात्माओं के अनशन अथवा प्रायोपवेश के सतपरिणामों में भी उनकी अटूट निष्ठा प्रतीत होती है।[7] मन्दिरों को ध्वस्त करने को भी उन्होंने इतना बड़ा पाप माना है कि उससे राजाओं को राज्यच्युत तक हो जाने का फल भोगना पड़ सकता है।[8] इसी प्रकार नागों की अलौकिक शक्ति तथा नागपूजा

---

[1] रा० ५.५४५; ६.२७५; ७. १३२९, १४३९; ८.१६७, २३७, १२७५, १७९०।

[2] रा० २.९२ और बाद; ३.४९२; ७.९१६ और बाद, १०७० और बाद, १३६९ और बाद १६२९; ८.२२० और बाद, ६०७, १०३६, १२७४ और बाद।

[3] रा० ५.१८३ और बाद, २१० और बाद; ७.१४५५ और बाद; ८.१८९ और बाद।

[4] रा० ८.१९५१-६१।

[5] रा० ४.७०१।

[6] रा० ७.१२४३ और बाद; ८.१४६० और बाद, २२४१।

[7] रा० ४.६३२ और बाद; ८.२२४२।

[8] रा० ७.१३४४ और बाद; ८.९९३।

के प्रति भी उन्होंने दृढ़ आस्था व्यक्त की है।[1] इस प्रकार हम देखते हैं कि कल्हण न केवल भाग्यवादी ही हैं वरन् अनेक प्रकार के शुभ-अशुभ कर्मों तथा उनके तदनुसार परिणामों[2] में भी उनका दृढ़ विश्वास है।

प्रस्तुत कोश :—

प्रस्तुत कोश के सन्दर्भ-संकेतों के लिये हमने स्टीन द्वारा सम्पादित संस्करण को आधार माना है। यों पाठक पण्डित पुस्तकालय द्वारा प्रकाशित संस्करण भी देख सकते हैं क्योंकि वह भी स्टीन के ही संस्करण पर आधारित प्रतीत होता है।

कोश में मैंने राजतरङ्गिणी में आये सभी नामों को अकारादि क्रम से व्याख्या और सन्दर्भ-संकेत सहित प्रस्तुत किया है। जैसा कि ऊपर संकेत किया जा चुका है, कल्हण अक्सर नामों का प्रसंगानुसार बिना किसी परिचय के ही उल्लेख करते हैं, अथवा एक ही व्यक्ति को अनेक अन्य नामों से समय-समय पर समीकरण के बिना किसी संकेत के ही प्रस्तुत करते हैं। इन कठिनाइयों के कारण जहाँ तक सम्भव हो सका है मैंने अलग-अलग नामोंवाले व्यक्तियों के नामों को अलग-अलग प्रस्तुत करते हुये भी उनके अन्य नामों का संकेत कर दिया है। यदि एक ही नामवाले अनेक व्यक्ति मिले हैं तो उन्हें क्रमानुसार पृथक् संख्याओं से व्यक्त किया है। प्रत्येक नाम के सम्बन्ध में यथाशक्ति मैंने इतना विवरण प्रस्तुत करने का प्रयास किया है जिससे उसका तथा उसके पद और कार्यों का परिचय प्राप्त हो सके। किन्तु जहाँ ऐसा विवरण उपलब्ध नहीं हो सका है वहाँ मैं उस नाम के प्रयोग-स्थल मात्र के संकेत तक ही अपने को सीमित रखने के लिय विवश रहा हूँ।

कोश के अन्त में मैंने राजतरङ्गिणी में आनेवाले कल्हण के सुभाषितों तथा सदूक्तियों को संकलित कर देना भी अनिवार्य समझा है, क्योंकि राजतरङ्गिणी में इस विषय की सामग्री की इतनी अधिक प्रचुरता, तथा यह कल्हण की ही विशेषता है कि इसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती। इन सुभाषितों तथा सदूक्तियों का विषयवस्तु अत्यन्त विविध है। राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक तथा नैतिक, सभी विषयों पर कल्हण ने इतनी गहन तथा सारगर्भित उक्तियाँ प्रस्तुत की हैं कि कोई भी व्यक्ति उनके महत्त्व से अप्रभावित नही रह सकता।

---

[1] रा० १.२५८ और बाद; ७.१६९ और बाद।

[2] रा० ७.७४३ और बाद, ७९६, १२९१, १३०९, १६४३; ८.७१८।

कोश के अन्त में राजतरङ्गिणी में आनेवाले राजाओं के वंशक्रम, वंशावलियों तथा शासन-अवधियों की विस्तृत तालिकायें भी प्रस्तुत की गई हैं जिनसे शोधकर्त्ताओं को पर्याप्त सहायता मिलेगी।

कोश में संक्षेपाक्षरों का प्रयोग प्रायः नहीं सा ही है। जो संक्षेपाक्षर प्रयुक्त हुये हैं, उनकी सूची इस प्रकार है—

दे० = देखिये

पृ० = पृष्ठ

रा० = राजतरङ्गिणी

वस्था० = वर्णक्रमस्थान पर

यदि यह कोश अनुसन्धानकर्त्ताओं के लिये कुछ भी सहायक सिद्ध हो सका तो मैं अपने परिश्रम को कृतार्थ मानूँगा।

रामकुमार राय

राजतरङ्गिणी-कोश

(कल्हणकृत राजतरङ्गिणी के नामों और विषयों की
व्याख्यात्मक अनुक्रमणिका)

शिवस्तुतिः

भूषाभोगिफणारत्नरोचिःसिचयचारवे ।
नमः प्रलीनमुक्ताय हरकल्पमहीरुहे ॥ १.१

ालं वह्निशिखाङ्कितं दधदधिश्रोत्रं वहन्संभृत-
ीडरकुण्डलिजृम्भितं जलधिजच्छायाच्छकण्ठच्छविः ।
ाचो बिभ्रदहीनकञ्चुकचितं बद्धाङ्गनार्धस्य वो
ागः पुंगवलक्ष्मणोरस्तु यशसे वामोथ वा दक्षिणः ॥ १.२

विहितमजगोश्रृङ्गाग्राभ्यां धनुर्घटितं तथा
नरकरटिनोर्देहार्धाभ्यां गणं परिगृह्णतः ।
विविधघटनावाल्लभ्यानां निधेरुचिता विभो-
र्जयति ललनापुंभागाभ्यां शरीरविनिर्मितिः ॥ २.१

ुञ्चेभाजिनमस्य कुम्भकुहरे मुक्ताः कुचाग्रोचिताः
क्रं भालज्वलनेन कज्जलमतः स्वीकार्यमक्ष्णोः कृते ।
धाने वपुरर्धयोः प्रतिवदन्नेवं निषेधेष्यहेः
र्तव्ये प्रिययोत्तरानुसरणोद्युक्तो हरः पातु वः ॥ ३.१

तद्वीतव्यतिरेकमद्रितनयादेहेन मिश्रीभवन्
निष्प्रत्यूहमिह व्यपोहतु वपुः स्थाणोरभद्राणि वः ।
वेण्या भोगिवधूशरीरकुटिलश्यामत्विषा वेष्टिता
जूटाहेरपि यत्र भाति दयितामूर्त्येव पृक्ता तनुः ॥ ४.१

क्वाप्येतेषु रुचिः कचेषु फणिनां पुंस्कोकिलस्येव ते
गोभिः कण्ठतटस्य हृष्यति पुरो दृक्पश्य चक्षुःश्रुतेः ।
संधानेभिनवे मिथो भगवतोर्जिह्वापृथक्स्पन्दिनी
भिन्नार्थां सदृशाक्षरामपि वदन्त्येवं गिरं पातु वः ॥ ५.१

नेदं पर्णसमीरणाशनतपोमाहात्म्यमुच्चोरगौ
पश्यैतावत एव संप्रति कृतौ तन्मात्रवृत्ती बहिः ।
प्रेम्णैवार्धमिदं चराचरगुरोः प्रापेयमात्मस्तुती-
रेवं देववधूमुखाच्छ्रुतिसुखाः शृण्वन्त्यपर्णावतात् ॥ ६.१

मातुस्तेजनि निर्मले पितृकुले श्लाघ्या तनुर्वेधसा
त्वं संध्याहितसंनिधिर्मम जपारक्तेधरे खेलसि ।
सन्ध्यावन्दनसाभ्यसूयगिरिजास्तुत्येदृशैर्वाक्छलै-
र्यः सन्ध्यामपि वन्दते स्म स जगत्प्रीणातु गौरीश्वरः ॥ ७.१

प्रौढाः कञ्चुकिनो जरद्वरवृषः कुब्जस्तुषारद्युति-
र्नित्याप्तोपि बहिष्कृतः परिकरः सोयं समस्तोप्यहो ।
अर्धाद्यद्वसतीकृताद्भगवता चारित्रचर्याविदा
सा भिद्यादुरितं चराचरगुरोरन्तःपुरं पार्वती ॥ ८.१[१]

---

[१] कल्हण ने प्रत्येक तरङ्ग के आरम्भिक श्लोकों में शिवस्तुति की है। ऐसे ही सब श्लोकों को एकत्र करके यहाँ शिवस्तुति के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

अक्ष, राजा नर के पुत्र का नाम है जिसने ६० वर्ष तक काश्मीर पर राज्य किया और अक्षवाल नामक नगर भी बसाया (१.३३८)। ८.३४१६।

अक्षपटल = लेखा-कार्यालय (५.३०१, ३८९, ३९८; ६.२८७; ७.१६२, १६०४)।

अक्षयिणी = स्थायी अन्नक्षेत्र (१.३४७)।

अक्षवाल, एक नगर का नाम है (१.३३८)।

अक्षोटमल्ल, हर्ष के एक योद्धा का नाम है जो सुस्सुल से युद्ध करता हुआ स्वर्गवासी हुआ (७.१५०१)।

अक्षोसुवा, एक अग्रहार का नाम है (८.८९८)।

अगस्त्य, एक प्राचीन महर्षि का नाम है (३.३२५; ४.६४७)। नक्षत्र के रूप में इनका उल्लेख (२.१४०; ८.२३७)। देखिये **कुम्भयोनि** भी।

अग्निशौच, मृगों की एक जाति का नाम है (५.१५; ६.३६४; ८.३०२४)।

अग्रहार = जागीर : १.८७, ८८, ९०, ९६, ९८, १००, १२१, १७५, ३०७, ३११, ३१४, ३४०, ३४१, ३४३; २.५५; ३७६, ४८१; ४.९, ६३९; ५.२३, २४, ३९७, ४०३, ४४२; ६.८९, ३३६; ७.१८२, १८४, १८५, ६०८, ८९८ ८९९, ९०८; ८.२४०८, २४१९, २४२०, ३३५५।

अङ्गद, एक राजा का नाम है जिसे मन्त्रियों की सहायता से राजा जयसिंह ने राजच्युत कर दिया (८.३४००)।

अचलमङ्गल, दरदों के राजा का नाम है (७.१६७)।

अजितापीड, जयादेवी से उत्पन्न एक पुत्र का नाम है जिसको उत्पल ने काश्मीर का राजा बनाया (४.६९०)। यह नाममात्र का ही राजा रहा (४.६९३)। मम्म आदि ने मिल कर इसे राज्यच्युत करके द्वितीय संग्रामपीड के पुत्र को काश्मीर का राजा बनाया (४.७०७)। इसके पुत्र, उत्पलापीड, को सुखवर्मा ने शासक बनाया (४.७०९)। ८.३४२८, ३४२९।

१. **अज्जक,** तन्वङ्ग के एक पुत्र का नाम है (७.१०३३) ।

२. **अज्जक,** राजक के पुत्र का नाम है (८.३२४) ।

३. **अज्जक,** सल्हण के एक ब्राह्मण सचिव का नाम है जो पतङ्ग ग्राम में उत्पन्न हुआ था और युद्ध में मारा गया (८.४७२) ।

४. **अज्जक,** सुस्सल के ताम्बूलवाहक का नाम है (८.१३१८) ।

५. **अज्जक,** मल्ल के एक कर्मचारी का नाम है जो आहत होकर बच गया (७.१४८१) ।

अज्जराज, एक विद्रोही डामर का नाम है जिसकी विजयेश्वर में पहुंची सेना को साथ लेकर विद्रोही सेनापति तिलक आगे बढ़ा (८.७४८) ।

अञ्जना, इक्ष्वाकुवंश के राजा वजेन्द्र की पुत्री और तोरमाण की पत्नी का नाम है (३.१०५) । "यह कारागार में पति के साथ रहते हुए गर्भवती हुई । तदनन्तर इसने कारागार का त्याग कर एक कुम्भकार के घर पर एक पुत्र उत्पन्न किया । उस बालक का नाम प्रवरसेन रक्खा गया (३.१०६-१०९) ।" प्रवरसेन इसे लेकर तीर्थयात्रा करने गया (३.२६५) ।

अञ्जनाद्रि, एक पर्वत का नाम है (४.३२९) ।

अट्टमेलक, काकवंश का आश्रय लेकर राजद्वार पहुंचे एक साधारण सेवक का नाम है जिसने सुस्सल के यहाँ मन्त्रिपद प्राप्त कर लिया (८.५७७) ।

अट्टयिक, खशजातीय बाण के पुत्र और तुङ्ग के एक भ्राता का नाम है (६.३१९) ।

अट्टसूद, फेरी करके खाद्य-पदार्थ बेचनेवाले को कहते हैं । यह अपने को मल्ल का पुत्र, रामल, बताया करता था (८.२१६) ।

अट्टालिका (अट्टलिका, अट्टिलिका), लोहर के एक नगर का नाम है : ८.५८१, ७६४, ८३१, १८१९, १८४२, १८४५, १९९१, १९९४ ।

अतीसार, एक व्याधि का नाम है (८.१६०५) ।

अत्युग्रपुर, एक स्थान का नाम है (८.३४०२) ।

अनङ्ग=कामदेव: ७.१४३६ ।

अनङ्गपाल, हरिराजपुत्र, राजा अनन्तदेव के एक मित्र का नाम है जो सदैव देवमन्दिरों को तोड़ने का उपक्रम किया करता था (७.१४७) ।

अनङ्गभवन, राजा दुर्लभवर्धन द्वारा अपनी पत्नी, अनङ्गलेखा, के नाम पर बनवाये गये एक विहार का नाम है (४.३) ।

अनङ्गलेखा, राजा बालादित्य की पत्री का नाम है (३.४८४)

इसका दुर्लभवर्धन के साथ विवाह हुआ (४.४८९)। इसका खङ्ख के साथ अवैध सम्बन्ध हो गया (३.४९७)। खङ्ख ने दुर्लभवर्धन द्वारा लिखे गये एक आक्षेपपूर्ण वाक्य को पढ़ कर इसे विस्मृत कर दिया (३.५२४)। इसके गर्भ से उत्पन्न पुत्र, दुर्लभक, अपने पिता के बाद काश्मीर का राजा हुआ (४.७)।

अनङ्गापीड, द्वितीय संग्रामपीड के पुत्र का नाम है जिसे मम्म आदि ने अजितापीड को राज्यच्युत करके काश्मीर का राजा बनाया (४.७०७)। (८.३४२८)।

अनन्त, पर्णोत्स में उत्पन्न एक व्यक्ति का नाम है जिसके पुत्र को तिलक-सिंह ने द्वाराधीश बनाया (८.६३३)। पृथिवीहर ने युद्ध में इसे पलायन करने के लिये विवश कर दिया (८.७१३)। इसके पुत्र, आनन्द, को रिल्हण ने कल्याणवाड आदि स्थानों का द्वाराधीश बनाया (८.१००५); राजा सुस्सल ने इसके पुत्र आनन्द को बन्दी बना लिया (८.१०४२)। जब इसका पुत्र, आनन्द, मार्ग पर जा रहा था तब लोचनोड्डारक ग्राम में डामरों ने उसकी हत्या कर दी (८.१४२७)।

अनन्तदेव, संग्रामराज के पुत्र का नाम है जिसका एकाङ्गों ने संग्रामराज की मृत्यु के बाद राज्याभिषेक कराया (७.१३५)। इसने सूर्यमती से विवाह किया (७.१५२)। त्रिभुवन से युद्ध करते हुये इसने उसपर तीव्र प्रहार किये (७.१५६)। इसने दरदों पर विजय प्राप्त की (७.१५७)। इसने शिवभक्ति, व्रत, स्नान, दान तथा शील आदि गुणों में मुनियों को भी परास्त कर दिया (७.२०१)। इसके विदेशी अभियान (७.२१८)। 'कालेःनन्तमहीभर्तुर्वैरि-विग्रहसंकटे', (७.२२२)। इसने राज्यत्याग करके कार्तिक शुक्ल षष्ठी को अपने पुत्र, कलश, का राज्याभिषेक किया (७.२३०, २३३)। इसने पुनः सत्ता ग्रहण की (७.२४४)। 'अनन्तभूभुजो राज्ये', (७.२६८)। कलश के साथ इसका सम्बन्ध-विच्छेद (७.३१७)। बिज्ज ने इसके सामने अपना धैर्य नहीं छोड़ा (७.३२८)। इसने विजयेश्वर के लिये प्रस्थान किया (७.३३६)। कलश ने इसपर आक्रमण किया (७.३६६)। सूर्यमती के साथ इसका कलह (७.४२०)। इसने आत्महत्या की (७.४५२)। ७.११७२, १२८६; ८.१९५८ (इसकी सम्पत्ति), ३४४०।

अनन्तपाल, एक राजपुत्र का नाम है, इसके परामर्श से जब हर्ष युद्ध के लिये अग्रसर हुआ तब दण्डनायक ने उसे रोक दिया (७.१५८५)। यह राजा हर्ष को राह में छोड़कर भाग गया (७.१६१८)।

अनन्तेश, कलश द्वारा स्थापित एक शिवलिङ्ग का नाम है (७.५३२)।

अनरण्य, एक प्राचीन पुरुष का नाम है जिन्होंने कृपाचार्य, द्रोणाचार्य आदि की ही भाँति अपने कुल के वैर का प्रतिशोध लिया था (८.१३५५)।

अनल, डामरसेना के एक प्रमुख योद्धा का नाम है जिसका राजा सुस्सल के सैनिकों ने युद्ध में वध किया (८.११०२)।

अन्तर्वेदि, गङ्गा-यमुना के एक मध्यवर्ती प्रदेश का नाम है (४.१३२)।

अन्धतामिस्र, एक नरक का नाम है (७.१२३६)।

अन्धमठ, उत्पल द्वारा निर्मित कराये गये एक मठ का नाम है (७.१४९)।

अन्धयुधिष्ठिर, राजा खिङ्खिल के पुत्र का नाम है जिसे युधिष्ठिर भी कहते हैं (१.३५०)। ८.३४१६।

अपर्णा = पार्वती (६.१)।

अभय, उच्चल के एक द्वाराधीश का नाम है जो कंगाल हो गया (८.१८५)।

अभयराज, उरशा के राजा का नाम है जिसके राज्य को मल्ल ने कृष्णा नदी पार करके हस्तगत कर लिया (७.५८६)। ८.१६।

१. **अभिनव,** कय्यामन्तक के सौतेले भाई का नाम है जिसकी राज्यसैनिकों के हाथ मृत्यु हुई (७.९३)।

२. **अभिनव,** शमाला प्रान्तवासी एक डामर का नाम है जिसे अनन्तदेव ने पराजित किया (७.१५९)।

अभिनवगुप्त, विशोका नदी के उस पार रहनेवाले एक कायस्थ का नाम है जिसके पुत्र संग्रामगुप्त का पुत्र, पर्वगुप्त, काश्मीर का राजा हुआ (६.१३०)।

१. **अभिमन्यु,** राजा क्षेमगुप्त के पुत्र का नाम है जो पिता की मृत्यु के बाद राजा हुआ (६.१८८)। दिद्दा रानी ने इसे शूरमठ भेज दिया (६.२२३। दिद्दा रानी ने इसे भट्टारक मठ भेजा (६.२४०)। गोपालवर्मा से लेकर इसके समय तक ६० वर्ष में काश्मीर में १६ राजा हुये (६.२५६)। यह क्षय रोग से ग्रसित हुआ (६.२८९)। लौकिक वर्ष ४०४८ की कार्तिक शुक्ला तृतीया को इसकी मृत्यु हुई (६.२९२)। 'अभिमन्युवधू' (६.३२९)। ८.३४३७।

अभिमन्यु, इन्द्र के समान तेजस्वी, काश्मीर के एक राजा का नाम है जो हुष्क आदि तुरुष्कों के बाद राजा बना और कण्टकोत्स नामक अग्रहार ब्राह्मणों को दान दिया (१.२०,१७४)। इसने अपने नाम से एक नगर बसाया

(१.१७५)। यह हुष्क आदि तुरुष्कों के बाद काश्मीर का राजा हुआ (८.३४१३)।

१. **अभिमन्युपुर,** दिद्दा रानी द्वारा अपने पुत्र, अभिमन्यु, की स्मृति में बसाये गये एक नगर का नाम है (६.२९९)।

२. **अभिमन्युपुर,** एक नगर का नाम है जिसे अभिमन्यु ने बसाया था (१.१७५)।

अभिमन्युस्वामी, दिद्दा रानी द्वारा अपने पुत्र, अभिमन्यु, की स्मृति में स्थापित एक देवालय का नाम है (६.२९९)।

अमरकण्ठ, एक ब्राह्मण का नाम है जिसकी मृत्यु हो जाने पर कलश ने उसके पुत्र, प्रमदकण्ठ, को अपना गुरु बनाया (७.२७६)।

अमरेश्वर, काश्मीर के एक प्रसिद्ध तीर्थ का नाम है : १.२६७; ७.१८३, १८५; ८.५०६, ५९०, ७२९, ७५६, ११२४।

१. **अमृतप्रभा,** राजा रणादित्य की द्वितीय पत्नी का नाम है जिसने अमृतेश्वर शिव की स्थापना की (३.४६३)। इसने राजा मेघवाहन की पत्नी, भिन्ना,द्वारा निर्मित प्राचीन विहार में बुद्ध की मूर्ति स्थापित की (३.४६४)।

२. **अमृतप्रभा,** राजा जयापीड की माता का नाम है जिसने अमृतकेशव के मन्दिर का निर्माण कराया (४.६५९)।

३. **अमृतप्रभा,** राजा प्राग्ज्योतिषेश्वर की कन्या का नाम है जिसने स्वयंवर में मेघवाहन का वरण किया (२.१४८)। इसने भिक्षुओं के निवासार्थ अमृतभवन का निर्माण कराया (३.९)।

अमृतकेशव, एक देवता का नाम है (४.६५९)।

अमृतभवन, एक विहार का नाम है जिसका रानी अमृतप्रभा ने निर्माण करवाया (३.९)।

१. **अमृताकर**—इसका पुत्र, उदयगुप्त, महिमा के आश्रय में आकर रहने लगा (६.२१९)।

२. **अमृताकर,** राजा अवन्तिवर्मा के एक मन्त्री का नाम है (५.४२३)।

अमृतेश्वर, एक शिव का नाम है (३.४६३)।

अरमुडि, नेपाल देश के राजा का नाम है (४.५३१)। इसने जयापीड से युद्ध करने के लिए एक नदी तट पर अपनी सेना का शिविर बनाया (४.५३७)। जयापीड के मन्त्री देवशर्मा ने इसके पास दूत भेज कर इसे प्रलोभन देना आरम्भ किया (४.५५२)। इसके सामन्तों ने देवशर्मा का स्वागत करने के बाद उसे इसके समक्ष उपस्थित किया (४.५५६, ५५८)।

अरिष्टोत्सादन, एक स्थान का नाम है (३.४८२)।

अरुण, सूर्य के सारथि का नाम है : ७.९५९; ८.५०, २५४९।

अर्घदेव, टिक्क के एक दूत का नाम है (८.१३०५, १५४३)।

१. अर्जुन, भीमादेव के अनुचर एवं कालपाश के पुत्र का नाम है (८.२९)।

२. अर्जुन, एक विदेशी का नाम है जिसने तुङ्ग की मृत्यु के बाद राज्य-सैनिकों से युद्ध किया (७.९७)।

अर्जुनकोष्ठ—मल्लकोष्ठ के लोहर भाग जाने पर क्रुद्ध सुस्सल ने इसे सूली पर चढ़वाकर मार डाला (८.६४२, ६४५)।

अर्यमा, एक देवता का नाम है ४.५४८।

अलक, पृथिवीहर के भतीजे का नाम है जिसे साथ लेकर पृथिवीहर ने नदी पार करके जनकसिंह की सम्पूर्ण सेना को नष्ट कर दिया (८.९३६)।

अलखान, गुर्जर नरेश का नाम है (५.१४९)। उत्तरापथ का राजा लल्लिय शाहि इसका संरक्षक था (५.१५५)।

अलङ्कार, मङ्ख के भ्राता और एक कोशाधिकारी का नाम है (८.२४२३)। यह राजस्थान का रक्षक था (८.२५५७)। इसने श्री हर्ष के दुर्ग में प्रवेश किया (८.२६१८)। भोज ने इसे देख लिया (८.२६७१)। यह द्रङ्ग आया (८.२७०२)। इसे पदच्युत कर दिया गया (८.२७३७)। ८.२९२५, ३३५४ (मङ्ख इसका भ्राता था)।

अलङ्कारचक्र, एक डामर का नाम है जिसने लोठन के साथ कुचक्र आररभ किया (८.२४८२)। लोठन इसके साथ सम्मिलित हुआ (८.२५२०)। इसने शिरःशिला की रक्षा की (८.२५६८)। ८.२५९८,२८९५ (यह भोज को लेने आया), २९२३ (इसने पुनः विद्रोह किया), २९४१ (इसने पलायन किया), २९४३, २९४६, २९४९ (भोज ने इसके पुत्रों से सन्धि करनी चाही)।

अवकल्य, एक राजा का नाम है जिसकी कन्यायें, आसमती और सहजा, मल्ल के दो पुत्रों, रल्हण तथा सल्हण, की पत्नियाँ बनीं (७.१४८७)।

अवतार, भिक्षाचर का एक विशेषण है (८.८५८,३०२६)।

अवनाह, एक ग्राम का नाम : ७.१३४९; ८.२०२३ ।

अवन्ति, एक नगरी (उज्जयिनी) का नाम है (४.१६२)।

अवन्तिपुर, एक नगर का नाम है जिसे अवन्तिवर्मा ने बसाया था

(५.४४)। ७.२९९, ३३७, ३६८, १३६६; ८.६४९, ९७०, १०००, ११४४, १४२९, १४७४, १४७९, १५०२, १५८०, २२२४।

अवन्तिवर्मा, उत्पल के पौत्र और सुखवर्मा के पुत्र का नाम है जिसे गुणवान् समझकर शूर नामक मन्त्री राजा बनाना चाहता था (४.७१५)। शूर ने इसे राजा बनाया (४.७१६)। इसने राज्याभिषेक के जल को धारण किया (४.७१९)। राज्यप्राप्ति के पश्चात् शत्रुओं को नष्ट करके इसने अपने उत्कृष्ट कार्यों द्वारा सज्जनों को हर्षित कर दिया (५.२)। 'साध्ववन्तिन्निति वदन्नेकं प्रापाञ्जलीनबहून्', (५.१७)। इसने अपनी सम्पत्ति याचकों के अधीन करके अपने लिए केवल छत्र-चमर मात्र की सम्पदा शेष रक्खी (५.१८)। इसके सौतेले भ्राता का नाम शूरवर्मा थे जिसे इसने युवराज के पद पर अभिषिक्त किया (५.२२)। इसके साम्राज्य में मुक्ताकण, शिवस्वामी, ध्वन्यालोक के रचयिता आनन्दवर्धन, और हरिविजय के निर्माता कवि राजानक, अत्यन्त प्रसिद्ध हुये (५.३२, ३४)। इसने अपने भ्राता शूरवर्मा तथा उसके पुत्र को सदा राजा के समान सब अधिकार प्रदान किये (५.४२)। यह अपने भ्राता शूरवर्मा को प्रसन्न करने के लिये वैष्णव होते हुये भी अपने को शैव कहता था (५.४३)। इसके राज्य में भी दस वर्ष तक प्राणिहिंसा सर्वथा बन्द रही (५.६४)। इसके पुण्यप्रताप से प्राणियों की प्राणरक्षा के लिये स्वयं अन्नपति सुय्य के रूप में अवतीर्ण हुये (५.७२)। सुय्य द्वारा जल से मुक्त की गई भूमि पर इसने अनेक ग्राम बसाये (५.१२१)। 'अवन्तिदेवः पातिस्म मान्धातेव वसुन्धराम्', (५.१२२)। इसकी मृत्यु (५.१२६)। इसका वंश नष्ट हो चुका था (५.२५१)। ८.११६१, २४००, ३४२९।

अवन्तिस्वामी, एक देवता का नाम है : ५.४५; ७.५७०; ८.१४२९।

अवन्तीश्वर, एक शिवमन्दिर का नाम है (५.४५)।

अविमुक्तापीड, राजा प्रतापादित्य और रानी नरेन्द्रप्रभा के एक पुत्र का नाम है (४.४२)। देखिये **मुक्तापीड** भी।

अशोक, एक राजा का नाम है जिसके, लव आदि पूर्वजों का पूर्वमिहिर ने वर्णन किया था (१.१८)। छविल्लाकर नामक विद्वान ने इसका उल्लेख किया है (१.२०)। शकुनी के प्रपौत्र का नाम है जो निःसन्तान राजा शनीचर के बाद वसुन्धरा का शासक हुआ (१.१०१)। "इसने जैनधर्म को स्वीकार करके शुष्कलेत्र और वितस्तात्र नामक दो स्थानों पर स्तूप बनवाया। इसने अनेक नगरों तथा मन्दिरों आदि का भी निर्माण कराया (१.१०२ और

बाद)।" यह शनीचर के प्रतिनृव्य का पुत्र था और काश्मीर का राजा हुआ; इसके पुत्र का नाम जलौक था (८.३४११–३४१२)।

अशोकेश्वर, राजा अशोक द्वारा निर्मित कराये गये एक देव प्रासाद का नाम है (१.१०६)।

अश्वपति, भोगसेन के एक साथी (?) का नाम है जिसे सुस्सल की आज्ञा से सूली पर चढ़ा दिया गया (८.३९९)।

अश्वपाद, एक सिद्ध का नाम है जिसके घर पर प्रवरसेन अतिथि था (३.२६७)। शिव से वरदान प्राप्त करके प्रवरसेन इसके पास आया (३.२७९)। इसने प्रवरसेन के पास पत्र भेजा (३.३६६)। यह कापालिक था (३.३६९)।

असमुख, एक ग्राम का नाम है जिसे गोपादित्य ने ब्राह्मणों को दान किया (१.३४०)।

असिधर, टक्कदेश के एक योद्धा का नाम है जिसे राजा हर्ष ने कन्दर्प को मार डालने के लिये विशाल सेना सहित लोहर भेजा (७.१००१)। जब यह लोहर पहुचा तो कन्दर्प चौपड़ खेल रहा था (७.१००३)।

असुररिपु = विष्णु। (३.२१५)।

आ

आखुव, एक ग्राम का नाम है (४.६७८)।

आच, मथुराधिपति प्रमोद के जामाता का नाम है जिसने आचेश्वर शिव की स्थापना की (४.५१३)।

आचेश्वर, एक शिव का नाम है जिनकी प्रमोद के जामाता, आच, ने स्थापना की (४.५१३)।

आटविक, एक जाति के लोगों का नाम है जो जज्ज के अत्याचार से त्रस्त होकर जयापीड से मिल गये (४.४७४)।

१. **आदित्य,** एक देवता का नाम है (४.१८७)।

२. **आदित्य,** विग्रहराज के कृपापात्र, एक ब्राह्मण, का नाम है (६.३४५)।

१. **आनन्द,** उच्चल के मामा का नाम है जिसने डामरों की सेना एकत्र करके मडवराज्य में उपद्रव आरम्भ कर दिया (७.१३१७)। यद्यपि इसने अनेक बार आक्रमण किया तथापि सहेल ने मडवराज्य नहीं छोड़ा (७.१३२०)। ७.१३६२।

२. आनन्द, राजा हर्ष के एक मंत्री का नाम है (७.९९३)। इसे मण्डलेश्वर बनाया गया (७. १३०४)। इसने अपनी स्वामिभक्ति का परिचय दिया (७ १३२३, १३३९, १३४०)। इसकी मृत्यु (७. १३७५)। इसकी पत्नी का उल्लेख (७.१४६१)।

३. आनन्द, पर्णोत्स में उत्पन्न, अनन्त के पुत्र का नाम है जिसे तिलकसिंह ने द्वाराधीश बना दिया (८.६३३)। रिल्हण ने इसे कल्याणवाड आदि स्थानों का द्वाराधीश बनाया (८.१००५)। राजा सुस्सल ने इसे बन्दी बना लिया (८.१०४२)। जब यह मार्ग पर जा रहा था तब लोचनोद्धारक ग्राम में डामरों ने इसकी हत्या कर दी (८.१४२७)।

४. आनन्द, युद्ध करते हुये पृथिवीहर ने इस काकवंशीय द्वाराधीश को युद्धभूमि से भगा दिया (८.७१३)। एकमात्र इसी ने राजधानी छोड़कर जाते हुए सुस्सल का साथ दिया (८.८२६)।

५. आनन्द, एक घातक का नाम है जिसे राजा जयसिंह द्वारा नियुक्त समझकर भव के पुत्र विजय ने मार डाला परन्तु स्वयं भी इसके हाथों मारा गया (८.२३५०)।

६. आनन्द—यह परिहासपुर की व्यवस्था करता था। राजा हर्ष ने इसे वामन के स्थान पर परिग्रह का अधिकार दिया किन्तु यह द्वारपति का पद चाहता था (७.९९५)।

७. आनन्द, भागिक के साले, एक खश योद्धा का नाम है (८.१६९४, १७२८)।

आनन्दचन्द्र, एक व्यक्ति का नाम है जिसे सुस्सल ने बन्दी बना लिया (८.६४४)।

आनन्दराज, वल्लापुर के युवराज का नाम है जो अन्य चार राजाओं से मिलकर काश्मीर पर आक्रमण के लिये सन्नद्ध हुआ (८.५४०, ५४७)।

१. आनन्दवर्धन, ध्वन्यालोक के रचयिता का नाम है (५.३४)।

२. आनन्दवर्धन, राजा जयसिंह के द्वाराधीश का नाम है (८.१८३२)।

आनन्दवाड, एक दस्यु का नाम है जो अलङ्कारचक्र के साथ युद्ध के लिये चला (८.२९२४)। अलंकार ने इसके पुत्र का वध कर दिया (८.२९२९)।

आनूला, एक नदी का नाम है (५.११२) ।

आरभटी, एक स्थान (?) का नाम है (८.२०१८) ।

आर्द्रक =अदरक (८.१४१) ।

आर्य, आर्यावर्त के निवासियों का नाम है (१.३१३) । आर्यावर्त के ब्राह्मण तथा विद्यार्थी (१.३४१; ६.८७) ।

आर्यराज, मरणोपरान्त पुनरुज्जीवित हुये मन्त्रि सन्धिमति का नवीन नाम है (२.११०) । इसने गान्धारराज के कश्मीर को हस्तगत करने की इच्छा को जानकर उसके षडयन्त्र का प्रतिकार नहीं किया (२.१५२) । इसने शिव-लिङ्ग लेकर उत्तर दिशा के लिये प्रस्थान किया (२.१६१) "यह नन्दीश तीर्थ के समीपवर्ती सोदराम्बुतीर्थ की ओर चला और वहाँ आकर शिव के सामने खड़ा हो गया । भस्म, रुद्राक्ष की माला एवं जटाजूट से विभूषित देखकर वहाँ के मुनिगण इसे आदर से देखने लगे । इस प्रकार इसने संन्यास ले लिया (२.१६१ और बाद) ।

आर्याणक, एक देश का नाम है । ऐसा कहा जाता है कि यहाँ अत्यधिक हिमपात में दबकर राजा ललितादित्य की मृत्यु हो गई (४.३६७) ।

आर्यावर्त, हिमालय और विन्ध्य पर्वतों के बीच स्थित भूभाग का नाम है (५.१५२) । देखिये **आर्य** भी ।

आशाचन्द्र, रानी सूर्यमती के छोटे भ्राता का नाम है । इसका दूसरा नाम कल्लन था (७.१८२) । इसने हलधर आदि को बन्दी बना लिया (७.२२५) ।

आषाढ़, एक मास का नाम है : ५.१२६; ८.१२३२ ।

आसट, चम्पा राज्य के राजा का नाम है जो राजा कलश का अथिति होकर आया (७.५८८) ।

१. आसमती, नरवर्मा की पत्नी का नाम है जिसने काश्मीर पर चढ़ाई करनेवाले सङ्घबद्ध राजाओं में से तीन को मार्गव्यय के लिये प्रचुर सुवर्ण दिया (८.५४१) । इसका दिया सुवर्ण युद्ध समाप्ति के पूर्व ही समाप्त हो गया और इसकी मृत्यु भी हो गई (८.५५२) ।

२. आसमती, दिद्दारानी का एक दूसरा नाम है (८.२२६) ।

३. आसमती, राजा अवकल्य की एक कन्या का नाम है जो मल्लपुत्र

कल्हण की पत्नी थी। इसने अग्नि में भस्म होकर प्राण त्याग दिया (७.१४८७)।

४. आसमती, जालन्धर नरेश इन्दुचन्द्र की ज्येष्ठ पुत्री का नाम है जिससे रुद्रपाल ने विवाह किया (७.१५१)।

इ

इच्छटि, एक कुल का नाम है जिसमें उत्पन्न नवयुवक उदय ने पृथिवीहर और राज्यसेना के बीच हुये युद्ध में अद्भुत् पराक्रम प्रगट किया (८.७६०)। ८.१०८३ ।

इट्टिल, एक तेजस्वी ब्राह्मण का नाम है (४.६४५)।

इन्दुचन्द्र, जालन्धर नरेश का नाम है (७.१५०)।

इन्दुमणि, एक मणि का नाम है (३.२९६)।

१. इन्दुराज, कुलराज के वंश में उत्पन्न एक सेनापति का नाम है। इसे आभीरों ने घेर लिया, परन्तु बहाना बनाकर यह ध्यानोड्डार के टिक्क की शरण में चला आया (८.१४३१)। यह टिक्क को छोड़कर सुज्जि से जा मिला (८.१४८१)।

२. इन्दुराज, चन्द्रराज के एक श्रेष्ठ सेवक का नाम है जिसने अपने स्वामी के साथ ही वीरगति प्राप्त की (७.१५०२)।

३. इन्दुराज, एक व्यक्ति का नाम, जिसके पुत्र और पौत्र का नाम क्रमशः बुद्धराज और सिद्धराज था (७.२६३)।

इन्द्र = देवराज : ४.१६४, ६४२ ।

इन्द्रजीत, विभीषण के पुत्र का नाम है जिसने ३५ वर्षों तक काश्मीर पर शासन किया (१.१९३)। ८.३४१३ ।

इन्द्रदेवी, राजा मेघवाहन की तृतीय पत्नी का नाम है जिसने इन्द्रदेवी-भवन नामक एक स्तूप का निर्माण कराया (३.१३)।

इन्द्रदेवीभवन, एक स्तूप का नाम है जिसका इन्द्रदेवी ने निर्माण कराया था (३.१३)। यहाँ डामरों ने आग लगा दी (८.११७२)।

इन्द्रद्वादशी—'यस्येन्द्रद्वादशीयुद्धे सान्द्रसैन्योऽपि विद्रुतः', (८.१८२)। 'इन्द्रद्वादशी···शुशुभे', (८.४९५)।

इन्द्राकर, भीमाकर के पुत्र का नाम है जिसे अपनी ओर मिलाकर उदयन नामक कायस्थ मण्डलेश्वर प्रेमा के वध का उपाय करने लगा (८.१८१८)। इसे राजा ने स्वयं विष देकर मार डाला (८.२०१९)।

इरावती, सुश्रवा नाग की पुत्री का नाम है (१.२१८)।

इल्लाराज, एक व्यक्ति का नाम है जिसे गुण भिक्षुक तथा उसके मित्र, ब्राह्मण मनोरथ, ने हर्ष का समाचार दिया। इसने तब उच्चल को यह समाचार बताया (७.१६९४)। कुछ इतिहासकारों के अनुसार भूतिभिश्च कायस्थ ने क्षुद्रभिक्षुक को इसके पास पहुचाया था (७.१६९५)। उच्चल ने अपने गुप्तचरों से इसकी हत्या करा दी (८.४२)।

इष्टिकापथ, एक स्थान का नाम है (३.४६७)।

ई

१. **ईशान,** काश्मीर के एक पवित्र देवालय का नाम है (१.३८)। ३.४४६; ।

२. **ईशान,** मन्त्रि सन्धिमति के एक जितेन्द्रिय गुरु का नाम है जिसने सन्धिमति का दाह-संस्कार करना चाहा परन्तु शव के ललाट के लेख को पढ़कर शव की रक्षा करने लगा। तदनन्तर सन्धिमति के शव को योगिनियों ने पुनरुज्जीवित कर दिया। (२.८२, १०१, ११२)। सन्धिमति (आर्यराज) नित्य इसका दर्शन कर लेने के बाद ही राज्यकार्य करता था (२.१२३)। इसके नाम पर सन्धिमति ने ईशानेश्वर नामक शिवलिङ्ग की स्थापना की (२.१३४)।

ईशानचन्द्र, चंकुण के साले क नाम है जिसने तक्षक नाग की कृपा से सम्पत्ति प्राप्त करके एक विशाल विहार का निर्माण कराया (४.२१६)।

१. **ईशानदेवी,** राजा ललितादित्य की रानी का नाम है (४.२१२)।

२. **ईशानदेवी,** राजा जलौक की रानी का नाम है (१.१२२)।

उ

उग्र, राजा खिङ्खिल के गुरु का नाम है (१. ३४८)।

उग्रेश—शिव : १.३४८।

उच्चल, गुङ्ग के पौत्र और मल्ल के एक पुत्र का नाम है (७.११८३)। इसने ह र्ष के सैनिकों की दुर्दशा से रक्षा करने के लिये अत्यन्त साहसिक प्रयत्न किये (७.११९६)। मन्त्री लक्ष्मीधर ने इसे तथा इसके अनुज को मरवा डालने के लिये राजा हर्ष से निवेदन किया (७.१२४७)। राजा संग्रामपाल, राजा हर्ष के भय को त्यागकर इसका सम्मान करने लगा (७.१२६५)। हर्ष के दूत, ठक्कुर कलशराज ने, राजा संग्रामपाल से, इसका पक्ष लेने के कारण के सम्बन्ध में पूछा (७.१२६८)। संग्रामपाल ने इसे ठक्कुर कलशराज से मिलने के लिये कहा (७.१२७३)। यह जब ठक्कुर कलशराज से मिलने चला तो मार्ग में अनेक अपशकुन हुए (७.१२७५)। यह कलशराज ठक्कुर के

आक्रमण का सामना करने के लिये सन्नद्ध हुआ (७.१२७७)। अपना परिचय देते हुये इसने अपने को मल्ल का पुत्र बताया (७.१२८२-१२८७) :

- नर
  - नरवाहन
    - फुल्ल
      - सातवाहन
        - चन्द
          - चन्दराज
            - गोपाल
            - सिंहराज
              - कान्तिराज
                - जस्सराज
                  - तन्वङ्ग
                  - गुङ्गु
                    - मल्ल
                      - उच्चल
                      - सुस्सल
              - अनेक पुत्र (उदयराज आदि)
              - दिद्दा (काश्मीर के राजा क्षेमगुप्त को विवाहित)
                - संग्रामराज (काश्मीर का राजा) [अनेक पुत्र (उदयराज आदि) और दिद्दा दोनों से जुड़ा]
                  - अनन्तदेव
                    - कलश
                      - हर्ष

हर्ष के सैनिकों की मन्दगति के कारण इसका पैर मजबूत होता गया (७.१३०८)। यह हर्ष के दण्डनायक का पीछा करते-करते तारमूलक तक आ गया (७.१३१४)। 'उच्चल प्रलयाभ्रस्य', (७.१३१५)। इसके मामा, आनन्द, ने डामरों की सेना एकत्र करके मडवराज्य में उत्पात आरम्भ किया (७.१३१७)। इसने विशाल सेना लेकर हर्ष के मण्डलेश्वर को बन्दी बना लिया (७.१३२१)। बन्दी सहेल ने इसे नगर में प्रवेश करने के लिये प्रेरित किया (७.१३२४)। इसकी सेना पराजित हुई (७.१३३५)। जब इसके डामर सैनिक भाग कर राजविहार में छिप गये तो उनके नायक को उच्चल समझ कर राज्य-सैनिकों ने विहार में आग लगा दी (७.१३३६)। जब यह सोमपाल

को साथ लेकर शत्रुओं से युद्ध कर रहा था तब जनकचन्द्र आदि डामरों ने कठिनाई से इसे मृत्यु के मुख से बाहर निकाला (७.१३३८) । इसने पुनः सेना एकत्र करने का निश्चय किया (७.१३४२) । इसकी ओर से ध्यान हटाकर राजा हर्ष ने सुस्सल से युद्ध के लिये सैनिक भेजे (७.१३५४) । जब सुस्सल ने हर्ष के सनिकों को परास्त कर दिया तब तारमूलक में इसका प्रभाव पुनः बढ़ने लगा (७.१३५९) । इससे युद्ध के लिये हर्ष ने मण्डलेश्वर को भेजा (७.१३६१) । यह हर्ष के पराजित मण्डलेश्वर चन्द्रराज को मृत्यु से बचा लेना चाहता था परन्तु इसके सैनिकों, जनकचन्द्र आदि डामरों ने, उसका बध कर दिया (७.१३७५) । जब यह हिरण्यपुर में ही था तभी वहाँ के ब्राह्मणों ने इसका राज्याभिषेक कर दिया (७.१३८५) । हर्ष ने कहा : 'उँगली के पोर के समान अल्पबुद्धि उच्चल ने मुझे मूर्ख सिद्ध कर दिया है' (७.१४२५) । "जय-मती नामक एक कन्या, जिसे काणश्रावती नामक नर्तकी ने पाला था, इससे प्रेम करती थी । कुछ दिनों के बाद वह धन के लोभ से इसे छोड़कर मण्डले-श्वर को प्रेम करने लगी, परन्तु, मण्डलेश्वर की मृत्यु के बाद पुनः इसी से प्रेम करने लगी (७.१४६१-१४६२) । हर्ष का नगराधिकारी, नाग, जो सुस्सल को पराजित कर चुका था, इससे भयभीत नहीं हुआ और युद्ध के लिये आया (७.१५४३) । राजमहल में आग लगाकर यह डामरों के साथ नदी के उस पार चला गया (७.१५८३) । भीमादेव नामक व्यक्ति इसका पक्षपाती था (७.१६२७) । यह जब सूर्यमती के मठ में था तभी इसका भ्राता, सुस्सल, भी लवणोत्स से वहाँ आया (७.१६५८) । इलाराज नामक व्यक्ति ने गुण की कुटी में हर्ष के होने का इसे समाचार दिया (७.१६९४) । हर्ष का कटा मस्तक जब इसके सामने आया तब यह आँखों में आँसू भर कर देर तक रोता रहा और फिर उस मस्तक का दाह-सस्कार कराया (७.१७२५) । हर्ष जैसे चक्रवर्ती का दाह-संस्कार इसकी आज्ञा के बिना नहीं हो पाया यह कितने लज्जा की बात थी (७.१७२६) । यह अपनी उदारतावश राज्य के दस्युओं की उच्छृङ्खलता को सहन कर रहा था (८.१४) । इसने भोज की अल्पायु सन्तान के पालन का भार रानी को सौंप कर राज्यकार्य में मन लगाया (८.१९) । आपसी सङ्घर्ष से दस्युओं का दल राज्य छोड़कर भाग गया और इसकी स्थिति धीरे-धीरे सुधरने लगी (८.३९) । राजा उच्चल के सदाचार रूपी गङ्गाजल में स्नान करने से दुष्ट राजाओं की दूषित वाणियों का पाप दूर हो जाता था (८.४९) । इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि यह पूर्ण निस्पृह था (८.८५) । लोगों ने इससे अपनी पुरी का पुनरुद्धार करने का निवेदन किया (८.११०) । राज्यप्राप्ति के पूर्व इसने जो भली-बुरी बातें

सोची थीं वे इसे विस्मृत नहीं हुईं (८.११९)। जो पहले चन्द्रमा के समान सुखदायी था, वही यह कुछ समय के बाद अत्यन्त भयंकर हो उठा (८.१६२)। इसकी पतित अवस्था का वर्णन (८.१६३ और बाद)। इसकी ओर से आनेवाले महान् संकट से मुक्त होने पर सुस्सल के अन्य छोटे-मोटे संकटाभास अनायास ही समाप्त हो गये (८.२०८)। जिस दिन सुस्सल के घर एक पुत्र का जन्म हुआ उसी दिन से इसके प्रति उसके मन का कोप शान्त हो गया (८.२४१)। इसने अपने पिता की आत्मा के कल्याणार्थ एक मठ बनवाया (८.२४३)। "जब यह कम्बलेश्वर ग्राम के मार्ग से जा रहा था तब मार्ग में शस्त्रधारी चाण्डालों ने इसे घेर कर लूट लिया। इस संघर्ष में यह आहत हो गया और दूसरे दिन ऐसा समाचार फैल गया कि इसकी मृत्यु हो गई (८.२५१-२५४)। सहसा यह समाचार मिला कि यह जीवित है (८.२६८)। शत्रुओं के प्रहारों से इसका प्राणान्त हो गया (८.३२७)। उच्चलानुजम्', (८.४५८)। इसका दर्शन सर्वसाधारण के लिये सुलभ था (८.४९६)। यह घोड़ों का बहुत शौकीन था (८.४९७)। राज्य में शान्ति स्थापित करते-करते इसने दुर्भिक्ष बुला लिया था (८.४९८)। इसके पुत्र, सहस्रमङ्गल, को उसका पालक, गर्ग, राज्यसिंहासन पर बैठाना चाहता था (८.५००)। जब तक यह राजा रहा किसी को प्रजा को त्रस्त करने का साहस नहीं हुआ (८.५६९)। इसकी मृत्यु के पश्चात् जो लोग अपराधी थे उन्हें ही सुस्सल ने अधिकारी बना दिया (८.५७२)। 'विश्वास-निहतान्निन्दन्नुच्चलादीन्पुराऽवसत्', (८.१२७६)। इसकी पुत्री का नाम सौभाग्यलेखा था (८.१४६४)। ८.१९६१, ३३१६ (अविचिन्त्योच्चलक्षोणिभृतः प्राणान्विनश्वरान्), ३४४२, ३४४४, ३४४५।

उज्जयिनो, एक देश का नाम है (३.१२५)।

उज्झटडिम्ब, उस स्थान का नाम है जहाँ से राजा जलौक ने म्लेच्छों को मार भगाया था (१.११६)।

उत्कर्ष, कलश के अल्पायु पुत्र का नाम है जिसे क्षितिराज ने अपने राज्य का उत्तराधिकारी बनाया (७.२५७)। यह लोहर प्रान्त का राजा था, और राजा कलश के यहाँ अतिथि के रूप में आया (७.५८९)। यद्यपि कलश अपने बड़े पुत्र, हर्ष, को राज्य देना चाहता था, तथापि मन्त्रियों की इसमें सहमति न देखकर उसने लोहर प्रान्त से इसे अपने पास बुलवाया (७.७०३)। मरणासन्न राजा कलश, हर्ष को कुछ देने की बात इससे कहना चाहता था परन्तु उसकी जिह्वा जड़ हो गई (७.७१९)। कलश की मृत्यु के बाद कुछ मन्त्री इसका अभिषेक करने की तैयारी करने लगे (७.७२९)। राजा

कलश जितना वेतन हर्ष को देते थे उतना ही वेतन विजयमल्ल को देने की इसने प्रतिज्ञा की (७.७३२)। यद्यपि इसने राजा के रूप में राजधानी में प्रवेश किया तथापि हर्ष को चाहनेवाली प्रजा के हृदय में स्थान नहीं बना सका (७.७३५)। हर्ष को इसके राजधानी में आगमन का समाचार ज्ञात हुआ (७.७४०)। राज्यप्राप्त करने के बाद देवताओं ने इसे उनमत्त जैसा कर दिया (७.७५४)। मन्त्री नोनक के परामर्श के अनुसार इसने हर्ष के वध के लिये लोहर प्रान्त के १६ सशस्त्र सैनिक भेजे (७.७८३)। हर्ष को मारना चाहिये या नहीं इस बात पर यह सेवकों को भिन्न-भिन्न प्रकार के आदेश देता रहा (७.८००)। हर्ष के स्वभाव की मधुरता के कारण इसके भेजे सैनिक इसकी आज्ञा के विपरीत हर्ष के हितैषी बन गये (७.८०६)। एक विश्वस्त व्यक्ति ने इसका और हर्ष का वध करके राजा बन जाने का विजयमल्ल को परामर्श दिया (७.८२१)। विजयसिंह ने इसे बन्दी बना लिया (७.८३२)। इसने कारागार में ही मन्त्रियों से भावी कार्य के सम्बन्ध में परामर्श किया (७.८४३)। इसने आत्महत्या कर ली (७.८५२-८५४)। मृत्यु के समय इसकी अवस्था २४ वर्ष की थी और इसने केवल २२ दिन राज्य किया था (७.८६१)। हर्ष को कन्दर्प के विरोधियों ने बताया कि वह इसके पुत्र को लोहर प्रान्त का राजा बनाना चाहता है (७.१०००)। राजा हर्ष ने इसके ज्येष्ठ पुत्र, डोम्ब, को गुप्त रीति से मरवा डाला (७.१०६८)। लोहर जाते समय सुस्सल ने इसके पुत्र, प्रताप, को भी साथ ले लिया (८.१०)। ८.३४४१।

उत्तमराज—काष्ठावाट के राजा का नाम है जो राजा कलश का अतिथि हुआ (७.५९०)।

उत्तरघोष, एक ग्राम का नाम है (६.२८१)।

उत्तरापथ—'कुन्तवाहिन्य प्रवहन्त्युत्तरापथे', (४.३०६)। 'प्रविवेशाथ पुनरेवोत्तरापथम्', (४.३३७)। ५.१५४, २१५; ७.१४२९; ८.२७६१।

१. उत्पल, राजा चिप्पट जयापीड के एक मामा का नाम है जो राज्यकार्य देखता था (४.६७९)। इसने राज्य के पाँच महान अधिकार अपने पास रखे। (४.६८०)। इसने जयादेवी के पुत्र, अजितापीड, को काश्मीर का राजा बनाया (४.६९०)। इसने उत्पलपुर बसा कर उत्पलस्वामी की स्थापना की (४.६९५)। अजितापीड की मृत्यु के बाद अन्य भ्राताओं के साथ यह २६ वर्ष तक शासन करता रहा (४.७०४)। इसकी मृत्यु के बाद सुखवर्मा ने अजितापीड के पुत्र उत्पलापीड को शासक बनाया (४.७०९)। इसके वंश का उत्कर्ष (४.७१३)। राजा अवन्तिवर्मा की मृत्यु के बाद इसके

वंश के राजा काश्मीर का राज्य प्राप्त करने का प्रयास करने लगे (५.१२७)। ५.४६१; ७.१६४१; ८.१९५२, ३४२७, ३४३०।

२. उत्पल, राजा अनन्तदेव के मित्र, एक आप्त कायस्थ पुरुष, का नाम है जिसने अन्धमठ का निर्माण कराया (७.१४९)।

३. उत्पल खलिहानरक्षक स्थानक नामक एक कुख्यात ग्रामवासी के पुत्र का नाम है जिसे बचपन में डामरों ने चरवाहा बनाकर पाला था। यह टिक्क का सन्देश लेकर राजा सुस्सल के पास गया और उसका विश्वासपात्र बन गया (८.१२४७)। इसने युवराज विजय को टिक्क से मिलाकर प्रचुर धन दिलाया (८.१२५९)। टिक्क आदि सुस्सल के विरोधी इसे सदैव सुस्सल का बध कर देने के लिये प्रेरित करते रहते थे (८.१२७९)। लक्ष्मक के पुत्र श्रृङ्गार ने कुछ विश्वस्त पुरुषों से इसका जघन्य कार्यक्रम सुनकर उससे सुस्सल को अवगत कराया (८.१२८७)। सुस्सल ने श्रृङ्गार की बात को मिथ्या समझ कर इससे वार्तालाप किया (८.१२९०)। इसकी माया से सुस्सल को मोहित देखकर उसके सभी अन्तरङ्ग पार्श्ववर्ती सशंक हो उठे और इसने भी अवसर की प्रतीक्षा में किसी प्रकार दो दिन व्यतीत किये (८.१२९८)। राजा सुस्सल ने इसे अपने पास बुलाया (८.१३००)। टिक्क के अन्य दूतों को यह पता नहीं लग सका कि यह राजा सुस्सल के पास पहुँच चुका है (८.१३०५)। इसने आत्मरक्षा के लिये राजमहल से थोड़ी ही दूर पर डामरों की एक सेना रख छोड़ी थी (८.१३०७)। व्याघ्र ने इसे राजा पर अपना उद्देश्य प्रगट करने का संकेत किया (८.१३११)। इसने सुस्सल पर दूसरी बार वार नहीं किया (८.१३१५)। जब सुस्सल का वध हो जाने पर उसका वृद्ध ताम्बूलदायक जय्यक जाने लगा तब इसने उसकी रक्षा की (८.१३१८)। राजा की सेना के पलायन करने पर इसने साथियों के साथ मण्डप में आकर सुस्सल का मस्तक काट कर अपने साथ ले लिया (८.१३४६)। शूरपुर के द्रङ्गाधिप राजा ने इसका वध कर दिया (८.१५७७)।

उत्पलपुर, एक नगर का नाम है (४.६९५)।

उत्पलस्वामी, एक देवता का नाम है (४.६९५)।

उत्पलाक्ष, राजा सिद्ध के पुत्र का नाम है जो पिता के सदेह स्वर्गलोक चले जाने पर काश्मीर का राजा हुआ और ३० वर्ष ६ मास तक राज्य करता रहा (१.२८६)। ८.३४१४।

उत्पलापीड, अजितापीड के पुत्र का नाम है जिसे सुखवर्मा ने काश्मीर का राजा बनाया (४.७०९)। ३१ वर्ष राज्य करने के बाद इसे पदच्युत

करके एक मंत्री, शूर, ने सुखवर्मा के पुत्र अवन्तिवर्मा को राजा बना दिया (४.७१६) । ८.३४२९ ।

उत्रास, एक ग्राम का नाम है (७.१२५४) ।

१. **उदय,** इच्छिटकुल में उत्पन्न एक नवयुवक का नाम है जिसने पृथिवीहर और राज्यसैनिकों के बीच हुये युद्ध में अद्भुत पराक्रम प्रगट किया (८.७६०) । अन्य राजाओं के साथ मिल कर इसने सुस्सल की ओर से युद्ध करते हुये शत्रुओं को घेर लिया (८.१०८३) । इसने राजा जयसिंह का विश्वास प्राप्त कर लिया जिससे उसने इसे सेनापति बनाया (८.१६००, १६२४) । इसने छलपूर्वक कालियापुत्र प्रकट का वध कर दिया (८.१६५९) । इसने खशों समेत भिक्षाचर से युद्ध आरम्भ कर दिया (८.१६७४) । निर्धन हो जाने पर भी यह राजा जयसिंह का हित करता रहा (८.१९२७) । राजा ने सुज्जि से इससे कार्य भार लेने के लिये कहा (८.१९८५) । यह सुज्जि की सहायता से पुष्कल धन लेकर राजपुरी में अपनी स्थिति सुदृढ़ करने लगा (८.२०४४) । यह मल्लार्जुन को छोड़ कर पुनः राजा जयसिंह के पास आया और उसका प्रेमपात्र बन गया (८.२१९१) । इसके भ्राता का नाम वसन्त था (८.२२३७) । इसे सेनापति बनाया गया (८.२४२०) । इसे चतुष्क से युद्ध करने के लिये भेजा गया (८.२७५८) । 'उदयेन शनैर्नित्ये चतुष्कोऽपि मितोष्मताम्', (८.२८४१) । इसकी पत्नी ने वितस्ता के तट पर एक विहार बनवाया (८.३३५२) ।

२. **उदय,** कलशराज के एक शत्रु का नाम है (७.१२६३) ।

३. **उदय,** राजा जयसिंह के द्वाराधीश, आनन्दवर्धन के पुत्र, का नाम है (८.१८३२) । यह राजा के पास रहा (८.१८४०) । इसने जयसिंह को परामर्श दिया (८.१९७३) । इसने मल्लार्जुन को मिला लिया (८.२२८१) । इसे पुनः द्वाराधीश बनाया गया (८.२३५४) । इसने एक मठ बनवाया (८.२४२१) । इसे लोठन से युद्ध करने के लिये भेजा गया (८.२४८७) । यह राजा जयसिंह के पास लौटा (८.२६६२) । इसे षष्ठ की सहायता के लिये भेजा गया (८.२७८८) । इसने अलङ्कारचक्र को पराजित किया (८.२९३७) । यह एक नेत्र रोग से पीड़ित हुआ (८.२९५२) ।

४. **उदय,** चम्पा एवं बल्लापुर के नरेश का नाम है (८.१०८३) ।

उदयगुप्त, अमृताकर के पुत्र का नाम है जो महिमा के आश्रय में रहने लगा (६.२१९) । इसे रानी दिद्दा के सैनिकों ने बन्दी नहीं बनाया (६.२५२) ।

१. **उदयन,** एक कायस्थ का नाम है जो भीमाकर पुत्र इन्द्राकर आदि

को मिला कर मण्डलेश्वर प्रेमा का वध करने का उपाय सोचने लगा (८.१८१७)। इसने सोमपाल को धन देकर राजा जयसिंह की सहायता के लिये आमन्त्रित किया (८.१८५०) । मल्लार्जुन ने इसकी हत्या कर दी (८.२००४)।

२. उदयन, सल्हण पुत्र भोज के एक सेवक का नाम है (८.२६०१)।

उदयनवत्स, राजा अनन्तदेव के भ्राता का नाम है (७.१७७)।

१. उदयराज, मल्लराज के द्वारपाल का नाम है जो आहत होकर भी अभी मृत्यु को प्राप्त नहीं हुआ था (७.१४८१)।

२. उदयराज, रानी दिद्दा के भ्राता का नाम है (६.२८७)। इसके पुत्र संग्रामराज को दिद्दा रानी ने युवराज बनाया (६.३५५) । दिद्दारानी ने इसके पुत्र, संग्रामराज, को काश्मीर का राजा बनाया (७.१२८५)। हर्ष की मृत्यु के बाद सातवाहन के कुल में उत्पन्न इसके वंश का निवास-स्थान त्याग कर राज्यश्री कान्तिराज के कुल में विराजमान हो गई (७.१७३२)

३. उदयराज, एक व्यक्ति का नाम है जिसे राजा हर्ष ने मंदिरों से धातु-निर्मित मूर्तियों को निकलवाने के लिये देवोत्पाटन नायक बनाया (७.१०९१)। राजा हर्ष ने इसे शिक्षा प्राप्त करने के लिये लक्ष्मीधर के पास भेजा (७.१२१३)। राजा हर्ष ने इसे द्वारपति बनाया (७.१३६१)।

उदयसिंह, एक परम कपटी व्यक्ति का नाम है जिसने युद्ध के लिये उद्यत टुल्ल को भ्रमित किया (७.१०५४)।

उदयसीह, एक व्यक्ति का नाम है जो लोहर प्रान्त का द्वारपति (?) था। इसकी मृत्यु के बाद हर्ष देव ने क्षेमराज के पुत्र, कपिल, को लोहर का द्वारपति बनाया (७.१२९९)।

उदयादित्य, प्रतापादित्यपुत्र तारापीड का दूसरा नाम है (४.४३)।

उदीपपुरबाल, एक ग्राम का नाम है (८.१४१७, १४२२)।

उद्दा, रानी सूर्यमती की एक दासी का नाम है जिसने रानी के सती होने के समय अग्नि में प्रवेश किया (७.४८१)।

उद्भट भट्ट, जयापीड के सभापति का नाम है (४.४९४)। इसके एक वंशज, क्षेमट, ने राजा अनन्तदेव की मृत्यु के बाद वैराग्य ले लिया (७.४८२)। ८.२२२७।

उद्भाण्डपुर, अलखान के संरक्षक, राजा लल्लियशाही की राजधानी का नाम है (५.१५३)। ५.२३२, १०८१।

उन्मत्तावन्ति, पार्थ के पुत्र का नाम है जो चक्रवर्मा की मत्यु के बाद (५.४१४)। इसने उन्मत्त होकर अपने पिता, पार्थ, का सब कुछ छीन लिया

(५.४२८)। ४०१५ लौकिक वर्ष के वैशाखमास में इसकी मृत्यु हुई (५.४४५-४४८)। ८. ३४३५।

उपेन्द्र = विष्णुः ८.१६५२।

१. **उत्प,** एक सदाचारी एवं उच्चकुल में उत्पन्न वीर का नाम है जो गर्ग और लक्कक के युद्ध में मारा गया (८.४५४)।

२. **उत्प,** एक कल्यपाल का नाम है जिसकी रूपवती पुत्री, जयादेवी, को राजा ललितापीड ने अपने अन्तःपुर में रख लिया (४.६७८)।

उमाधर, हर्ष के पक्ष के एक राजा का नाम है (७.१५१२)।

उमापति = (शिवः १.३२)।

उरशा, एक नगर का नाम है: ५.२१७; ७.२२१, ५८५, ५८९; ८.१६, ५७४, ३४०२।

उल्हण, एक मंत्री का नाम है जिसने राजा सुस्सल को बताया कि मल्लकोष्ठ उसकी (सुस्सल की) हत्या करना चाहता है (८.१०४१)। यह सहदेव का पुत्र था (८.२०६६)। इसने सुज्जि के प्रति राजा जयसिंह के मन को विषाक्त कर दिया (८.२०६८)। सञ्जपाल ने राजा जयसिंह से इसके सम्बन्ध में वार्तालाप करते हुये रिल्हण के स्थान पर इसकी नियुक्ति का परामर्श दिया (८.२०९२, २०९७, २०९८)। राजा द्वारा भेजे जाने पर सञ्जपाल ने इस पर आक्रमण करके इसका बध कर दिया (८.२१६३, २१६५)। इसके पुत्र को बन्दी बना लिया गया (८.२१८४)।

ऊ

ऊड, हनुमत् के पिता का नाम है (४.९)।

ए

एकाङ्ग, एक सैनिक संघटन का नाम है (५.२४९, २५०, २५९)। इसने तन्त्रियों और रानी सुगन्धा को वन्दी बना लिया (५.२६१)। पार्थ के समर्थक तन्त्रियों का इनके साथ भीषण युद्ध हुआ (५.२८८, २८९)। ६.९१, १२१, १२४, १३२, १३३; ७.९४, १३५, १५५, १६१, १६२, १६०४।

एरमन्तक, परिहासपुर निवासी एक व्यक्ति का नाम है जो महिमा के आश्रय में रहने लगा (६ २१८)। इसने यशोधर के प्रति दिद्दा के व्यवहार से क्षुब्ध होकर पुनः विद्रोह किया (६.२३८)। विद्रोहियों की पराजय के बाद भी यह कुछ देर तक युद्ध करता रहा (६.२५१)। इसे बन्दी बना कर

और इसके गले में पत्थर बँधवा कर वितस्ता नदी में डुबा दिया गया (६.२५४–२५५)।

एवेनका, एक प्रान्त का नाम है (८.२६९७)।

एषा, एक ओषधि-वृक्ष का नाम है जो अपने आस-पास अन्य वृक्षों की उत्पत्ति को सहन नहीं करता (८.१५६७)।

ऐ

ऐल, उच्चल के एक द्वाराधीश का नाम है जो कंगाल हो गया (८.१८५)।

ओ

ओज, हंस के कुल में उत्पन्न एक राजपुत्र का नाम है जो सुस्सल के पक्ष में सम्मिलित होकर शत्रुओं से युद्ध करने आया (८.१०८४)।

ओजस, एक दरद कोट्टेश का नाम है (८.२८६९)।

ओजःसूह, लोठन के श्वसुर का नाम है जिसे राजा सल्हण ने अपना द्वार-पाल बनाया (८.४२२)। लोहर जाते समय गर्गचन्द्र ने त्रिपुरेश्वर में इसे कैद करके अपने साथ ले लिया (८.४३७)।

ओजानन्द, एक ब्राह्मण का नाम है जिसे अन्य ब्राह्मण मंत्रियों ने उदासीन कर दिया (८.८७९)। इसकी प्रेरणा से गोकुल के मंदिर में रहनेवाले पुजारियों ने अनशन आरम्भ कर दिया (८.९००)। पृथिवीहर ने इसे बन्दी बनाकर सूली पर चढ़वा दिया (८.१०७३)।

ओवनाग्राम, एक ग्राम का नाम है (७.२९५)।

क

कंक, तुङ्ग की हत्या को प्रेरित करनेवाले एक व्यक्ति का नाम है (७.८५)

कंकण, एक आभूषण का नाम है (४.६९; ५.३५९)।

कंस, पूर्वकाल के एक असुर का नाम है जो श्रीकृष्ण का शत्रु था (१.५९)।

कंसारिण = कृष्ण (४.५१०)।

कङ्कणपुर, एक नगर का नाम है (६.३०१)

कङ्कणवर्ष, (कङ्कणों की वर्षा करनेवाला), राजा क्षेमगुप्त की एक उपाधि है (६.१६१, ३०१)।

कच, एक व्यक्ति का नाम है जिसे असुरों ने भस्म कर दिया था (२.९६)।

कच्छगुच्छ, एक प्रकार की घास का नाम है (१.२११)।

कट्टसूर्य, एक योद्धा नाम है जो रड्ड के भ्राताओं और षडयन्त्रकारियों के युद्ध में मारा गया (८.३४५)।

कण्टकोत्स, राजा अभिमन्यु द्वारा ब्राह्मणों को दान किये गये एक अग्रहार का नाम है (१.१७४)।

कतिस्थली, एक ग्राम का नाम है (८.९७५)।

कतीमुष, एक अग्रहार का नाम है जिसे राजा तुञ्जीन ने ब्राह्मणों को दान किया (२.५५)।

१. **कनक,** वज्रेन्द्र के पुत्र और राजा नरेन्द्रादित्य के मंत्री का नाम है (३.३८४)।

२. **कनक**, हलधर के पुत्र का नाम है (७.२८८)।

३. **कनक,** परिहासपुर में उत्पन्न एक प्रसिद्ध गायक का नाम है(७.१०९८)। यह चम्पक का छोटा भाई था और राजा हर्ष का शिष्य बन गया (७.१११७)। यह सुस्सल के प्रतिबन्ध से निकल कर किसी अन्य देश को चला गया और वाराणसी में मृत्यु को प्राप्त हुआ (८.१२,१३)।

४. **कनक,** प्रशस्तकलश के भ्रातृज का नाम है जिसने प्रशस्तकलश की मृत्यु के बाद अपार धन का संग्रह किया (८.५७०)।

कनकवाहिनी, एक नदी का नाम है (१.१५०; ८.३३५६)।

कनिष्क, दामोदर के बाद हुये तीन तुरुष्क राजाओं में से एक का नाम है, जिसने अपने नाम के आधार पर कनिष्कपुर नामक नगर बसाया (१.१६८)।

कनिष्कपुर, एक नगर का नाम है जिसे तुरुष्क राजा कनिष्क ने बसाया था (१.१६८)।

कन्था, एक कवि का नाम है (८.३१३९)।

कन्दराज, सुस्सल के एक अनुगामी का नाम है जो युद्ध के लिये जाते समय सिन्धु नदी में डूब गया (८.११२९)।

कन्दर्पदेव, वराहदेव के भ्राता का नाम है जिसे राजा कलश ने अपना द्वारपति बनाया (७.५७६)। कलश ने इसे लोहर भेजकर भुवनराज को वहाँ से निर्वासित करा दिया (७.५८१)। राजा कलश ने इसे मल्ल के स्थान पर द्वारपति बनाया (७.५९५) रत्नकलश में इसके समान योग्यता नहीं थी (७.६००)। उत्कर्ष ने इसे प्रायः अपने सब अधिकार सौंप दिये (७.७५५)। हर्ष ने इसे द्वाराधिकारी बनाया (७.८८७)। इसने भागते हुये विद्रोही विजयमल्ल का सब ओर से मार्ग अवरुद्ध कर दिया (७.९१२)। यह भुवनराज से युद्ध के लिये आया (७.९६६)। यह विद्रोहियों का दमन करने लगा (७.९६८)। विशेष सूचनाओं के अभाव में इसे लोगों का उलाहना सुनना

ड़ा (७.९७१) इसके धोखे में राजपुरी के सैनिकों ने कुलराज को ार डाला (७.९७६) । यह राजपुरी के महल में प्रविष्ट हुआ ७.९७७) । राजपुरी के सैनिकों ने इस पर आक्रमण कर दिया (७.९८२) । ह शरणागत राजपुरी के राजा से कर लेकर एक मास में काश्मीर लौट आया ७.९९१) । आनन्द इसके विरोधियों का अग्रणी था (७.९९५) । राजा र्ष ने इसे मण्डलेश बनाकर लोहर भेज दिया (७.९९६) । इसके चले जाने र इस पर से राजा की आस्था समाप्त हो गई (७.९९९) । इसके विरोधियों राजा हर्ष को समझाया कि यह उत्कर्ष के पुत्र को लोहर का राजा बनाना ाहता है (७.१०००) । इसे राजा हर्ष की योजना का पता लगा गया था ७.१००२) । हर्ष इस वीर को अपने से श्रेष्ठ समझने लगा (७.११६३) । र्ष ने इसका स्मरण किया (७.१६४१) । राजा उच्चल ने इसे आमन्त्रित कया परन्तु यह अनेक आग्रह पर भी कोई पद ग्रहण करने के लिये सहमत हीं हुआ (८.१८७) ।

कन्दर्पसिंह, तुङ्ग के पुत्र का नाम है जो धन तथा शौर्य के मद से मत्त ोकर राजा के समान व्यवहार करता था (७.७३) । इसकी भार्या, क्षेमा. त्यन्त व्याभिचारिणी थी और नाग के साथ विहार करने लगी (७.१०२) । सने मम्मा नामक वेश्या से विचित्रसिंह नामक पुत्र उत्पन्न किया था ७.१०४) ।

कपटेश्वर, एक स्थान का नाम है (७.१९०) ।

कपित्थ, एक वृक्ष और उसके फल का नाम है (४.२१९,२२०,२२२) ।

१. **कपिल,** क्षेमराज के पुत्र का नाम है जिसे, उदयसिंह की मृत्यु के बाद ाजा हर्ष ने लोहर प्रान्त का द्वारपति बनाया (७.१२९९) । राजा हर्ष ठोकर ाता हुआ आश्रय के लिये इसके द्वार पर आया (७.१६१२) । इसके पुत्र का ाम हर्षट था (८.२०२९) ।

२. **कपिल,** एक राज्यमंत्री का नाम है जिसकी गर्गचन्द्र और सुस्सल के निकों के बीच युद्ध के समय मृत्यु हुई (८.५०७) ।

कपोत, एक पक्षी विशेष का नाम है (२.५०-५२) ।

कबन्ध, एक प्रकार के नर्तक का नाम है (४.५८१) ।

कमलवर्धन, एक कम्पनाधिपति का नाम है (५.४४७) । सामन्तों के साथ ह नगर के पास आया (५.४५१) । इसने बालक शूरवर्मा को परास्त कर दया परन्तु राजगद्दी पर नहीं बैठा (५.४५६) । विप्रों ने इसे ईंट-पत्थरों से ार कर भगा दिया (५.४६४) । यह अपनी पत्नी की शोचनीय अवस्था खकर दुःखी हुआ (५.४६७) । ९.४७९ ।

१. कमला, गौडदेश की एक नर्तकी का नाम है (४.४२४)। राजा जयापीड इसके अतिथि थे (४.४६५)। इसने कमलापुर नामक नगर बसाया (४.४८४)।

२. कमला, राजा जयसिंह की एक पुत्री का नाम है (८.३३८०)।

कमलाकेशव, एक देवता का नाम है (४.२०८)।

कमलापुर, एक नगर का नाम है जिसे कमला नर्तकी ने बसाया था (४.४८४)।

कमलावती, राजा ललितादित्य की एक रानी का नाम है जिसने कमला-हट्ट नामक बाजार बसाकर उसमें कमलाकेशव की प्रतिमा स्थापित की (४.२०८)। इसका पुत्र, कुवलयापीड, काश्मीर का राजा हुआ (४.३७२)।

कमलाहट्ट, रानी कमलावती द्वारा बसाये गये एक बाजार का नाम है (४.२०८)।

कमलिय, टक्कराज्य के लवराज के पुत्र का नाम है जो राजा सुस्सल की सेना का अग्रणी था (८.१०९१)। ८.११८८, २०६२, २०६४, २३१८, ३३४८ और बाद (इसके परिवार की कथा)।

कम्पनाधिप, कम्पनाधिपति, कम्पनाधीश, कम्पनापति, कम्पनेश— सेनानायक की उपाधियाँ हैं : ५.४४७; ६.२२८, २३०, २३३, २३७, २५९; ७.१५४, २६७, ३६५, ३९९, ५७९, ८८७, ९२३, १३१९, १३६२, १३६६; ८.१७७, १८०, ६२७, ६४७, ६५२, ६८५, ६९८, ८६०, ९६०, १०४६, १६२४, १६५९, १६६०, २१९०, २२०५, २४२०, २७५८, २८०७, २८६८, ३३२२।

कम्बलेश्वर, एक ग्राम का नाम है (८.२५१)।

१. कय्य, लाट देश के माण्डलिक, एक राजा का नाम है जिसने कय्य-स्वामी की स्थापना की (४.२०९)। इसने कय्यविहार भी बनवाया (४.२१०)।

२. कय्य, विजय के पिता का नाम है (८.११६०, १२३८, १२८६, १४७९)।

कय्यक, एक द्वाराधिपति का नाम है (६.२८१)।

कय्यविहार, राजा कय्य द्वारा निर्मित कराये गये एक विहार का नाम है (४.२१०)।

कय्यस्वामी, एक देवालय का नाम है (४.२०९)।

कय्या, राजा कलश की एक रखैल का नाम है, जिसने कलश की मृत्यु के बाद सती न हो कर स्त्री जाति को कलंकित कर दिया (७.७२५)। इसके पुत्र,

जयराज, का भी उत्कर्ष ने वेतन निश्चित कर दिया (७.७३३)। कलश की मृत्यु के बाद सती न हो कर यह निन्द्य बन गई (७.८५७)। तन्वङ्ग के पौत्र, टुल्ल, ने कहा था कि जयराज इसके गर्भ से उत्पन्न नहीं है (७.१०३४, १०५८)।

कय्यामन्तक, तुङ्ग के एक पक्षपाती का नाम है जिसका सौतेला भाई, अभिनव, राजसैनिकों के हाथों मारा गया (७.९३)।

करम्भक, एक स्वर्णमुद्रा का नाम है जिसे मातृगुप्त ने प्रचलित किया (३.२५६, २५७)।

करवीर, एक वृक्ष का नाम है : ८.२४२८ (पुष्पाकरप्रणयभूः सुभगा विभूतिरेकस्य हन्त करवीरतरोर्द्रुमेषु। पुष्पाणि यस्य सफलीकुरुते स्वयं तत्प्रादुर्भवत्किमपि लिङ्गमनङ्गशत्रोः ॥)।

कराल, एक नगर का नाम है (१.९७)।

१. कर्ण, महाभारत युद्ध के समय के प्रसिद्ध सूतपुत्र एवं दुर्योधन के सखा का नाम है (७.१५३, ११६८)।

२. कर्ण—'कर्णशूद्रक नामानौ तन्त्रिणौ च सहोदरौ', (८.५०७)।

३. कर्ण, गर्ग के एक अनुगामी का नाम है जिसे राजा सुस्सल ने अपने पक्ष में कर लिया (८.६०३)। जब गर्गपुत्र चतुष्क महल से भागने लगा तब इसने राजा सुस्सल को इसकी सूचना दी (८.६१२)।

कर्णकोष्ठ, मल्लकोष्ठ के पिता का नाम है (८.५१७)।

कर्णप, विपन्न के मंत्री का नाम है जिसने शूरवर्मा के दूसरे पुत्र, सुखवर्मा, को युवराज बनाया (५.१२९)।

कर्णभूति, एक अश्वारोही का नाम है जिसे संदेश लेकर भोगसेन ने सुस्सल के पास भेजा (८.३९४)। राजा सुस्सल ने इसका तथा इसके सौतेले भाई तेजसेन का भी वध करा दिया (८.३९८)।

कर्णश्रीपट—'कर्णश्रीपटमाबध्य स्त्रीराज्यान्निर्जिताद्ध्रतम्। धर्माधिकरणाख्यं च कर्मस्थानं विनिर्ममे ॥', (४.५८८)।

१. कर्णाट, एक देश का नाम है: १.३००; ४.१५१ (कर्णाटः), १५२ (कर्णाटी); ७.६७५, ९२६ (कर्णाटानुगुणष्टङ्कस्ततस्तेन प्रवर्तितः), ९३५, ९३६, १११९ (कर्णाटभर्तुः), ११२४।

२. कर्णाट, एक स्थान का नाम है ८.२४८५, २५२५।

कर्णाह—देखिये **कर्णाट**।

कर्दमराज, फल्गुण के पुत्र का नाम है जो क्षेमगुप्त की अस्थियाँ गङ्गा में प्रवाहित करने गया (६.२००)। ६.३२५, ३४१ (इसका वध)।

कर्पूर, विजयक्षेत्र के एक शरणार्थी का नाम है जिसे कतिस्थली ग्राम में उत्पन्न निर्गुण नामक डामर जला डालने के लिये उद्यत हुआ (८.९७५)।

१. कलश, तुक्कराज के पुत्र का नाम है जिस पर अनन्तदेव ने आक्रमण किया (७.२२०)। यह राजा कलश (अनन्तदेव के पुत्र) का अतिथि हुआ (७.५८८)।

२. कलश, राजा अनन्तदेव के पुत्र का नाम है (७.२३१)। इसका राज्याभिषेक (७.२३३)। हलधर के परामर्श पर राजा अनन्तदेव ने इसे अधिकारों से वंचित कर दिया जिससे यह नाम-मात्र का राजा रह गया (७.२४४, २४५)। क्षितिराज ने इसके अल्पायु पुत्र, उत्कर्ष, को अपने राज्य का उत्तराधिकारी बनाया (७.२५६)। सेवकों ने इसका हृदय कलुषित कर दिया (७.२७३)। 'दोषानपि गुणान्मेने कलशः कलुषीकृतः', (७.३०३)। जब चौर्यसुरत के लिये जिन्दुराज के घर में घुसते समय यह पकड़ा गया तब इसका परिचय देकर साथियों ने इसकी रक्षा की (७.३११)। प्रातःकाल इसके पिता ने इसे बुलाया (७.३२०)। जब यह अनन्तदेव के समक्ष आया उस समय रानी सूर्यमती वहाँ नहीं थीं अन्यथा इसका वध या बन्धन हुये विना नहीं रहता (७.३३०)। बिज्ज ने इसे इसकी रानी के महल में पहुँचा दिया (७.३३१)। 'कलशास्तु गते राज्ञि प्राप्त वीतवसुं महीम्', (७.३६२)। जब इसका पुत्र हर्ष राजा अनन्तदेव के पास पहुँच गया तो यह भयसीत हो उठा (७.३९६)। यह कुछ समय तक अपनी माता के मतानुसार चलता रहा (७.३९८)। 'कलशादेशाद्वियासोः कम्पनापतेः', (७.३९९)। यह महामंत्री प्रशस्त का पुत्र था, जिसे रानी सूर्यमती ने ले लिया था (७.४३८)। जब अपने पति के शव के साथ रानी सूर्यमती श्मशान पहुँची तो वहाँ वह इसके आगमन की आशा करने लगी (७.४६९, ४७०)। प्रजाजनों के पुण्योदय से इसकी बुद्धि पिता के समान उदार हो चली (७.५०६)। 'कार्यमर्मज्ञः प्राज्ञः कलशभूपतिः' (७.५४१)। बिज्ज का इसके प्रति आदर भाव बना रहा (७.५६१)। 'कलशगज्जाख्यं कर्मस्थानं विनिर्ममे', (७.५७०)। इसके नगर में ४१६३ लौकिक वर्ष में एक साथ आठ राजा अतिथि होकर आये (७.५८७)। यह उनचास वर्ष की अवस्था में ४१६५ लौकिक वर्ष की मार्गशीर्ष शुक्ला षष्ठी को स्वर्गवासी हुआ (७.७२३)। इसके द्वारा पद्मश्री से उत्पन्न पुत्र विजयमल्ल इसकी मृत्यु के बाद इसके एक अन्य पुत्र, उत्कर्ष, से झगड़ने लगा (७.७३१)। इसके राज्य में कवि बिल्हण काश्मीर छोड़कर चला गया था (७.९३५)। 'राज्ये कलशदेवस्य', (७.१०८२)। 'तस्यापि शीलवैकल्यं तावत्सर्वत्र पप्रथे। यावत्कलशभूपालात्संजातस्योपपद्यते ॥', (७.११४६)।

'कलशक्ष्माभुजा', (७.११७३)। इसके पिता का नाम अनन्तदेव था (७.१२८६)। इसके हर्ष आदि पुत्र उत्पन्न हुये (७.१२८७)। ८.१५३, २०९, १९५९, ३३६४, ३४४०।

३. कलश, राजा सुस्सल की सेना के एक वीर का नाम है (८.१०९०)। यह हिल्ला का पुत्र था (८.२१५७)।

कलशगंज, राजा कलश द्वारा स्थापित एक कचहरी का नाम है (७.५७०)।

कलशपुर, एक स्थान (?) का नाम है (७.१५२५)।

१. कलशराज, लोहर प्रान्त के निवासी, एक वीर ठक्कुर, का नाम है जिसे राजा हर्ष ने धम्मट का वध करने के लिये नियुक्त किया (७.१०४०)। यह अपने दो पुत्रों को साथ लेकर धम्मट का वध करने चला (७.१०४५)। इसे तथा इसके पुत्रों को अपने पास देखकर धम्मट सशंक हो उठा (७.१०४७)। धम्मट ज्योंही अपनी तलवार निकालने का प्रयास करने लगा त्योंही इसने तथा इसके पुत्रों ने धम्मट पर प्रहार कर दिया (७.१०४८)। धम्मट ने भी इसके पुत्र पर प्रहार किया परन्तु वह आहत नहीं हुआ (७.१०५०)। हर्ष ने इसे बन्दी बनाकर लक्ष्मीधर मंत्री के घर में कैद कर दिया (७.१२१२)।

२. कलशराज, एक ठक्कुर का नाम है जिसे पुष्कल धन देकर राजा हर्ष ने राजपुरी भेजा (७.१२६७)। संग्रामपाल ने इसकी बात मानकर इसे विदा किया (७.१२७३)। इसने उच्चल पर आक्रमण किया (७.१२७६)। संग्रामपाल ने मध्यस्थ बनकर उच्चल और इसके संघर्ष को शान्त किया (७.१२७८)। यह क्रुद्ध उच्चल की ओर देखने का साहस नहीं कर पा रहा था (७.१२८०)। इसके सैनिकों ने उच्चल पर आक्रमण कर दिया (७.१२९४)।

कलशेश्वर, एक शिव मन्दिर का नाम है : ७.५२७, ५२८, १०७३, १०७७।

कलि, चतुर्थ युग का नाम है : १.४४, ४८, ५०; ४.४५, ८५, १०१, ११७ (कलिनृपावली), ३०९ (कलेर्वाऽयं प्रभावः); ७.१४१७; ८.२२३८, ३२७७ ३४०७।

कलिङ्ग, एक देश का नाम है (४.१४७)।

कल्पद्रुम, एक दिव्य वृक्ष का नाम है (३.६४)।

कल्यपाल, एक जाति (कलवार) का नाम है : ४.६७७. ६७८; ५.२०६।

१. कल्याण, राजा चिप्पट जयापीड के एक मामा का नाम है जो राज्य-

कार्य देखता था (४.६७९)। इसने कल्याणस्वामी की स्थापना की (४.६९७)।

२. कल्याण, धन्य के भतीजे का नाम है। धन्य ने इसे सेनाभंग के कार्य पर नियुक्त किया (८.२६०५)।

कल्याणचन्द्र, गर्गचन्द्र के पुत्र का नाम है जो अट्टिलिकापुरी के आस-पास मृगया आदि के अवसरों पर विभिन्न प्रकार के उत्पात मचाकर लोगों को त्रस्त करता था (८.५८२)। यह संग्राममठ के पास एक महल में रहता था (८.६०९)। राजा सुस्सल ने इसका भ्राताओं तथा पिता सहित वध करा दिया (८.६१५)।

कल्याणदेवी, गौडदेश के राजा जयन्त की पुत्री का नाम है। जयन्त ने राजा जयापीड के साथ इसका विवाह करने की इच्छा प्रगट की (४.४६२)। राजा जयन्त ने जयापीड के साथ इसका विवाह किया (४.४६७)। जहाँ जज्ज की मृत्यु हो जाने से इसके पति, जयापीड, का कल्याण हुआ था वहाँ इसने कल्याणपुर नगर बसाया (४.४८३)। इसकी उदारता से प्रसन्न होकर राजा जयापीड ने इसे महाप्रतीहारपीठ का अधिकार दिया (४.४८५)। जयापीड द्वारा इसके गर्भ से उत्पन्न पुत्र, संग्रामपीड काश्मीर का राजा हुआ (४.६७४)।

कल्याणपुर, एक स्थान का नाम है (४.४८३)। यहाँ पिम्मलादेवी का मन्दिर स्थित था (७.११२४)। ८.११३५, १२६१, १२६३, २३४८, २८१४।

१. कल्याणराज, एक ब्राह्मण योद्धा का नाम है जिसकी युद्ध में मृत्यु हुई (८.१०७१)।

२. कल्याणराज, कुलराज के भ्राता का नाम है (८.२११५)।

कल्याणवाड, एक डामर का नाम है जिसे राजा सुस्सल ने, राजधानी छोड़ने के पश्चात्, अपने पास बुलाया (८.८२४)। रिल्हण ने इसे जीत लिया (८.१००५)।

कल्याणस्वामी, एक देवता का नाम है (४.६९७)।

१. कल्लट—राजा जयन्त ने अपनी प्रजा को बताया कि जयापीड इस समय अपना नाम राजकुमार कल्लट बताते हैं (४.४६२)।

२. कल्लट, राजा अवन्तिवर्मा के शासनकाल में अवतीर्ण एक सिद्ध पुरुष का नाम है (५.६६)।

कल्लन, रानी सूर्यमती के छोटे भ्राता, आशाचन्द्र, का दूसरा नाम है (७.१८२)।

कल्लना, राजा कलश के पिता की बहन का नाम है जिसके साथ कलश ने व्यभिचार किया (७.२९३)।

कल्ह, कालिञ्जर के राजा का नाम है (७.१२५६)। इससे राजा सुस्सल ने कुछ घोड़े प्राप्त किये (७.१३५०) । इसकी पौत्री सुस्सल को विवाहित थी (८.२०४) । यह सुस्सल की सेवा करने लगा (८.५१९) । इसने सुस्सल को गर्गचन्द्र का मूलोच्छेद करने का परामर्श दिया (८.५८१) । इसकी माता, मल्ला, की मृत्यु हो जाने से सुस्सल को दुःख हुआ (८.६१८) । कालिञ्जर का राजा पद्मरथ अपनी पुरानी मैत्री का स्मरण करके इसको साथ लेकर सुस्सल की सहायता के लिये आया (८.९१५) । जब विजयी सुस्सल काश्मीर में प्रविष्ट होने लगा तब यह सैनिकों के साथ उसके आगे-आगे चला (८.९२६) ।

कल्हण, सहदेव के पुत्र का नाम है (८.९२६) ।

कल्हणिका, राजा जयसिंह की महारानी का नाम है (८.१६४८) । भोज ने इसे अपना मध्यस्थ बनाया (८.३०६९) । भोज ने इसे तारमूलक भेजा (८.३०९७) । इसने भोज का स्वागत किया (८.३२४४) ।

कश्मीर (**काश्मीर** भी), भारत के एक देश का नाम है जहाँ के राजाओं के चरित्र का राजतरङ्गिणी में वर्णन है (१.२५-२७) । यहाँ के नागों का उल्लेख (१.२८-३१) । यहाँ के प्रसिद्ध तीर्थ (१.३२-३८) । पुण्यबल से ही इस प्रदेश पर विजय प्राप्त की जा सकती है शस्त्र-बल से नहीं, अतः यहाँ के निवासी केवल परलोक से ही भयभीत होते हैं शत्रु से नहीं (१.३९) । यहाँ की ग्रीष्म ऋतु भी शीतल होती है (१.४१) । यहाँ के दुर्लभ फल (१.४२) । 'कश्मीरान्गोनन्दाद्याः कलौ युगे', (१.४८) । १.६३ (काश्मीरीको राजा), ७२ (कश्मीराः पार्वती), ८२ (काश्मीरिको राजा), १७१, १९५, ३०२; २.१३६, १३७-१४१ (यहाँ की ऋतुयें), १४५ (कश्मीरेन्द्र); ३.१८६ (काश्मीरमण्डलम्), २२८ (काश्मीरिकान्), ३६६ (काश्मीरिको), ४८० (काश्मीरिकनिवासाय कालम्वाख्यो जनाश्रयः); ४.२३७ (कश्मीरेषु), ३२५ (कश्मीरान्संप्रविश्य), ४१०, ५४७ (काश्मीरिको राजा) ५५३ (काश्मीरमण्डले), ५९१ (कश्मीरान्स भूपैः); ५.११७; ६.२५४, ३१९, ३३५, ३४९; ७.१७५ (काश्मीरभूपतिः), २६१, ५७५, ९३५ (कश्मीरेभ्यो), ९७९ (काश्मीरिकाणाम्), १००८ (वही), ११८१ (काश्मीरिकाः), १२६१, १२६९ (काश्मीरभूपानाम्) १९८९, १३०१ (काश्मीरानामिषाकांक्षी); ८.७३, २१८, ४१२, ४५०,५२०, ८३७, ८८७, ९२२, ९२३, ९२५, ९५९, १०७८, १०७९, ११४८, १४६९, १५९७, १६४३, १६६१, १८२०, १८६३-१८६५ (काश्मीरकाः), १८६८, १९००, १९०२, १९२५, १९९२, १९९६, २४४५, २४५९, २७६७, ३३४७, ३३९० (उपमन्योरुदन्याया दारिद्रचोपद्रवापहः । रुद्रो रुद्रेश्वरो नाम्ना श्रीमान्कश्मीरभूषणम् ।।), ३४०७ ।

कश्यप, एक प्राचीन ऋषि और प्रजापति का नाम है जिन्होंने सप्तम मन्वन्तर में ब्रह्मा आदि देवताओं द्वारा सतीसर में निवास करनेवाले जलोद्भव नामक असुर का वध कराकर काश्मीर की स्थापना की (१.२६-२७)। अपने पिता, कश्यप, के द्वारा निर्मित काश्मीर में सूर्य ग्रीष्मकाल में भी अपनी तीव्रता प्रगट नहीं करते (१.४५)। काश्मीर काश्यपों की भूमि है (१.४५)। पूर्वकाल में इन्होंने ही लुप्त वितस्ता नदी को काश्मीर में पुनः प्रगट किया था (४.४८६)। ५.११३।

कश्यपागार, एक स्थान का नाम है (८.३३५७)।

कस्तूरीमृग, एक प्रकार के मृग का नाम है (४.१७०)।

१. **काक,** पक्षियों की एक जाति का नाम है (१.२९१)।

२. **काक,** वैद्यकुल में जायमान एक वीर का नाम है जिसने हर्ष की ओर से युद्ध करते हुये उच्चल की प्रगति को रोका (७.१३११)। इसके वंश में जायमान, तिलक, उच्चल का सेनापति था (८.१८०)। इसके वंशजों का सम्बन्धी यशोराज राजा सुस्सल द्वारा निर्वासित होकर उच्चलतनय, सहस्रमंगल के पास चला गया (८.५३४)। 'काकवंश्यस्तु तिलकः क्ष्माभुजा दत्तकम्पनः', (८.५७५)। 'काकवंशाश्रयः', (८.५७७)। 'काकवंश्याः', (८.१०७९)। 'त्र्यानन्दः काककुलजो लोष्टशाह्यनलादयः', (८.११०२)। 'काककुलोद्भवम्··· शोभकम्', (८.१२६२)। 'काकात्मजेनेति तिलकेनाभ्यधीयत', (८.१३८५)।

काकपद, किसी छूटी हुई बात का संकेत करने के लिये प्रयुक्त चिह्न का नाम है (४.११७)।

काकरुह, शमाला के एक ग्राम का नाम है (८.१२६४, १५२५)।

काकुत्स्थ, एक पौराणिक राजा (श्री राम) का नाम है (४.६७; ८.२९७६, ३१५९)।

काणश्रावती, एक नर्तकी का नाम है जिसने अज्ञात कुलवाली एक बालिका, जयमती, को पुत्री के समान पाला था (७.१४६०)।

काण्डिलेत्र, एक ग्राम का नाम है (८.९२९)।

कादम्बरी—'कादम्बरीपताकाख्ये द्वे अश्वे पीतपाण्डुरे', (८.१०१५)।

कान्तिराज, दिद्दारानी के दूसरे भ्राता का नाम है (७.१२८५)। हर्ष की मृत्यु के पश्चात्, सातवाहन के वंश में उत्पन्न उदयराज के वंश का निवास स्थान त्यागकर राज्यश्री इसके कुल में आकर विराजमान हो गई (७.१७३२)। 'श्रीकान्तिराजविपुलाभिजनाब्धिमध्यं विश्रान्तये विशति राजतरङ्गिणीयम् ॥', (८.३४४९)।

कान्देश, काश्मीर के सीमावर्ती एक देश का नाम है जहाँ का राजा,

गाम्भीरसिंह, राजा कलश का अतिथि होकर आया (७.५९०)। 'कान्दमार्गेण', (८.५३६)। इस देश का प्रधान (८.१३४५)।

कान्दराज, एक राजा, और सुस्सल के मित्र का नाम है जिसकी, सुस्सल की सेना के साथ सिन्धु पार करते समय जल में डूब जाने से मृत्यु हो गई (८.११२९)।

कान्यकुब्ज, एक देश का नाम है जिसे राजा जलौक ने विजित किया (१.११७)। 'कान्यकुब्जेन्द्र', (४.१३५)। 'कान्यकुब्जोर्वी', (४.१४५, १८७)। 'कान्यकुब्जमहीभुजः', (४.४७१)। ५.२६६; ७.२३७; ८.२०५२ (कान्यकुब्जगौडादिमण्डलेषु), २४५३।

कामदेव, यशस्कर के पितामह और वीरदेव के पुत्र का नाम है (५.४६९)। रड्ड और नगरपाल छुड्ड आदि इसी के कुल में उत्पन्न हुये थें (८.२५६)।

कामधेनु : ८.२८६३।

काम्बुव, एक निरीक्षण केन्द्र का नाम है जो अब शूरपुर में स्थित है (३.२२७)।

काम्बोज, एक देश का नाम है (४.१६५)।

कारण्डव, एक पक्षी का नाम है : ८.३१३२।

कार्कोट, एक नाग का नाम है (३.४९०)। इसका पुत्र, दुर्लभवर्धन, काश्मीर का राजा हुआ (३.५२९)। काश्मीर की भूमि ने गोनन्दवंश को छोड़कर कार्कोटक नागवंश को अपना आश्रय बनाया (३.५३०)। इसके वंश के राजाओं की समाप्ति (४.७१३)।

कार्कोटद्रङ्ग, एक निरीक्षण गृह का नाम है (८.१५९६, १९९७)।

कार्तवीर्य, एक प्राचीन का राजा का नाम है (४.१०७)।

कार्तिक, एक मास का नाम है (८.१२६०)।

कार्तिकेय, एक देवता का नाम है (४.४२२)।

कालगण्डिका, नेपाल की एक नदी का नाम है (४.५६६, ५५५)।

कालपाश, भीमादेव के एक अनुचर का नाम है। इसके पुत्र अर्जुन ने भीमादेव की ओर से युद्ध करते हुये जनकचन्द्र का अङ्ग छिन्न-भिन्न कर दिया (८.२९)।

कालम्बी, एक जनपद का नाम है (३.४८०)।

कालागुरु, एक प्रकार के सुगन्धित पदार्थ (अगुरु) का नाम है (४.१७१; ८.१४७१)।

कालिका, एक नदी का नाम है (४.१४५)।

कालिञ्जर, एक स्थान का नाम है (७.१२५६) । यहाँ के राजा का नाम कल्ह था (८.२०४) । इस देश के राजा कल्हण की माता, मल्ला, की मृत्यु से राजा सुस्सल को अत्यन्त दुःख हुआ (८.६१८) । 'पद्मरथो नाम राजा कालिञ्जरेश्वरः', (८.९१५) ।

कालिन्दी = यमुना (१.६०; ३.३२७) ।

१. **कालिय,** एक प्रसिद्ध नाग का नाम है (५.११४) ।

२. **कालिय,** मडवराज्य के एक उपद्रवी डामर का नाम है जिसे उच्चल ने सूली पर चढ़वा दिया (८.४१) । इसके पुत्र का नाम प्रकट था (८. १६५९) ।

काली, एक भगवती का नाम है (८.३२७; ३३३) ।

कालेनक, एक स्थान का नाम है (८.१८७६)।

कावेरी, दक्षिण की एक नदी का नाम है (४.१५५) ।

काव्यदेवी, राजमंत्री शूर की पत्नी का नाम है जिसने सुरेश्वरी क्षेत्र में काव्यदेवीश्वर नामक शिव की स्थापना की (५.४१) ।

काश्मीर—देखिये **कश्मीर** ।

काश्यप : १.१८२ । देखिये **कश्यप** भी ।

१. **काष्ठवाट,** काश्मीर के एक स्थान का नाम है (६.२०२; ८.३९०, ४६८) ।

२. **काष्ठवाट,** एक स्थान का नाम है जहाँ का राजा उत्तमराज, राजा कलश का अतिथि हुआ (७.५९०) ।

काष्ठील, एक स्थान का नाम है (८.११६९) ।

काहला-कांस्यताल, एक प्रकार के वाद्ययंत्र का नाम है (५.४६५) ।

किंनर, विभीषण द्वितीय के पुत्र का नाम है जो अपने पिता के बाद काश्मीर का राजा हुआ (१.१९७)। इसने नरपुर नामक नगर बसाया (१.२०१) । इसका नागों से वैमनस्य हुआ जिसके फलस्वरूप नागों ने इसका विनाश कर दिया (१.२५०, २७३, २८३) । देखिये **नर** भी ।

किंनरग्राम, एक स्थान का नाम है (१.१९९) ।

किंनरपुर, राजा नर द्वारा बसाये गये एक नगर का नाम है (१.२७४) । देखिये **नरपुर** भी ।

किन्नर, अर्धदेवताओं के एक वर्ग का नाम है (१.१९७) ।

१. **किरात,** एक वन का नाम है (८.३५८)।

२. **किरात,** एक जाति के लोगों का नाम है (३.३९, ५२) ।

कीर्ति, न्यव्वपुर के राजा का नाम है जो राजा कलश के अतिथि होकर आये (७.५८८) ।

कीर्तिराज, नीलपुर के राजा का नाम है जिसकी पुत्री, भुवनमती, से कलश का विवाह हुआ (७.५८२)।

कुट्टनीमत, एक कामशास्त्रीय ग्रन्थ का नाम है जिसका रचयिता, दामोदर गुप्त, राजा वलि के यहाँ शुक्राचार्य के समान, सम्मानित था (४.४९६)।

कुन्तवाहिनी—महाराज ललितादित्य ने अपने उपयोग के लिये मार्ग में जिन-जिन नदियों को उत्पन्न किया था उन उत्तरापथ में विद्यमान नदियों को कुन्तवाहिनी कहते हैं (४.३०६)।

कुबेर, धन के अधिष्ठाता का नाम है (१.१५६; ७.१४१७)।

कुमारपाल, राजा सुस्सल के पिता के मामा के पुत्र का नाम है जिससे सुस्सल पुत्रवत् प्रेम करता था (८.५४६)। वल्लापुर के राजा पद्मक ने इसके साथ अपनी पुत्री का विवाह कर दिया (८.५४७)।

कुमारसेन, प्रवरसेन के पुत्र और राजा युधिष्ठिर द्वितीय के एक मन्त्री का नाम है (३.३८२)।

कुमारिय, मधु के पौत्र का नाम है जो भिक्षाचर का अनुगामी था (८.१७५१)। वाण लगने से आहत होकर यह भिक्षाचर के चरणों के समीप आ गिरा (८.१७५८, १७६५)। इसके शौर्य का उल्लेख ८.१७७१।

कुमुद, राजा अवन्तिवर्मा (पार्थपुत्र) के एक मंत्री का नाम है (५.४२३)। यह राजा का प्रियपात्र था (५.४३४)।

कुमुदलेखा, मल्ल की, राजकुल में उत्पन्न पत्नी का नाम है जो मल्ल की मत्यु के बाद सती हो गई (७.१४८६)।

कुम्भ, यज्ञ आदि में प्रयुक्त पात्र को कहते हैं (४.१८, ६९९)।

कुम्भदास, जल पिलानेवाले (?) के लिये प्रयुक्त हुआ है (३.४५६)। ८.१७२७ (कुम्भदासी)।

कुम्भयोनि = महर्षि अगस्त्य (२.३२५)।

कुय्य, एक पालकी-वाहक का नाम है (६.२६४)।

कुरर, एक पक्षी-विशेष का नाम है (८.२७५०)।

कुरु = कौरव : 'कुरुपाण्डवाः' (१.५१)। 'कुरुपाण्डवैः' (१.८२)। ४.१७५ (कुरवो); ८.३३५ (कुरुपतिः), १२८९, २३०६।

कुरुक्षेत्र, एक स्थान का नाम है। पाँच राजा आपस में मिल कर काश्मीर पर आकमण करने के लिये यहाँ एकत्र हुये (८.५४०)। सूर्यग्रहण के समय कोष्ठेश्वर यहाँ आया (८.२२२०)।

कुरुहार—कुशेशयाक्ष ने ब्राह्मणों को इस नाम का आग्रहार दान में दिया (१.८८)।

१. कुलराज, बुद्धराज के कुल में उत्पन्न एक सेनापति का नाम है जो कन्दर्पदेव के साथ राजपुरी में प्रविष्ट हुआ (८.९७५)। इन्दुराज सेनापति इसी (?) के वंश में उत्पन्न हुआ था (८.१४३१)।

२. कुलराज, एक व्यायामविद्या में पराङ्गत सेनानी का नाम है (८. २११६)। यह राजा जयसिंह के पास आया (८.२१२३)। इसने सुज्जि के बाँये पार्श्व में छुरा भोंक दिया (८.२१३९)। सुज्जि की हत्या करने के बाद यह अन्य घातकों के साथ राजा जयसिंह के पास आया (८.२१६१)। राजा जयसिंह ने इसे नगर का मुख्य अधिकारी बनाया (८.२१९०)। इसके चचेरे भाई भि:खराज ने कोष्ठेश्वर के गले के पृष्ठ भाग पर प्रहार किया (८.२३१५)। ८.२३२१, २३२५, २३२८, ३३३४-३३४१ (इसकी शासन-व्यवस्था)।

कुवलयादित्य, (**कुवलयापीड** भी), राजा ललितादित्य के ज्येष्ठ पुत्र का नाम है (४.३५५)। देखिये **कुवलयापीड़**।

कुवलयापीड, (**कुवलयादित्य** भी) ललितादित्य के ज्येष्ठ पुत्र का नाम है। राजा ललितादित्य की मृत्यु का अनुमान करके मन्त्री चङ्कुण ने इसका अभिषेक करने की घोषणा की (४.३६१-३६२)। यह राजा बना (४. ३७२)। इसने लोभी मुसाहबों के धनार्जन के कुचक्र तथा अपने भ्राता के प्रभाव को समूल नष्ट कर दिया (४.३७६)। यह शान्ति प्राप्त करने के लिये राज्य त्याग कर प्लक्षप्रस्रवण तीर्थ में आया (४.३८७)। इसने एक वर्ष १५ दिन राज्य करने के बाद मुक्ति मार्ग का आश्रय लिया (४.३९२)। ८.३४२४। देखिये **कुवलयादित्य** भी।

कुश, राजा लव के पुत्र का नाम है जो अपने पिता के बाद काश्मीर का राजा बना (१.८८)। ८.३४०९।

कुशलश्री, एक भिक्षुक का नाम है (७.१०९८)।

कृकाटिका = ग्रीवा का पृष्ठ भाग (८.२३१७)।

कृतमन्दार, राजमन्त्री शूर के आश्रित, एक बन्दी का नाम है जो राजा अवन्तिवर्मा की सभा में आर्या का पाठ किया करता था (५.३५)।

कृययुग = सत्ययुग (४.१०९)।

कृत्तिका, लोकालोक पर्वत के समीप निवास करनेवाली एक कृत्या का नाम है जो बोधिसत्व की सेवा करती थी (१.१३७)। 'कृत्यादेवी तिरोदधे', (१.१४६)। राजा जलौक ने कृत्याश्रम में विहार बनवाकर इसकी आराधना आरम्भ की (१.१४७)।

कृपाचार्य, कौरवों के आचार्य, द्रोण, के साले का नाम है (८.१३५५)।

कृष्ण, विष्णु के एक अवतार का नाम है (१.७०; २.९५) ।

कृष्णा, एक नदी का नाम है (७.५८६) । 'सरितं खङ्गवल्लीं च कृष्णाम्', (८.३४०१) ।

केतु, एक ग्रह का नाम है (८.११७९, २४५०, २४९८) ।

केयूर = एक अलङ्कार (५.३५९) ।

१. **केशव,** काश्मीर में स्थित विष्णु के एक पवित्र देवालय का नाम (१.३८) । ४.१८३, ५०८ (इनका मन्दिर जयपुर में स्थित था) ।

२. **केशव,** एज देवता का नाम है जिनकी मूर्ति श्रीराम और लक्ष्मण ने स्थापित की थी (४.२७७) । 'केशवं चतुरात्मानम्', (५.२५) ।

३. **केशव,** त्रिगर्त देश के एक ब्राह्मण का नाम है जो काश्मीर का मंत्री बना (७.२०४) ।

४. **केशव,** लोठिकामठ के मठाधीश का नाम है (८.४३५) । यह लक्कक के पीछे-पीछे उसके शत्रुओं से युद्ध करता चल रहा था (८.४६९) ।

केशी, कर्णाट देश के एक निवासी का नाम है जिसकी शत्रुओं के हाथों मृत्यु हुई (७.६७५) ।

केसर, कश्मीर में होनेवाले एक प्रकार के पुष्प के पराग का नाम है (४.१७०)

कैटभ, एक प्राचीन असुर का नाम है जिसका भगवान् विष्णु ने वध किया था (१.२६२) । ८.३३७० (कैटभरिपु अर्थात् विष्णु) ।

कैटभरिपु = विष्णु (८.३३७०) ।

कैलास, शिव की निवासभूमि, एक पर्वत शिखर का नाम है : १.५७; ३.३७५; ८.२३७९ ।

कोष्ठेश्वर (कोष्ठ, कोष्ठक भी), पृथ्वीहर के पुत्र का नाम है (८.१२६१) । ८.१३९०, १४४७, १५०६, १५१३, १५२०, १५२४, १५२७ (कुलटा-पुत्र होने के कारण यह भिक्षु के चले जाने पर उसकी पत्नी को प्राप्त करने की इच्छा करने लगा), १५३७ (औदार्याकारतारुण्यवेषसौन्दर्यमन्दिरम् । कोष्ठेश्वरोऽधिकं स्त्रीणां प्रययौ प्रेक्षणीयताम् ।।), १५८४, (यह राजा जयसिंह से वैर करने लगा), १५८७ (इसके बुलाने पर भिक्षाचार पुनः काश्मीर लौटा), १५९५, १६४० (इसके जैसा शत्रु भी राजा जयसिंह का अन्तरंग बन गया), १६८२ (इसने यह विचार करके राजा जयसिंह का प्रस्ताव मान लिया कि इस प्रकार यह भिक्षाचर को मुक्त करा लेगा), १६८७ (इसकी मूर्खता से भिक्षाचर, लवन्यों, तथा स्वयं इसका भी, विनाश निकट आ गया); १६८९ (इसने डामरों को सान्त्वना देने का प्रयास किया), १६९१, १६९५

टिक्क और लक्ष्मक प्रतीहार में हुई मित्रता को देखकर इसने अपने और भिक्षु आदि के विनाश को समीप देखा), १६९७, १७०१, १७०७, १७३० (?), १७३७, १९६७, १९६९, १९७१, २००३ (कोष्ठक:), २००४ (कोष्ठक:), २००६, २०१४ (इसने मल्लार्जुन को निकम्मा बना दिया), २०२० (जयसिंह ने इससे सन्धि कर ली), २०२१, २०४२ (यह राजा पर विश्वास नहीं करता था), २०८०, (यह सुज्जि का मित्र बनकर राजा जयसिंह से द्रोह करने लगा), २०९४ (कोष्ठकम्), २१८२, २१९६ (यह भागकर हडिग्राम आया) २१९९ (राजा जयसिंह ने इसके वध का प्रयास किया), २२१२ (सैनिकों में फूट पड़ जाने से यह पलायन करने के लिये विवश हुआ), २२१९ (यह गंगास्नान से लौटा और मल्लार्जुन के साथ द्वैराज्य स्थापित करने का प्रयास करने लगा), २२२३ (कोष्ठकम्), २२६० (इसने मल्लार्जुन को अग्रणी बनाकर एक पर्वतीय दुर्ग में अडडा बनाया), २२६७, २२७१ (यह पृथ्वीहर का पुत्र था), २३११, २३१२ (राजा जयसिंह ने इसे बन्दी बनाने के लिये रिल्हण आदि को नियुक्त किया), २३३१ (कोष्ठकभृत्येषु···जनकचन्द्राख्यो डामर:), २३३४ (इसकी पत्नी सती हो गई), २३३९ (इसकी पत्नी ने इसका मस्तक ऊँचा कर दिया), २३४० (किसी पूर्व पाप के कारण इसके व्रण में कीड़े पड़ गये और यह मर जाने के बाद भी कई रात तक कारागार में पड़ा रहा), २४५१ (इसके छोटे भाई, छुड्ड, ने उपद्रव आरम्भ किया) ।

कौङ्कण, एक देश का नाम है (४.१५९) ।

कौन्तेय = पाण्डव (१.४४) ।

कौरव, दुर्योधन आदि कौरवों के लिये प्रयुक्त हुआ है (१.४४; ७.११६८) ।

क्रमराज्य, एक स्थान का नाम है : ५.८७; ७.२२३, १२४०, १२४१, १२९८, १३०४, १३११; ८.४०, २००, २५०, ८२३, ९२६, १००५, १४३२, १९९२, २९२४ ।

क्रमावर्त, एक प्रदेश का नाम है : ३.२२७; ५.३९ ।

क्रमुक, एक देश का नाम है (४.१५९) ।

क्रोडाराम, एक विहार का नाम है (४.१८४) ।

क्रीडाविडालिका, एक प्रसिद्ध विडालिका का नाम है जो मानुषी के समान प्रसिद्ध हो गई (८.२४१२) ।

क्षत्रिका भिञ्जिका—'क्षत्रिकाभिञ्जकास्थानसव्यराजादयस्तथा" (८.१०८४) ।

क्षय, एक रोग का नाम है (५.४४३) ।

क्षितिनन्द, राजा बक के पुत्र का नाम है जिसने ३० वर्ष तक काश्मीर पर शासन किया (१.३३६) । ८.३४१५ ।

क्षितिराज, अनन्तदेव के चचेरे भाई, विग्रहराज, के पुत्र का नाम है जिसने अनन्तदेव के पास आकर अपने दुःख का वर्णन किया (७.२५१) । इसकी पत्नी भी इसके विरुद्ध हो गई (७.२५५) ।

क्षिप्रिका, एक नदी का नाम है : ८.७३२, ९५५, १००६, १०५५, १०६१, १११६, ११२६, ११६४, २१६४, ३१३० ।

क्षिल्लिका, चक्रवर्मा की नानी का नाम है जिसने दस वर्ष तक चक्रवर्मा का लालन-पालन किया (५.२९०) ।

१. **क्षीर,** एक प्रसिद्ध वैयाकरण का नाम है जिसे आमन्त्रित करके राजा जयापीड ने व्याकरण की शिक्षा ग्रहण की (४.४८९) ।

२. **क्षीर,** पृथ्वीहर के भाई का नाम है (८.६४८) । इसकी बुद्धि अत्यन्त तीक्ष्ण थी अतः इसने डामरों के साथ अपने भाई पृथ्वीहर को शमंगासा भेज दिया (८.६५१; ८.१५३९) ।

क्षीरपृष्ठ, एक स्थान का नाम है (७.१६८) ।

क्षीरभूप, एक डामर का नाम है जिसे राजा अनन्तदेव ने नौका तथा नगर आदि की रक्षा के कार्य पर नियुक्त किया (७.३५८) ।

क्षीरिण, एक फ़ल, खिरनी, का नाम है (८.३०७८) ।

क्षुर—इसकी मृत्यु का उल्लेख (८.३३१५) ।

क्षुरिकाबल, श्रीनगर के एक स्थान का नाम है (३.३४७) ।

१. **क्षेम,** एक नाई का नाम है जिसने गंजाधिकारी बनकर अनेक कर लगाये (७.२०३) । ७.२१०, ८९४ (इसके पौत्र को हर्ष ने मन्त्रिपद प्रदान किया) ।

२. **क्षेम,** वामन मंत्री के पुत्र का नाम है जिसने राजा हर्ष को कलशेश्वर मन्दिर के छत्र का सोना निकाल लेने के लिए उकसाया (७.१०७३) । उदयसिंह की मृत्यु के बाद राजा हर्ष ने इसके पुत्र, कपिल, को लोहर प्रान्त का द्वारपति बनाया (७.१२९९) ।

३. **क्षेम,** हितहित के एक सेवक का नाम है जो हितहित के नदी में फेंके जाने के बाद स्वयं भी नदी में गिर गया (८.४१४) ।

क्षेमगुप्त, पर्वगुप्त के पुत्र का नाम है जो पिता की मृत्यु के बाद काश्मीर का राजा हुआ (६.१५०) । इसके दुर्गुणों का वर्णन (६.१६०) । इसने जयेन्द्र विहार को जलवा दिया (६.१७१) । इसने छत्तीस ग्राम खशनरेश सिंहराज को दे दिया (६.१७५) । इसका दिद्दा के साथ विवाह हुआ

(६.१७६)। अपनी पत्नी में अत्यधिक आसक्ति के कारण इसका 'दिद्दाक्षेम नाम पड़ गया (६.१७७)। इसकी मृत्यु के बाद इसका पुत्र अभिमन्यु राज हुआ (६.१८६, १८८)। फल्गुणक का पुत्र कर्दमराज इसकी अस्थियाँ गङ्ग में प्रवाहित करने गया (६.२००)। 'क्षेमगुप्तवधूरपि', (६.२१०)। इसर्क पत्नी का नाम दिद्दा था जो सिंहराज की पुत्री थी (७.१२८४)। ८.३४३७

क्षेमगौरीश्वर, क्षेमगुप्त द्वारा स्थापित एक देवता का नाम है (६.१७३)।

क्षेमट, राजा अनन्तदेव के प्रेमास्पद, उद्भट, के वंशज का नाम है जिसः राजा की मृत्यु के बाद वैराग्य धारण कर लिया (७.४८२)।

क्षेमदेव, एक व्यक्ति का नाम है जिसके पुत्र ने राजा उच्चल की मृत्यु वे बाद उपद्रव आरम्भ किया (८.२६४)।

क्षेममठ, वराहमूल में स्थित एक मठ का नाम है (६.१८६)।

१. **क्षेमराज,** कपिल के पिता का नाम है (७.१२९९)।

२. **क्षेमराज,** एक डामरेश का नाम है (८.२५८४)।

क्षेमवदन, दरदसेना के एक सेनानायक का नाम है (८.२८६८)।

क्षेमा, तुङ्ग के पुत्र कन्दर्पसिंह की पत्नी का नाम है जो व्यभिचारिर्ण होने के कारण नाग के साथ रमण करने लगी (७.१०२)।

क्षेमानन्द, एक कम्पनेश का नाम है जिसे होलड के क्रुद्ध डामरों ने घे लिया (८.१४३०)।

क्षेमेन्द्र, एक प्राचीन इतिहासकार और कवि का नाम है जिन्होंने 'नृपा वलि' की रचना की थी (१.१३)।

ख

खगेन्द्र, राजा कुश के पुत्र का नाम है जो अपने पिता के बाद काश्मी का राजा हुआ (१.८९)। खागी और खोनमुष नामक दो अग्रहारों व स्थापित करके यह स्वर्ग चला गया (१.९०)। ८.३४१०।

खङ्ख, राजा बालादित्य के एक मंत्री का नाम है (३.४८३)। इसव अनङ्गलेखा के साथ अवैध सम्बन्ध हो गया (३.४९७)। जब यह अनङ्गलेख के साथ शयनकक्ष में सो रहा था तब दुर्लभवर्धन ने इसके वस्त्र के छोर प चेतावनी लिख दी (३.५२२)। जब यह निद्रा से उठा तब उस लिखित वाक को पढ़कर इसने दुर्लभवर्धन की उदारता की सराहना की और उसी समय अनङ्गलेखा को भूलकर दुर्लभवर्धन के उपकार का बदला चुकाने की चिन्ता कर लगा (३.५२४)।

खड्डूवी, एक स्थान का नाम है : ८.७३३, १४१३ (खड्डूवीविषयौकसः)

खटाकु, सम्भवतः पर्वत-कन्दराओं में निवास करनेवाले किसी पशु का नाम है (८.३१३९)।

खश (बहु० °**शाः**), एक जाति के लोगों का नाम है (१.३१७)। ६.१७५ (खशभूभुजे), ३१८; ७.२१७, ७७३, ९७९, १२७१, १२७८ (खशाधिपः), १२७९ (खशसमाजम्), १२८१ (खशाधीशम्), १३०२ (खाशिकाः); ८.१७७ (खशैः), ३९३, ४०९ (वीरानकाभिधं वीरः स खशानां निवेशनम्), ४१०, ८८७, १०७४, १४६६, १६६५, १६७४, १६८९, १६९३ (खशाधीशम्), १६९४ (आनन्दाख्यः खशाधीशस्यालः), १६९६, १७०२, १७०६, १७२३, १७२६, १७२७, १७२८, १७३३, १७३९, १७५४, १७६२, १७७३, १८६८, १८९५, २००७, २७५६ (खाशकैः), २९१७ (खाशकानाम्), ३००६ (खाशकाः), ३०८८।

खशाला, एक प्रदेश का नाम है (७.३९९)।

खागिक, एक ग्राम का नाम है जिसे गोपादित्य ने ब्राह्मणों को दान किया (१.३४०)। देखिये **खागी** भी।

खागी, खगेन्द्र द्वारा स्थापित एक अग्रहार का नाम है (१.९०)। देखिये **खागिक** भी।

खाण्डव, महाभारतकालीन एक वन का नाम है जिसे अग्नि ने भस्म कर दिया था (८.९९२)। ८.२९१२ (खाण्डवे खण्डितः सर्प इव गाण्डीविनाविशत्)।

खादना, राजा मेघवाहन की पत्नियों में से एक का नाम है (३.१४)।

खाधूया, एक अग्रहार का नाम है (५.२३)।

खार्खोद—'ख्यातः खार्खोदविद्यया', (४.९४)। 'खार्खोदवेदिनम्', (५.२३९)।

खासटा, एक ग्राम का नाम है जहाँ गोपादित्य ने अभक्ष्यभक्षी ब्राह्मणों को भेजा (१.३४२)।

खिङ्खिल, गोकर्ण के पुत्र का नाम है जिसे नरेन्द्रादित्य भी कहते हैं (१.३४७)। इसने ३६ वर्ष, ३ मास, १० दिन तक शासन किया (१.३४९)

खुखुंट, एक सिद्धि का नाम है जिसे प्राप्त करने का व्योमशिव ने व्रत ले रक्खा था (७.२९८)।

खूयाश्रम, एक स्थान का नाम है (८.२६९८)।

खेरी, एक स्थान का नाम है : ८.९६० १००९, १११८, १४१४ (खेरीतलालशाग्रामादुत्थाय), १४८२, १६२४।

खेरीमठ, एक स्थान का नाम है (१.३३५)।

खेल, युवराज भोज के एक बाल-सखा का नाम है जिसने भोज के साथ ही वीरगति प्राप्त की (७.१६५७)।

खोनमुष, खगेन्द्र द्वारा स्थापित एक अग्रहार का नाम है (१.९०)।

खोल, एक ग्राम का नाम है जिसे गोपादित्य ने ब्राह्मणों को दान किया (१.३४०)।

ग

गग्ग—देखिये **गर्गचन्द्र**।

गग्गादेवी, सुखवर्मा की पत्नी का नाम है जिसके पुत्र, निर्जितवर्मा, को सुगन्धा ने राज्याधिकारी बनाने का निश्चय किया (५.२५१)।

गङ्ग, राजा संग्रामराज के एक प्रियपात्र का नाम है जिसकी मृत्यु हो गई (७.३४)।

गङ्गा, भारत की एक पवित्र नदी का नाम है : १.३५, ५७; २.१२; ३.२२६, ३६५; ४.४१७ (गाङ्गस्य पयसो), ४१८ (गाङ्गमद्यापि), ५१५ (भागीरथस्य गङ्गेव); ७.४८५; ८.१६२६ (गङ्गायात्राम्), १६६१, १६६७, २२०८। देखिये **जाह्नवी, त्रिपथगा।**

गङ्गाधर, राजा अनन्तदेव के एक सेवक का नाम है जिसने राजा के शव-दाह के समय अग्नि में प्रवेश किया (७.४८१)।

१. **गज्जक,** बृहट्टिक्क आदि के पक्षपाती एक व्यक्ति का नाम है जिसने राजा सुस्सल पर पीछे से प्रहार किया (८.५२६)। राजा सुस्सल ने इसे सूली पर चढ़वा दिया (८.५३०)।

२. **गज्जक,** गर्गचन्द्र के एक विश्वासपात्र का नाम है जिसे राजा सुस्सल ने लोहर में मंत्री नियुक्त किया (८.६४०)।

गज्जा, राजा हर्ष के स्वामिभक्त मण्डलेश्वर, आनन्द, की माता का नाम है जो मण्डलेश्वर की मृत्यु के बाद उसकी चिता में ही जल कर मर गई (७.१३८०)।

गन्धर्व—'गन्धर्वनगरोपमाम्', (१.२७४)।

गन्धर्वाना, एक ग्राम का नाम है जहाँ घातकों ने टिक्क का वध कर दिया (८.२१९४)।

गम्भीरस्वामी, विष्णु के एक मंदिर का नाम है (४.८०)।

गम्भीरा, एक नदी का नाम है जो सिन्धु नदी में मिल जाती है (८.१०६३, १४९७)।

गयपाल, बल्लापुर के एक ठक्कुर का नाम है जिसने अनेक राजाओं को एकत्र करके कुमारपाल को उसके पितामह के पद पर प्रतिष्ठित करने की

इच्छा की (८.५४८)। यह समाचार सुनकर सुस्सल अत्यन्त व्यग्र हो उठा, किन्तु इसी बीच इसके सगोत्रियों ने ही इसका वध कर दिया (८.५४९)।

गया, एक तीर्थ और क्षेत्र का नाम है जहाँ लोग श्राद्ध करने के लिये जाते हैं (६.२५४; ७.१००८)।

गयापाल, सञ्जपाल के पुत्र का नाम है जिसने अद्भुत पराक्रम प्रदर्शित किया (८.३२८९)। सञ्जपाल की मृत्यु के बाद राजा जयसिंह ने इसे सेनापति नियुक्त किया (८.३३२२)।

गरुत्मत् = गरुड़ पक्षी : १.५८; ४.५२।

गल्लून, राजा रणादित्य-पुत्र विक्रमादित्य के एक मंत्री का नाम है (३.४७५)। इसने अपनी पत्नी, रत्नावली, के नाम पर एक विहार का निर्माण कराया (३.४७६)।

गग्ग (गग्गचन्द्र, गर्ग, गर्गचन्द्र भी), डामर जनकचन्द्र के एक भ्राता का नाम है जो जनकचन्द्र का वध होने पर भीमादेव पर झपटा परन्तु भीमादेव ने इसे भी आहत कर दिया (८.३३)। इसका राजा उच्चल पर विश्वास बढ़ गया (८.३७)। सड्डु ने इसे तलवार के घाव का उपचार कराने के लिये लोहर भेजा (८.३८)। राजा उच्चल इस पर पुत्रवत् स्नेह करने लगा (८.४३)। राजा उच्चल इस पर कभी कुपित नहीं होता था (८.४४)। भोगसेन के भीषण पराक्रम को देख कर यह मैदान छोड़कर भाग गया था (८.१८२)। जब सुस्सल पुनः उच्चल पर आक्रमण करने के लिये लौटा तो राजा उच्चल ने इसके नेतृत्व में एक विशाल सेना भेजी जिसने सुस्सल की सेना को छिन्न-भिन्न कर दिया (८.१९६)। सुस्सल को पराजित करके इसने उसके अनेक बहुमूल्य अश्वादि प्राप्त किये (८.१९९)। इसने रड्डु का वध कर दिया (८.३४८)। अपने भुजबल के सहारे यह युद्ध में बचा रह गया (८.३५४)। इसने अपने स्वामी, राजा उच्चल के लिये विलाप किया (८.३६१)। रानी जयमती ने राज्य का कोश इसके हाथ में सौंप कर अपने लिये एक चिता तैयार कराने का इससे अनुरोध किया (७.३६३)। इसने मल्ल के ज्येष्ठ पुत्र, सल्हण, का ही उच्चल की मृत्यु के बाद राज्याभिषेक करा दिया (८.३७६)। इसके भेजे दूत से लोहर कोट में रह रहे सुस्सल को उसके ज्येष्ठ भ्राता, राजा उच्चल, की मृत्यु का समाचार मिला (८.३८०)। 'गर्गदूताद्भ्रातृवध स्वस्याह्वानं च केवलम्', (६.३८१)। प्रातःकाल सुस्सल इसके भेजे दूत के साथ ही काश्मीर के लिये चल पड़ा (८.३८२)। इसके एक दूसरे दूत ने सुस्सल को पूरा वृत्तान्त बता कर काश्मीर आने से रोका (८.३८४)। इसके संदेश

को सुन कर सुस्सल क्रुद्ध हो उठा (८.३८६) । । सुस्सल काश्मीर की ओर बढ़ता रहा और अपने आगमन की स्वीकृति के लिये अनेक दूत इसके पास भेज दिये (८.३८९) । सुस्सल के काष्ठवाट पहुँचने पर यह भी हुष्कपुर आ गया (८.३९०) । राजा सुस्सल ने इसे राजद्रोही घोषित कर दिया (८.३९१) । सुस्सल ने अपने एक धात्रेय भ्राता को इसे समझाने के लिये भेजा (७.३९२) । भोगसेन ने सुस्सल के पास समाचार भेजा कि वह अकेले ही इसे परास्त कर देगा (८.३९४) । इसके एक दूत ने सुस्सल से कहा कि वह अपने भ्राता की हत्या करनेवाले से क्यों सहायता लेना चाहता है (८.३९६)। इसका सेनानायक, सूर्य, एक बड़ी सेना लेकर सुस्सल के सामने आ डटा (८.४०२) । इससे हितहित को अपना वैरी समझकर उसे वितस्ता नदी में फेंकवा दिया (८.४१३) । शत्रुओं का संहार करने के बाद यह राजा सल्हण के पास आया और उसका अधिपति बन गया (८.४१५) । इसकी आज्ञा से राजा सल्हण ने नीलाश्व डामर, बिम्ब, को वितस्ता नदी में फेंकवा दिया (८.४२४) । इसने राजा सल्हण पर अनुग्रह करते हुये उसके अनेक शत्रुओं को विविध युक्तियों से मरवा डाला (८.४२५) । एक बार यह लहर प्रान्त से जब राजा के पास आया तब सभी नागरिक इसे देखकर क्षुब्ध एवं भयभीत हो गये (८.४२७) । उस समय नगर में यह अफवाह फैल गई कि यह अनेक राज-सेवकों आदि को मार डालने के लिये आया है (८.४२८) । तिलकसिंह आदि ने राजा की आज्ञा के बिना ही इसके घर पर आक्रमण कर देने की योजना बनाई (८.४३०) । इसने बिना किसी व्यग्रता के ही आक्रमणकारियों को परास्त कर दिया (८.४३१) । दिल्हरभट्टार एवं अलक्क आदि योद्धा निर्लज्ज भाव से इसकी आवासभूमि वाली गलियों में विचर रहे थे (८.४३२) । इसके सैनिकों ने लोठन का मार्ग अवरुद्ध कर दिया (८.४३४) । विद्रोहियों के छिन्न-भिन्न हो जाने पर यह घोड़े पर सवार होकर अपने भवन से बाहर निकला (८.४३६) । काश्मीर के नागरिक इसके आक्रमण के भय से त्रस्त रहते थे (८.४३९) । सहेल के समझाने पर यह किसी प्रकार अपनी कन्या का सल्हण के साथ विवाह करने पर सहमत हो गया (८.४४१) । ''सल्हण के सम्बन्धी यह नहीं चाहते थे कि इसकी कन्या का उसके साथ विवाह हो । अतः क्रुद्ध होकर इसने राजा सुस्सल से मैत्री कर ली और अपनी कन्या का विवाह बहुत आग्रह के विपरीत भी सल्हण के साथ नहीं किया (८.४४२) ।'' सुस्सल इससे सन्धि करके भी भयभीत रहता था (८.४५०) । जब इसे सल्हण के द्वाराधीश के साथ लक्कक आदि के वराहमूल आने का समाचार मिला तब इसने आक्रमण करके समस्त वराहमूल नगर तथा लक्कक की सेना को नष्ट कर

दिया (८.४५२)। इसकी पत्नी छुड्डा अपनी दो कन्याओं को साथ लेकर उनका विवाह कराने के लिये सुस्सल के पास आई (८.४५९)। सुस्सल के सैनिक इसके आक्रमण की आशंका से व्यग्र थे, क्योंकि यद्यपि इसने अपनी एक कन्या का सुस्सल से विवाह कर दिया था तथापि सैनिकों को इस पर विश्वास नहीं था (८.४६३, ४६४)। यह अपने द्वारा पालित, राजा उच्चल के पुत्र सहस्रमंगल, को ही राज्यसिंहासन पर बैठाना चाहता था (८.५००)। सुस्सल ने इससे उच्चल-पुत्र सहस्रमंगल को माँगा था परन्तु यह इस पर सहमत नहीं हुआ (८.५०२)। 'गर्गदावाग्निदग्धानां निःसंख्यानामभूत्क्षयः', (८.५०३)। इसके साले का नाम विजय था (८.५०४)। इसने सुरेश्वरी और अमरेश की धरती पर राजा सुस्सल के सैनिकों का संहार किया था (८.५०६)। यह विशाल सेनायुक्त होते हुये भी सञ्जपाल को परास्त नहीं कर सका (८.५११)। इसका सामना करने के लिये राजा सुस्सल स्वयं विजयक्षेत्र आया (८.५१२)। सुस्सल ने इसके द्वारा मारे गये सैनिकों का दाह-संस्कार कराया (८.५१३)। सुस्सल से त्रस्त होकर इसने अपने नगर में आग लगा दी और भागकर हलाहा की ओर चला गया (८.५१४)। चारों ओर से घिर जाने पर इसने उच्चल के पुत्र को राजा सुस्सल को सौंप दिया और स्वयं भी शरणागत हो गया (८.५१६, ५१७)। काश्मीर लौटकर सुस्सल अधिकाधिक धन तथा सम्मान देकर इसे प्रसन्न करने के लिये सचेष्ट रहने लगा (८.५२०)। गर्ग का संबंधी होने के नाते राजा सुस्सल यद्यपि विजय के साथ उदारता का व्यवहार करता था तथापि उसने वृहट्टिक और सूक्ष्मटिक्क को वेत्रियों द्वारा बेंतों से पिटवाया (८.५२४)। इसके प्रति पक्षपात की भावना रहने के कारण राजा सुस्सल का प्राण सदा संकट में रहता था (८.५३०)। सुस्सल को कल्ह आदि लोगों ने इसका मूलोच्छेद कर देने का परामर्श दिया (८.५८१)। 'गार्गिः कल्याणचन्द्र', (८.५८२)। लोगों ने इसके मन में सुस्सल के प्रति विद्रोह की भावना भर दी (८.५८३)। 'गर्गः शशङ्के भृत्येन राज्ञा', (८.५८४)। राजा सुस्सल इसके साले विजय पर विशेष प्रेम रखता था (८.५८७)। राजा सुस्सल ने इसके शत्रु, मल्लकोष्ठ, को कारागार से मुक्त कर दिया (८.५८८)। इसने अमरेश्वर की समस्त राजसेना को हता-हत कर दिया (८.५९०)। तिलक इससे पराजित होकर भाग गया जिससे उसका बहुत उपहास हुआ (८.५९२)। इसने कुछ योद्धाओं को जीवित छोड़ दिया (८.५९३)। राजा सुस्सल ने इसके महल को भस्म कर दिया (८.५९५)। इसके पुत्र का नाम विदेह था (८.६१०)। यह स्त्री-पुत्रों सहित सुस्सल के महल में रहता था (८.६११)। एक बार इसका पुत्र चतुष्क

भागने लगा परन्तु कर्ण ने राजा को उसका समाचार दे दिया (८.६१२)। दरदराज मणिधर इससे मिलने आया परन्तु उसी समय राजा सुस्सल ने इसे मरवा डाला (८.६१४)। ४१९४ लौकिक वर्ष के भाद्रपद मास में राजा सुस्सल ने इसकी हत्या करा दी (८.६१७)। राजा सुस्सल ने इसके भृत्यों को दण्ड देने के लिये इसके मंत्री गज्जक को लोहर में मंत्री के पद पर नियुक्त किया (८.६४०)। ८.११२१ (गर्गजन्मानाम्)। 'गर्गवल्लभाम्', (८.११३६)। 'गर्गात्मजं पञ्चचन्द्रमालम्ब्य', (८.१३६४)। ८.१३९३, १४४४ (इसकी पुत्री, राजलक्ष्मी, अपने पति राजा सुस्सल की मृत्यु के बाद सती हो गई), १६०८, २५५६, २८४७ (गर्गजः, अर्थात् षष्ठचन्द्र), २९५५ (षष्ठचन्द्रोऽपि गर्गजः), ३३०६ (गार्गेन), ३३०७ (गार्गिः), ३४४४।

गर्ग, गर्गचन्द्र—देखिये गग्ग।

गाण्डीविन् = अर्जुन (पाण्डव) : ८.२९१२।

गाधिपुर, एक स्थान का नाम है जहाँ की राजकन्याओं को वायुदेवता ने कुबड़ी बना दिया था (४.१३३)।

गान्धार, एक देश का नाम है : १.६६, ६८,३०७ (गान्धारा...द्विजाधमाः), ३१४; २.१४५ (गान्धाराधिपति); ३.२ (गन्धारविषयम्)।

गान्धारी, धृतराष्ट्र की पत्नी और दुर्योधन की माता का नाम है : ८.१२८९।

गाम्भीरसीह, कान्देश के राजा का नाम है जो राजा कलश के यहाँ अतिथि बनकर आया (७.५९०)।

गारुत्मत्, एक रत्न का नाम है जिससे विष की वाधा नहीं रहती (४.३३१)।

गार्गिक, भिक्षाचर के एक अनुचर का नाम है (८.१७५२)।

गिरिव्रज, एक स्थान का नाम है (२.२७६६)।

१. **गुङ्ग,** लोहर परिवार के जस्सराज के पुत्र का नाम है (७.३५७)। इसको पुत्रों सहित, राजा कलश ने पुरस्कृत किया (७.५१७)। इसके पुत्र, मल्ल, को शासन-कार्य सीखने के लिये कलश ने नगरपति बना दिया (७.५८३)। 'गुङ्गात्मजः', (७.५८४)। 'गुङ्गजो मल्लः', (७.११८२)। यह जस्सराज का पुत्र था और इसके पुत्र का नाम मल्ल था (७.१२८६)।

२. **गुङ्ग,** तिलकसिंह के एक सेवक का नाम है (८.७८३)।

गुण, प्रतापगौरीश मंदिर के निकट रहनेवाले एक क्षुद्र तपस्वी का नाम है जो विरहभुजङ्गी नाम से विख्यात भिक्षा नामक वृद्धा वेश्या के साथ रहकर कुटने का कार्य करता था (७.१६३६–१६३७)।

गुणदेव, राजा संग्रामराज के एक मन्त्री का नाम है (७.२९) ।

गुणदेवी, चिप्पट जयापीड के मामा, पद्म, की पत्नी का नाम है (४.६९६) ।

गुणलेखा, गर्गचन्द्र की एक कन्या का नाम है जिसे राजा सुस्सल ने अपनी पुत्रवधू (जयसिंह की पत्नी) बनाना स्वीकार किया (८.४६०)। यह पर्माण्डि की माता थी (८.१६०७, १६०८) ।

गुर्जर, एक प्रान्त का नाम है जिसे शङ्करवर्मा ने विजित करने के लिये अभियान किया (५.१४४) । 'अलखानस्य···गुर्जरभूभुजः', (५.१४९) । 'गुर्जराधिपः', (५.१५०)

गुल्ल, तन्वङ्ग के एक पौत्र का नाम है जिसका राजा हर्ष के सैनिकों ने वध कर दिया (७.१०६५) ।

१. **गुल्हण,** बल्लापुर के एक राजा का नाम है जिसे कोष्ठेश्वर के भाई, छुड्ड, ने आगे बढ़ाया (८.२४५२) ।

२. **गुल्हण,** राजा जयसिंह और रड्डादेवी के एक पुत्र का नाम है (८.२९५३) । राजा जयसिंह ने इसका लोहर राज्य में अभिषेक कराया (८.३३०१) । जिस प्रकार श्रीराम के साथ लक्ष्मण रहते थे वैसे ही इसके साथ अपरादित्य रहता था (८.३३७२) ।

गुह=कार्तिकेय (१.२९) ।

गुह्यक, एक जाति के लोगों का नाम है (१.१५६) ।

गृध्र, पक्षियों की एक जाति का नाम है (१.२९१) ।

गोकर्ण, राजा गोपादित्य के पुत्र का नाम है जिसने ५७ वर्ष ११ मास तक धरती पर राज्य किया और गोकर्णेश्वर नामक नगर बसाया (१.३४६) । ८.३४१६ ।

गोकर्णेश्वर, राजा गोकर्ण द्वारा बनवाये गये एक शिवमन्दिर का नाम है (१.३४६) ।

गोकुल, एक धार्मिक भवन का नाम है: ४.१९८; ५.२३, ४६१; ८.९००, २४३६ (रत्नादेवी ने भी एक गोकुल का निर्माण कराया), २४३७ ।

गोदावरी, एक नदी का नाम है : 'गोदावरी सरिदिवोत्तुमुलैस्तरङ्गैर्वक्त्रै स्फुटं सपदि सप्तभिरापतन्ती', (८.३४४९) ।

गोधर, एक राजा का नाम है जो सुरेन्द्र के बाद काश्मीर का शासक बना (१.९५) । यह ब्राह्मणों को हस्तिशाला नामक अग्रहार देकर स्वर्ग चला गया (१.९६) । ८.३४१० ।

गोधरा, एक अग्रहार का नाम है (१.९६)।

१. गोनन्द, काश्मीर के एक प्राचीन राजा का नाम है जिसका इतिहास कल्हण को नीलमतपुराण द्वारा ज्ञात हुआ (१.१६)। यह कौरवों और पाण्डवों का समकालीन था (१.४५)। इसके पूर्ववर्ती ५२ राजाओं तथा इसने मिलकर कलियुग में २,२६८ वर्ष तक काश्मीर देश पर शासन किया था (१.४८)। तृतीय गोनन्द से लेकर राजतरङ्गिणी के समय तक १३३० वर्ष व्यतीत हो चुके थे (१.५४)। 'कश्मीरेन्द्र...गोनन्दः', (१.५७)। इसकी मृत्यु के बाद इसका पुत्र दामोदर राजा हुआ (१.६४)। बालादित्य के यहाँ उत्पन्न कन्या को देखकर ज्योतिषियों ने बालादित्य को गोनन्दवंश का अन्तिम राजा बताया (३.४८६)। बालादित्य इसके वंश का अन्तिम राजा हुआ (३.५२७)। इसके वंश से राज्याधिकार समाप्त होकर कार्कोटक नाग के वंश में चला गया (३.५३०)। "जब कलिकाल के ६५३ वर्ष बीते थे, तब यह काश्मीर का राजा था। इसने पार्थों (पाण्डवों) की सेवा कर के यह पद प्राप्त किया था (८.३४०७)।

२. गोनन्द—१ गोनन्द का पौत्र (१.७६)। इसे बालक समझ कर कौरवों तथा पाण्डवों ने इसके पास रण-निमन्त्रण नहीं भेजा (१.८२)। ८.३४०८।

३. गोनन्द, काश्मीर के एक राजा का नाम है जो अभिमन्यु के बाद काश्मीर का शासक हुआ। इसने नागयज्ञ, नागपूजन, और नागयात्रा आदि उत्सवों को प्रारम्भ किया (१.४४,१८५)। 'गोनन्दान्वयिनामाद्या स रघूणां रघुर्यथा। नृपतिः काश्यपी वर्षान्यश्वत्तिशथिमन्वशात्॥', (१.१९१)। ८.३४१३ ३४१९।

गोनन्दवंश—"पुरातन राजावंशों में केवल दो ही वंश श्रेष्ठ माने गये हैं : पहला रघुवंश और दूसरा गोनन्दवंश। रघुवंश में भगवान राम और गोनन्दवंश में राजा रणादित्य दोनों ने अपनी प्रजा को स्वर्ग-सुख प्राप्त करा दिया था (३.४७२, ४७३)।" ३.४८६। बालादित्य इस वंश का अन्तिम राजा हुआ (३.५२७)। इस वंश के बाद कार्कोटक वंश के हाथ में काश्मीर का राज्य चला आया (३.५३०)। ८.३४१९।

गोपादि, एक पर्वत का नाम है जहाँ गोपादित्य ने ज्येष्ठेश्वर की प्रतिमा स्थापित की (१.३४१)। ८.११०४, ११०७ (गोपाचलम्)।

१. गोपादित्य, राजा अक्ष के पुत्र का नाम है जिसका सप्तद्वीपा वसुन्धरा पर अक्षुण्ण अधिकार था (१.३३९)। इसने अनेक नगर बसाये और ब्राह्मणों

को विभिन्न अग्रहार दिये (१.३४० और बाद)। इसने ६० वर्ष, ६ दिन पृथिवी पर शासन किया (१.३४५)। ८.३४१६।

२. गोपादित्य, राजा अन्धयुधिष्ठिर के प्रपौत्र एवं मेघवाहन के पिता का नाम है जिसे गान्धार नरेश ने पाला-पोसा था (२.१४५)।

गोपाल, दार्वाभिसार देश के चन्द के पौत्र और चन्दराज के एक पुत्र का नाम है (७.१२८३)।

गोपालकेशव, एक देवता का नाम है (५.२४४)।

गोपालपुर, एक स्थान का नाम है (५.२४४)।

गोपालमठ, रानी सुगन्धा द्वारा निर्मित कराये गये एक मठ का नाम है (५.२४४)।

गोपालवर्मा, राजा शङ्करवर्मा के दयालुहृदय पुत्र का नाम है (५.१८२)। बाण से आहत मरणासन्न राजा शङ्करवर्मा ने इसे अपनी रानी सुगन्धा को सौंपा (५.२२१)। अपने पिता की मृत्यु के बाद रानी सुगन्धा के संरक्षण में यह काश्मीर का राजा हुआ (५.२२८)। मंत्री प्रभाकरवर्मा के दुराचार का समाचार इसे भी ज्ञात हो गया (५.२३७)। अभिचार-क्रिया के फलस्वरूप यह दाह रोग से पीड़ित होकर मृत्यु को प्राप्त हुआ और केवल दो वर्ष ही राज्य कर सका (५.२४०)। इसके बाद इसका भ्राता, संकटवर्मा, काश्मीर का राजा हुआ (५.२४२)। इसकी पत्नी का नाम नन्दादेवी था (५.२४५)। इसकी एक अन्य पत्नी भी थी जो गर्भवती थी (५.२४६)। इसके समय से लेकर अभिमन्यु तक के ६० वर्षों में काश्मीर में १६ राजा हुये (६.२५६)। ८.३४३०।

गोवर्धनधर, एक देवस्थान का नाम है : ४.१८९; ७.१३६७; ८.२४३८ (रत्नादेवी ने इनके एक भव्य मन्दिर का निर्माण कराया)।

गौडमण्डल, एक देश का नाम है (४.१४८)। 'गौडपार्थिवम्', (४.३२३)। 'गौडोपजीविनाम', (४.३२४)। 'गौडैर्विहितं', (४.३३२)। 'गोडराक्षसविप्लवे', (४.३३४)। 'गौडवीराणां', (४.३३५)। 'गौडराजाश्रयं गुप्तं जयन्ताख्येन भूभुजा', (४.४२०)। 'पञ्च गौडाधिपान्', (४.४६८)। ७.५६४; ८.२०५२ (कान्यकुब्जगौडादिमण्डलेषु)।

१. गौरक, हर्ष के शासन के अन्तर्गत एक अर्थमंत्री का नाम है (७.११०३)।

२. गौरक, एक लकड़हारे का नाम है जिसने हर्ष के नग्न शव को एक अनाथ मुर्दे के समान जला डाला (७.१७२७)।

३. गौरक, एक कायस्थ का नाम है जिसे सुस्सल ने सहेल आदि पुराने

लोगों को हटा कर सब अधिकारियों का प्रमुख बना दिया (८.५६०) । इसके अधीन रहकर बट्टपञ्जक आदि कर्मचारियों ने राज्य को निःसार कर दिया (८.५६८) । सुजनवर्धन इस पर क्रुद्ध हुआ (८.६३०) । सुस्सल ने इसे सब अधिकारियों के प्रमुख के पद से हटा दिया (८.६३७) । इसका वध (८.७८४) ।

गौरिका बालग्राम, एक स्थान का नाम है जहाँ वितस्ता नदी पार करके उच्चल तारमूलक लौट आया (७.१३३९) ।

गौरी = पार्वती (१.२९; ८.३३६७) ।

गौरीगुरु शैलः = हिमालय पर्वत (१.४३) ।

गौरीश्वर, एक शिव का नाम है (७.१८०) । इनके मन्दिर में भूति नामक एक द्वारपाल रहता था (७.२०७) । ७.६७३ ।

ग्रीवागण्ड, एक रोग का नाम है (८.२८१०) ।

घ

घटी, मन्दिर की छत में लगे एक अलङ्कार का नाम है (७.५२७) ।

घटोत्कच, राजा जयसिंह के एक जामाता का नाम है (८.३६९९) ।

घोरमूलक, एक स्थान का नाम है (८.१८६१) ।

घोष, एक ग्राम का नाम है (६.२८) ।

च

चंग, तुङ्ग के एक अन्तरङ्ग मंत्री का नाम है (७.८७) ।

चक्रधर, काश्मीर के एक देवालय तथा पवित्र तीर्थ का नाम हैं : १.३८, २६१, २७०; ४.१९१; ७.२५८ (तीर्थ), २६१, २६९; ८.७८ (राजा उच्चल ने चक्रधर-योगेश के एक सुन्दर मन्दिर का निर्माण कराया), २९१, ९९१, १००४, १०६४ ।

चक्रपुर, एक नगर का नाम है जिसे रानी चक्रमर्दिका ने बसाया था । इसमें सात हजार घर थे (४.२१३) ।

चक्रभानु, एक तपस्वी ब्राह्मण का नाम है (६.१०८) ।

चक्रमठ, चक्रवर्मा द्वारा पाशुपतों के लिए निर्मित कराये गये एक मठ का नाम है (५.४०४) ।

चक्रमर्दिका, राजा ललितादित्य की एक पत्नी का नाम है जिसने चक्रपुर नामक नगर बसाया (४.२१३) । इसने राजा की आज्ञा से लक्ष्मणस्वामी की मूर्ति प्राप्त करके चक्रेश्वर के पास उसकी स्थापना की (४.२७६) । कुवलयापीड के बाद इसका पुत्र, वज्रादित्य, राजा हुआ (४.३९३) ।

चक्रमेलक, एक ग्राम (?) का नाम है (६.१०८) ।

चक्रवर्मा, निर्जितवर्मा के पुत्र का नाम है जिसे राजा बनाया गया (५.२८८) । लौकिक संवत् ४००९ में तन्त्रियों ने इसे राज्यच्युत करके इसके भ्राता शूरवर्मा को राजा बनाया (५.२९२) । तन्त्रियों की कृपा प्राप्त करके लौकिक वर्ष ४०११ में यह पुनः राजा बन बैठा (५.२९७) । यह राज्यच्युत होकर एक दिन रात्रि के समय ढक्क निवासी संग्राम नामक डामर के घर गया (५.३०६) । यह डामर सेना साथ लेकर नगर की ओर चला (५.३२७) । पहले अनुकूल समय न मिलने से इसका पराक्रम छिपा हुआ था (५.३२९) । 'चक्रवर्ममृगेन्द्रस्य सटापटलविभ्रमम्', (५.३३३) । 'तन्त्रिणो रणसंरम्भपरिश्रान्ताः क्षमातले । गृध्रपक्षकतच्छाये शायिताश्चक्रवर्मणा ॥', (५.३३५) । 'चक्रवर्ममहाहिना', (५.३४०) । 'संग्रामजयशोभाङ्कश्चक्रवर्माऽविशत्पुरम्', (५.३४७) । निष्कपट राज्य प्राप्त करके यह मदमत्त हो क्रूरतापूर्ण कुकृत्य करने लगा (५.३५१) । इसने एक डोमकन्या, हंसी, को महारानी बना दिया, और जिसने उस कन्या का जूठन खाया वह इसका सभासद बन गया (५.३८८) । 'मन्त्रिणस्तस्करा राज्ञी श्वपाकी श्वपचाः प्रियाः । किं न लोकोत्तरमभूद्भूपतेश्चक्रवर्मणः', (५.३९१) । इसकी मृत्यु के पश्चात् डामरों ने इसके देश को लूटा (५.४१३, ४३९) । ८.३४३३, ३४३४ ।

चक्रायुध = श्रीकृष्ण (विष्णु) १.६९; ७.२५८ ।

चक्रिण = विष्णु : १.२६२ ।

चक्रेश्वर, एक शिवलिङ्ग का नाम है (४.२७६) ।

चङ्कुण, तुःखार देश के एक निवासी का नाम है जिसने अपने नाम से एक विहार बनवाया (४.२११) । इसने श्रीनगर में एक विहार बनवाया (४.२१५) । इसके साले, ईशानचन्द्र, ने एक विहार बनवाया (४.२१६) । यह एक रसशास्त्री का भ्राता था (४.२४६) । इसने नदी के जल में एक मणि डाल दिया जिससे नदी का जल दो भागों में विभक्त हो गया (४.२४९) । इसने एक अन्य मणि से पहले डाली मणि को जल से निकाल लिया (४.२५१) । राजा ललितादित्य ने इससे उक्त दोनों मणियाँ माँगी जिसपर इसने कहा कि वे मणियाँ केवल इसी के हाथ में कार्य करती हैं (४.२५२–२५३) । इसने दोनों मणियाँ राजा को समर्पित कर दीं (४.२५८) । यह राजा ललितादित्य का मंत्री बना और ललितादित्य की मृत्यु का अनुमान करके इसने उसके ज्येष्ठ पुत्र, कुवलयादित्य, के अभिषेक की घोषणा की (४.३६१–३६२) ।

१. चङ्कुणविहार, तुःखार देश के चंकुण द्वारा परिहासपुर में बनवाये गये एक विहार का नाम है (४.२११)।

२. चङ्कुणविहार, श्रीनगर के एक विहार का नाम है (४.२१५)। इसका जीर्णोद्धार (८.२४१५)।

चटक, राजा जयापीड के यहाँ रहनेवाले एक कवि का नाम है (४.४९७)।

चण्डक—जब विजयमल्ल ने हर्ष के विरुद्ध विद्रोह किया तब इसके पुत्रों ने विजयमल्ल का पीछा किया (७.९०८)।

चण्डिका, एक देवी का नाम है (३.३३, ४०, ५२)।

१. चतुष्क, गर्ग के एक पुत्र का नाम है जिसने महल से भागने का प्रयास किया (८.६१२)।

२. चतुष्क, कोष्ठेश्वर के भ्राता का नाम है जिसे कमलिय आदि ने धराशायी कर दिया (८.२३१८)। यह लोठक का छोटा भाई था और कारागार से निकल भागने में सफल हुआ (८.२७४८)। राजा जयसिंह ने रिल्हण और उदय को इससे युद्ध करने का आदेश दिया (८.२७५८)। 'पार्थ्वाहिरिस्तु दुःसाधो', (८.२७५९)। 'पार्थ्वीहिरिम्', (८.२७९३)। इसे हटा देने के लिये राजा जयसिंह ने रिल्हण को भेजा (८.२८१०)। इसने एक विशाल सेना लेकर रिल्हण पर आक्रमण किया (८.२८३०)। ८.२८४१, २९१३ (इसने त्रिल्लक के भवन में प्रवेश किया), ३११३ (त्रिल्लक ने इसे शमाला भेजा)।

३. चतुष्क, एक स्थान का नाम है (७.१०२४)।

१. चन्द, तुङ्ग के अनुगामी, एक श्रेष्ठ योद्धा का नाम है (७.९७)।

२. चन्द, दार्वाभिसार देश के फुल्ल के पौत्र और सातवाहन के पुत्र का नाम है। इसके पुत्र का नाम चन्दराज था (७.१२८३)।

चन्दक, एक कवि का नाम है जिसे द्वैपायन व्यास का अंशावतार कहा गया है (२.१६)।

चन्दन, एक सुगन्धित वृक्ष का नाम है (४.१५६)।

चन्दनाद्रि = मलय पर्वत (४.१५६)।

चन्दराज, दार्वाभिसार देश के सातवाहन के पौत्र और चन्द के पुत्र का नाम है। इसके गोपाल और सिंहराज नामक दो पुत्र हुये (७.१२८३)।

१. चन्दला, कर्णाट देश के राजा पर्माण्डि की पत्नी का नाम है जिसका चित्र देखकर राजा हर्ष कामातुर हो उठा (७.१११९)। इसे प्राप्त करने के लिये राजा हर्ष ने पर्माण्डि को पराजित करने की प्रतिज्ञा की (७.११२१)।

ाजा हर्ष ने इसको प्राप्त कर लेने तक कच्चे कपूर का सेवन न करने की तिज्ञा की थी (७.११२४)।

२. चन्द्‌ला, राजा जयसिंह के अन्तःपुर की एक रानी का नाम है जिसकी ृत्यु के पश्चात् राजा ने उसके नाम से एक विशाल मठ बनवाया (८.३३२०)।

१. चन्द्र, एक डामर का नाम है जो राजा अनन्तदेव की सेवा में उप-स्थित हुआ (७.३५७)।

२. चन्द्र, काश्मीर के एक मन्त्री का नाम है (६.३५०)।

चन्द्रकान्त, एक विख्यात मणि का नाम है (८.३०३०)। ८.३१४३।

चन्द्रकुल्या, एक नदी का नाम है (१.३१८)।

चन्द्रग्राम, एक ग्राम का नाम है जिसे दुर्लभवर्धन ने ब्राह्मणों को दान कया (४.५)।

चन्द्रदेव, एक कश्यप गोत्रीय ब्राह्मण का नाम है (१.१८२)। इसने ौद्ध भिक्षुओं की बाधा शान्त की (१.१८४)।

चन्द्रभागा, एक नदी का नाम है (३.४६८)। ४.६३८; ८.५५४, २६।

चन्द्रमुख, देवमुख्य कायस्थ के एक पुत्र का नाम है (७.१११)। तुङ्ग ी सहायता से यह राजा संग्रामराज का प्रिय सेवक बन गया (७.११२)।

चन्द्रराज, जिन्दुराज के कुल में उत्पन्न एक वीर का नाम है जिसने हर्ष ा कम्पनेश बनना स्वीकार किया (७.१३६३)। इसने शत्रुपक्ष के कम्पनेश ा वध करके उसका सर राजा हर्ष के पास भेज दिया (७.१३६९)। यह ना एकत्र करता और पराक्रम प्रगट करता हुआ विजयक्षेत्र पहुँचा ७.१३७१)। सुस्सल के आगमन का समाचार सुनकर यह भी युद्ध के लिये ला (७.१४९९)। इसने अपने सेवक, इन्दुराज, के साथ वीरगति प्राप्त की ७.१५०२)।

१. चन्द्रलेखा, सुश्रवा नाग की छोटी पुत्री का नाम है (१.२१८)। एक ाह्मण ने इसके पिता से वरदान में इसकी याचना की (१.२४२)।

२. चन्द्रलेखा, फल्गुणक की पुत्री का नाम है जिसका क्षेमगुप्त के साथ वाह हुआ (६.१७९)।

चन्द्रवती, एक कुम्भकार की पत्नी का नाम है जिसके स्पर्श करते ही एक हाशिला उठाने पर उठ गई (१.३२१)।

चन्द्राकर, राजा संग्रामराज के एक योग्य सम्बन्धी का नाम है जिसकी

मृत्यु हो गई (७.५) । राजा संग्रामराज के समय इसके पुत्र मय्यक का अच्छा प्रभाव रहा (७.३२) ।

चन्द्राचार्य, एक महान् पण्डित का नाम है जिसने राजा अभिमन्यु की आज्ञा से व्याकरण-महाभाष्य का प्रचार और चान्द्र व्याकरण की रचना की (१.१७६) ।

चन्द्रापीड, राजा प्रतापादित्य और रानी नरेन्द्रप्रभा के पुत्र का नाम है (४.३९) । यह वज्रादित्य के नाम से भी विख्यात हुआ (४.४३) । अपने पिता की मृत्यु के बाद यह राजा हुआ (४.४५) । 'श्रीचन्द्रापीडदेवस्य तत्क्षमित्वमपश्चिमम् । संस्मर्यमाणं कुरुते न कस्योत्पुलकं वपुः ॥', (४.११५) । इसने ८ वर्ष ८ मास तक राज्य किया (४.११८) । ५.२७८; ८.१९९१, ३४२३ ।

चम्पक, एक व्यक्ति का नाम है जो प्रतिवर्ष नन्दिक्षेत्र में सात दिन तक प्रचुर धन व्यय करता था (७.९५४) । इसका छोटा भाई, कनक राजा हर्ष का शिष्य बन गया (७.१११७) । यह द्वारपति था (७.११७७) । इसने मधुमती नदी पार करके दुर्गघात को चारों ओर से घेर लिया (७.११७९) । राजा हर्ष ने इससे राजकुमार भोज का पता लगाने के लिये कहा (७.१५८६–१५८७) । इसके सेवक, जलक, का रसोइया हर्ष के पास आया (७.१६२३) । ८.२३६५ ।

चम्पा, एक राज्य का नाम है (७.२१८) । यहाँ का राजा आसट राजा कलश का अतिथि होकर आया (७.५८८) । यहाँ के सोमपाल नामक राजपुत्र ने उच्चल की रक्षा करते हुये उत्कृष्ट पराक्रम प्रगट किया (८.३२३) । ८.५३८, १०८३ । यहाँ की राजकुमारी देवलेखा सुस्सल की पत्नी थी (८.१४४३) । 'त्रिगर्तेषु दयाशीलं चम्पायां मदमण्डले । त्यागो दार्वाभिसारेषु मैत्री नामर्त्यधर्मिणाम् ॥', (८.१५३१) ।

चरक. एक स्थान का नाम है (८.२२२६) ।

चर्म, लोहर के एक ठक्कुर का नाम है (८.१८२८) ।

चलगञ्ज—राजा जयापीड ने यात्रा के समय के लिये एक चलगञ्ज नाम के विभाग की स्थापना की (४.५८९) ।

चाण्डाल, एक जाति के लोगों का नाम है (८.२५१) । सड्ड आदि ने उच्चल की हत्या के लिये इन्हें राजमहल में प्रविष्ट कराया (८.३०४) ।

चामुण्डा, देवी भगवती का नाम है (७.१७०७) ।

चारण, एक जाति के लोगों का नाम है (१.२२२) ।

चार्वाक, एक नास्तिक आचार्य का नाम है (४.३४५) ।

चित्ररथ—यह भविष्य में महामंत्री बननेवाला था (८.१४३६)। राजा ज़हदेव ने इसे पादाग्र प्रान्त का प्रमुख अधिकारी बना दिया (८.१४८२)। ाजा जयसिंह ने इसे लोहर पर आक्रमण के लिये भेजा (८.१९६३)। यह र के रूप में प्राप्त धन लेकर राजा के पास आया (८.१९७२)। ८.१९९३, ०४३ (सुज्जि का सम्बन्धी बन जाने पर यह प्रजा का उत्पीड़न करने लगा), ०४७, २०९३ (सञ्जपाल ने राजा जयसिंह को इसे बन्दी बना लेने का रामर्श दिया), २१९२, २२०३ (इसकी विशाल सेना लेकर कोष्ठेश्वर ने ाजा जयसिंह को पराजित किया), २२२४ (इसे राज्यपद से हटाने के लिये वन्तिपुर में ब्राह्मण अनशन करने लगे), २२३३, २२३७ (विजयराज सका वध करने के लिये अवन्तिपुर की ओर लौटा), २२४० (विप्रेणैव हत-ब्रत्ररथो॑ विप्रावमानकृत्), २२४३, २२५०, २२५१, २२५३, २२५८ (अरुचि, न्माद तथा दीनतायुक्त यह, मस्तक की सन्धि में भीषण व्रण होने पर भी, ोवित बच गया), २३११, २३४१ (कोष्ठेश्वर की मृत्यु का समाचार नकर इसे दुःख हुआ), २३५२ (यह तीर्थ में था), २३५५ (इसकी त्यु), २३५८।

चित्रशिखण्डि, एक नक्षत्रमण्डल का नाम है जो एक नक्षत्र से दूसरे क्षत्र पर १०० वर्ष में जाता है (१.५५)। युधिष्ठिर के शासनकाल में यह घा नक्षत्र पर था (१.५६)।

चित्रिय, सुज्जि के साले का नाम है जिसका वध कर दिया गया ८.२१८०)।

चिन्ता, सेनापति उदय की पत्नी का नाम है जिसने वितस्तातट पर एक हार बनवाया (८.३३५२)।

चिप्पटजयापीड, राजा ललितापीड द्वारा जयादेवी नामक एक वेश्या गर्भ से उत्पन्न पुत्र का नाम है जो संग्रामपीड के बाद काश्मीर का राजा आ। इसका नाम बृहस्पति भी था (४.६७६)। इसने बारह वर्ष तक राज्य या जिसके बाद अभिचारकर्म द्वारा इसका वध हुआ (६.६८६)। .३४२६।

चीरमोचन, कनकवाहिनी के तट पर स्थित एक तीर्थ का नाम है १.१४९)। राजा जलौक की इसी तीर्थ में मृत्यु हुई (१.१५२)।

चैत्र, एक मास का नाम है (८.३००९)।

चोल, एक देश तथा वहाँ के निवासियों का नाम है (१.३००; ४२२)।

छ

छलितक, चन्द्रापीड़ के एक नगरपाल का नाम है जिसने छलितस्वामी की स्थापना की (४.८१)।

छलितस्वामी, एक देवता का नाम है (४.८१)।

छविल्लाकर, एक प्राचीन विद्वान् का नाम है जिन्होंने अशोक से अभिमन्यु तक के पाँच राजाओं कर वर्णन किया है (१.१९)।

१. **छुड्ड,** सड्ड के पुत्र का नाम है जिसे राजा उच्चल ने मंत्री बना दिया (८.१८३)। यह कामदेव का वंशज और उच्चल का नगरपाल था (८. २५६)। 'क्रूरो रड्डच्छुड्डादीन्प्रैरयत्पूर्वचिन्तिते। (८.२७८)। भोगसेन ने सुस्सल को तंग करने के लिये इसे लोहर भेजा (८.२९६)। इसने राजा उच्चल का मार्ग रोक कर उस पर तलवार से प्रहार कर दिया (८.३१९)।

२. **छुड्ड,** एक सदाचारी एवं उच्चकुल में उत्पन्न वीर का नाम है जो गर्ग और लक्कक के युद्ध ने मारा गया (८.४५४)।

३. **छुड्ड,** जनकसिंह के एक पुत्र का नाम है जो पिता से द्रोह रखता था और उसके प्रति राजा के मन में द्रोह उत्पन्न करने में सफल हो गया (८. १५७०, १५७१)।

४. **छुड्ड,** कोष्ठेश्वर के छोटे भाई का नाम है (८.२४५१)।

छुड्डा, गर्गचन्द्र की पत्नी का नाम है जो अपनी दो पुत्रियों को लेकर उनका विवाह कराने के लिये राजा सुस्सल के पास आई (८.४५९)। ८. ११२२, ११३०, ११३७ (युद्ध में इसकी मृत्यु हुई), ११५३ (छुड्डा हताम्)।

छुरिकाबल, उस स्थान का नाम है जहाँ प्रवरसेन ने छुरे से पिशाच के पाँव का मांस काट-काट कर सीढ़ी बनाई और उस पर से नदी को पार किया (३.३४७)।

छोज, राजा अवन्तिवर्मा (पार्थपुत्र) के एक मंत्री का नाम है (५.४२३)। पर्वगुप्त ने इसके साथ अपनी एक कन्या का विवाह किया था (६.२११)।

ज

जगद्दल, दरदराज का नाम है (८.२०९)। यह राजा उच्चल के समझाने पर युद्धविरत होकर लौट गया (८.२११)।

जग्गिक, लोहर के एक ठक्कुर का नाम है (८.२२७८)। इसने मल्लार्जुन के चारों ओर चौकसी का पूर्ण प्रबन्ध किया (८.२२८१)।

जज्ज, राजा जयापीड के साले का नाम है जिसने जयापीड के दिग्विजय के लिये दूर चले जाने पर विद्रोह कर दिया और बलात् काश्मीर का शासक बन बैठा (४.४१०)। जब राजा जयापीड काश्मीर के निकट लौटकर आया तब यह विशाल सेना लेकर युद्ध के लिये उपस्थित हुआ (४.४७२)। इसके अत्याचार से पीडित प्रजा जयापीड से मिल गई (४.४७४)। ग्रामीणों की सेना के साथ आया श्रीदेव नामक चाण्डाल घूम-घूम इसका पता पूछता रहा (४.४७५)। "श्रीदेव नामक चाण्डाल ने इसपर पत्थर से प्रहार किया। इस प्रकार उस चाण्डाल ने इसे मारने की अपनी प्रतिज्ञा को पूर्ण किया। पत्थर के प्रहार से इसका मुख विकृत हो गया और यह मरणासन्न होकर छटपटाने लगा। उस समय इसके समस्त साथी भाग गये (४.४७७–४७९)। इसकी मृत्यु हो जाने से जयापीड ने अपना राज्य पुनः प्राप्त कर लिया (४.४८२)। एक बार जब ब्रह्मचारी के वेश में राजा जयापीड पूर्वदेश के राजा भीमसेन के दुर्ग में प्रवेश कर गया तो इसके भ्राता, सिद्ध ने, उसे पहचान लिया (४.५२०)। इसके स्वामिविद्रोह का उल्लेख (४.५८३)। ८.३४२५।

जज्जल, उल्हण के एक सेवक का नाम है (८.२१७२)।

जज्जला, राजा सुस्सल की एक रानी का नाम है (८.१४४४)।

जट्ट, दार्वाभिसार के राजा के एक पुण्यकर्मा सान्धिविग्रहिक का नाम है जिसने अष्टमूर्ति की स्थापना की (८.२४२७)।

१. जनक, सुवर्ण के पुत्र का नाम है जो पिता के बाद काश्मीर का राजा हुआ और बिहार तथा जालोर नामके अग्रहारों का निर्माण कराया (१.९८)। ८.३४११।

२. जनक, राजा अनन्तदेव के द्वारपति का नाम है जिसने राजा की आज्ञा से लक्ककचन्द्र नामक डामर को मारकर दुर्गघात नामक दुर्ग पर अधिकार किया था (७.११७२)।

३. जनक, चित्ररथ के एक सेवक का नाम है (८.२३५२)। शृङ्गार ने इसे घूस देकर पृथक कर दिया (८.२३५३)। ८.२३६८, २३६९।

१. जनक (चन्द्र), सूर्यवर्मचन्द्र के पुत्र, एक डामर, का नाम है जिसने उच्चल को कश्मीर आने के लिये प्रोत्साहित किया (७.१२६४)। इसने उच्चल की रक्षा की (७.१३३८)। इसने हर्ष के मण्डलेश्वर का वध कर दिया (७.१३७५)। इसने और अधिक उत्साह से राजा हर्ष पर बाणवर्षा आरम्भ की (७.१५५३, १५६५)। इसके उद्दण्ड व्यवहार से अनेक राजा और डामर हतप्रभ हो गये (८.१५)। इसने डामरों के विपक्षीदल से भीषण युद्ध किया (८.२५)। यह भीमादेव के डामरसैनिकों से युद्ध करने लगा

(८.२८)। भीमादेव के एक अनुचर, कालपाश के पुत्र अर्जुन, ने इसका अङ्ग छिन्न-भिन्न कर दिया (८.२९)। भीमादेव ने बीच से काटकर इसके दो टुकड़े कर दिये (८.३२)।

२. जनकचन्द्र, कोष्ठेश्वर के अनुचर, एक डामर का नाम है (८.२३३१)।

जनकभद्र, लोठन के एक मित्र का नाम है (८.२४८)।

जनकराज, भिक्षाचर की सेना के एक डामर योद्धा का नाम है जिसने विजयक्षेत्र में आग लगा दी (८.९७६)। अवन्तिपुर के निकट इसका वध किया गया (८.१०००)।

जनक (सिंह), विजयसिंह के एक पुत्र का नाम है जिसे राजा उच्चल ने अपने मंत्रिमण्डल में सम्मिलित कर लिया (८.१८४)। यह काना था; इसे राजा सुस्सल ने राजस्थान की सुरक्षा के कार्य पर नियुक्त किया (८.५७३)। इसे नगरपाल बनाया गया (८.६३२)। इसने अपनी भतीजी का भिक्षाचर के साथ विवाह पक्का कर दिया (८.७९१)। सुस्सल ने जब देखा कि सम्पूर्ण नगर उससे क्षुब्ध है तब उसने इसे उस क्षोभ को शान्त करने का भार सौंपा और स्वयं भाग जाने का अवसर देखने लगा (८.८१४)। राजा सुस्सल के राजधानी छोड़ देने पर यह नगराधिपति बना (८.८३८)। भिक्षाचर ने इसकी भतीजी के साथ विवाह किया (८.८५१)। इसने अपने भाई की कन्या का भिक्षाचर के साथ विवाह करके उससे सेनापति का पद प्राप्त कर लिया (८.८६०)। इसने भिक्षाचर के विरुद्ध कुचक्र आरम्भ किये (८.८७९)। इसने तथा मल्लकोष्ठ आदि ने सुस्सल के पास दूत भेजकर उससे पुनः राज्यप्राप्त करने का उद्योग आरम्भ करने का आग्रह किया (८.८९७)। इसकी प्रेरणा से राजधानी के समस्त नागरिक सुस्सल को वापस बुलाने का प्रयत्न करने लगे (८.९०७)। यह तथा इसके पक्ष के लोग उत्सुकतापूर्वक सुस्सल के आगमन की प्रतीक्षा करने लगे (८.९२८)। भिक्षाचर को जब यह पता चला कि इसने नागरिकों को उसके विरुद्ध कर दिया है, तब वह अत्यन्त क्रुद्ध हुआ (८.९३१)। जब भिक्षाचर विद्रोहियों को पराजित करके राजधानी लौटने लगा तब लोगों के समझाने पर भी इसने सदाशिव पुल पर उससे युद्ध छेड़ दिया (८.९३४)। इसने अपने सैनिकों के फीके उत्साह के विपरीत भी अत्यन्त वीरता से युद्ध किया (८.९३५)। भिक्षाचर और पृथ्वीहर से पराजित होकर यह लोहर चला गया (८.९३७)। इसके पक्ष के अश्वारोही भिक्षाचर से मिल गये (८.९४१)। भिक्षाचर ने इसके

भाई, तिलक, के पुत्र को इसके स्थान पर नियुक्त करके उसे प्रतिपक्षियों का घर गिराने का अधिकार दिया (८.९४३) । यह तथा मल्लकोष्ठ आदि सुस्सल के सहायक विद्रोहियों की सेना के साथ हुष्कपुर पहुँचे (८.९४५)। क्षिप्तिका नदी के तट पर पृथ्वीहर ने इसे युद्ध में पराजित किया (८.१००६)। सुस्सल ने इसे कैद कराकर इसके स्थान पर सुज्जि के सगे भाई प्रज्जि को राजस्थान की रक्षा का भार सौंपा (८.१०४६) । सुस्सल की सेना के पलायन करने के बाद यह तथा श्रीवक आदि भागकर विषलाटा में खशों की शरण में आ गये (८.१०७४) । जय्यक इसे और श्रीवक को विषलाटा से लेकर राजा सुस्सल के पास आया (८.११३१) । ८.१५६८ (लक्ष्मक इसका उन्मूलन नहीं कर पाया), १५७१ (इसके एक पुत्र ने राजा के मन में इसके प्रति द्रोह उत्पन्न कर दिया), १५८३ (इसे कारागार में डाल दिया गया)।

जनङ्गम, उल्हण के चाचा, शील, के एक सेवक का नाम है (८.२१७२)।

१. **जय,** प्रवरसेन द्वितीय के एक शिल्पकार का नाम है (३.३५१)।

२. **जय,** प्रवरसेन के पुत्र राजा युधिष्ठिर के एक मन्त्री का नाम है जिसने अनेक विहार और चैत्यों का निर्माण कराया (३.३८०)।

जयगुप्त, दिद्दारानी के भ्राता उदयराज के प्रिय सहायक, एक अधिकारी का नाम है (६.२८७)।

जयचन्द्र, गर्गचन्द्र के पुत्र और षष्ठचन्द्र के एक भाई का नाम है जो राजा जयसिंह से वेतन पाता था (८.२७५३)। राजवदन ने इसे भोज के पास भेजा (८.२७६७)। राज्य के सैनिकों ने इसे पराजित किया (८.२८४६)। ८.२८५१, २९८३ (राजा जयसिंह ने इसके द्वारा नाग को बुलवाया), ३३०५ (राजवदन ने इस पर आक्रमण किया), ३३१० (सेना नष्ट होने के कारण यह विषादग्रस्त हुआ)।

जयदत्त, राजा जयपीड के एक मन्त्री का नाम है जिसने जयपुर में एक मठ का निर्माण कराया (४.५१२)।

१. **जयन्त,** काश्मीर-निवासी एक ब्राह्मण का नाम है जिसके द्वारा कापालिक अश्वपाद ने प्रवरसेन के पास पत्र भेजा (३.३६६) । प्रवरसेन ने इसे अपने पास बुलाया (३.३७२)। प्रवरसेन के योगबल से आकाश में चले जाने के दृश्य को देखकर यह आश्चर्यचकित हुआ (३.३७६)।

२. **जयन्त,** पौण्ड्रवर्धन के राजा का नाम है (४.४२०)। जयापीड द्वारा मारे गये सिंह को देखने के लिये यह भी आया (४.४५६)। गौडदेश में जयापीड के केयूर को देखकर भयभीत नागरिकों को इसने सान्त्वना दी (४.४६०)।

३. **जयन्त,** काश्मीर के एक नगर का नाम है (८.६४८)।

जयपुर, एक नगर का नाम है (४.५०६)। ४.५११ (श्रीद्वारवत्यधिष्ठानं वाह्यं कोट्टं तथा ह्यसौ। अभ्यंतरं जयपुरं ब्रूतेऽद्याप्यखिलो जनः), ५१२ (जयदत्त ने यहाँ एक मठ का निर्माण कराया); ७.१६२५ ।

जयभट्टारिका, श्रीनगर के एक मंदिर का नाम है (६.२४३) ।

जयमती, राजा कलश की एक रखेल का नाम है जो राजा की मृत्यु के बाद सती हो गई (७.७२४) ।

जयमती, एक अज्ञातकुलवाली बालिका का नाम है जिसे काणश्रावती नामक नर्तकी ने पाला था (७.१४६०)। यह उच्चल से प्रेम करती थी, परन्तु बाद में धन के लोभ में मण्डलेश्वर से प्रेम करने लगी (७.१४६१)। यह पुनः उच्चल से प्रेम करने लगी (७.१४६२)। एक साधारश स्त्री होते हुये भी उच्चल की रानी बनने के बाद इसने अपने देवीत्व पर आँच नहीं आने दिया (८.८२)। एक भिक्षुक प्राणदण्ड से बचने के लिये इसके महल में छिप गया था (८.२२४)। इसने एक अन्य बालक का वध कराकर दिद्दारानी के पालित बालक की रक्षा की थी (८.२२९)। इसने एक मठ तथा विहार का निर्माण कराया (८.२४६)। राजा उच्चल ने किसी अन्य स्त्री से प्रेम करने के कारण इसकी उपेक्षा की (८.२८५)। इसने अपने लिये चिता तैयार कराने के लिये गर्गचन्द्र से अनुरोध किया जिससे राजा उच्चल की मृत्यु हो जाने के कारण यह सती हो सके (८.३६३)। श्मशान भूमि में उपस्थित जनसमुदाय ने सती होने से रोकते हुये इससे राज्यसिंहासन स्वीकार करने का अनुरोध किया (८.३७०)।

जयमल्ल, विजयमल्ल के एक पुत्र का नाम है जिसका राजा हर्ष ने गुप्त रीति से वध करा दिया (७.१०६९)।

१. **जयराज,** राजा कलश द्वारा कय्या के गर्भ से उत्पन्न पुत्र का नाम है जिसका उत्कर्ष ने वेतन निश्चित किया (७.७३३)। जब विजयमल्ल ने राजधानी पर आक्रमण किया तो यह उससे युद्ध करने के लिये आया (७.७७०)। हर्ष ने अपने इस कनिष्ठ भ्राता को समस्त प्रतीहारों का अध्यक्ष बनाया (७.८९६)। धम्मट ने हर्ष का वध करने के अपने षडयन्त्र में इसे भी सम्मिलित कर लिया (७.१०१५)। षडयन्त्र के विफल हो जाने के भय से यह धम्मट के पास आया (७.१०१८)। षडयंत्र को विफल होता देखकर इसने दो डामरों को अपने पास बुला लिया (७.१०२२)। धम्मट इसे लेकर हर्ष के पास चतुष्कमण्डल में आया (७.१०२४)। प्रयाग ने धम्मट को इसे बन्दी बना लेने का आदेश दिया (७.१०२६)। 'धम्मटे विश्वसञ्शस्त्रं जयराजस्त्यजेद्ध्रुवम्। निदेशेनामुना वेत्ति स्वमज्ञातं च धम्मटः।', (७.१०२७)।

तन्वङ्ग पुत्र धम्मट ने, यह समझते हुये कि राजा को उस पर षडयन्त्र में सम्मिलित होने का सन्देह नहीं है, इससे कहा कि राजा हर्ष इस पर अत्यन्त क्रुद्ध हैं (७.१०३०)। राजा हर्ष ने इसका ४१७१ लौकिक वर्ष के भाद्रपद मास में वध करा दिया (७.१०३९)। दुल्ल ने इससे कहा था कि यह कय्या के गर्भ से उत्पन्न नहीं है (७.१०५८)।

२. जयराज, भोजक के एक पुत्र का नाम है जो टिक्क से मिला (८.१५१२)। यह राजा जयसिंह के विरुद्ध हो गया (८.२७३०)। इसकी मृत्यु (८.२७३५)। इसके बड़े भाई का नाम यशोराज था (८.२७४१)। ८.२९०३।

१. जयलक्ष्मी, सुगन्धसीह की पत्नी का नाम है (७.१२४)।

२. जयलक्ष्मी, गोपालवर्मा की पत्नी का नाम है (५.२४६)।

जयवन, कलश द्वारा स्थापित एक स्थान का नाम (७.६०७)। हर्ष के दण्डनायक, सुन्न, ने यहाँ एक मठ बनवाया (७.९५२)। ८.२४३९।

१. जयसिंह (सिंहदेव भी), राजा सुस्सल के पुत्र का नाम (८.२३९)। इसका नाम (८.२४०)। इसे लोहर से लाया गया (८.१२२७)। इसका राज्याभिषेक (८.१२३२)। इसे बन्दी बनाया गया (८.१२३८)। इसने सुस्सल की हत्या का समाचार सुना (८.१३४९)। इसने सब को क्षमा किया (८.१३७७)। डामरों को शान्त किया (८.१५३५)। इसकी राज्य-व्यवस्था का वर्णन (८.१५४४ और बाद)। इसका चरित्र (८.१५४९)। सोमपाल के प्रति इसकी कूटनीति (८.१६४४)। इसके उपायों की प्रेरणा से सुज्जि के प्रति सोमपाल के आदरभाव में ह्रास होने लगा (८.१६४६)। इसने नागलेखा से विवाह किया (८.१६४९)। ८.१६७६, १६९८, १७७९ (इसने भिक्षाचर के कटे मुण्ड को देखा), १७९४ (लोठन के अभ्युदय का समाचार सुना), १८३६ (लोहर पर आक्रमण), १८६९, १९३३, २०२० (सिंहमहीपतिः), २०८२, २११० (सुज्जि के वध का उपाय किया), २२०१ (कोष्ठेश्वर पर आक्रमण किया), २३०९ (मल्लार्जुन को कैद किया), २३४८ (विजय का वध किया), २३५१, २३७६, २४५२, २५००, २५८८, २६४३, २७३१ (डामरों ने इसके विरुद्ध विद्रोह किया), २९१४, २९६४, ३००८, ३१७९ (लौकिक वर्ष ४२२१ की ज्येष्ठ कृष्ण दशमी को तैंतीस वर्षीय युवक भोज को इसने अपने वश में कर लिया), ३२०८, ३२७८ (त्रिल्लक पर आक्रमण किया), ३३१५ और बाद (इसके राज्य-शासन का वर्णन), ३३७१ (इसके पुत्र),

३३९४ (इसकी पुत्रियों का विवाह)। 'समा द्वाविंशती राज्यावाप्तेः प्राग्भूभुजो गता। तावत्येवाप्तराज्यस्य पञ्चविंशतिवत्सरे ।। इयद्दृष्टमनन्यत्र प्रजा-पुण्यैर्महीभुजः । परिपाकमनोज्ञत्वं स्थेयाः कल्पातिगाः समाः ।।', (८.३४०४, ३४०५)। ८.३४४८।

२. **जयसिंह**—देखिये वेलावित्त जयसिंह।

३. **जयसिंह**, एक सैनिक का नाम है जो हम्मीर के विरुद्ध युद्ध करता है (७.५८)।

जयस्तम्भ, राजा बालादित्य द्वारा पूर्वी समुद्रतट पर निर्मित कराये गये स्तम्भों का नाम है (३.४७९)।

जयस्थल, एक ग्राम का नाम है (५.१२१)।

जयस्वामी = विष्णु (३.३५०, ३५१; ५.४४९)।

जयस्वामिपुर, एक नगर का नाम है (१.१६९)।

जयाकर, जयाकरगंज आदि के निर्माता, एक तीक्ष्णबुद्धि व्यक्ति का नाम है जो रानी श्रीलेखा का उपपति बन गया (७.१२५)।

जयाकरगञ्ज, एक कोश का नाम है (७.१२५)।

१. **जयादेवी**, एक देवी का नाम है (४.५०७)।

२. **जयादेवी**, एक कल्यपाल जाति की वेश्या का नाम है जिसके गर्भ से ललितापीड ने चिप्पट जयापीड नामक पुत्र उत्पन्न किया। यह पुत्र काश्मीर का राजा हुआ (४.६७७)। आखुव ग्रामनिवासी उप्प नामक कल्यपाल की यह पुत्री अत्यन्त रूपवती थी, जिससे इसके सौन्दर्य पर मुग्ध होकर ललितापीड ने इसे अपने अन्तःपुर में रख लिया था (४.६७८)। इसने जयेश्वर के मन्दिर का निर्माण कराया (४.६८१)।

३. **जयादेवी**, त्रिभुवनापीड की पत्नी का नाम है (४.६९०)।

जयानन्द, एक व्यक्ति का नाम है जिसके प्रति मरणासन्न हलधर ने राजा अनन्तदेव को सतर्क किया था (७.२७१)। यह गंजपति नाग का पुत्र था (७.२७५)। जब अनन्तदेव ने कलश को बुलाया तो उसने भयभीत होकर अपने भय को इससे प्रगट कर दिया (७.३२०)। कलश इसका हाथ पकड़ कर किसी प्रकार राजा अनन्तदेव के समक्ष उपस्थित हुआ (७.३२१)। कलश ने इसकी सर्वाधिकारी के पद पर नियुक्ति की (७.३६४)। इसने पदातियों की नियुक्ति के लिये अयोग्य धनिकों तक से ऋण लिया (७.३६७)। 'जयानन्दादिबुद्धयाथबुद्ध्वाबन्धोद्यतं सुतम् । भूयोऽपि ययतुः खेदान्निर्गत्य-विजयेश्वरम् ।।', (७.४०२)। सती रानी के शाप से शीघ्र ही इसकी मृत्यु हो गई (७. ४७६)। कलश ने इसे संग्रामपाल की बहन के साथ सहायता के

लिये भेजा (७.५३६) । इसे एक प्राणान्तक रोग हो गया (७.५४२)। इसने कलश को बिज्ज के सम्बन्ध में बताया (७.५४६, ५४७) । इसने बिज्ज का उच्चाटन कर दिया (७.५५४) । बिज्ज को निर्वासित कराने के शीघ्र ही बाद रानी सूर्यमती के शापानुसार इसकी मृत्यु हो गई (७.५६२)। इसके सहायक, वामन, को कलश ने सर्वाधिकारी बनाया (७.५६८)। इसकी वेशभूषा (७.९२३)।

जयानन्दवाड, आनन्दवाड के एक पुत्र का नाम है (८.२९२४) । 'आनन्दवाडसूनुः स हत्वा', (८.२९२९)।

१. **जयापीड,** राजा ललितादित्य के पौत्र का नाम है (४.३५९)। संग्रामपीड के बाद यह काश्मीर का राजा हुआ (४.४०२) । इसके पूछने पर जब वृद्ध सैनिकों ने इसके पितामह, ललितादित्य, की सेना का विवरण बताया तब इसे लेशमात्र भी खेद नहीं हुआ (४.४०८) । "इसने ब्राह्मणों को यह आदेश दिया कि 'जो राजा पूरे एक लाख अश्वों का दान करे वह इस मुद्रा को हटा कर अपने नाम की मुद्रा को प्रचारित कर सकता है।' इस शर्त के साथ 'श्रीजयापीडदेवस्य' शब्दों से अंकित मुहर इसने विदेश जानेवाले गङ्गाजल के कलशों पर लगाने की आज्ञा दी (४.४१५–४१७) ।" यह इधर-उधर भ्रमण करता हुआ गौड देश के राजा जयन्त द्वारा रक्षित पौण्ड्रवर्धन नगर में आया (४.४२०–४२१) । इसने कमला नर्तकी का आमन्त्रण स्वीकार करके उसे अपना परिचय दिया (४.४३०) । इसने एक सिंह का वध कर दिया (४.४५३) । "इसने जिस सिंह का वध किया उसके मुख से एक व्यक्ति ने एक केयूर निकाल कर राजा जयन्त को दिखाया जिस पर 'जयापीड' नाम खुदा था। उस समय जयापीड के आगमन की आशंका से गौड देश के नागरिक भयभीत हो उठे (४.४५८–४५९)।" 'श्रूयते हि जयापीडो राजा भुजबलोर्जितः । केनापि हेतुना भ्राम्यन्नेकाक्येव दिगन्तरे ।।', (४.४६१)। इसने कल्याणदेवी से विवाह किया (४.४६७) । शुष्क ग्राम में इसका जज्ज के साथ घोर संग्राम हुआ (४.४७३)। जज्ज का वध हो जाने से इसने काश्मीर का अपना राज्य पुनः प्राप्त कर लिया (४.४८२) । इसने क्षीर नामक एक वैयाकरण से व्याकरण की शिक्षा ग्रहण की (४.४८९)। इसने जयपुर नामक नगर बसाया (४.५०३)। इसके गुणों की ख्याति (४.५०६–५११)। इसका एक अन्य नाम विनयादित्य था (५.५१७) । इसने भीमसेन के विरुद्ध अभियान किया (४.५१९) । जब पूर्वदेश के राजा भीम ने इसे बन्दी बना लिया तो इसने अपने धैर्य का परित्याग नहीं किया और मुक्त होने का उपाय सोचने लगा (४.५२३) । इसने नेपाल के राजा अरमुडी के साथ युद्ध

किया (४.५३८) । अरमुडी ने इसे पकड़वा कर बन्दी बना लिया (६.५४४) । अरमुडी ने इसे कालगण्डिका नदी के तट पर बने एक दुर्ग में बाँध कर कैद कर दिया (४.५४६) । इसके मंत्री ने अरमुडी को प्रलोभन देते हुए दूतों से यह समाचार भेजा : 'मैं जयापीड की समस्त सम्पत्ति और काश्मीर का राज्य आप को सौंप देना चाहता हूँ' (४.५५३) । 'जयापीडार्जितं धनम्', (४.५५९) । 'जयापीडमहीभुजः' (४.५६३) । महापद्मनाग की कथा (४.५९२) । इसने अपनी प्रजा को सताना आरम्भ किया (४.६२०) । पहले इसके जिस पाण्डित्य से लोगों को शान्ति प्राप्त होती थी उसी पाण्डित्य ने अब इसे प्रजा-पीडन में दक्ष बना दिया (४.६२५) । 'जयापीडदेवस्य पाणिनेश्च किमन्तरम्', (४.६३५) । 'जयापीडदेवस्य पाणिनेश्च किमन्तरम्', (४.६३७) । इसने ३१ वर्ष तक शासन किया (४.६५७) । राजा होने पर इसका पुत्र इसे मूर्ख समझता था (४.६६६) । ललितापीड के बाद कल्याणदेवी से उत्पन्न इसका दूसरा पुत्र, संग्रामपीड, काश्मीर का राजा हुआ (४.६७४) । इसके धन को इसके पुत्र ललितादित्य ने बहुत उड़ाया (४.६८३) । इसके बाद के राजा प्रायः निर्बल होते गये जिससे महापद्म सरोवर के जल से कृषियोग्य भूमि पुनः आप्लावित हो गई (५.७०) । ८.८१, १९५२, २३९३, ३४२५, ३४२८ ।

२. **जयापीड,** राजा जयसिंह के एक पुत्र का नाम है (८.३३७३) ।

१. **जयेन्द्र,** राजा विजय के पुत्र का नाम है जो अपते पिता के बाद काश्मीर का राजा हुआ । यह पृथु के समान प्रतापवान् और आजानुबाहु था (२.६३) । इसके मंत्री, संधिमति, की कथा (२.६५ और बाद) । इसने ३७ वर्ष तक राज्य किया परन्तु इसे कोई सन्तान नहीं हुई (२.८१) । ८.३४१८ ।

२. **जयेन्द्र,** तोरमाण के साले और अञ्जना के भ्राता का नाम है (३.११५) । इसके भांजे, प्रवरसेन, ने इसका परिचय पाने पर इसकी ओर उपेक्षा भरी दृष्टि से देखा (३.११६) । जब अपने पिता के कारावास का वृत्तान्त सुनकर प्रवरसेन दुखी हुआ तो इसने उसे सान्त्वना दी (३.१२१) । इसने एक विशाल मन्दिर बनवाकर उसमें बुद्ध की मूर्ति स्थापित की, और जयेन्द्र विहार भी बनवाया (३.३५५) । यह वज्रेन्द्र का पिता था (३.३८१) ।

जयेन्द्रविहार, श्रीनगर में स्थित एक विहार का नाम है (३.३५५; ५.४२८; ६.१७१) ।

जयेश्वर, एक शिव का नाम है जिनके मन्दिर का जयादेवी ने निर्माण कराया (४.६८१) ।

जय्य—देखिये **जय्यक**।

१. **जय्यक**, सेल्यपुर निवासी नयन के पुत्र का नाम है जो एक सम्पन्न डामर बन गया (७.४९४)। इसका वध (७.४९८)।

२. **जय्यक**, एक प्रतीहार का नाम है जिसने जयराज का सत्कार कर उसके शव को भट्टारनड्वला सरोवर में फेंक दिया (७.१०३८)।

३. **जय्यक**, सिफिन्नाग्राम निवासी एक डामर का नाम है जिसकी माता की नाक और कान कटवा कर राजा सुस्सल ने इसी के पास भेज दिया (८.६७८)। इसे साथ लेकर पृथ्वीहर काश्मीर के सेनापति को पराजित करने के लिये विजयक्षेत्र गया (८.९६९)। यह सुस्सल के पक्ष में सम्मिलित हुआ (८.११३१)। जब व्याघ्र आदि ने राजा सुस्सल पर घातक प्रहार किया तब यह दुःखी होकर उस स्थान से बाहर जाने लगा (८.१३१८)। इसकी मृत्यु (८.३३१५)।

जरासंध, गोनन्द के मित्र, मगध के एक राजा का नाम है (१.५९)।

जर्ज, सञ्जपाल के द्वितीय पुत्र का नाम है (८.३२९०)।

जलक, महाआमात्य चम्पक के एक सेवक का नाम है (७.१६२३)।

जलेश्वर—वरुण : ३.६९।

जलोद्भव, सतीसर निवासी एक असुर का नाम है जिसका कश्यप ने ब्रह्मा आदि देवताओं से वध कराया (१.२७)।

जलौक, राजा अशोक के पुत्र का नाम है (१.१०८)। कोटिबेधीरस सिद्ध करके यह पारदादि धातुओं से सुवर्ण बनाता था (१.११०)। "पहले इसके राज्य में धर्माध्यक्ष, धनाध्यक्ष, सेनाध्यक्ष, पराष्ट्र सचिव, पुरोहित और ज्योतिषी ये सात अधिकारी होते थे। परन्तु इसने इनके स्थान पर अट्ठारह कर्मस्थान स्थापित करके अपने राज्य का युधिष्ठिर के समान सुन्दर प्रबन्ध कर दिया (१.११९,१२०)। इसके शासन और कार्यों का वर्णन (१.१२१ और बाद)। इसने ज्येष्ठरुद्र के मंदिर का निर्माण कराया (१.१२४)। कृत्याश्रम विहार का निर्माण कराया (१.१४७)। नन्दिक्षेत्र में एक मंदिर का निर्माण कराया (१.१४८)। चीरमोचन में इसकी मृत्यु हुई (१.१५२)। ८.३४१७।

जलौकस, प्रतापादित्य के पुत्र का नाम है जो अपने पिता के बाद काश्मीर का राजा हुआ (२.९)। इसने ३२ वर्ष तक राज्य किया (२.१०)। ८.३४१२।

जल्ह, भुट्ट के बड़े भ्राता का नाम है (८.२४२९)।

जल्हण, राजपुरी के एक मंत्री का नाम है (८.२४२७)।

१. जस्सराज, दिद्दा रानी के दूसरे भ्राता, कान्तिराज, के पुत्र का नाम है (७.१२८५)। इसके तन्वङ्ग तथा गुङ्गु नामक दो पुत्र हुये (७.१२८६)। ८.३४४२।

२. जस्सराज, एक ठक्कुर का नाम है जो संग्रामपाल की बहन के साथ कलश के पास सहायता के लिये आया (७.५३५)।

जामदग्न्य—परशुराम : ७.१४७६; ८.६७०, १३५५।

जामातृसर, सुश्रवा नाग की कृपा से नागत्व को प्राप्त एक ब्राह्मण के निवासस्थान का नाम है (१.२६८)।

जम्बाल—सेवार : ५.९४।

जालन्धर, एक प्रान्त का नाम है: ४.१७७; ७.१५०; ८.१६५१, १६७०।

जालोर, जनक द्वारा स्थापित एक अग्रहार का नाम है (१.९८)।

जासट, चम्पा के प्रधान और राजा हर्ष के ममेरे भाई का नाम है (७.१५१२)। ८.५३८, ५४२, ५४७, ५५३ (दर्यक की मृत्यु के बाद भिक्षाचर इसके पास रहने लगा)।

जाह्नवी—गङ्गा नदी : ३.४७; ४.१४६; ७.६०२, ८९७ (जाह्नवी-यात्रया); ८.१६००, १६५५, २२१४ (जाह्नवी स्नातुं राज्ञा राष्ट्रादपाकृतः), ३३५७ (जाह्नव्या यत्र पूर्वां दिशं गता)। देखिये **गङ्गा, त्रिपथगा**।

जिनदेव = जैनों के एक संस्थापक (३.७)। ४.२०० (बृहच्चैत्यबृहज्जिनैः), २१० (जिनोपमः), २६१ (जिनविम्बम्); ८.२२३४।

जिन्दुराज, सिद्धराज के पौत्र और मदनराज के पुत्र नाम है जो अत्यन्त घमण्डी था। इसे सूर्यमती ने अपने यहाँ मंत्री बनाया (७.२६५)। इसकी श्रीवृद्धि का उल्लेख (७.२७१)। राजा अनन्तदेव ने हलधर की बात का स्मरण कर के बिज्ज द्वारा इसे बन्दी बनवा लिया (७.२७२)। एक बार राजा कलश चौर्यसुरत के लिये इसके घर की ओर चला क्योंकि इसकी दुराचारिणी पुत्रवधू ने इसे आमन्त्रित किया था (७.३०७, ३०८)। इसकी सेना के वस्त्राधि-कारी, विजयमित्र, को कलश ने कम्पनेश बनाया (७.३६५)। यह कारावास से मुक्त होकर युद्ध के लिये आया (७.३६९)। 'ईषत्स जिन्दुराजस्य गणनां पौरुषेऽकरोत्', (७.३८९)। सती सूर्यमती के शाप से शीघ्र ही इसकी मृत्यु हो गई (७.४७६)। हलधर ने इसे लाञ्छित किया था (७.५५४)। सूर्यमती के शाप के कारण इसकी मृत्यु हो गई (७.५६३)। कन्दर्पदेव ने इससे राज-नीति की शिक्षा प्राप्त की थी (७.५७७)। इसके कुल में उत्पन्न चन्द्रराज ने हर्ष का कम्पनेश होना स्वीकार किया (७.१३६४)।

जिष्णु, एक विट का नाम है (६.१५५)। इसके पुत्रों ने चाटुकारिता द्वारा राजा क्षेमगुप्त को अपने अनुकूल बना लिया था (६.१६०)।

जुङ्ग, राजपुरी के राजा के एक सैनिक अधिकारी का नाम है (८.८६१)।

जुष्क, दामोदर के बाद हुये तीन तुरुष्क राजाओं में से एक का नाम है जिसने अपने नाम के आधार पर जुष्कपुर नामक नगर बसाया (१.१६८)। इसने जुष्कपुर एवं जयस्वामिपुर में अनेक विहार बनवाये (१.१६९)।

जुष्कपुर, एक नगर का नाम है : १.१६८, १६९।

जोहिलमठ, एक मठ का नाम है जहाँ पदच्युत राजा हर्ष आकर रुका (७.१६११)।

जाति, तन्वङ्गराज तुङ्ग के पिता का नाम है (७.३५७)।

ज्येष्ठ, एक मास का नाम है : १.२२०।

ज्येष्ठपाल, दर्यक के सौतेले भाई का नाम है जो राजा भिक्षाचर का अन्तरङ्ग बन गया (८.८६४)। ८.१४४७, १६५१ (यह सेनासहित सुज्जि से मिला), १६७१ (इसकी प्रेरणा से सुज्जि ने विपक्ष का आश्रय ग्रहण करने का विचार त्याग दिया), १७५१ (इसका भ्राता, रक्तिक, भिक्षाचर के साथ था)।

ज्येष्ठरुद्र, (ज्येष्ठेश), एक देवता का नाम है : १.११३, १५१; ४.१९०; ८.२४३०।

ज्येष्ठेश, ज्येष्ठेश्वर = शिव, जिनकी नन्दीश क्षेत्र में पूजा होती थी : १.१२४,३४१ (इनकी प्रतिमा गोपादित्य ने गोपगिरि पर स्थापित की)। देखिये **ज्येष्ठरुद्र** भी।

ज्येष्ठेश्वर, त्रिपुरेश पर्वत पर विद्यमान एक क्षेत्र का नाम है (५.१२३)।

ट

टक्क, एक देश का नाम है, जिसे गुर्जर नरेश ने शङ्करवर्मा को भेंट में प्रदान किया (५.१५०)। ७.५२०, १००१, १०६४, १२०७; ८.१०९१। देखिये **टाक**।

टक्किबुद्ध, राजा अनन्तदेव के एक सेवक का नाम है जिसने राजा के शव-दाह के समय अग्नि में प्रवेश किया (७.४८१)।

टाक, टक्कदेश के एक परिवार का नाम है (७.४१४)।

टिक्क—इसे सूक्ष्मटिक्क भी कहा गया है (८.५२२)। यह विद्रोही डामरों के साथ मिल गया (८.६३३)। यह विजय का एक सगोत्री था (८.६६३)। इसके हाथों से अक्षोसुवा का अग्रहार छीन लेने पर वहाँ के ब्राह्मण, राजा भिक्षाचर के विरुद्ध, अनशन करने लगे (८.८९८)। इसके प्रहार से राजा सुस्सल की सेना

ने पलायन किया (८.१०७०)। गर्गपत्नी छुड्डा का वध करने के लिये पृथ्वीहर ने इसे देवसरस् भेजा (८.११३६)। इसने अकस्मात् रणभूमि में पहुँचकर छुड्डा का वध कर दिया (८.११३७)। साह्य का पुत्र, उत्पल, इसका साथी बन गया (८.१२४६)। राजा सुस्सल ने उत्पल से इसका और भिक्षाचर का वध करने के लिये कहा (८.१२४८)। ८.१२५५। उत्पल ने युवराज विजय को इससे मिलाया (८.१२५९)। यह उत्पल आदि को सदैव राजा सुस्सल के विरुद्ध उकसाया करता था (८.१२७९)। 'दूतौ टिक्कस्यार्घदेवतिष्यवैश्याभिधावुभौ', (८.१३०५)। जब राजा सुस्सल पर भीतरी मण्डप में व्याघ्र आदि ने प्रहार किया तभी बाहर बैठे सशस्त्र विद्रोहियों को लेकर इसने विप्लव आरम्भ कर दिया (८.१३१९)। त्रैलोक्य नामक राजा सुस्सल के शय्यापाल के एक सेवक ने इसके विद्रोह की निन्दा की (८.१३२४)। कुलराजवंश में उत्पन्न सेनापति इन्दुराज को जब डामरों ने घेर लिया तब वह इसकी शरण में आ गया (८.१४३१)। भिक्षाचर इसके पास आया (८.१४५५)। यह अवन्तिपुर के मार्ग से काश्मीर की राजधानी की ओर चला (८.१४७४)। 'कय्यात्मजादीनालोक्य भंङ्ग टिक्कादयो ययुः', (८.१४७९)। सुज्जि के अवन्तिपुर पहुँचने पर इन्दुराज भी इसे छोड़कर सुज्जि से मिल गया (८.१४८१)। ८.१५११,१५१२ (भोज के पुत्र जयराज और यशोराज इसके पास देवसरस आये), १६६४ (यह भिक्षाचर के पास आया), १६६५ (टिक्कजामातुर्भागिकस्य), १६९४ (खशाधीश के साले ने इसमें और लक्ष्मक में मित्रता करा दी), १६९५ (इसकी प्रतिहार लक्ष्मक के साथ मित्रता हो जाने पर भिक्षाचर आदि ने अपना अन्त समीप देखा), १७१७,१७३८ (इसने जब देखा कि लक्ष्मक के सामने सैनिक भाग रहे हैं तब अपनी एक उँगली काट दी), २१९४ (गन्धर्वाना ग्राम में घातकों ने इसका वध करके इसका सर राजा जयसिंह के पास भेज दिया), २८५७।

टुल्ल, तन्वङ्ग के पौत्र और अज्जक के पुत्र का नाम है जिसने जयराज को तिरस्कार भरे कठोर वचन कहे (७.१०३३)। धम्मट के वध के बाद यह क्रुद्ध होकर युद्ध के लिये उद्यत हुआ (७.१०५४)। एक सेवक ने इसे जयराज के प्रति कहे व्यंग वचन का स्मरण कराया (७.१०५७)। राजा हर्ष के सैनिकों ने इसे पकड़ कर कारागार भेज दिया (७.१०६२)। इसका वध (७.१०६५)।

ठ

ठक्कुर, आधुनिक 'ठाकुर' शब्द के ही समकक्ष एक उपाधि के रूप में प्रयुक्त एक शब्द है (७.२९०)। लोहर के ठक्कुर (७.७०६, ७३९, ७७५,

७७९, ७८०, ७८४, ८३५; ८.१९४२, २२७८)। बप्पनील के ठक्कुर (८.१९८९)। निचले पहाड़ों के ठक्कुर (८.२२२३) ।

ड

डमरू, एक प्रकार के वाद्य का नाम है (२.९९)।

डल्लक, राजा अनन्तदेव के एक प्रेमपात्र और विदेशी का नाम है (७.१८९)। रानी सूर्यमती ने इसका भय दूर कर दिया (७.१९८)।

डामर, एक जाति के लोगों का नाम है : ५.५१, ५६, ३०६, ३०८, ३२७, ३९५, ४२४, ४३९, ४४७, ४५३; ६.२८०, २८३, ३५४; ७.५८, ९७, ११९, १५४, १५९, १६७, २१७, २२३, २६५, २६६, ३५७, ४९४, ५७६, ५७९, ७६५, ९१४, ९१५, १०२२, ११७२, १२२७, १२२८, १२३४, १२३५, १२३६ (डामरमुण्डानि), १२३९, १२४०, १२४१, १२५४, १२६२, १२६३, १२६५, १२९२, १३०२, १३१२, १३१७, १३३५, १३३६, १३३९, १३४१, १३६०, १५०५, १५१८, १५४७, १५७२, १५७८, १५८३, १६३१, १७०९; ८.३, ६, १५, २०, २४, ३८, ४०, २०२, २१४, २९४, ४२४, ४२५, ४५६, ५०१, ५२२, ५८९, ५९१, ६२७, ६४६, ६५१, ६५७, ६७४, ६७६, ७०९, ७२३, ७३३, ७४६, ७५०, ७५३, ७९५, ८००, ८०७, ८२४, ८५५, ८५८, ८८१, ९०९, ९२५, ९२६, ९६०, ९६३, ९६९, ९७५, ९८६, ९९५, १००२, १०११, १०२८, १०३९, १०५३, १०५६, १०७२, १०७५, १०७८, १०९९, ११०२, ११२३, ११५१, ११५५, ११५७, ११६२, ११६४, ११६९, १२०७, १२४६, १२६७, १३०६, १३०७, १३४२, १३८४, १४०७, १४१३, १४१९, १४२२, १४२७, १४३०, १४३२, १४४५, १४७७, १४८४, १४८८, १४८९, १४९६, १५१७, १५२३, १५२६, १५३२, १५३५, १५४२, १५४५, १६०६, १६३३, १६६२, १६६४, १६६६, १६८१, १६८९, १६९५, १७२१, १७२२, १८४१, १९०२, १९२५, १९९२, १९९७, २०१३, २२२१, २३३१, २३३७, २४८३, २४९१, २५१७, २५३१, २५३३, २५३९, २५४४, २५८३, २५८४ (क्षेमराजाभिधानेन डामरेशेन), २५९३, २५९८, २६२९, २६७१, २७०३, २७२८, २७४९, २७७८, २७९९, २८०८, २८५७, २९३४, २९४५, २९५३, २९९८, ३०१९, ३१११, ३११४ (नीलाश्वडामराः), ३११५, ३१३०, ३१३१, ३१५०, ३१६४, ३१७०, ३२९६ ।

डिम्ब, राजा जयसिंह के एक अनुगामी का नाम है : 'डिम्बो राजानुगा डिम्बास्तस्य भिक्षोः प्रमापणम्', (८.१७०५)।

१. डोम्ब, एक जाति, सम्भवतः डोम, की संज्ञा है : ५.३५४, ३८१, ३८९; ७.११३३ (डोम्बेन पिण्डसिद्धार्थी केनाप्येतद्रसायनम्) ।

२. डोम्ब, उत्कर्ष के एक पुत्र का नाम है जिसका राजा हर्ष ने गुप्त रीति से वध करा दिया (७.१०६८) ।

३. डोम्ब, सज्ज के पुत्र का नाम है । राजा सुस्सल की ओर से पृथ्वीहर से युद्ध करते हुये इसकी मृत्यु हो गई (८.११३३) ।

ढ

ढक्क, निरीक्षण-केन्द्र (द्रङ्ग के ही समान) का नाम है : ३.२२७; ५.३९, ३०६ ।

त

तक्षक, एक प्राचीन नाग का नाम है : १.२२०; ४.२१६ (तक्षकानुग्रहाच्छ्रियम्),

तन्वङ्ग (तन्वङ्गराज भी), लोहर वंश के जस्सराज के पुत्र का नाम है (७.२६०) । इसने राजा अनन्तदेव के पौत्र, उत्कर्ष, का भलीभाँति पालन किया और फिर चक्रधर तीर्थ में आकर प्राण त्याग कर दिया (७.२६१) । 'तन्वङ्गराजतुङ्गादिज्ञातिपुत्रा', (७.३५७) । 'तन्वङ्गनन्दनाः', (७.३९०) । 'तन्वङ्गपुत्रैश्च', (७.४१०) । 'कुप्यंस्तन्वङ्गे थक्कने स्थिते', (७.४२२) । इसके पुत्रों ने अनन्तदेव की अस्थियों को गङ्गा में प्रवाहित करने के लिये प्रस्थान किया (७.४८५) । 'तन्वङ्गस्थक्कनादीम्', (७.५१७) । 'तन्वङ्गनन्दनौ', अर्थात थक्कन आदि (७.६३४) । 'तन्वङ्गजेषु', (७.६४०), 'तन्वङ्गैः', (७.८९७) । 'तान्वङ्गिर्धम्मटः', (७.१०१३) । 'तान्वङ्गिः', (७.१०३०) । 'तन्वङ्गपौत्रः', (७.१०३३) । 'तान्वङ्गिः', (७.१०४६) । 'तन्वङ्गनप्तारौ···रल्हणमल्हणौ', (७.१०५३) । 'तन्वङ्गजगृहोच्छिष्टैर्बलि', (७.१०५७) । 'तन्वङ्गनप्तर्यत्पूर्वं', (७.१०५८) । 'तन्वङ्गपौत्राश्चत्वारो हता वध्यमहीतले', (७.१०६५) । यह जस्सराज का पुत्र था (७.१२८६) ।

तरललेखा, रानी देवलेखा की बहन का नाम है । यह भी देवलेखा के साथ ही सती हो गई (८.१४४३) ।

ताम्बूल = पान : ८.१९४ ।

ताम्रधातु = ताँबा : ४.६१५,६१६ (ताम्राकरं गिरिम्) ।

ताम्रस्वामी, एक देवालय का नाम है जिसमें ताँबे की सूर्यप्रतिमा थी ७.६९६) । राजा कलश ने कहा कि ताम्रस्वामी की प्रतिमा तोड़ने के कारण सूर्यदेव उस पर रुष्ट हैं (७.७०९) ।

तारमूलक, एक स्थान का नाम है (७.१३१४)। उच्चल पराजित होकर यहाँ लौट आया (७.१३३९) । जब सुस्सल ने हर्ष के सैनिकों को परास्त कर दिया तब यहाँ उच्चल का प्रभाव पुनः बढ़ने लगा (७.१३५९) । ८.२८५३, २९३८, २९५८, ३०९७, ३१२४ ।

तारापीड, दुर्लभक के पुत्र का नाम है (४.४२)। यह उदयादित्य के नाम से भी विख्यात हुआ (४.४३) । इसने एक मान्त्रिक ब्राह्मण द्वारा आभिचारिकी-क्रिया करा कर अपने भ्राता, चन्द्रापीड, की हत्या करा दी (४.११२)। अपने ज्येष्ठ भ्राता, चन्द्रापीड, का अभिचार द्वारा वध करा कर इसने राज्य प्राप्त किया (४.११९) । गुरुद्रोह के कारण पुण्य क्षीण हो जाने से यह केवल ४ मास २६ दिन ही राज्य कर सका (४.१२३) । ८.३४२३ ।

तार्क्ष्य = गरुड : १.३१; २.९६; ४.१९९; ८.३०९१ ।

तिग्मांशु = सूर्य : १.४१ ।

तिमि, एक प्रकार के बड़े मत्स्य का नाम है : ४.५०४, ६३०; ५.३०५ ।

१. **तिलक,** राजा हर्ष की सेना के एक वीर का नाम है (७.१३०७)।

२. **तिलक,** काक के पुत्र का नाम है। सेनापति होते हुए भी अपने मृदु स्वभाव के कारण यह राजा उच्चल का कोपभाजन नहीं बन सका (८.१८०)। राजा सुस्सल ने इसे अपना सेनापति बनाया (८.५७५)। ८.५९९, ६२७, ६५२, ६८९, ८२१ (यह सुस्सल से मिला), ८६० (भिक्षु से मिला)। सुस्सल की मृत्यु के बाद इसने भिक्षाचर को पद्मपुर चले जाने का परामर्श दिया (८.१३८५) ।

३. **तिलक (तिलकसिंह भी),** विजयसिंह के एक पुत्र का नाम है जिसे राजा उच्चल ने अपने मन्त्रिमण्डल में सम्मिलित कर लिया (८.१८४) । इसने राजा सल्हण की आज्ञा के बिना ही गर्गचन्द्र के घर पर आक्रमण करने की योजना बनाई (८.४३०) । सुस्सल ने इसे द्वाराधीश बनाया (८.५७३)। जब यह गर्ग से पराजित होकर भागा तब इसका उपहास हुआ (८.५९२)। ८.६३२,७०१ (इसने राजा सुस्सल की बात सुनकर भिक्षाचर के आगमन के लिये पर्वतीय मार्ग से प्रबन्ध कर दिया), ७१३ (पृथ्वीहर ने इसे युद्धभूमि से पराङ्मुख कर दिया), ७३३ (इसने विजयेश्वर में डामरों के विरुद्ध युद्ध किया), ७८३ (इसने मम्मक आदि का वध किया), ८२६ (इसने सुस्सल का साथ छोड़ दिया), ९०९ (इसने डामरों को भिक्षाचर का वध कर देने की प्रेरणा दी परन्तु डामरों ने इसके इस आग्रह को स्वीकार नहीं किया), ९१० (पृथ्वीहर आदि राज्य के प्रमुख अधिकारी भयभीत होकर इससे सतर्क रहने लगे),

९४२ (भिक्षाचर ने इसके पुत्र को इसके भ्राता, जनकसिंह, के स्थान पर नियुक्त कर दिया), ९४४ (यह सुल्हण और सिम्ब आदि विद्रोहियों को लेकर हुष्कपुर पहुँचा)।

तिलग्राम, सिन्धु तटवर्ती एक ग्राम का नाम है : ८.२५०७, २५३२।

तिलद्वादशी, एक पर्व का नाम है (५.३९५)।

तिलोत्तमामठ, राजा संग्रामराज की पुत्री, लोठिका, द्वारा बनवाये गये एक मठ का नाम है (७.१२०)।

तिल्ह, किसी अन्य वंश के राजा, मङ्गलराज, के पुत्र का नाम है जो गर्गचन्द्र और सुस्सल के युद्ध में मारा गया (८.५१०)।

तिव्य, एक विद्वान् ब्राह्मण का नाम है (७.६७५)।

तिष्य, टिक्क के दूत, एक वैश्य, का नाम है (८.१३०५)। 'तिष्यवैश्या' (८.१५४३)।

तुःखार, एक देश और वहाँ के निवासियों का नाम है (४.१६६)। यहाँ के ही एक निवासी, चङ्कुण, ने चङ्कुणविहार बनवाया (४.२११)। इस देश का क्षेत्र (४.२४६)।

तुक्क, बल्लापुर के एक राजा का नाम है जिसके पुत्र, कलश, पर अनन्त-देव ने आक्रमण किया (७.२२०)। इसका पुत्र, कलश, राजा कलश का अतिथि होकर आया (७.५८८)।

तुक्क, एक ब्राह्मण का नाम है जिसका सुस्सल के सैनिकों ने वध कर दिया (८.१०१३)।

१. **तुङ्ग**, खशजातीय बाण के पुत्र का नाम है जो भैंस पालता था (६.३१८)। दिद्दा रानी इस पर मोहित हो गई (६.३२०)। दिद्दा रानी ने इसके साथ अपने प्रेम में बाधा डालनेवाले भुय्य को विष दिलवा कर उसकी हत्या करा दी (६.३२२)। इस पर दिद्दा का प्रगाढ़ प्रेम था अतः उसने इसे प्रधान मंत्री बना दिया (६.३३३)। इसके सब भ्राताओं ने उच्चपद प्राप्त कर लिये (६.३३४)। राज्य के नागरिक क्षुब्ध होकर इसका वध करने की इच्छा करने लगे (६.३३७)। दिद्दा रानी ने इसे छिपा दिया (६.३३८)। इसने कर्दम-राज आदि का वध कराया (६.३४१)। इसने घूस दे कर ब्राह्मणों को अपने वश में कर लिया (६.३४४)। इसने सुमनोन्तक नामक ब्राह्मण को भी बन्दी बना लिया (६.३४७)। इसने राजपुरी में आग लगा दी (६.३५१)। इसने पृथिवीपाल से कर लिया (६.३५३)। यह विजयी हो कर वापस लौटा (६.३५४)। 'जज्ञे राज्ञीक्षये भङ्गो यैस्तुङ्गस्य तदाखिलैः', (७.३)। परिस्थि-तियों ने राजा संग्रामराज को इसका पक्ष ग्रहण करने के लिये विवश कर दिया

(७.७)। राजा और इसे परस्पर मिल जुल कर रहने के लिए शपथ दी गई (७.८)। राजा संग्रामराज राज्य का समस्त कार्य इसे सौंप कर भोगविलास करने लगा (७.९)। इसे निकालने के लिये परिहासपुर में ब्राह्मणों ने अनशन किया (७.१३)। 'तुङ्गनिःसारणे', (७.१५)। 'तुङ्गादिभिः', (७.१६)। 'ब्राह्मणों ने कूयें से एक ब्राह्मण का शव निकाल कर उसकी मृत्यु के लिये तुङ्ग को दोषी बताते हुये तुङ्ग के घर सहित ही उसका शवदाह करने का आग्रह किया। जब वे शव लेकर तुङ्ग के घर पर आये और केशहोम के द्वारा उन्होंने एक कृत्या उत्पन्न की तब वह कृत्या उन ब्राह्मणों का ही संहार करने पर उद्यत हो गई। उससे भयभीत हो कर वे सब ब्राह्मण भाग गये (७.१७–२०)।" इसने सुगन्धसीह द्वारा बन्दी राजकलश को अपने घर बुलाया (७.२४)। मार्ग में इसके सेवकों ने राजकलश को अनेक यंत्रणायें दी (७.२५)। परिहास-पुर का उक्त विप्लव इसके लिये कल्याणदायक सिद्ध हुआ (७.२८)। भूति-कलश ने इसकी हत्या के लिये कुछ दूतों की नियुक्ति की (७.३०)। इस बात का पता लगते ही इसने भूतिकलश को पुनः निर्वासित करा दिया (७.३१)। संग्रामराज के अनेक सहायकों की मृत्यु हो जाने पर यही बच रहा (७.३४)। पहले इसकी नीति उज्ज्वल थी परन्तु बाद में इसकी बुद्धि भ्रष्ट होने लगी (४.३७)। इसने भद्रेश्वर को अपना सहायक नियुक्त किया परन्तु यह नहीं समझ सका कि इसका भाग्य अब विनाशोन्मुख हो गया है (७.४१)। सुगन्धसीह की मृत्यु से इसे अत्यन्त शोक हुआ (७.४६)। तुरुष्कों से युद्ध के समय इसकी सेना परास्त हो गई (७.५७)। 'तुङ्गः स्वदेशं द्राविशच्छनैः', (७.७०)। 'शृगालायेव तुङ्गाय लब्धभंगाय भूपतिः', (७.७१)। 'समभूत्तुङ्गा-यत्तत्वमीशितुः', (७.७२)। 'तुङ्गात्मजोऽपि कन्दर्पसिंहः श्रीशौर्यगर्वितः', (७.७३)। राजा का भ्राता विग्रहराज इसके वध के लिये राजा को प्रेरित करने लगा (७.७४)। राजा ने जब इसे अपने पास बुलाया तो यह अपने पुत्र को साथ लेकर चला (७.७९)। संग्रामराज के दो सेवकों, पर्व और शर्करक, ने इस पर आक्रमण किया (७.८१)। इसे बचाते हुये सिंहरथ ने अपना प्राण दे दिया (७.८२)। इसकी मृत्यु (७.८३, ८४)। ७.८५, ८८ (अज्ञाततुङ्गमृत्युभ्यस्तुमुले तत्र भूपतिः। तद्भृत्येभ्यः शङ्कमानो वह्निदानाहवा-दिकम्)। राजा संग्रामराज ने पुत्र सहित इसके सर को कटवा कर बाहर फेंकवा दिया (७.८९)। अपने इस स्वामी का कटा हुआ मस्तक देख कर इसके अनेक सैनिक भाग गये (७.९०)। 'त्रिंशदेकाङ्गा वीरास्तुङ्गोपजीविनः', (७.९४)। इसकी मृत्यु के पश्चात् राजा ने इसकी समस्त सम्पत्ति जब्त कर ली (७.९८)। 'तुङ्गे सतनये हते', (७.९९)। इसकी पुत्रवधू, बिम्बा,

ने अग्नि में प्रवेश किया (७.१०३)। इसकी दूसरी पत्नी का नाम मंखना था (७.१०५)। राजा ने इसके स्थान पर भद्रेश्वर की नियुक्ति की (७.१०६)। इसने चन्द्रमुख को संग्रामराज का कृपापात्र बनाया (७.११२)। 'तुङ्गोपजीविन:', (७.११६)। 'तुङ्गपदार्पणम्', (७.११७)। 'तुङ्गवत्प्रहिता:', (७.११८)। ८.१९५६।

२. **तुङ्ग,** ज्ञातिपुत्र तन्वङ्गराज का नाम है जो विजयेश्वर क्षेत्र में राजा अनन्तदेव की सेवा में उपस्थित हुआ (७.३५७)।

तुङ्गेश्वर, शिव के एक मन्दिर का नाम है (२.१४)।

तुङ्गेश्वरापण, तुङ्गेश्वर के बाजार का नाम है जहाँ आग लग गई (६.१९०)।

१. **तुञ्जीन,** जलौक के पुत्र का नाम है जिसने अपने पिता के बाद काश्मीर पर शासन किया; इसकी पत्नी का नाम वाक्पुष्टा था (२.११)। इसके शासनकाल का वर्णन (२.१२ और बाद)। इसने ३६ वर्ष तक राज्य किया था (२.५६)। यह निःसन्तान ही रहा (२.५९)। ५.२७८; ८.३४१८।

२. **तुञ्जीन,** राजा श्रेष्ठसेन का ही एक दूसरा नाम है (३.९७)।

तुरुष्क, एक जाति का नाम है : १.१७०; ४.१७९; ५.१५२; ७.५१, ५६, ७०, ११८. ५२०, ५२८, १०९५, ११४९, ११५८; ८.८८५, ८८६, ९१९, ९२३, २८४३, ३३४६।

तूलमूल्य, एक ग्राम का नाम है (४.६३८)। 'तूलमूल्यौकसो द्विजा:', (४.६४०)।

१. **तेज,** दिन्नज के पुत्र का नाम है जिसने सड्डु के संकेत पर उच्चल का केश पकड़ कर उस पर कटार से प्रहार किया (८.३०९)। आहत राजा उच्चल ने इस पर भी कटार से वार किया जिससे यह धरती पर गिर पड़ा (८.३१५)।

२. **तेज,** राजा सुस्सल के एक स्वामिभक्त रसोइये का नाम है जो महारानी मेघमञ्जरी की चिता के समक्ष पत्थरों से अपना सर फोड़ कर नदी में कूद पड़ा (८.१२२४)।

३. **तेज,** (बलहर), राजवदन के पिता का नाम है (८.२६९५)। ८.२८६२ (तेजो बलहरात्मजम्)।

तेजःसेन, कर्णभूति के सौतले भ्राता का नाम है। यह भी सुस्सल के हाथों कर्णभूति आदि के साथ ही मारा गया (८.३९८)। इसे सुस्सल की आज्ञा से सूली पर चढ़ा दिया गया (८.३९९)।

तेजलादीना, पद्मरथ की पत्नी का नाम है (८.१९४०) ।

१. **तोरमाण,** राजा श्रेष्ठसेन के द्वितीय पुत्र का नाम है जो युवराज बना (३.१०२) । इसने ''बालाहृत'' नामक प्राचीन सिक्कों का प्रचलन बन्द करके अपने प्रभाव से ''दीनार'' नामक सिक्का चलाया (३.१०३) । इसके इस कार्य से अप्रसन्न होकर इसके भ्राता, राजा हिरण्य ने इसे कारागार में डाल दिया (३.१०४) । ''इसकी पत्नी इक्ष्वाकुवंश के राजा वज्रेन्द्र की पुत्री थी और उसका नाम अञ्जना था । वह कारागार में पति के साथ रहते हुए गर्भवती हुई (३.१०५) ।'' यद्यपि हिरण्य ने इसे कुछ समय बाद मुक्त कर दिया, तथापि यह शीघ्र ही स्वर्गवासी हुआ (३.१२२) । ८.३४२० ।

२. **तोरमाण,** लल्लियशाहि के पुत्र का नाम है जिसे प्रभाकरवर्मा ने उद्भाण्डपुर का राज्य जीत कर दे दिया (५.२३३) ।

त्रिगर्त, एक देश का नाम है (३.१००) । प्रवरसेन ने इसे विजित किया (३.२८५) । 'त्रैगर्तं पृथिवीचन्द्र निन्ये तमस हास्यताम', (५.१४४) । 'त्रैगर्तः केशवो द्विजः', (७.२०४) । यहाँ के युवराज का नाम वल्ह था (८.५३९) । 'त्रिगर्तेषु दया शीलं चम्पायां मद्रमण्डले । त्यागो दार्वाभिसारेषु मैत्री नामर्त्येधर्मिणाम् ।।', (८.१५३१) ।

त्रिगामी, एक स्थान का नाम है : ४.३२३; ५.९७; ८.३३५६ ।

त्रिपथगा = गङ्गाः ३.३२३, १६५० ।

त्रिपुर, पूर्वसमय के तीन दानवों के तीन पुरों का नाम है जिनको शिव ने भस्म किया था (८.९९२) । ८.२९४८ ।

त्रिपुरेश, एक पर्वत का नाम है (५.१२३) ।

त्रिपुरेश्वर, एक देवता का नाम है (५.४६) । ६.१३५; ७.१५१, ५२६, ९५६; ८.४३७ ।

त्रिल्बाकर, एक प्रसिद्ध तन्त्री का नाम है जो गर्ग और सुस्सल के युद्ध में मारा गया (८.५१०) ।

१. **त्रिभुवन,** सुगन्धसीह के पुत्र का नाम है जिससे श्रीलेखा को प्रगाढ़ प्रेम हो गया (७.१२४) । 'त्रिभुवनो बली', (७.१५४) । राजा अनन्तदेव ने युद्ध करते हुये इस पर तीव्र प्रहार किये (७.१५६) । राजा अनन्तदेव ने रोष त्याग कर कुछ समय के बाद इसे अपने यहाँ रख लिया (७.१६५) ।

२. **त्रिभुवन,** दिद्दा रानी के एक पौत्र का नाम है जिसकी रानी ने लौकिक वर्ष ४०५१ की मार्गशीर्ष शुक्ल पंचमी को अभिचार कर्म द्वारा हत्या करा दी (६.३१२) । ८.३४३८ ।

त्रिभुवनस्वामी, एक देवता का नाम है (४.५५)। चन्द्रापीड ने इनकी मूर्ति को स्थापित किया (४.७८)। राजा चन्द्रापीड ने इनके समक्ष अनशन आरम्भ किया (४.९९)। उच्चल ने हर्ष द्वारा इनके नष्ट किये गये वैभव को पुनः प्रतिष्ठित किया (८.८०)।

त्रिभुवनापीड, बप्पिय वज्रादित्य द्वारा मेघावली के गर्भ से उत्पन्न पुत्र का नाम है जो ज्येष्ठ होता हुआ भी राज्यकार्य से वंचित रहा (४.६९०)।

त्रिलोचन = शिव : ४.३०१; ७.६१

त्रिलोचनपाल, एक शाही राजा का काम है जिसने संग्रामराज से सहायता माँगी (७.४७)। तुङ्ग ने इसकी हितकर बात को अस्वीकार कर दिया (७.५२)। 'कस्त्रिलोचनपालस्य माहात्म्यं वक्तुमीश्वरः', (७.६०)। 'शुशुभे रुधिरासारवर्षी युद्धे त्रिलोचनः', (७.६१)। 'गते त्रिलोचने दूरमशेषं क्षितिमण्डलम्', (७.६३)। 'श्रीत्रिलोचनपालस्य स्मरञ्शौर्यममानुषम्', (७.६४)। 'त्रिलोचनोऽपि संश्रित्य', (७.६५)।

त्रिल्लक, कोष्ठेश्वर के एक सम्बन्धी का नाम है जिसने भिक्षाचर को मुक्त कराने के उद्देश्य से राजा जयसिंह के प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया (८.१६८२)। यह कोष्ठेश्वर का भ्राता था (८.१७०७)। यह राजा जयसिंह से मिला (८.२२०८)। लोठन ने इससे परामर्श किया (८.२४९६)। इसने राजा जयसिंह के पक्ष को छोड़ दिया (८.२७३०)। ८.२७३२ (इसने देवसरसाधीश के साथ मिल कर विद्रोह किया), २७३९, २७४० (यह राजा को त्रस्त करने लगा), २७४६, २७९३, २८०७ (इसने पद्मपुर पर आक्रमण करने का विचार त्याग दिया), २८३९, २८८७, २९१३ (चतुष्क ने इसके भवन में प्रवेश किया), २९१९ (इसने अपनी नीति से भोज को स्थायित्व प्रदान किया) २९५७, ३११३ (इसने अपने पुत्र को भोज के पास भेजा), ३१३१, ३२७८, ३२८३, ३३००, ३३१४ (इसने एक बार राजा जयसिंह को घेर लिया परन्तु वह नीतिकौशल से बच गया)।

त्रिल्लसेन, उच्चल की सेना के डामरों के एक नायक का नाम है जिसे देख कर राजा हर्ष के सैनिकों को उच्चल का भ्रम हो गया (७.१३३६)।

त्रिविक्रम = विष्णु : ३.४७४।

त्रिशङ्कु, एक प्राचीन राजा का नाम है : ४.६४९।

१. **त्रैलोक्य,** हर्ष के एक सारथि का नाम है (७.१६०३)।

२. **त्रैलोक्य,** राजा सुस्सल के शय्यापाल के एक सेवक का नाम है जिसने टिक्क आदि के विद्रोह की निन्दा की। विद्रोहियों ने इसका भी वध कर दिया (८.१३२४)।

त्रैलोक्यदेवी, राजा यशस्कर की एक पतिव्रता रानी का नाम है जो राजा के शव के साथ सती हुई (६.१०७) ।

१. **त्रैलोक्यराज**, तुङ्ग के कोशाधिकारी का नाम है जिसकी राजा के सैनिकों के साथ युद्ध करते हुये मृत्यु हुई (७.९३) ।

२ **त्रैलोक्यराज**, एक राजतन्त्री का नाम है जिसका गर्गचन्द्र ने वध कर दिया (८.५९७) ।

थ

थक्क, दुराचारिणी धीवर स्त्री, लुड्डा, के आज्ञाकारी जार, एक डामर का नाम है (७.४०५) ।

१. **थक्कन**, एक शाहिराज का नाम है जिस पर यशोधर ने आक्रमण किया (६.२३०) । यशोधर ने इसे बन्दी बना लिया (६.२३१) । 'द्रोग्धायं थक्कनम्', (६.२३६) ।

२. **थक्कन**, तन्वङ्ग के पुत्र का नाम है (७.४२२) । अनन्तदेव के आस-पास रक्त की धारा बहती देखकर यह रोने लगा (७.४४७) । यह तन्वङ्ग का पुत्र था (७.५१७) । राजा कलश ने इससे अपने वध के षडयन्त्र की बात कहा (७.६३२) । देखिये **तन्ङ्गवराज** भी ।

३. **थक्कन**, सुस्सल ने इसे और इसके भाई सिम्ब को सूली पर चढ़वा दिया (८.१०४५) ।

थक्कना, एक वेश्या का नाम है जिसने राजा हर्ष का उच्चल और सुस्सल का वध करा देने का विचार उच्चल और सुस्सल को बता दिया (७.१२५२) ।

१. **थक्किय**, एक विद्वान् पण्डित का नाम है जिसकी विद्वत्ता से प्रसन्न होकर जयापीड ने अपने यहाँ रख लिया (४.४९४) ।

२. **थक्किय**, एक वंश का नाम है जिसमें उत्पन्न एक राजकुमार शङ्करवर्मा के यहाँ प्रतीहार का कार्य करता था (५.१५१) ।

थल्योरक, लहर के एक ग्राम का नाम है (८.६६७) ।

द

दक्षिणापथ, दक्षिण के देशों के लिये प्रयुक्त हुआ है : ४.१५२; ८.२२७ । दाक्षिणात्यों की वेशभूषा और साजसज्जा : ४.१८०; ७.९२६ ।

दञ्छक, राजा उच्चल के एक सेनापति का नाम है जो राजा के क्रोध के कारण भागकर विषलाटा चला गया (८.१७७) ।

१. **दण्डक**, राजा अनन्तदेव के एक सेवक का नाम है जिसने राजा के शवदाह के समय अग्नि में प्रवेश किया (७.४८१) ।

२. **दण्डक**, राजा कलश के एक वृद्ध प्रतीहार का नाम है (७.६५९) ।

दण्डकालसक, एक रोग का नाम है : ७.१४४३, १४४५ ।

दरद, दारद, एक देश और वहाँ के निवासियों के लिये प्रयुक्त हुआ है : १.९३, ३१२; ४.१६९; ५.१५२; ७.११९, १६७, १७१, १७४, १७६, ३७५ (दरद्राजादयो हताः), ९११ (दरद्देशोन्मुखा), ११७१, ११७३ (दरन्नृपः) ११७४ (दारदैः), ११८१ (दरत्सैनिकैः), ११८५, ११९५, ११९७; ८.२०१, २०९ (दरद्राजं जगद्दलम्), ४६८, ६१४ (दरद्राजे मणिधरे), ११३०, २४५४ (दरद्राजो यशोधरः), २४६७ (दरद्राजद्रुमो); २४८३, २५१९, २५३८, २७०९, २७१४, २७६४ (दरत्पतेः), २७६५ (दरन्नृपः), २७७१, २७७४, २७७५, २७९२, २८४२, २८५३, २८६७, २८६८ (दरद्राजनकानीतनेतारौ), २८८३, २८९२, २८९५, २८९७, २८९८ (दरद्दलम्), ३०४१ (दरद्देशम्), ३०४७ (दरद्देशम्) ।

दरद्पुर, एक स्थान का नाम है जहाँ के राजा विद्याधर ने विद्रोही विजयमल्ल का स्वागत किया (७.९१२) । ७.९१५; ८.११५३ ।

दर्पितपुर, एक नगर का नाम है जहाँ राजा ललितादित्य ने केशवदेव को स्थापित किया (४.१८३) । ७.९६६; ८.१९४० ।

दर्यक, सुस्सल द्वारा निर्वासित, कुमारपाल के एक पुत्र का नाम है जो सहस्रमङ्गल के साथ ही रहा (८.५४५) । इसकी मृत्यु (८.५५०) । इसका सौतेला भाई और अत्यन्त पराक्रमी ज्येष्ठपाल राजा भिक्षाचर का अन्तरंग बन गया (८.८६४) ।

दर्शनपाल, उच्चल और सुस्सल के एक मित्र का नाम है (७.१२५३) । इसके चाचा सोमपाल को लेकर उच्चल ने शत्रुओं से युद्ध किया (७.१३३७) । यद्यपि इसने असाधारण पराक्रम प्रगट किया तथापि विजय नहीं प्राप्त कर सका (७.१३५६) । राजा हर्ष इसकी हत्या कराने के लिये उत्सुक हुआ (७.१४९५) । यह अपनी सेना के साथ युद्ध के लिये गया (७.१४९९) । इसे अभयदान देकर सुस्सल ने इसे अपने पास बुलाया (७.१५०७) । सुवर्णसानूर ग्राम पहुँच कर सुस्सल ने इसे विदेश जाने की आज्ञा दी (७.१५१९) । पट्ट की मैत्री के कारण इसने भी विदेश जाने का विचार त्याग दिया (७.१५२१) । इसके भाई का नाम सञ्जपाल था (८.२१०) ।

दशग्रामी, एक स्थान का नाम है : ८.२९४१ ।

१. **दामोदर**, राजा गोनन्द के पुत्र का नाम है जो अपने पिता की मृत्यु के बाद राजा हुआ (१.६४) । श्रीकृष्ण ने इसका वध करके इसकी पत्नी, यशोमती, का राज्याभिषेक कराया (१.६९, ७०) । ८.३४०८ ।

२. दामोदर, राजा जलौक की मृत्यु के बाद हुये काश्मीर के राजा का नाम है (१.१५३)। शङ्कर के कृपापात्र और सच्चरित्रानुरागी इस राजा से स्वयं कुबेर ने मित्रता की (१.१५५)। ८.३४१२ (जलौकाः संदिग्धवंशो दामोदरस्ततः)।

३. दामोदर, एक स्थान का नाम है : ८.१५१९ (दामोदरसूद का संक्षिप्त रूप)।

दामोदरगुप्त, 'कुट्टनीमतम्' नामक प्रसिद्ध कामशास्त्र के ग्रन्थ के रचयिता का नाम है (४.४९६)।

दामोदरसूद, एक प्रदेश का नाम है जहाँ राजा दामोदर ने एक नगर बनवाया (१.१५७, १६७)। देखिये **दामोदर, दामोदरारण्य** भी।

दामोदरारण्य, एक भीषण वन का नाम है (६.१८३)। देखिये **दामोदर-सूद** भी।

दारद—देखिये **दरद**।

दार्वाभिसार, एक क्षेत्र का नाम है जो दार्वों और अभीसारों की निवास-भूमि है : १.१८०; ४.७१२; ५.१४१, २०९; ७.१२८२; ८.१५३१ (त्रिगर्तेषु दयाशीलं चम्पायां मद्रमण्डले। त्यागो दार्वाभिसारेषु मैत्री नामर्त्यधर्मिणाम् ।।), २४२७, २४४०।

दिद्दा, राजा सिंहराज की कन्या का नाम है जिसका क्षेमगुप्त के साथ विवाह हुआ। क्षेमगुप्त इस पर इतना आसक्त हो गया कि उसका 'दिद्दा क्षेम', जैसा लज्जाजनक नाम पड़ गया (६.१७७)। यह क्षेमगुप्त की दूसरी रानी, चन्द्रलेखा, से ईर्ष्या करती थी (६.१७९)। इसके द्वारा पालित क्षेमगुप्त का पुत्र अभिमन्यु राजा हुआ (६.१८८)। इसने फल्गुणक के वध के लिये कुछ आदमी भेजे (६.२०३)। जब महिमा आदि ने विद्रोह किया तब नरवाहन ने इसका पक्ष नहीं छोड़ा (६.२२१)। इसने अभिमन्यु को शूरमठ भेज दिया (६.२२३)। इसने यशोधर आदि विद्रोहियों को उच्चपद प्रदान किया (६.२८८)। जब लोगों ने इसके विरुद्ध विद्रोह किया तब इसने उसे कुचल दिया (६.२३७, २४०, २५६, २५८)। अपनी मूर्खताओं के कारण यह निन्दा का पात्र बनी (६.२७६)। अभिमन्यु की मृत्यु के बाद इसने उसके पुत्र, नन्दिगुप्त, को राजा बनाया (६.२९३)। इसने दिद्दापुर और दिद्दास्वामी का मन्दिर बनवाया (६.३००)। इसने अपने पौत्रों की हत्या करा दी (६.३११)। फल्गुणक के भय से इसने अपनी दुश्चरित्रता तथा क्रूरता को दबा रक्खा था (६.३१४)। यह तुङ्ग से प्रेम करने लगी (६.३२२)। भीमगुप्त को नष्ट करके यह भी सिंहासन पर बैठी (६.३३२)। इसने विद्रोहियों की दृष्टि से तुङ्ग को छिपा

दिया (६.३३८)। इसने अपने भ्राता उदयराज के पुत्र, संग्रामराज, को युवराज बनाया (६.३५५)। लौकिक वर्ष ४०७९ में भाद्रपद शुक्ला अष्टमी को इसकी मृत्यु हुई (६.३६५)। यह सिंहराज की पुत्री और राजा क्षेमगुप्त की पत्नी थी (७.१२८४)। इसका एक नाम आसमती भी था (८.२२६)। कुछ लोगों का कथन है कि इसने एक भिक्षु का वध कराकर किसी के बालक को भिक्षुक के नाम से विख्यात किया (८.२३३)। ८.३३८८, ३४३९, ३४४२। देखिये **आसमती** भी।

दिद्दापाल, हरिराज के पुत्र और राजा अनन्तदेव के एक मित्र का नाम है जिसे राज्य से प्रतिदिन ८० हजार दीनार मिलते थे (७.१४६)।

दिद्दापुर, एक नगर का नाम है (६.३००)।

दिद्दामठ, एक मठ का नाम है जिसके अध्यक्ष, प्रेम, के साथ लोठिका का विवाह हुआ : ६.३००; ७.११; ८.३४९।

दिद्दाविहार, दिद्दारानी द्वारा बनवाये एक विहार का नाम है जिसका सुस्सल ने पुनरुद्धार कराया (६.३०३; ८.५८०)।

दिद्दास्वामी, एक देवता का नाम है (६.३००, ३०२)।

दिन्न, तेज के पिता का नाम है। इसके पुत्र ने सड्ड के संकेत पर उच्चल का केश पकड़ कर उस पर कटार से प्रहार किया (८.३०९)।

दिन्नाग्राम, एक स्थान का नाम है : ८.२९१७, २९३३, २९५१, ३३०८।

दिल्ह, लोठन के एकमात्र पुत्र का नाम है जिसकी मृत्यु हो गई (८.१९५४)।

दिल्हभट्टारक, एक योद्धा का नाम है जो निर्लज्ज भाव से गर्गचन्द्र की आवासभूमि वाली गली में विचरण करने लगा (८.४३२)। सल्हण ने इसका वध करा दिया (८.४४६)।

दिल्हा, राजा कलश की एक रानी का नाम है (७.३३१)।

दीनार, एक सिक्के का नाम है : ४.६१७; ५.७१, ८४, ८५, ८९, १०८, ११६; ८.३३३५। यह शब्द अनेक अन्य स्थानों पर भी आता है किन्तु यहाँ केवल मुख्य स्थलों का ही संकेत किया गया है।

दुग्धघात, एक दुर्ग का नाम है : ७.११७१; ८.२४६८, २७१५।

दुराण्ड, एक स्थान का नाम है : ८.२७०९,।

१. दुर्गा, एक देवी का नाम है (३.८३)। 'दुर्गा तोषयता', (३.९१)। 'निषिध्य दुर्गा व्यथितं प्रकृतिस्थं द्विजन्मजम्', (३.९३)। ४.१५३, ३४६ (दुर्गसंश्रयाः); ६.२५८।

२. दुर्गा, राजा जयापीड की एक रानी का नाम है जिसका ललितापीड नामक पुत्र जयापीड की मृत्यु के बाद राजा हुआ (४.६६०)।

दुर्गागली, एक स्थान का नाम है (२.४)।

दुर्गोत्तारिणी—'दुर्गोत्तारिणीविद्याजपम्' (८.१०६)।

दुर्नामक, एक रोग का नाम है : ८.२९५५।

दुर्योधन, पाण्डवों के चचेरे भ्राता, प्रसिद्ध कौरव राजा का नाम है। राजा हर्ष की कुण्डली में इसी के समान अपने कर्मों से अपने वंश के मूलोच्छेद का योग था (७.१७१८)।

दुर्लभक-प्रतापादित्य २, राजा दुर्लभवर्धन के पुत्र का नाम है जो अपने पिता के बाद काश्मीर का राजा हुआ (४.७)। इसकी माता, अनङ्ग-लेखा, ने इसे अपना दौहित्र मानकर बालादित्य का उत्तराधिकारी बनाया था, जिससे इसका नाम प्रतापादित्य हुआ (४.८)। इसने प्रतापपुर नामक नगर बसाया (४.१०)। इसने ५० वर्ष तक राज्य किया (४.४४)। ८.३४२३।

दुर्लभवर्धन, एक अश्वघास कायस्थ का नाम है जिसके साथ राजा बालादित्य ने अपनी पुत्री अनङ्गलेखा का विवाह किया (३.४८९)। इसकी माता के साथ कर्कोटक नाग ने भोग किया था और उसी के वीर्य से इसका जन्म राज्य सुख प्राप्त करने के निमित्त ही हुआ था (३.४९०)। नैतिक मार्ग पर चलता हुआ यह अत्यन्त लोकप्रिय बन गया (३.४९३)। राजा बालादित्य ने इसे प्रज्ञादित्य के नाम से विख्यात किया (३.४९४)। इसे अपनी पत्नी के पुंश्चली होने का समाचार ज्ञात हो गया (३.५००)। पत्नी के दुराचारों की चिन्ता से इसका शरीर दुर्बल होने लगा (३.५०६)। जब इसने अपनी पत्नी के साथ खङ्ख को सोते देखा तो खङ्ख के वस्त्र के छोर पर चेतावनी लिखकर शयनकक्ष से चला आया (३.५२३)। उपकार करने की दृष्टि से बालादित्य के मन्त्री ने बालादित्य के बाद इसे राजा बना दिया (३.५२८)। कर्कोटक नाग के वंश में उत्पन्न दुर्लभवर्धन के राजा हो जाने से शेषनाग अत्यन्त प्रसन्न हुये (३.५२९)। इसने ३६ वर्ष तक काश्मीर पर राज्य किया (४.६)। ८.३४२२।

दुर्लभस्वामी, विष्णु की एक मूर्ति का नाम है जिसकी दुर्लभवर्धन ने श्रीनगर में स्थापना की (४.६)।

दुर्वासा, एक महर्षि का नाम है जो चन्द्रमा के भ्राता और अत्यन्त क्रोधी स्वभाव के थे (४.३९४)।

देङ्गपाल, चन्द्रभागातट के निवासी, एक ठक्कुर, का नाम है जिसने अपनी

कन्या, बप्पिका, का भिक्षाचर के साथ विवाह कर दिया और भिक्षाचर को अपने घर ले गया (८.५५४)। सुज्जि इसके यहाँ अतिथि था (८.१६५४)। इसने राजा जयसिंह का पक्ष प्रबल करने का निश्चय किया (८.१६९८)। राजा जयसिंह इसके भवन से विषलाटा के लिये प्रस्थित हुआ (८.१७२९)।

देड, एक गणस्थान का नाम है (४.६९१)।

देग्राम, एक ग्राम का नाम है (७.२६६)।

देवकलश, रानी दिद्दा के एक विश्वासपात्र वेलावित्त का नाम है (६.३२४)। इसके परामर्श पर दिद्दारानी ने भीमगुप्त को बन्दी बना लिया (६.३३०)।

देवगुप्त, पर्वगुप्त के पुत्र का नाम है (५.४३७)।

देवनायक, एक सैनिक का नाम है (७.१५४१)।

देवप्रसाद, वर्णट के एक राजपूत सेवक का नाम है जिसने अपनी तलवार विजयेश्वर को अर्पित कर दी (६.९८)।

देवमुख्य, एक कायस्थ का नाम है (७.१११)।

देवलेखा, चम्पानरेश की पुत्री और राजा सुस्सल की एक रानी का नाम है जो सुस्सल की मृत्यु के बाद सती हो गई (८.१४४३):

देवशर्मा, मन्त्री मित्रशर्मा के आत्मज का नाम है (४.४६९)। यह राजा जयापीड का मंत्री था (४.५५१)। यह अत्यन्त स्वामिभक्त था (४.५८३)। यह मित्रशर्मा का पुत्र था (४.५८४)। 'वन्द्या देवशर्मादयोऽस्य', (७.१३७७)।

देवसरस्, एक स्थान का नाम है : ८.५०४, ६६२, ६८५, १०६९, ११३६, १२६०, १२८१, १३४७, १५११, १५१२, २७३२ (देवसरसाधीश), २७४२ ३११५, ३२८१, ३२८५।

देवेश्वर, एक व्यक्ति का नाम है जिसके पुत्र, पित्थक, की राजा हर्ष ने गौरववृद्धि की थी किन्तु जो इसका ध्यान न देकर हर्ष के शत्रुओं से मिल गया (७.१५३२)। इसका यह पुत्र, पित्थक, भी अपने को राज्य का हकदार समझता था (८.२१४)।

दैवी वाक् = देववाणी, संस्कृत : ५.२०६।

द्रंङ्ग, निरीक्षण चौकी को कहते हैं : ८.२०१०, २५०७, २७०२, २८०३ (पिञ्जदेवद्रङ्गाधिपो)।

द्रविड, एक देश का नाम है (८.२४४४)। देखिये द्राविड।

द्राक्षा, एक दुर्लभ फल का नाम है (१.४२)।

द्राविड, द्रविड़ देश का वासी : ४.५९४, ६०४। देखिये **द्रविड**।

द्रोणपुत्र = अश्वत्थामा : २.९५; ७.१३६५ (द्रौणि)।

द्रोणाचार्य, कौरवों-पाण्डवों के प्रसिद्ध आचार्य का नाम है (८.१३५५)।

द्वापर, तीसरे युग का नाम है जिसके उत्तरार्ध में महाभारत युद्ध हुआ था (१.४९)।

द्वार, (फाटक), सीमावर्ती दर्रों और निरीक्षण-केन्द्रों के लिये प्रयुक्त हुआ है : १.१२२, ३०२; ४.४०४; ५.१३७; ७.१४०; ८.४१३, १६३०।

द्वारपति, द्वाराधिकारी, द्वाराधिप, द्वाराधिपति, द्वाराधीश्वर, राज्य के सीमावर्ती स्थानों के सेनानायकों के लिये प्रयुक्त हुआ है : ५.२१४; ६.१७९, २८१, ३२५; ७.२१६, २२३, ३६४, ५७६, ५७८, ५८४, ५९५, ८८७, ९१२, ९९५, ११७२, ११७७, ११७८, १३०१, १३१९, १३६१; ८.२१, १७८, १७९, १८५, २९३, ३०१, ५७३, ६३३, ७५६, ७९०, १०४२, १४८२, १८३२, १९२७, १९६३, २०९०, २२५४, २३५४, २४२१, २४८७, २४९३, २५०१, २५२६, २६६२, २७८८, २८४४, २८५२, २८९४, २९३७।

द्वारका, एक नगर का नाम है (४.१६०)।

द्वारवती, एक नगर का नाम है : ४.५१०, ५११ (श्रीद्वारवत्यधिष्ठानं वाह्यं कोट्टं तथा ह्यसौ। अभ्यन्तरं जयपुरं ब्रूतेऽद्याप्यखिलो जनः)।

द्विजक्षेत्र, एक पवित्र स्थान का नाम है (५.११४)।

द्वितीय, उरशा नरेश का नाम है (८.३४०२)।

द्विबाहुक, एक मुखिया का नाम है (८.२५०६)।

द्वैपायन = महर्षि व्यास : २.१६

ध

धनंजय = अर्जुन पाण्डव (८.२७८९)।

धनद = कुबेर : १.३०; ४.२०५ (धनदोपमः), ३३८; ८.१५४१।

धनपति = कुबेर (१.४२)।

धन्य, धन्यक, इच्छिट वंश के एक सैनिक का नाम है जो सुस्सल से युद्ध करता है (८.१०८३)। यह भिक्षु की सेना को छोड़कर जयसिंह के पास आ गया (८.१४३८)। इसके ज्येष्ठ भ्राता का नाम उदय था (८.१६००)। इसने सुज्जि के विरुद्ध कुचक्र आरम्भ किया (८.१६१०)। राजा जयसिंह ने इसे अपना मुख्य न्यायाधिकारी बनवाया (८.१६२४)। जिस दुर्ग में भिक्षाचर का शिविर था उसे नष्ट करके इसने उसमें रहनेवाले लोगों को पकड़ लिया

(८.१६७९) । इसे निर्वासित किया गया (८.१९८५) । जयसिंह ने इसकी सहायता की (८.२०४४) । यह मल्लार्जुन को छोड़कर राजा जयसिंह का प्रेमपात्र बन गया (८.२१९१) । इसे मल्लार्जुन के विरुद्ध युद्ध के लिये भेजा गया (८.२२६५) । इसके भ्राता का नाम वसन्त था (८.२३३७)। ८.२३६८, २४१९ (इसने अपनी पत्नी के नाम पर एक विहार बनवाया), २५०० (राजा जयसिंह ने इसे उदय की सहायता के लिये भेजा), २५०६, २५०७, २५४२, २५५२, २५५४, २५६१, २५७९, २५९७ (इसने होल और यशस्कर नामक दो राजद्रोहियों के बदले अलङ्कारचक्र को भोज्यसामग्री देना स्वीकार किया), २६०३, २६०५ (इसने लोठन का सेना भंग आदि कार्य सम्पन्न कराने के लिये अपने भतीजे को नियुक्त किया), २६१० (अल्पसेना के कारण यह संकट में पड़ गया), २६३६, २६४३ (इसने लोठन को राजा को सौंप दिया), २६६२, २६६४, २६७३, २६७४, २६७८, २७८८ (राजा जयसिंह ने इसे और उदय को षष्ठचन्द्र की सहायता के लिये भेजा), २८४४, २८५२, २८९४ (यह सन्धि का इच्छुक हुआ), २९०६ (इसने राजवदन से सन्धि कर ली), २९५८ (राजा जयसिंह ने इसे द्वाराधीश बनाया), २९६६ (बलहर से सन्धि करने के कारण इसका उपहास हुआ), २९७२ (इसने और नाग ने बलहर पर आक्रमण किया), २७९३ (राजा जयसिंह ने इसके पास सन्देश भेजा), २९७४, २९८८ (भोज के बदले में नाग को लेकर यह रिल्हण के साथ बलहर के पास आया), २९९४, २९९६ (लोष्ठक ने इसके द्वारा नाग का वध करा दिया), ३००४, ३०५५, ३०७२ (भोज का सन्देश लेकर आने पर इसने भोज की धाय, नोना, को राजा जयसिंह से मिलाया), ३०८२, ३०८३, ३१२४ (यह सेना सहित पाञ्चिग्राम पहुंचा), ३१२७ (राजवदन ने इसका वध करने का संकल्प किया), ३१६८ (इसने हर्षपूर्वक भोज का स्वागत किया), ३१७१ (इसने भोज के अभिनन्दन का आयोजन किया था), ३१७२ (इसने भोज की सराहना की), ३३२६ (इसकी मृत्यु), ३३२७ (इसके पुत्र का नाम मधुरावट्ट था जिसे राजा जयसिंह ने इसकी मृत्यु के बाद इसके स्थान पर नियुक्त किया), ३३४३ (मृत्यु के पूर्व इसने अपनी प्रिय पत्नी, बिज्जा, की स्मृति में एक मठ का निर्माण आरम्भ कराया परन्तु इसी बीच इसकी मृत्यु हो गई)।

धन्व, राजमन्त्री शूर के पुत्र के एक डामर सेवक का नाम है (५.५१) । राजमंत्री शूर ने इसे बुलाने के लिये अनेक दूत भेजे (५.५६) ।

धन्वन्तरि, आयुर्वेद के प्रतिष्ठाता, एक दिव्य पुरुष, का नाम है (७.१३७९) ।

धम्मट—इसने विश्शावट नामक धूर्त के इस परामर्श की पुष्टि की कि हर्ष, राजा कलश को मारकर राजा बन जाय (७.६१८)। विश्शावट ने अपने परामर्श के कार्यान्वय के लिये इसे मध्यस्थ बनाया (७.६२६)। कलश ने इसके दुर्व्यवहार की चर्चा की (७.६३३)। यह तन्वङ्ग का पुत्र और थक्कन आदि का भ्राता था, अत: इसे लेकर थक्कन आदि ने देशत्याग किया (७.६३९.६४०)। यह गंगा की यात्रा करके काश्मीर लौट आया (७.८९७)। यह राजा हर्ष को मार डालने का उद्यम करने लगा (७.१०१३)। इसके षड्यन्त्र के पूर्ण होने के पूर्व राजा हर्ष ने इसे राजदूत बना के राजपुरी भेजने का निर्णय किया था (७.१०१७)। षडयन्त्र का पता लगते ही हर्ष ने इसे राजपुरी जाने से रोक दिया (७.१०२०)। हर्ष के मन्त्री, प्रयाग, ने इसे जयराज को बन्दी बना लेने का आदेश दिया क्योंकि जयराज इसपर विश्वास करके शस्त्र त्याग देता (७.१०२५-१०२६)। इस आदेश से राजा के प्रति इसकी शंका के भी दूर हो जाने की सम्भावना थी (७.१०२७)। बन्दी जयराज ने यातनायें सहने पर भी षडयन्त्र में इसके सम्मिलित होने का उल्लेख नहीं किया (७.१०३६)। जयराज का वध कराने के पश्चात् राजा हर्ष ने इसके वध का निश्चय किया (७.१०३९)। यह कलशराज पर वार करने के लिये ज्योंही तलवार निकालने लगा त्योंही कलशराज तथा उसके पुत्रों ने इसपर वार कर दिया जिससे इसकी मृत्यु हो गई (७.१०४८)।

१. **धर्म** = धर्मराज : ४.७६।

२. **धर्म**, राजा चिप्पट जयापीड के एक मामा का नाम है जो राज्यकार्य देखता था (४.६७९)। इसने धर्मस्वामी की स्थापना की (७.६९७)।

३ **धर्म**, एक ब्राह्मण का नाम है जिसके पुत्र, पार्थ, ने तुङ्ग के हत्या की प्रेरणा दी थी (७.८५)।

धर्मस्वामी, एक देवता का नाम है (४.६९७)।

धर्माधिकरण—'धर्माधिकरणाख्यं च कर्मस्थानम्', (४.५८८)।

धर्मार्क, एक धर्मात्मा का नाम है जिसे पृथक करके तुङ्ग ने भद्रेश्वर की नियुक्ति की (७.४२)।

धान्य = चावल (१.२४६)।

धान्यक, इच्छटिकुल में उत्पन्न एक राजा का नाम है (८.१०८३)।

धार्तराष्ट्र = दुर्योधन आदि धृतराष्ट्र के पुत्र (८.२३०५)।

धीर, शूरवर्मा के छोटे भाई के पुत्र का नाम है (५.२६)।

धूर्जट = शिव : २.१२; ३.४४४।

धूर्जटि, राजा क्षेमगुप्त के एक प्रिय सेवक का नाम है (६.१६६)।

ध्यानोड्डार, एक स्थान का नाम है : ८.१४३१, १५०८, १५१०।

न

नट, एक जाति के लोगों का नाम है : १.२२२।

नडवन, एक स्थान का नाम है (३.११)।

नन्दक, एक ग्राम का नाम है : ५.८५, १०८।

नन्दनोद्यान = नन्दनवन : ४.२२२; ७.९३९।

नन्दा, मल्ल की पत्नी का नाम है जो मल्ल की निर्मम हत्या के बाद सती हो गई। जब यह अग्नि में प्रविष्ट होने लगी तब इसने अपने वीर पुत्रों, उच्चल और सुस्सल, को लक्ष्य करके कहा 'प्रिय पुत्रो ! अपने पिता की इस प्रकार निर्मम हत्या करनेवाले शत्रु के वंश का तुम दोनों वीर परशुराम की भाँति उच्छेद कर डालोगे।' (७.१४९१–१४९३)।

नन्दाकेशव, एक देवता का नाम है (५.२४५)।

नन्दादेवी, राजा गोपालवर्मा की पत्नी का नाम है जिसने नन्दाकेशव और नन्दामठ की प्रतिष्ठा की (५.२४५)।

नन्दामठ, गोपालवर्मा की पत्नी, नन्दादेवी, द्वारा निर्मित कराये गये एक मठ का नाम है (५.२४५)।

नन्दिक्षेत्र, एक क्षेत्र का नाम है (१.३६)। यहाँ जलौक ने भूतेश का मन्दिर बनवाया (१.१४८)। राजा आर्यराज राजत्याग के बाद यहाँ आया (२.१७०)। ७.६४६, ९५४; ८.७७, २३६५, २४३९।

नन्दिगुप्त, अभिमन्यु (क्षेमगुप्त का पुत्र) के पुत्र का नाम है जिसे दिद्दा-रानी ने राजा बनाया (६.२९३)। इसको विनष्ट कर दिया गया (६.३११)। 'नन्दिगुप्तादिद्रोहे', (६.३३१)। दिद्दारानी ने इसका वध करा दिया था (८.३४३८)।

नन्दिमुख, देशमुख कायस्थ के पुत्र चन्द्रमुख के एक पुत्र का नाम है (७.११६)।

नन्दिशिला, एक स्थान का नाम है (३.४६७)।

नन्दीश, एक क्षेत्र का नाम है जहाँ स्वयंभू श्रीज्येष्ठेश्वर नामक शङ्कर का पूजन होता था (१.११३)। १.१२३–१२४, १३० (जलौक), १५०; २.१६९। जलौक इनका अवतार था (१.१३०)।

नमुचि, एक प्राचीन दैत्य का नाम है (३.४६८)।

नयन, सेल्यपुर निवासी एक व्यक्ति का नाम है जिसका पुत्र, जय्यक, धीरे-धीरे एक सम्पन्न डामर बन गया (७.४९४)।

१. नर, दार्वाभिसार देश के एक प्राचीन भारद्वाजगोत्रीय राजा का नाम है। इसके पुत्र का नाम नरवाहन था (४.७१२; ७.१२८२)।

२. नर, काश्मीर के एक किनर राजा का नाम है (१.१९७)। इसने नरपुर नामक नगर बसाया (१.२०१)। इसने नाग को रुष्ट किया (१.२५०)। इसने ३९ वर्ष ९ मास तक काश्मीर पर राज्य किया जिसके पश्चात् नाग ने इसे नष्ट कर दिया (१.२७३)। इसे वरुण देवता से एक ऐसा छत्र प्राप्त हुआ था जो चक्रवर्ती राजा पर ही छाया करता था (२.१५०)। १.२८३।

३. नर, वसुनन्द के पुत्र का नाम है जिसने ६० वर्ष तक राज्य किया (१.३३८)। ८.३४१६।

नरक, प्राग्ज्योतिषपुर की स्थापना करनेवाले एक राजा का नाम है (२.१४७,१५०)।

नरपुर, एक नगर का नाम है जिसे राजा नर ने बसाया था (१.२०१)। १.२४४, २७४ (नाग ने इसे नष्ट किया)।

नरवर्मा, मालवाधिपति का नाम है जिसने दिद्दारानी के पालित पुत्र को अपना पुत्र समझकर उसे शस्त्रास्त्र विद्या का अभ्यास कराया (८.२२८)। इसकी पत्नी, आसमती, ने काश्मीर पर आक्रमण करनेवाले पाँच राजाओं को प्रचुर सुवर्ण दिया (८.५४१)। ८.१५३३।

१. नरवाहन, दार्वाभिसार के एक राजा का नाम है (५.२०९)।

२. नरवाहन, क्षेमगुप्त के एक मंत्री का नाम है (६.१९६)। इसने दिद्दारानी के प्रति निष्ठा का परित्याग नहीं किया (६.२२१)। हिम्मक आदि के विद्रोह के समय भी यह दिद्दा के पक्ष में ही रहा (६.२३९)। इसने अपने बुद्धिकौशल से दिद्दा रानी को अखण्डमण्डलेश्वरी बना दिया (६.२६०)। इसने राज्य की आयवृद्धि के अनेक उपाय किये (६.२६७)। दिद्दा रानी ने इसे बार बार अपमानित किया जिससे इसने आत्महत्या कर ली (६.२७७)। 'राजश्रीर्नरवाहनवर्जिता', (६.२७९)।

३. नरवाहन, दार्वाभिसार देश के भारद्वाजगोत्रीय एक प्राचीन राजा के पुत्र का नाम है। इसके पुत्र का नाम फुल्ल था (७.१२८२)।

नरेन्द्रप्रभा, नोण वैश्य की सुन्दरी पत्नी का नाम है जिस पर राजा प्रतापादित्य आसक्त हो गया (४.१७)। नोण ने स्वयं ही इसे राजा प्रतापा-

दित्य को समर्पित कर दिया (४.३७–३८)। इसने नरेन्द्रेश्वर नामक शिव-लिङ्ग की स्थापना की (४.३८)।

नरेन्द्र भवन, सुरेन्द्र द्वारा निर्मित कराये गये एक विहार का नाम है (१.९३)।

नरेन्द्रस्वामी, राजा नरेन्द्रादित्य द्वारा बनवाये एक मंदिर का नाम है (३.३८३)।

नरेन्द्रादित्य, राजा खिङ्खिलान्य का दूसरा नाम है (१.३४७)। ८.३४१६। देखिये **खिङ्खिल**।

नरेन्द्रादित्य, प्रवरसेन-पुत्र युधिष्ठिर के पुत्र का नाम है जो अपने पिता के बाद काश्मीर का राजा हुआ। यह लवण नाम से भी प्रसिद्ध था। इसने नरेन्द्रस्वामी नामक शंकर की स्थापना की (३.३८३)। इसने १३ वर्ष तक राज्य किया (३.३८५)। ८.३४२१।

नरेन्द्रेश्वर, एक देवस्थान का नाम है (४.३८)। यह श्रीनगर में स्थित है (७.१५४१)।

नर्मदा, एक प्रसिद्ध नदी का नाम है (२.१३१)।

नवमठ, एक स्थान का नाम है : ८.२४७, ३७४, १०५२, २३०९, २३११।

नहुष, पूर्वकाल के एक राजा का नाम है जो शापवश अजगर हो गये थे (४.५२१, ६४९)।

१. नाग, १.२९, ३०, १११ (सरोवर में इनके आवासगृह), ११४, १७९, १८५ (इनकी पूजा की पुनः प्रतिष्ठापना), २०३, २२३, २३४, २३९, २४४ (नागवरावाप्तश्रियः), २५९, ३१७ (= सुश्रवा); ३.२२, २५ (मेघवाहन ने इन्हें मुक्त कराया), २६, ४९० (= कार्कोट), ५९३ (= महापद्म); ४.६०१; ७.१६९, १७१। देखिये **महापद्म, सुश्रवा, तक्षक**।

२. नाग, तुङ्ग के भ्राता का नाम है (६.३१९)। इसे राजा संग्रामराज ने कम्पनेश बनाया (७.१०१)। कन्दर्पसिंह की पत्नी, क्षेमा, इसके साथ विहार करने लगी (७.१०२)।

३. नाग, चन्द्रमुख के पुत्र का नाम है (७.११६)।

४. नाग, एक गंजपति का नाम है जिसका पुत्र जयानन्द राजा कलश का प्रिय सेवक बन गया (७.२७५)।

५. नाग, अश्व-सेना के सेनापति, मधुरावट्ट, के पुत्र का नाम है (७.७६७)।

६. नाग, राजा हर्ष के एक नगराधिकारी का नाम है जो सुस्सल को

पराजित कर चुकने के कारण उच्चल से भयभीत नहीं हुआ और युद्ध के लिये आया (७.१५४२)।

७. नाग, खूयाश्रम में उत्पन्न एक व्यक्ति का नाम है जिसकी राजवदन ने रक्षा की (८.२६९८)। राजवदन ने इस पर आक्रमण किया (८.२७२२)। यह एक डामर था (८.२८५८)। ८.२८६०, २८६३ (भोज ने इससे मैत्री की), २९७१ (राजवदन से इसका युद्ध हुआ), २९८३ (यह बन्दी हुआ), २९९६ (इसका वध), ३३०६ (इसके भ्राता का उल्लेख)। बलहर को इस पर संदेह हुआ (८.२९७१)। राजा जयसिंह ने धन्य के पास यह संदेश भेजा कि वह इसे कैद करके उसे (राजा को) सौंप दे और भोज को वापस ले ले (८.२९७३)। यह राजा जयसिंह से द्रोह करता था (८.२९७८)। ८.२९८१, २९८३, २९८७ (यह बन्दी हुआ), २९८८ (भोज के बदले में इसे लेकर धन्य बलहर के पास आया), २९८९ (बलहर ने भोज को देने के पहले इसे माँगा), २९९५, २९९६ (लोष्ठक ने इसे धन्य आदि के द्वारा मरवा डाला), २९९७, २९९८ (इसके वध से क्रुद्ध होकर सभी डामर और इसके अनुयायी बलहर से मिल गये), ३००१, ३०५६, ३३०६ (नागभ्रातृव्य) ३३०७ (नागभ्रातृसुताग्रण्यमबध्नाल्लोष्ठकं मृधे)।

नागक, सुस्सल के एक राजसेवक का नाम है जिसका सुस्सल के हत्यारों ने वध कर दिया (८.१३२३)।

नागपाल, सोमपाल के सगे भाई का नाम है जिसका उसने वध करा दिया (८.६१९)। सोमपाल इसे राज्य दे कर भाग गया (८.६२४)। यह भी सुस्सल के साथ काश्मीर आया (८.६३५)। ८.१४६८, १९७५, २२१६।

नागमठ, एक स्थान का नाम है जहाँ पृथ्वीहर ने आग लगा दी (८.६७३)। ८.७८२।

नागलता, रंग नामक एक गायक डोम के साथ की एक सुन्दरी बालिका का नाम है (५.३६०)। इसने क्रुद्ध होकर पट्टोपाध्याय से दानपत्र लिखने के लिये कहा (५.३९८)।

नागलेखा, सोमपाल के बहन की पुत्री का नाम है जिससे लक्ष्मक ने जयसिंह का विवाह कराया (८.१६४९)।

नागवट्ट, स्थाम नामक स्थान के सेनानायक का नाम है जिसने विजय के आक्रमण का सामना किया (८.६६४)। कल्याणपुर में राजा सुस्सल और पृथ्वीहर के युद्ध में इसकी मृत्यु हुई (७.११३५)।

नागसरोवर, एक सरोवर का नाम है जो नागों का निवास-स्थान था (१.१११)।

नागा, राजा कलश के पिता की बहन, कल्लना, की पुत्री का नाम है जिसके साथ कलश ने व्यभिचार किया (७.२९३)। 'संभोगं भगिनीवर्गे कुर्वता दुर्वचोरुषा। निगृहीता च भुक्ता च नागा पुत्री पितृस्वसुः ।।', (७.११४८)।

नागारि—गरुड़ : ३.२१५ ।

नागार्जुन, सर्वेश्वर तथा बोधिसत्व कहे जाने वाले एक व्यक्ति का नाम है (१.१७३)। इनके प्रभाव से रक्षित बौद्ध काश्मीर में प्रबल हो उठे (१.१७७)।

नागेन्द्र—शेषनाग : ४.६४२ ।

नागेश्वर, युवराज भोजदेव के एक सेवक का नाम है (७.१६५३)। इसका वध (८.९९६)।

नान, देवमुख कायस्थ के पुत्र चन्द्रमुख के एक पुत्र का नाम है (७.११६)

नायक, एक चतुर्विद्याविशारद विद्वान् ब्राह्मण का नाम है (५.१५९)।

नारायण—विष्णु : ३.४५२ ।

नारिकेल—नारियल का फल : ७.११२३ ।

निर्गुण, कतिस्थली ग्राम के एक डामर का नाम है जो अपने वैरी, कर्पूर नामक विजयेश्वर के शरणार्थी को जला देने के लिये उद्यत हुआ (८.९७५)।

निर्जितवर्मा, गग्गादेवी से उत्पन्न, सुखवर्मा के पुत्र का नाम है जिसे सुगन्धा ने राज्याधिकारी बनाने का निश्चय किया (५.२५१-२५२)। इसका एक दूसरा नाम पङ्गु था (५.२५४)। इसके दस वर्षीय पुत्र, पार्थ, को राजगद्दी पर बैठाया गया (५.२५५)। तंत्रियों ने पार्थ को राज्यच्युत करके इसे राजा बनाया (५.२८७)। इसकी मृत्यु (५.२८८)। ८.३४३२। देखिये **पंगु** भी।

निवड, ब्राह्मणों के एक वर्ग का नाम है (८.२४४४)।

निवाप, एक सांस्कारिक कृत्य का नाम है (४.१३०)।

निष्पालक, एक विहार का नाम है जहाँ रानी सुगन्धा की मृत्यु हुई (५.२६२)।

१. नील, एक प्राचीन नाग का नाम है जो काश्मीर मण्डल का पालन करते थे (१.२८)। १.१८२,१८३ (इन्होंने चन्द्रदेव की तपस्या से प्रसन्न होकर दर्शन दिया तथा अपने पुराण की विधि बताया), १८३; ५.९१ (इन्हीं के स्थान से वितस्ता नदी निकली है); ८.३३५७ ।

२. नील, भावुक के वंश में उत्पन्न बिडाल के पुत्र का नाम है (८.१०८५)।

नीलपुर, एक राज्य का नाम है (७.२५३)। यहाँ के राजा कीर्तिराज की कन्या भुवनमती से कलश का विवाह हुआ (७.५८२)।

नीलपुराण, नील द्वारा रचित एक पुराण का नाम है (१.१४)। इसमें कश्मीर के अतीत के राजाओं का इतिहास है (१.१६)। इससे उद्धरण (१.७२)। १.१७८।

नीलमुनि, एक प्राचीन इतिहासकार का नाम है जिनके ग्रन्थ—नीलमत-पुराण—का कल्हण ने अध्ययन किया था (१.१४)। इनके पुराण का उल्लेख (१.१६)।

नीलाश्व, काश्मीर के एक नगर का नाम है : ७.१६३१; ८.४२४. १११५, २७७८ (नीलाश्वडामराः), ३११४ (नीलाश्वडामराः), ३११५, ३१३१।

नीवि : ८.१२८२।

नृपसुन्दरी, राजा यशस्कर की एक रानी के लिये प्रयुक्त हुआ है (६.१३८)। पर्वगुप्त इस पर अनुरक्त हुआ (६.१३९)।

नृपावलि, कवि क्षेमेन्द्र की रचना का नाम है (१.१३)।

नृसिंह, विष्णु के एक अवतार का नाम है : ८.२४२५।

नृहरि = नृसिंह : ४.१८५।

नेपाल, एक देश का नाम है : ४.५३१, ५५४, ५७९।

नोण, एक वैश्य का नाम है जिसने एक उत्तम मठ बनवाया (४.११-१२)।

नोन, एक सुशिक्षित ब्राह्मण का नाम है जिसकी, राजपुत्र समझकर, सुस्सल के हत्यारों ने हत्या कर दी (८.१३२८)।

नोनक, राजा कलश के राजमन्त्री का नाम है जिसने तुरुष्क देश के शिल्पियों के कौशल का पता लगा कर उन्हें लज्जित कर दिया (७.५३०)। यह धनसंग्रह में निपुण था (७.५७१)। इसने राजा कलश को हर्ष का वध करा देने का परामर्श दिया (७.६८३)। इसने रसोइये को हर्ष को विषयुक्त भोजन देने के लिये प्रेरित किया (७.६८६)। इसने 'हर्ष-हर्ष' कहते हुये मरणासन्न राजा कलश के सामने दर्पण रखवा दिया (७.७२०)। इसने उत्कर्ष से कहा था कि हर्ष का सर काटकर दिखा देने से विद्रोह शान्त हो जायगा (७.७८२)। इसने जाकर हर्ष को कारागार से मुक्त किया

(७.८१४)। इसने उत्कर्ष पर व्यंग किया (७.८४३)। हर्ष के सैनिकों ने जब दिवंगत उत्कर्ष के सैनिकों का शस्त्र छीनना आरम्भ किया तब इसने अपने शस्त्रों का त्याग नहीं किया (७.८६३)। हर्षदेव ने इसे बन्दी बनाकर कारागार भेज दिया (७.८६६)। हर्ष ने इसे सूली पर चढ़ाकर मरवा दिया (७.८८९)।

नोनरथ, एक व्यक्ति का नाम है। यह समाचार पाकर कि यह सड्ड आदि के साथ मिलकर कश्मीर में उपद्रव करना चाहता है, सल्हण ने इसका बध करा दिया (८.४४३)।

नोना, भोज की एक धाय का नाम है जिसे उसने राजा जयसिंह के पास भेजा (८.३०६१)।

नोनिका, रानी सूर्यमती की एक दासी का नाम है जिसने रानी के सती होने के समय अग्नि में प्रवेश किया (८.४८१)।

नौनगर, एक स्थान का नाम है : ७.३५८; ८.९९५।

न्यङ्कोतक, दिद्दा रानी के एक अनुचर का नाम है (६.३४६)।

न्यब्बपुर, एक राज्य का नाम है जहाँ के राजा कीर्तिराज, कलश के अतिथि होकर आये (७.५८८)।

पङ्गु—पंगु होने के कारण निर्जितवर्मा को इस नाम से भी पुकारा गया है (५.२६४, २८१)। तन्त्रियों ने पार्थ को राज्यच्युत करके इसे राजा बनाया (५.२८७)। इसकी मृत्यु (५.२८८)। इसके दूसरे पुत्र, शूरवर्मा को राजा बनाया गया (५.२९२)। देखिये **निर्जितवर्मा** भी।

पञ्चचन्द्र, गर्गवंशियों में सबसे ज्येष्ठ व्यक्ति का नाम है जिसे राजा सुस्सल ने मल्लकोष्ठ का प्रतिद्वन्द्वी बना दिया (८.११२१)। ८.१३६४, १३९३ (यह सिंहदेव के पास आ गया), १४७८ (राजा सिंहदेव ने भास को मुक्त कराने के लिये इसे और सुज्जि को भेजा), १६०९, २०७७ (रिल्हण ने इसे अपने पास बुला लिया), २५०५ (इसकी मृत्यु), २५०६ (इसका भ्राता)।

पञ्चनद = आधुनिक पंजाब : ४.२४८।

पञ्चवट, एक व्यक्ति का नाम है (८.३४००)।

पञ्चसत्र, एक प्रदेश का नाम है जहाँ राजा शङ्करवर्मा ने दिग्विजय से लौटकर शंकरपुर नामक नगर बसाया (५.१५३)।

पञ्चहस्ता, एक अग्रहार का नाम है जिसे युवराज शूरवर्मा ने ब्राह्मणों को दान किया (५.२४)।

पटह, एक प्रकार के वाद्ययन्त्र का नाम है जिसके उत्कृष्ट वादक भीमनायक को हर्ष ने प्रसन्न होकर हाथी और हथिनी का पुरस्कार दिया (७.१११६)।

१. **पट्ट,** एक व्यक्ति का नाम है जिसकी सम्पत्ति भूखों, रोगियों, अनाथों, आदि के कष्टनिवारण के कार्य में प्रयुक्त होने के कारण कृतार्थ मानी जाती थी (७.८५३)। यह राजा हर्षका मन्त्री था और हर्ष ने कन्दर्प को मार डालने के लिये इसे सेना सहित लोहर भेजा (७.१००१)। असिधर ने इसके पास आकर कन्दर्प की शक्ति का वर्णन किया। (७.१००५)। एक विशाल सेना देकर इसे राजा हर्ष ने उच्चल से युद्ध करने के लिये भेजा (७.१३०५)। तिलकराज आदि जिन वीरों को हर्ष ने युद्ध के लिये भेजा वे सब इसके पास आकर रुक गये (७.१३०७)। राजा हर्ष ने इसे सुस्सल से युद्ध करने के लिये भेजा। (७.१३५४)। यह चन्द्रराज को छोड़ कर अपनी सेना सहित दूसरी ओर चल पड़ा (७.१४९९)। सुस्सल को आते देखकर यह भय से विजयेश्वर के मंदिर में छिप गया (७.१५०४)। सुस्सल ने इसे अभयदान देकर अपने पास बुलवाया (७.१५०७)। सुवर्णसानूर ग्राम पहुँचकर सुस्सल ने इसे विदेश जाने की आज्ञा दी (७.१५१९)। यह सुवर्णसानूर से शूरपुर आया (७.१५२०)। इसने विदेश जाने का विचार त्याग दिया (७.१५२१)।

२. **पट्ट,** एक षडयन्त्रकारी का नाम है जो रड्ड के राजा हो जाने पर भी उसके दोनों भ्राताओं से युद्ध करता रहा (८.३४५)।

पट्टोपाध्याय, एक दानपत्र लेखक का नाम है (५.३९७)।

पतंग, एक ग्राम का नाम है (८.४७२)।

पताका—'कादम्बरीपताकाख्ये द्वे अश्वे पीतपाण्डुरे', (८.१०१५)।

पत्तन—राजा शङ्करवर्मा द्वारा बसाये गये शङ्करपुर को लोग इस नाम से पुकारने लगे (५.२१३)।

१. **पद्म,** एक नाग का नाम है (१.३०)।

२. **पद्म,** राजा चिप्पटजयापीड के एक मामा का नाम है जो राज्यकार्य देखता था (४.६७९)। इसने पद्मपुर नामक नगर बसाकर पद्मस्वामी की स्थापना की (४.६९५)। इसकी गुणोज्ज्वला पत्नी, गुणादेवी, ने विजयेश्वर में एक मठ की स्थापना की (४.६९६)।

३. **पद्म,** विजयेश्वर मंदिर के महन्त का नाम है जो सुस्सल के सैनिकों से युद्ध करता हुआ मारा गया (७.१५०५)।

१. **पद्मक,** युवराज भोज के मामा के पुत्र, एक पराक्रमी योद्धा का नाम है जिसने भोज के साथ ही वीरगति प्राप्त की (७.१६५७)।

२. **पद्मक,** वल्लापुर के राजा का नाम है जिसने अपनी पुत्री का विवाह भिक्षाचर के साथ कर दिया (८.५४७)। इसके नेतृत्व में काश्मीर पर आक्रमण के लिये जब विद्रोहियों की सेना आगे बढ़ी तब भिक्षाचर की सेना का सेनापति दर्यक भी मर गया (८.५५०)।

पद्मपुर, एक नगर का नाम है (४.६९५)। चक्रवर्मा और शंकरवर्धन के बीच यहाँ भयंकर संग्राम हुआ (५.३३०)। 'पद्मपुरान्तिकम्', (७.३३७)। ७.७६७। जब उच्चल का मामा यहाँ पहुँचा तब राजा हर्ष के मंत्री आदि अत्यन्त भयभीत हो उठे (७.१३६२)। हर्ष के कम्पनेश चन्द्रराज ने यहाँ से शत्रुसेना को भगा दिया (७.१३६५)। ८.१३८७, १४१३, १४१८, १४२२, २८०७।

पद्मरथ, कालिञ्जर के राजा का नाम है जो पुरानी मैत्री का स्मरण करके सुस्सल की सहायता के लिये आया (८.९१५)। सुज्जि इसे लोहर ले आया (८.१९२३)। इसकी अविवाहित कन्या को सुज्जि विवाह कराने के लिये लोहर लाया था (८.१९३९)। ८.१९७४, १९७५ (लोठन ने इसकी कन्या, सोमला, के साथ विवाह किया)।

पद्मराग, एक मणि का नाम है जिससे लक्ष्मी की वृद्धि होती है (४.३३१)।

१. **पद्मराज,** तुङ्ग के एक आश्रित का नाम है जिसने राज्यसेना से युद्ध करते हुए पलायन किया (७.९५)।

२. **पद्मराज,** एक व्यापारी का नाम है जो भोजराज के लिये पापसूदन तीर्थ का जल भेजता था (७.१९३)। इसने राजा अनन्तदेव को ऋण देकर पञ्चचन्द्रयुक्त राजमुकुट अपने पास गिरवी रख लिया था परन्तु रानी सूर्यमती ने अपना समस्त धन देकर इसके ऋण से मुक्ति प्राप्त की (७.१९७)।

३. **पद्मराज,** एक सैनिक का नाम है : ८.२३२४।

पद्मलेखा, लोठन की पुत्री का नाम है जिसका राजा सुस्सल ने शूर के साथ विवाह करा दिया था (८.१८४४)।

१. **पद्मश्री,** राजा कलश की एक पत्नी का नाम है जिससे उत्पन्न विजयमल्ल नामक उत्कर्ष का सौतेला भाई उससे झगड़ने लगा (७.७३१)। इसके नाम का पौसरा (७.१५८१)।

२. **पद्मश्री,** राजा जयसिंह की एक पुत्री का नाम है (८.३३८०)।

पद्मसर, एक सरोवर का नाम है : ८.२४२१ ।

पद्मस्वामी, एक देवता का नाम है (४.६९५) । ६.२२२ ।

पद्मावती, प्रवरसेन-पुत्र, राजा युधिष्ठिर की पत्नी, और नरेन्द्रादित्य की माता का नाम है (३.३८३) ।

पन्नग = नाग : ४.६०५ ।

पन्नगपति = वासुकि नाग : ८.२९४८ ।

पम्पासर, एक सरोवर का नाम है जिसका राजा हर्ष ने निर्माण कराया था (७.९४०) ।

परिविशोक, एक दुर्ग का नाम है (४.५) ।

परिहासपुर, एक नगर का नाम है : ४.१९४, २४२, २७५, ३१०, ३९५; ५.९९, १६१; ६.२१८, २५४; ७.१३, २८, ९९३, १०९८, १३२६, १३३८; ८.७९ ।

परीक्षित = अभिमन्यु के पुत्र : २.९५ ।

परीहासकेशव, एक देवता का नाम है : ४.१९५, २०२, २७५, ३२३, ३२६ (°हरि), ३२७ (°हरिः), ३३४; ७.१३४४, १३४७; ८.७९ ।

परोष्णी, एक नदी का नाम है : ८.२००६ ।

पर्णवीटिका = पान का बीड़ा : ४.४२७ ।

पर्णोत्स, एक नगर का नाम है (४.१८४) । ६.२०१, २०९, ३१८; ७.४२०, १३००; ८.६३३, ९१४, ९१७, १६३० ।

पर्माडि, कर्णाट देश के राजा का नाम है जिसने कलश के समय काश्मीर छोड़कर अपने देश में आये कवि बिल्हण को अपने यहाँ विद्यापति पद पर नियुक्त किया (७.९३५) । इसकी पत्नी, चन्दला, का चित्र देखकर राजा हर्ष कामातुर हो उठा (७.१११९) । हर्ष ने इसे पराजित करने की प्रतिज्ञा की (७.११२१) ।

पर्माण्डि, गुणलेखा के गर्भ से उत्पन्न राजा जयसिंह के पुत्र का नाम है (८.१६०८) । अलङ्कारचक्र ने अपनी एक पुत्री का इसके साथ विवाह किया (८.२९५३) ।

पर्युक, दरदराज यशोधर के एक अन्य मंत्री का नाम है (८.२४५८) । इसने सज्ज के एक अप्रौढ़ पुत्र एवं अपने अनुज को मुख्य परामर्शदाता बनाया (८.२४६१) । यह दरदराज्यवर्ती दुग्धघात दुर्ग को प्राप्त करने में असमर्थ रहा (८.२४६८) । विड्डसीह ने इससे सन्धि कर ली (८.२४६९) ।

पर्वगुप्त, पार्थपुत्र राजा उन्मत्तावन्ति के एक मंत्री का नाम है (५.४२०) ।

इसने स्वयं राजा बनने का उद्योग किया (५.४२१)। इसने राजकुल के मनुष्यों की हत्या करा दी (५.४२७)। राजा को प्रसन्न करने के लिये इसने देवदत्त नामक अपने पुत्र को प्रेरित किया (५.४३७)। ६.९३, १०३, ११५ (यह संग्रामदेव का मुख्य मंत्री बना)। यह संग्रामदेव का वध करा कर स्वयं राजा बन गया (६.१२९)। इसने द्रव्योपार्जन को ही अपना ध्येय बनाया (६.१३६)। यह यशस्कर की रानी, नृपसुन्दरी, पर आसक्त हुआ (६.१३९)। चिन्ता से इसका शरीर कृश होने लगा (६.१४५)। सुरेश्वरी क्षेत्र में इसकी मृत्यु हुई (६.१४७)। इसने अपने दो मन्त्रियों के साथ अपनी दो कन्याओं का विवाह किया था (६.२११)। पालकी-वाहक कुय्य का पुत्र सिन्धु इसका प्रिय सेवक था (६.२६५)। ८.१९५६ (पार्वगुप्तिः)। ८.३४३७।

पर्वगुप्तेश्वर, एक शिव का नाम है (६.१३७)।

पर्वशर्कर, संग्रामराज के एक सेवक का नाम है जिसने राजा को सूचित किये बिना ही तुङ्ग पर आक्रमण कर दिया (७.८१)।

पलाण्डु—प्याज : ८.१४३।

पवनात्मज—भीमसेन (८.२७८९)।

पशुपति—शिव : ३.१९९, २६७ (पाशुपतव्रति),।

१. पाज, शाहि वंश में उत्पन्न एक व्यक्ति का नाम है जो कलश का प्रिय मित्र बन गया (७.२७४, ५६६)।

२. पाज, शमाला के एक डामर का नाम है जिसे जयराज ने अपने पास बुला लिया (७.१०२२)।

पाञ्चाल, एक जाति के लोगों का नाम है (८.१०९३)।

पाञ्चाली—द्रौपदी (पाण्डव-पत्नी) : ८.२३०५।

पाञ्चिग्राम, एक स्थान का नाम है: ८.३१२४।

पाटल, भूभट के पुत्र का नाम है जिसका महलों में राजकुमारों की भाँति पालन-पोषण हुआ था (६.२१२)।

पाठीन, एक मत्स्य का नाम है (५.६५)।

पाणिनि, पूर्वसमय के एक प्रसिद्ध वैयाकरण का नाम है (४.६३५)। 'जयापीडदेवस्यपाणिनेश्च किमन्तरम्', (४.६३७)।

पाण्डव, पाण्डु और कुन्ती के पुत्रों का नाम है (१.५१)। 'कुरु-पाण्डवैः', (१.८२)। 'पाण्डवेभ्योऽधिकः क्रोधो धार्तराष्ट्रेषु जायते', (८.२३०५)। ८.२३०६, २९७७।

पाण्डवसूनु—युधिष्ठिर : ४.७६ ।

पादाग्र, एक पद का नाम है (७.२१० ; ८.१४८२) ।

पापसूदन, एक तीर्थ का नाम है (१.३२; ७.१९१) ।

१. पार्थ—अर्जुन पाण्डव : २.९४; ७.५८५; ८.२८११, ३४०७ (कश्मीरेष्वास्त गोनन्दः पार्थानां सेवया नृपः) ।

२. पार्थ, निर्जितवर्मा के दस वर्षीय पुत्र का नाम है जिसे राजसिंहासन पर बैठाया गया (५.२५५) । जब एकाङ्ग के सैनिक रानी सुगन्धा को हुष्कपुर से पुनः राजधानी में लाये तो इसके पक्षपाती तान्त्रियों ने राज्य पर चढ़ाई कर दी (५.२६०) । इसे राज्यच्युत करके तंत्रियों ने पङ्गु को राजा बनाया (५.२८७) । इसके समर्थक तन्त्रियों ने एकाङ्गों से भीषण युद्ध आरम्भ किया (५.२८९) । तन्त्रियों ने शूरवर्मा को राज्यच्युत करके उसे पुनः राजा बनाया (५.२९५) । इसकी वेश्या का नाम साम्बवती था (५.२९६) । मेरुवर्धन के जिन धूर्त पुत्रों ने इसकी कृपा से उच्च पद प्राप्त किया था, उन्होंने इसे राज्यच्युत करने में योगदान दिया (५.२९८) । इसका पुत्र, अवन्तिवर्मा, राजा हुआ (५.४१४) । इसके उन्मत्त पुत्र ने इसका सर्वस्व छीन लिया जिससे यह जयेन्द्रविहार में आकर रहने लगा (५.४२८) । राजा की आज्ञा से तंत्रियों आदि ने इसके इस निवासस्थान को घेर लिया (५.४३१) । इसके मृत शरीर में देवदत्त ने छुरा भोंक दिया (५.४३८) । ८.३४६२, ३४३४ ।

३. पार्थ, धर्म नामक ब्राह्मण के पुत्र का नाम है जिसने तुङ्ग की हत्या को प्रेरित किया (७.८५) । यह अत्यन्त दुर्बुद्धि और पापी व्यक्ति था (७.१०७–१०९) ।

पार्थिवावलि, हेलाराज द्वारा १२,००० श्लोकों में रचित एक इतिहास-ग्रन्थ का नाम है (१.१७) ।

पार्वती, : १.७२; ३.४४३ ।

पाशुपत, एक सम्प्रदाय का नाम है : १.१७–१८; ३.२६७; ५.४०४ ।

पासिक, लोहर के एक ठक्कुर का नाम है (८.१८२८) ।

पिञ्जदेव, एक सेनानायक का नाम है जिसे क्रमराज्य में डामरों ने घेर लिया (८.१४३२) । ८.१५७७, २१४२ (यह सुज्जि के पास उसकी रक्षा करता हुआ खड़ा हुआ), २८०३ (पिञ्जदेवद्रङ्गाधिपो) ।

पिण्डारक, एक भवन का नाम है (७.१६९) ।

पित्थक, देवेश्वर के पुत्र का नाम है जिसकी यद्यपि हर्ष ने गौरव-वृद्धि की तथापि जो उसके शत्रुपक्ष से मिल गया (७.१५३२) । यह अपने को राज्य का हकदार समझता था (८.२१४) ।

पित्थराज, शाहि वंश में उत्पन्न एक व्यक्ति का नाम है जो कलश का प्रिय मित्र बन गया (७.२७४) ।

पिपीलका—चींटी (५.३२०) ।

पिम्मला, एक देवी का नाम है जिसका मन्दिर कल्याणपुर में स्थित था (७.११२४) ।

पिशाचकपुर, एक ग्राम का नाम है (५.४६९) ।

पुंस्कोकिल, एक पक्षी का नाम है : ८.३१७५ ।

पुण्याकर, भीमतिका ग्राम के एक कायस्थ का नाम है (७.६) ।

पुराणाधिष्ठान, एक स्थान का नाम है (३.९९) । ५.२६७ ।

पुष्याणनाड, एक ग्राम का नाम है : ८.९५९, १०३८, १५७८ ।

पूर्वमिहिर, एक प्राचीन इतिहासकार का नाम है जिन्होंने अशोक के पूर्वज, लव, आदि आठ राजाओं के चरित्र का वर्णन किया था (१.१८) ।

१. **पृथिव्यापीड,** मञ्जरिकादेवी के पुत्र का नाम है जो वज्रादित्य की मृत्यु के बाद काश्मीर का राजा हुआ । इसने ४ वर्ष १ मास तक राज्य किया (४.३९९) । ८.३४२५ ।

२. **पृथिव्यापीड,** राजा संग्रामपीड का दूसरा नाम है (४.६७५) ।

पृथु : २.६३ ।

पृथ्वीगिरि, राजपुरी के मार्ग में स्थित एक दुर्ग का नाम है जिसे हर्ष ने हस्तगत करने का विचार किया (७.११५२) ।

पृथ्वीचन्द्र, त्रिगर्तराज का नाम है (५.१४४) । इसके पुत्र का नाम भुवनचन्द्र था (५.१४५) ।

१. **पृथ्वीपाल,** राजपुरी के शासक का नाम है (६.३४९) । यह काश्मीरी सेना से परास्त हुआ (६.३५२) ।

२. **पृथ्वीपाल,** लवराज के एक पौत्र और कमलिय के भ्राता के पुत्र का नाम है जो राजा सुस्सल का पार्श्वरक्षक बना (८.१०९३) । यह अकेले ही राजा सुस्सल के पास आ गया (८.११९५) । जब इसने कुठार से कोष्ठेश्वर पर प्रहार करना चाहा तब उसे राजवंश का समझकर राजा जयसिंह ने इसे रोक दिया (८.२३१६) ।

पृथ्वीराज, विजयराज के पिता का नाम है (८.२२२७) ।

पृथ्वीहर, शमाला ग्राम के, सुस्सल के यहाँ निवास करनेवाले, एक वीर डामर का नाम है (८.५९१) । यह सुस्सल की सेना के प्रगति-मार्ग की रक्षा के कार्य पर तत्पर था (८.६२७) । राजा सुस्सल के क्रोध का पता पाकर यह भागकर जयन्त देश-निवासी अपने भाई, क्षीर, के घर चला गया (८.६४७,६४८)

इसके वृद्ध भाई ने इसे डामरों के साथ शमंगासा भेज दिया (८.६५१)। ८.६७२ । राजा सुस्सल ने इसके साथी एक डामर का वध करके रात्रि के भोजन के समान इसके पास भेज दिया (८.६७६)। इसने आक्रमण करके राजा सुस्सल के अनेक सैनिकों का वध कर दिया (८.७१२)। इसने भयंकर युद्ध करते हुये राजा सुस्सल के सैनिकों का वध किया (८.७३२)। यह सर्वत्र विजयी हुआ (८.७५८) । इच्छटिका वंश के उदय ने युद्ध में इसके हाथ से तलवार छीन ली (८.७६१) । भेद डालने की दृष्टि से इसने राजा सुस्सल से सन्धि करने की इच्छा प्रगट की (८.७८०)। भिक्षाचर के राजा होने के पश्चात् इसके और मल्लकोष्ठ के बीच द्वेष उत्पन्न हो गया जिससे यह राजधानी में अशान्ति का संचार करने लगा (८.८७६)। इसके घर जाकर विवाह करानेवाले मल्लकोष्ठ ने अमर्शवश राजा भिक्षाचर तक को त्याग दिया (८.८७८) । यह तिलक से सशंक रहने लगा (८.९१०) । इसे साथ लेकर राजा भिक्षाचर अपने उन राजद्रोहियों को पराजित करने चला जिन्होंने सुस्सल के पास समाचार पहुँचाया था (८.९३१)। नगर में भीषण स्थिति का समाचार मिलते ही भिक्षाचर इसे साथ लेकर राजधानी आ गया (८.९३३)। इसने अपने भतीजे को साथ लेकर सदाशिव का पुल पार कर लिया और जनकसिंह की सेना नष्ट करने में सफल हो गया (८.९३६)। यह तथा राजा भिक्षाचर पराजित जनकसिंह का पीछा करने के लिये सनद्ध हुये (८.९३८)। इसे साथ लेकर राजा सुस्सल क्षिप्तिका नदी के पास गया और भिक्षाचर तथा लवन्यों को अपने साथ लाया (८.९५६) । सुस्सल इसके ज्ञातिबन्धु को भी कैद करके राजधानी लाया (८.९५७) । भिक्षाचर काश्मीर त्याग कर इसके साथ सोमपाल के पास चला गया (८.९५९) । यह थोड़ी सेना लेकर शूरपुर गया और वहाँ वट्ट के पुत्र मल्ल को जीतकर उसे रणभूमि से भगा दिया (८.९६७)। सेनापति हर्ष के भाग जाने पर इसे उसकी पत्नी मिली (८.९९८) । मल्लकोष्ठ से पराजित होकर यह शमाला चला आया (८.१००३) । इसने क्षिप्तिका नदी के तट पर जनकसिंह आदि से युद्ध किया और सिंह को सूली पर चढ़ा दिया (८.१००६) । इसने युद्ध में जिन योद्धाओं का वध किया उनकी स्त्रियों का विलाप पूरे दिन नगर में गूंजता रहा (८.१००८)। इसका और भिक्षाचर का युद्ध बहुत दिनों तक चला (८.१०१५)। 'नान्यस्योत्थानशीलत्वं दृष्टं पृथ्वीहरात्तदा', (८.१०२०) । सुस्सल से पराजित होकर यह भिक्षाचर के साथ पुष्याणनाड भाग गया (७.१०३८) । मल्लकोष्ठ के बुलाने पर यह और भिक्षाचर आदि पुनः एकत्र हुये (८.१०५१) । यह मडवराज के दस्युओं को एकत्र करके विजयक्षेत्र में सैन्यसंग्रह कर रहा था (८.१०५७)। मल्ल-

कोष्ठ से युद्ध के समय इसके छोटे भ्राता ने राजा सुस्सल के सेनानायक, प्रज्जि, को आहत और सुज्जि को परास्त करके नगर में प्रवेश किया (८.१०६०)। इसने विजय की माता, सिल्ला, का वध कर दिया (८.१०७०)। इसने राजा सुस्सल की सेना के अनेक वीरों को कैद कर लिया (८.१०७२)। सुस्सल की सेना को पराजित करने के बाद भिक्षाचर के साथ यह राज्य पर अधिकार करने के लिये नगर के निकट आ पहुँचा (८.१०७५)। यह मडवराज्य की सेना में एक ऐसे मार्ग से प्रविष्ट हुआ जिस पर कोई रुकावट नहीं थी (८.१०७७)। अपनी सेना के बजते हुए वाद्यों को सुनकर कौतूहलवश यह उन वाद्यों को गिनने लगा (८.१०८०)। गोप पर्वत पर चढ़ते समय जब एक पक्षी ने भिक्षाचर की ग्रीवा का मांस नोच लिया और वह लड़खड़ाया तब इसने उसे सम्हाल लिया (८.११०६)। इसने राजधानी में आकर स्वयं युद्ध का संचालन करना आरम्भ किया (८.१११६)। भिक्षाचर को साथ लेकर यह अपने घर चला आया (८.११२४)। यह बार-बार युद्ध के लिये क्षिप्तिका के तट पर आता और प्रज्जि-सुज्जि आदि प्रमुख वीरों से युद्ध करता रहा (८.११२६)। इससे युद्ध में राजा सज्ज के पुत्र, डोम्ब, की मृत्यु हो गई (८.११३३)। इसने कल्याणपुर में राजा सुस्सल की सेना को बुरी तरह पराजित किया (८.११३५)। ८.११५८, ११६४, १२१३ (यह झूठा प्रवाद फैला कि इसकी युद्ध में मृत्यु हो गई), १३१७। भिक्षाचर ने इसकी सहायता से पुनः राज्य प्राप्त कर लेने की आशा व्यक्त की (८.१४४९)। 'पृथ्वीहरानुजः', (८.१५९४)। ८.२२७१ (इसके पुत्र का नाम कोष्ठेश्वर था), २४९६, २७२६, २७४८, २७९९, २९११ (पृथ्वीहरसुतद्वयी), ३०२६, ३३१३ (पृथ्वीहरकुलाच्छेदस्वच्छया मेदिनीपतिः। अवधील्लोठनमपि छन्नदण्डप्रयुक्तिभिः)।

पौण्ड्रवर्धन, गौडदेशान्तर्गत एक नगर का नाम है (४.४२१)।

पौष, एक मास का नाम है : ८.११३६।

१. प्रकट, खशजातीय बाण के पुत्र तुङ्ग के एक भ्राता का नाम है (६.३१९)।

२. प्रकट, कालिय के पुत्र का नाम है जिसका सेनापति उदय ने वध कर दिया (८.१६५९)।

प्रकाशदेवी, राजा चन्द्रापीड की रानी का नाम है (४.७९)।

प्रकाशिका, रानी प्रकाश देवी द्वारा निर्मित कराये गये एक विहार का नाम है (४.७९)।

१. प्रज्जि, सिन्धुदेश के एक राजपुत्र का नाम है जिसे राजा सुस्सल ने

आनन्द के स्थान पर द्वाराधीश बनाया (८.१०४२)। सुस्सल ने इसे राजस्थान की रक्षा का भार सौंपा (८.१०४६)। सुस्सल ने इसे मल्लकोष्ठ से युद्ध करने का आदेश दिया (८.१०५८)। मल्लकोष्ठ से युद्ध में यह आहत हो गया (८.१०६०)। यह युद्धकला में निपुण हो गया था (८.१०८८)। अपने भाई के साथ यह भी सुस्सल की सहायता के लिये रणाङ्गण में आ गया (८.१११०)। यह बारबार क्षिप्तिका तट पर पृथ्वीहर से युद्ध करता रहा (८.११२६)। विद्रोहियों से विकल होकर राजा सुस्सल ने इस पर अपना विश्वास प्रगट किया (८.११४८)। यह पराक्रम, त्याग, नीति एवं अद्रोह आदि गुणों से परिपूर्ण था (८.११४९)। राजा सुस्सल ने इसके भतीजे, भागिक, को मण्डलेश्वर बनाया (८.१२२८)। ८.१२५९।

२. प्रज्जि, एक व्यक्ति का नाम है (८.३४००)।

प्रताप, राजा उत्कर्ष के पुत्र का नाम है (८.१०)।

प्रतापगौरीश, एक देवालय का नाम है (७.१६३८)।

प्रतापपाल, नागपाल के सौतेले भाई का नाम है जिसका उसने वध करा दिया (८.६१९)।

प्रतापपुर, एक नगर का नाम है जिसे प्रतापादित्य ने बसाया था (४.१०)। ८.८२०।

प्रतापशील, उज्जयिनी के राजा विक्रमादित्य के पुत्र का नाम है जिसे प्रवरसेन ने पुनः राज्यपद पर प्रतिष्ठित कराया (३.३३०)।

१. प्रतापादित्य, विक्रमादित्य के वंशज का नाम है जिसे अन्धयुधिष्ठिर के बाद उसके मन्त्रियों ने सिंहासन पर बैठाया (२.५)। इसने ३२ वर्षों तक पृथिवी पर शासन किया (२.९)। ८.३४१७।

२. प्रतापादित्य, दुर्लभवर्धन-पुत्र दुर्लभक का दूसरा नाम है (४.८)। इसके चन्द्रापीड आदि पुत्र क्रमशः वज्रादित्य, उदयादित्य, और ललितादित्य के नाम से विख्यात हुये (४.४३)।

प्रद्युम्न, एक तीर्थ का नाम है। ३.४६०; ७.१६१६।

प्रभाकरदेव, एक मन्त्री का नाम है जिसके साथ शङ्करवर्मा की रानी सुगन्धा का वैधव्य की अवस्था में भी अवैध सम्बन्ध हो गया (५.२३०)। यह शङ्करवर्मा की कृपा से गञ्जाधिकारी बन गया और रानी सुगन्धा का प्रेमी भी रह चुका था (५.४७२)। ८.१९५३।

प्रभाकरवर्मा, राजा अवन्तिवर्मा के एक मन्त्री का नाम है (५.३०)।

प्रभाकरस्वामी, विष्णु के एक मन्दिर का नाम है (५.३०)।

प्रमद्कण्ठ, अमरकण्ठ नामक ब्राह्मण के पुत्र का नाम है जिसे कलश ने अपना गुरु बनाया (७.२७६)।

प्रमोद, मथुरा के राजा का नाम है जिसके जामाता, आच, ने आचेश्वर शिव की स्थापना की (४.५१३)।

१. प्रयाग, एक तीर्थ का नाम है (४.४१४; ७.१४७७)।

२. प्रयाग, एक सरल सेवक का नाम है जिसे कलश ने कारागार में हर्ष की सेवा के लिये नियुक्त किया (७.६८२)। रसोइयों द्वारा इसे हर्ष को विष देने के षड्यन्त्र का पता चल गया (७.६८७)। कलश को, जब हर्ष को विष देने की बात का पता चला तो उसने इसे बुलाकर पूछा (७.६९१)। हर्ष इसके द्वारा लाया गया भोजन करता था (७.६९३)। इसके द्वारा हर्ष ने विजयमल्ल के पास सन्देश भेजा (७.७४९)। जब धम्मट और जयराजगुप्त मंत्रणा कर रहे थे तो उसी समय इसका एक अनुचर वहाँ पहुँच गया (७.१०१९)। राजा हर्ष ने कलशराज ठक्कुर से कहा कि जब प्रयाग उसके पास दूत भेजे तो वह धम्मट का वध कर दे (७.१०४१)। इसने हर्ष के आदेशानुसार कलशराज के पास दूत भेजा (७.१०४५)। इसने राजा हर्ष को कलशेश्वर मंदिर का स्वर्ण निकालने से रोका (७.१०७४)। पराजित हर्ष को इसने लोहर चले जाने का परामर्श दिया (७.१५८६)। चम्पक ने कहा कि उसके चले जाने पर अकेला यही हर्ष के पास रह जायगा (७.१५८८)। इसने दण्डनायक से पदच्युत राजा हर्ष को कुछ मार्ग-व्यय देने के लिये कहा (७.१६२१)। केवल यही हर्ष के साथ रह गया (७.१६२२)। इसने हर्ष को वितस्ता पार कराने के लिये नाविकों को बुलाया (७.१६२५)। राज्य-च्युत हर्ष इसका और मुक्त का सहारा लेकर चल रहा था (७.१६३९)। यह और मुक्त हर्ष को अत्यन्त कठिनाई से गुण नामक क्षुद्र भिक्षु की कुटी तक ले गये (७.१६४०)। इसके कम्बल को ओढ़ कर हर्ष ने कुटी की कीचड़भरी भूमिपर खड़े-खड़े ही रात्रि व्यतीत की (७.१६४५)। इसने अपना अन्तर्वस्त्र बेचकर भोजन सामग्री लाने के लिये भिक्षुक को भेजा (७.१६६५)। इसके द्वारा प्रस्तुत भोजन का हर्ष ने केवल स्पर्श भर किया (७.१६६९)। इसने भिक्षुक से जब समाचार पूछा तब उसने युवराज भोज के मरण का समाचार सुनाया (७.१६७०)। इसने पुत्रशोक से व्यथित हर्ष से भिक्षु की कुटिया छोड़कर भगवन्मठ चलने की प्रार्थना की (७.१६७८)। इसने हर्ष को बताया कि प्रजा उसके चले आने से शोकमग्न है (७.१६८२)। इसने भिक्षुक को दूसरा अन्न लाने की आज्ञा दी (७.१६८८)। इसके बहुत आग्रह पर भी

हर्ष ने कोई भोजन ग्रहण नहीं किया (७.१६९८)। एक सैनिक ने पहले इस पर प्रहार करने के पश्चात् हर्ष पर भी प्रहार किया (७.१७१०)। इसके भांजे का नाम लक्ष्मक था (८.९११)।

१. प्रवरसेन, गोनन्द के एक वंशज का नाम है जो काश्मीर का राजा हुआ (१.१९०)। यह राजा श्रेष्ठसेन का ही दूसरा नाम है (३.९७)। इसने प्रवरेश्वर शिव की स्थापना की और पुराणाधिष्ठान में मातृचक्र प्रतिष्ठित करके अनेक देवालयों का निर्माण कराया (३.९९)। पुराणाधिष्ठान में इसका निवास (८.२४०८)। देखिये **श्रेष्ठसेन** भी।

२. प्रवरसेन, तोरमाण द्वारा अञ्जना के गर्भ से उत्पन्न पुत्र का नाम है (३.१०९)। यह कुम्भकार की मिट्टी से शिवलिङ्ग बनाया करता था (३.११४)। पिता की मृत्यु से खिन्न होकर यह माता के साथ तीर्थयात्रा के लिये चला गया (३.१२३)। जब मातृगुप्त काश्मीर का राजा हुआ तब यह अपनी माता के साथ तीर्थयात्रा करते हुये अश्वपाद नामक एक सिद्ध का अतिथि था (३.२६५-२६७)। शिव ने इसे दर्शन दिया और इसने उनसे वर माँगा (३ २७२–२७९)। इसने विक्रमादित्य को पराजित करने की इच्छा की परन्तु जब त्रिगर्तों को पराजित करके आगे बढ़ा तब इसे विक्रमादित्य की मृत्यु का समाचार मिला (३.२८२–२८५)। यह मातृगुप्त के पास आया (३.२८८)। इसने मातृगुप्त के संन्यास लेने के विचार को सुनकर उसकी प्रशंसा की (३.२९९ और बाद)। यह काश्मीर की सम्पूर्ण आय मातृगुप्त के पास भेज देता था (३.३२१)। इसने अपने असाधारण प्रभाव से जगतीतल के अन्यान्य राजाओं को परास्त करके अपनी कीर्ति फैला दी (३.३२४)। इसके पूर्वजों के जिस सिंहासन को विक्रमादित्य ने उज्जयिनी में मँगा लिया था उसे यह पुनः काश्मीर लाया (३.३३१)। जब एक पिशाच ने नदी पर अपना पैर रखकर पुल बना दिया तो इसने अपने छुरे से पिशाच के पैर का मांस काट कर सीढ़ी बनाते हुये पुल पार किया जिससे उस स्थान को आज 'छुरिकाबल' कहते हैं (३.३४६–३४७)। राज्य करते इसे ६० वर्ष व्यतीत हो गये (३.३६४)। "अश्वपाद का पत्र पाकर इसने जयन्त को पुरस्कृत किया और फिर योगबल से पाषाणनिर्मित प्रासाद का भेदन करके गगनमण्डल में उड़ गया। दरबार में उपस्थित लोगों ने इसे इस प्रकार आकाशमार्ग से कैलास विभूषित उत्तर दिशा में जाते देखा (३.३७३–३७५)। 'प्रवरसेनेन यदेतत्प्रवरं पुरम्', (४.३११)। ८.२४०८, ३४२०।

१. प्रवरेश्वर, एक शिव का नाम है जिसकी सेवापूजा के लिये राजा श्रेष्ठसेन ने त्रिगर्त देश अर्पित कर दिया (३.९९,१००)।

२. प्रवरेश्वर, राजा प्रवरसेन द्वारा स्थापित एक शिवमंदिर का नाम है (३.३५०)। इनका लिङ्ग (३.३७२)। सिद्धिक्षेत्र के इनके मंदिर में प्रवरसेन के आकाशगमन का मार्ग आज भी विद्यमान है (३.३७८)। ७.१०९।

प्रशस्त, अनन्तदेव के महामन्त्री का नाम है। ऐसी किंवदन्ती थी कि राजा कलश इसका ही पुत्र था जिसे रानी सूर्यमती ने ले लिया था (७.४३८)।

प्रशस्तकलश, मंत्री राजकलश के पुत्र का नाम है जो राजा कलश का अन्तरंग सेवक बन गया (७.५७२)। इसके दुर्व्यवहार के कारण कन्दर्पदेव ने द्वारपति बने रहना स्वीकार नहीं किया (७.५९८)। नोनक के साथ जाकर इसने हर्ष को कारागार से मुक्त किया (७.८१४)। इसने हर्ष के सैनिकों को नोनक के शस्त्रास्त्र भी दिला दिये (८.८६५)। हर्ष ने बन्दी बनाकर इसे कारागार भेज दिया (७.८६६)। कुछ समय के बाद हर्ष ने इसे मुक्त करके योग्य काम पर लगा दिया (७.८८८)। यह राजा उच्चल के समय में भी रहा (८.१८६)। इसकी मृत्यु हो जानेपर इसके भ्रातृपुत्र, कायस्थ कनक, ने अपार धन का संग्रह कर लिया (८.५७०)।

१. प्रशस्तराज, एक लवन्य डामर का नाम है जो अपने छोटे भाई, सिल्लराज, के प्रति द्रोह रखता था (७.१२५५)।

२. प्रशस्तराज, उत्पल के एक सहयोगी का नाम है (८.१२८२)। जब उत्पल राजा सुस्सल से मिलने गया तब उसने सुस्सल से इसे भी अन्दर बुलाने के लिये कहा (८.१३०८)। इसने राजा सुस्सल के मस्तक पर प्रहार किया (८.१३१४)।

प्राग्ज्योतिषपुर, एक स्थान का नाम है २.१४७; ४.१७१; ८.२८११।

प्राग्ज्योतिषेश्वर, प्राग्ज्योतिषपुर के राजा का नाम है (२.१४७)।

प्राजिधर, घटोत्कच के छोटे भाई का नाम है (८.३३९८)।

प्राजिमठिका, एक स्थान का नाम है (७.११८२)।

प्रायोपवेश, अनशन व्रत का नाम है : ४.८२, ९९; ५.४६८; ६.१४, २५, ३३६, ३४३; ७.१३, १०८८, ११५७, १६११; ८.५१,११०, ६५८, ७०९, ७६८, ८०८, ९३९, २२२४, २७३३, २७३९।

प्रास, सहस्रमंगल के पुत्र का नाम है जिसने डामरों को मिलाकर काश्मीर में षडयन्त्र-रचना आरम्भ की (८.५०१)। इसने काश्मीर में प्रवेश किया परन्तु जब सुस्सल के सैनिकों ने इसके पिता का वध कर दिया तब यह लौट आया

(८.५३६)। इसने अनेक बार आक्रमण करके सुस्सल को कुपित कर दिया (८.५५६)।

१. प्रेम, दिद्दामठ के अध्यक्ष का नाम है जिसके साथ संग्रामराज ने अपनी पुत्री लोठिका का विवाह किया (७.११)। इसकी मृत्यु (७.३३)।

२. प्रेम, एक धात्रीपुत्र का नाम है जिसने सिंहदेव को सुस्सल की हत्या का समाचार सुनाया (८.१३४९)। सुज्जि ने इसे लोहर कोट का अधिकार सौंप दिया (८.१६३१)। यह भागिक के चले जाने पर सम्पत्ति पाकर दुर्ग की सुरक्षा के कार्य से विमुख हो गया (८.१८१४)। कायस्थ उदय आदि इसके वध का उपाय करने लगे (८.१८१८)। इसका पुत्र (८.१८२८)। लोठन के राज्याभिषेक का समाचार सुनकर यह क्रुद्ध हुआ और प्रतिरोध करने के लिये चला (८.१८३०)। ८.१९३३।

प्लक्षप्रस्रवण, एक अरण्य तीर्थ का नाम है। राजा कुवलयापीड राज्य का परित्याग कर शान्ति के लिये यहाँ आया (४.३८७)।

फ

फलपुर, एक नगर का नाम है (४.१८४)। राजा ललितापीड ने इसे ब्राह्मणों को अग्रहार के रूप में प्रदान किया (४.६७३)। ५.९९।

फल्गुण भट्ट, क्षेमगुप्त के एक प्रियपात्र का नाम है (६.१५२, १६८)। इसने अपनी पुत्री, चन्द्रलेखा, का क्षेमगुप्त से विवाह कर दिया (६.१७९)। ६.१६४ (दिद्दारानी इससे ईर्ष्या करती थी), १९७, १९८ (यह दिद्दा रानी से सतर्क रहता था), २०१ (फलगुणो वैरिशङ्कितः), २०९, २८४ (दिद्दा-रानी ने इसे पुनः वापस बुला लिया), ३१४ (इसकी मृत्यु), ३४८।

फल्गुणक, एक व्यक्ति का नाम है जो कामदेव के पुत्र, यशस्कर, का मित्र था (५.४७३)।

फल्गुणस्वामी, एक देवमंदिर का नाम है (६.१६९)।

फल्गुन = अर्जुन (पाण्डव) : ८.१०९३।

फाल्गुन, एक मास का नाम है : ५.२२२; ८.५९८।

फुल्ल, दार्वाभिसार के नरवाहन के पुत्र और लोहर वंश के एक पूर्वज का नाम है। इसके पुत्र का नाम सातवाहन था (७.१२८२, १२८३)।

फुल्लपुर, एक स्थान का नाम है : ८.१२२१, १८४३, १९६४।

ब

१. बक = बगूला पक्षी : ५.३०५।

२. बक, राजा मिहिरकुल के पुत्र का नाम है जो अपने पिता के बाद

काश्मीर का राजा हुआ (१.३२५)। इसने बकश्वभ्र में बकेश्वर के मन्दिर का निर्माण कराया और बकवती नदी बहाकर लवणोत्स नगर बसाया (१.३२९)। इसने ६३ वर्ष १३ दिन पृथिवी पर शासन किया (१.३३०)। ८.३४१५।

बकवती, एक नदी का नाम है (१.३२९)।

बकश्वभ्र, एक स्थान का नाम है (१.३२९)।

बकेश्वर, एक देवता का नाम है जिनके मन्दिर का राजा बक ने निर्माण कराया (१.३२९)।

बडोस—'दग्धे बडोसके भिक्षाचरो नष्टा श्रयो व्यधात्', (८.१२६४)।

बन्धनमुद्रा, एक प्रकार की दासतासूचक मुद्रा का नाम है (४.१७९)।

१. **बप्पट,** राजा अनन्तदेव के एक प्रेमास्पद का नाम है जिसके वंशज, सेनट, ने राजा की मृत्यु के बाद वैराग्य ले लिया (७.४८२)।

२. **बप्पट,** कलश के सेनापति का नाम है जिसे उसने राजपुरी के राजा की सहायता के लिये भेजा (७.५७४)।

बप्पटदेवी, निर्जितवर्मा की रानी का नाम है : 'राज्ञ्या बप्पटदेव्याः स निर्दयैः सुरतोत्सवैः। खण्डयामास कण्डूतिं साप्यस्यार्थेषणां धनैः॥', (५.२८२)। पङ्गु-पुत्र चक्रवर्मा कुछ समय तक इसके संरक्षण में पला (५.१२९०)।

बप्पनील, एक स्थान का नाम है : ८.१९८९, १९९३।

१. **बप्पिका,** राजा कलश की पत्नी का नाम है जिसके गर्भ से कलश-पुत्र हर्ष का जन्म हुआ था (७.३१९, ११२८)।

२. **बप्पिका,** चन्द्रभागातट के निवासी देङ्गपाल ठक्कुर की पुत्री का नाम है जिसका भिक्षाचर से विवाह हुआ (८.५५४)।

बप्पियक (-वज्रादित्य), काश्मीर के एक राजा का नाम है (४.३९३)। इसके द्वारा मम्मादेवी के गर्भ से उत्पन्न पुत्र, संग्रामपीड (प्रथम), केवल सात दिन के लिये काश्मीर का राजा हुआ (४.४००)। संग्रामपीड के बाद इसका छोटा पुत्र, जयापीड, राजा हुआ (४.४०२)। मेघावलि से उत्पन्न इसका पुत्र, त्रिभुवनापीड, ज्येष्ठ होते हुये भी राज्य से वंचित रहा (४.६८९)।

बब्बापुर, एक राज्य का नाम है जहाँ के राजा का नाम वज्रधर था (८.५३८)।

बलहर, एक व्यक्ति का नाम है (८.२६९५)। यह भोज के पास आया (८.२७६८)। इसके अद्भुत सामर्थ्य का वर्णन (८.२७९४)। ८.२८५२ (बलहरो बली), २८६६, २८७३, २८९०, २८९८ (व्यपोहन्ती बलहरी बाहुभिः कलहं सरित्), २९५१ (भोज ने इसे ही अपने पास रखने का निश्चय

किया), २९६४, २९६६ (धन्य ने इससे संधि की), २९७१ (नाग के द्वारा इसे अपना सर्वस्य नष्ट हो जाने का संदेह हो गया), २९८१, २९८७ (नाग के बन्दी हो जाने पर उसके भयभीत कुटुम्बी इसके आश्रय में आ गये), २९८८ (धन्य भोज के बदले में नाग को लेकर इसके पास आया), २९९३ (इसमें धैर्य और पराक्रम की दुर्लभ विशेषता थी), २९९८ (नाग के वध के पश्चात उसके अनुयायी इससे मिल गये), ३००७ (यह भोज के पास आया), ३०४०, ३०५७, ३०५९, ३११७, ३१२२ (यह भोज को विरत नहीं कर सका), ३१३४ (भोज ने इसकी सेना को आगे बढ़ने से रोक दिया), ३१४७ (भोज ने बार-बार इसको आक्रमण करने से रोक दिया), ३१५४।

बलहरी, एक नदी का नाम है (८.२८९८)।

बलेरक-प्रपाप्रान्त, एक स्थान का नाम है जहाँ के डामरों को मण्डलेश्वर आनन्द ने सूली पर चढ़ा दिया (७.१२३९)।

बल्ह, त्रिगर्त राज्य के युवराज का नाम है जो अन्य चार राजाओं के साथ मिलकर काश्मीर पर आक्रमण के लिये सन्नद्ध हुआ (८.५४०)।

बहुस्थल, एक स्थान का नाम है (८.१८४४)।

१. **बाण,** खश जाति के एक व्यक्ति का नाम है जो तुङ्ग का पिता था (६.३१८)।

२. **बाण,** उच्चल के एक द्वाराधीश का नाम है जो कुछ समय की प्रभुता के बाद कंगाल हो गया (८.१८५)। जब विद्रोही लोग राजा सुस्सल पर प्रहार कर रहे थे तो राजा के बचाने के प्रयास में इसका एक वंशज तथा राजा के घोड़ों का अधिकारी शृङ्गारसिंह विद्रोहियों द्वारा मारा गया (८.५२८)। ८.२१७९।

बाणलिङ्ग, एक शिव का नाम है : ७.१८५; ८.३३४९।

बाणशाला, एक दुर्ग का नाम है (८.१६६६)।

बालकेश्वर, एक जयेष्ठ रुद्र का नाम है : ८.२४३०।

बालादित्य, रणादित्य पुत्र विकमादित्य के छोटे भ्राता का नाम है जो विक्रमादित्य के बाद काश्मीर का राजा हुआ (३.४७७)। इसने वङ्कालों को अपने अधीन कर लिया (३.४८०)। इसने अपनी पुत्री का दुर्लभवर्धन से विवाह कर दिया (३.४८९)। 'भूत्वा सप्तत्रिंशतिमब्दान्स चतुर्भिर्मासैर्वन्ध्यां मूर्धनि रत्नं नृपतीनाम्। तस्मिन्काले लोकमवापोज्ज्वलकृत्यो बालादित्यो बाल-शशाङ्काङ्कितमौलेः ॥', (३.५२६)। ८.३४२२।

बाष्ट्रका, खेरी प्रदेश में स्थित एक ग्राम का नाम है : ८.१२६०।

बिज्ज, एक व्यक्ति का नाम है जिसके द्वारा अनन्तदेव ने जिन्दुराज को कैद कराया (७.२७२)। यह शाहिवंश में उत्पन्न हुआ था और अनन्तदेव के पुत्र राजा कलश का प्रियपात्र बन गया (७.२७४)। जब कलश को उसके पिता ने बुलाया तो वह भयभीत हुआ और उसने इससे अपने भय को बता दिया (७.३२०)। यह भी कलश के साथ अनन्तदेव के पास गया (७.३२१)। जब अनन्तदेव ने कलश को थप्पड़ मारा तो इसने अनन्तदेव को चेतावनी दी (७.३२३)। यह कलश को अनन्त देव के पास से वापस लाया (७.३२७)। अनन्तदेव के समक्ष प्रगट किये इसके धैर्य को लोगों ने सराहा (७.३२८)। इसने कलश को उसकी रानी रिल्हा के महल में पहुँचा दिया (७.३३१)। कलश की रानी इसे पहरे पर बैठाकर कलश की रक्षा करने लगी (७.३३३)। इसने राजा अनन्तदेव को कलश के पास आने दिया (७.३३५)। कलश ने इसकी सम्मति से राज्य-व्यवस्था आरम्भ की (७.३६३)। इसे और जयानन्द आदि को साथ लेकर कलश वृद्ध राजा अनन्तदेव से युद्ध करने के लिये अवन्तिपुर आया (७.३६८)। कलश ने संग्रामपाल की सहायता के लिये इसे उसके साथ भेजा (७.५३६)। इसने राजपुरी के मंत्रियों को जयानन्द के विरुद्ध परामर्श दिया जिससे जयानन्द इस पर क्रुद्ध हो गया (७.५३९)। यह ऐश्वर्य-सम्पन्न होकर रहने लगा (७.५४२)। जब जयानन्द ने कलश से कुछ कहना चाहा तब यह वहाँ से हट गया (७.५४४)। जयानन्द ने राजा कलश से इसके विरुद्ध बातें की (७.५४६, ५४७)। इसने राजा का अभिप्राय समझकर विदेश जाने की अनुमति माँगी (७.५४८)। राजा कलश इसे कुछ दूर तक पहुँचाने गया (७.५५३)। जयानन्द ने इसका उच्चाटन कर दिया (७.५५४)। राजा कलश इसके आक्रमण की आशंका से व्यग्र रहने लगा (७.५५७)। सर्वस्व हरण कर लिये जाने पर भी इसके हृदय में राजा कलश के प्रति आदर बना रहा (७.५५९-५६१)। इसे निर्वासित करा देने के बाद शीघ्र ही रानी सूर्यमती के शापानुसार जयानन्द की मृत्यु हो गई (७.५६२)। यह भी रानी सूर्यमती के शापानुसार शीघ्र ही गौडदेश में जाकर मृत्यु को प्राप्त हुआ (७.५६४)। इसकी एक आकस्मिक रोग से मृत्यु हुई थी (७.५६५)।

बिज्जराज, एक सैनिक का नाम है (८.२३२६)।

बिज्जला, राजा वर्तुलराज की कन्या का नाम है जिसके साथ राजा उच्चल ने दूसरा विवाह किया (८.२८७)। रात्रि के समय राजा उच्चल इसके मण्डप की ओर जाने के लिये निकला (८.३०६)। राजा उच्चल की मृत्यु के बाद यह सती हो गई (८.३६७)।

बिज्जा, धन्य की पत्नी का नाम है (८.३३४३)।

बिज्जामठ, धन्य द्वारा अपनी पत्नी, बिज्जा, की स्मृति में बनवाये गये एक विहार का नाम है (८.३३४३)।

बिडाल, भावुक के वंश में उत्पन्न एक व्यक्ति का नाम है जिसके पुत्र का नाम नील था (८.१०८५)।

बिद्दक, एक व्यक्ति का नाम है जिसके भ्राता तथा भ्रातृपुत्र का राजा सुस्सल ने वध करा दिया (८.६४३,६७७)।

१. **बिम्ब,** एक फल का नाम जिसके साथ अधरों की उपमा दी गई है (३.४८२)।

२. **बिम्ब,** भूति द्वारपाल के पौत्र और वराह के पुत्र का नाम है जो अत्यन्त उदार था (७.२१६)।

३. **बिम्ब,** नीलाश्ववंश के एक डामर का नाम है जिसने अन्ततक हर्ष का साथ नहीं छोड़ा था (७.१६३१)। गर्गचन्द्र की आज्ञा से सल्हण ने इसे वितस्ता नदी में फेंकवा दिया (८.४२४)। ८.६१६।

४. **बिम्ब,** एक निर्वासित वीर का नाम है जिसके आ जाने से सहस्रमङ्गल की प्रतिष्ठा घट गई क्योंकि यह हर्षदेव का पौत्र (?) था (८.५४३,५४४)।

५. **बिम्ब,** सेनापति तिलक के सौतेले भाई का नाम है जो सुस्सल के शत्रुओं से मिल गया (८.७९०)। भिक्षाचर के राजा होते ही इसकी शक्ति प्रबल हो गई (८.८६२)। यह वेश्यागामी और दुराचारी बन गया (८.८६३)। इसकी पत्नी पर राजा भिक्षाचर आसक्त हो गया (८.८७४)। सुस्सल के आक्रमण को विफल करने के लिये राजा भिक्षाचर ने इसे राजपुरी के मार्ग से लोहर भेजा (८.८८४)। इसके चले आने पर राजा भिक्षाचर निरंकुश हो गया और हर प्रकार की मूर्खतायें करने लगा (८.८८८)। इसकी अनुपस्थिति में इसकी रखैल स्त्रियाँ राजा भिक्षाचर को निमन्त्रित करके उसके साथ भोग करने लगीं (८.८८९)। सोमपाल तथा यह सुस्सल से युद्ध करने के लिये पर्णोत्स आये (८.९१४)। सोमपाल की युद्ध में मृत्यु हो जाने पर शेष सैनिक इसे छोड़कर भिक्षाचर के पास आ गये (८.९२३)। पराजित होने के बाद भिक्षाचर का सेनापतित्व छोड़कर यह राजा सुस्सल के साथ हो गया (८.९२७)। यह सहायता के लिये विस्मय के पास गया परन्तु जब वहाँ इसके विरोधियों ने इसे बन्दी बनाना चाहा तब इसने युद्ध कर के अपना प्राण दे दिया (८.९६५)। पहले एक बार जब यह बाहर गया था तब इसकी अनुपस्थिति में राजा भिक्षाचर ने इसकी पत्नी के साथ अनैतिक सम्बन्ध स्थापित कर लिया था (८.९६६)।

१. **बिम्बा,** राजा बालादित्य की पत्नी का नाम है जिसने बिम्बेश्वर शिव की स्थापना की (३.४८२)।

२. **बिम्बा,** तुङ्ग की पुत्री, एक शाहि कन्या का नाम है जो पति की मृत्यु के बाद अग्नि में प्रवेश कर गई (७.१०३)।

बिम्बिय, टक्क देश के निवासी, एक पापी व्यक्ति, का नाम है (७.१०६४)।

बिम्बेश्वर, बालादित्य की पत्नी, बिम्बा, द्वारा स्थापित एक शिव का नाम है (३.४८२)।

बिल्ववन, एक स्थान का नाम है (८.३९३)।

बिल्हण, एक कवि का नाम है जो राजा कलश के समय काश्मीर छोड़कर कर्णाट देश के राजा पर्माडि के पास चला आया था, परन्तु राजा हर्ष की प्रशंसा सुनकर पुनः काश्मीर लौट आया (७.९३५-९३७)।

१. **बुद्ध,** (लोकनाथ), बौद्धमत के प्रवर्तक, गौतम बुद्ध का नाम है : १.१३८; ३.३५५, ४६४; ४.२०३, ५०७ (बुद्धत्रयं); ६.१७२; ७.१०९७ (श्रीनगर और परीहासपुर में इनकी विशाल प्रतिमायें थी); ८.२४०, ११८४, २२३४।

२. **बुद्ध,** राजभक्त रामवर्धन के पुत्र का नाम है जिसने अपने पिता के साथ पर्वगुप्त के विरुद्ध युद्ध किया परन्तु मारा गया (६.१२६)।

बुद्धराज, इन्दुराज के पुत्र और सिद्धराज के पिता का नाम है (७.२६३)। इसके कुल में उत्पन्न कुलराज नामक सेनापति, कन्दर्पदेव के साथ राजपुरी में प्रविष्ट हुआ और कन्दर्पदेव के धोखे में मारा गया (७.९७५)।

बुप्प, भोज का दूसरा नाम है (७.१५२५)।

बुल्ल, तन्वङ्ग के एक पौत्र का नाम है जिसका राजा हर्ष के सैनिकों ने वध कर दिया (७.१०६५)।

बुल्लिय, टक्क देश के एक व्यापारी का नाम है जिसने तुरुष्क व्यापारियों से लड़कियाँ क्रय करके कलश को उपहार में दीं (७.५२०)।

बृहट्टिक्क, देवसरस के एक डामर के पुत्र का नाम है जो अपने भाई, सूक्ष्मटिक्क, के साथ मिलकर सुस्सल के विरुद्ध विप्लव करने की योजना बनाने लगा (८.५२२)। राजा सुस्सल के सैनिकों ने इसका वध कर दिया (८.५२९)।

बृहत्सेतु, श्रीनगर के एक विशाल पुल का नाम है : ३.३५४; ८.११७१।

बृहद्राज, लक्ष्मक प्रतीहार का एक नाम है (८.१८९३)। इसकी कुटिलता से ही सोमपाल विपत्ति में फँसा (८.२२१७)।

बृहस्पति, राजा चिप्पट जयापीड का एक दूसरा नाम है (४.६७६)। देखिये **चिप्पट जयापीड** भी।

बोधि = बोधिसत्व द्वारा प्राप्त ज्ञान (१.१३९)।

बोधिसत्त्व : १.१३४, १३५, १३७, १३८, १४४, १७३, १७७; ३.४; ८.२५७४।

बोप, एक डामर का नाम है जिसका कम्पनेश होने के बाद मदनपाल ने वध कर दिया (७.५७९)।

बोल्यासक, राजा शङ्करवर्मा के राज्य की एक सीमा का नाम है जहाँ इस मृत राजा का दाहसंस्कार किया गया (५.२२५)।

बौद्ध, बौद्धमतावलम्बियों को कहते है : १.११२ (अवधूत द्वारा शास्त्रार्थ में पराजित), १३५, १३६, १४४, १७१, १८०, १८१। देखिये अगला शब्द भी।

बौद्धभाषा : १.१३५।

१. **ब्रह्म**, राजा रणादित्य-पुत्र विक्रमादित्य के एक मन्त्री का नाम है (३.४७५)। इसने ब्रह्ममठ का निर्माण कराया (३.४७६)।

२. **ब्रह्म**, एक सिद्ध का नाम है (४.४५६)।

ब्रह्मजज्जल, वल्लापुर के नरेश का नाम है (८.१०८३)।

ब्रह्मपुत्र—धूमकेतु (८.२४९८)।

ब्रह्मपुरी, एक प्रकार के देवप्रतिष्ठान के लिये प्रयुक्त शब्द है (८.६२८)। ८.२४२१ (उदय ने अनेक ब्रह्मपुरियों के साथ जो मठ बनवाया उससे पद्मसर के तट की शोभा में वृद्धि हो गई), २४२३।

ब्रह्ममठ, एक मठ का नाम है (३.४७६)।

ब्रह्ममण्डप, रानी रणरम्भा द्वारा निर्मित कराये गये एक मण्डप का नाम है (४.४५९)।

ब्रह्मराज, त्रिभुवन (?) के भ्राता का नाम है जिसे उसने गंजाधिपति के पद पर नियुक्त किया। रुद्रपाल से द्वेष हो जाने के कारण यह कार्य छोड़कर चला गया (७.१६६)।

ब्रह्महत्या : ४.१०३।

भगवत्, भगवान् बुद्ध की एक उपाधि है (४.२६२)।

भगवद्गीता, हिन्दुओं के प्रसिद्ध धर्मग्रन्थ का नाम है (५.१२५)।

भगवन्मठ, एक मठ का नाम है (७.१६७८)।

भगीरथ, एक पौराणिक राजा का नाम है (४.५१५)।

भट्टपाद, एक आराध्य पुरुष का नाम है (८.१४३)।

भट्टा, एक योगिनी का नाम है (१.३३१)। इसने राजा बक का अपने मातृचक के सम्मुख बलिदान देकर आकाशगमन की सिद्धि प्राप्त कर ली (१.३३३)। खेरीमठ में विद्यमान शतकपालेश्वर शिव की प्रतिमा, मातृचक्र, एवं योगिनी की जानु-मुद्रा से अंकित शिला को देखने से इसका वृत्तान्त आज भी स्मरण हो जाता है (१.३३५)।

भट्टार, उत्कर्ष के एक मंत्री का नाम है जिसे बन्दी बनाकर हर्ष देव ने कारागार भेज दिया (७.८६६)।

भट्टारकमठ, एक मठ का नाम है (६.२४०)। ७.२९८; ८.२४२६।

भट्टारनड्वला, एक सरोवर का नाम है जिसमें जयराज का शव फेंका गया (७.१०३८)।

भट्टोद्भट, एक विद्वान का नाम है जो राजा जयापीड के यहाँ सभापति था और प्रतिदिन एक लाख दीनार पाता था (४.४९५)।

भद्रावकाश, एक स्थान का नाम है : ८.५०१।

भद्रेश्वर, एक कायस्थ का नाम है जिसे तुङ्ग ने अपना सहायक नियुक्त किया (७.३८)। यह अपने आत्मीय लोगों का भी प्राण लेने लगा (७.४४)। चैत्र मास में तुङ्ग ने इसे प्रभुता प्रदान की थी (७.४५)। जब संग्रामराज ने तुङ्ग के स्थान पर इसे प्रधान मंत्री बना दिया तब इसने देवमंदिरों को लूटना आरम्भ किया (७.१०६)। 'भद्रेश्वरोऽपि यच्चक्रे विहारं सुकृतोज्ज्वलम्', (७.१२१)। इसका पुत्र (७.२२३)।

भप्पट, एक आचार्य का नाम है जिसने भप्पटेश्वर शिव की स्थापना की (४.२१४)।

भप्पटेश्वर, एक शिव का नाम है (४.२१४)।

१. भरत, नाट्यशास्त्र के प्रसिद्ध लेखक का नाम है (४.४२२)।

२. भरत, श्रीराम दाशरथी के अनुज का नाम है : (८.३३७३)।

भरतसेतु, एक स्थान का नाम है (७.१३३३)।

भरद्वाज, एक प्राचीन महर्षि का नाम है (७.१२८२)।

भलेरकप्रपा, एक स्थान का नाम है जहाँ रिल्हण ने अपनी पत्नी के नाम पर एक विहार बनवाया (८.२४१०)।

भल्लट, एक कवि का नाम है जो शङ्करवर्मा द्वारा गुणीजनों की उपेक्षा के कारण छोटे-मोटे धन्धों से जीविका चलाता था (५.२०४)।

भव—शिव (७.२०१)।

भवक—इसके पुत्र, विजय, को पराजित करके राजा सुस्सल ने कल्याण-

पुरस्थित उसके सब प्रासादों को जलवा दिया (८.१२६३)। इसका लघु भ्राता विजय के भय से सुस्सल की शरण में आ गया परन्तु सुस्सल ने उसे कैद कर के कारगार में डाल दिया (८.१२६५)। ८.२३५०।

भवच्छेद, एक ग्राम का नाम है जिसे जयेन्द्र-पुत्र वज्रेन्द्र ने बसाया था (३.३८१)।

भवभूति, एक कवि का नाम है (४.१४४)।

भवस्वामी, राजा मुक्तापीड के प्रधान मंत्री का नाम है जिससे राजा ने समयानुकूल कर्त्तव्य पूछा (७.१४३१)।

भाग, देवमुख कायस्थ के पुत्र चन्द्रमुख के एक पुत्र का नाम है (७.११६)।

भागवत, एक संप्रदाय का नाम है (७.२५४)।

१. **भागिक**, एक खश प्रधान का नाम है (८.१६६५)। इसके निषेध के कारण सुज्जि ने विपक्ष का आश्रय ग्रहण करने का विचार त्याग दिया (८.१६७१)। इसने भिक्षाचर के साथ विश्वासघात किया (८.१६९३)।

२. **भागिक**, राजा सुस्सल के एक वीर सैनिक का नाम है (८.१०९०)। यह प्रज्जि का भतीजा था और सुस्सल ने इसे मण्डलेश्वर बना दिया (८.१२२८)। ८.१६३०, १६५४ (जब सुज्जि ने भिक्षाचर के पास जाने की इच्छा की तब इसने उसे रोक दिया), १८१४, १९२२ (सुज्जि ने इसकी पुत्री का हरण करके लोठन को दे दिया)।

भागीरथी = गङ्गा : ४.५१५।

भाङ्गिल, एक प्रदेश का नाम है (७.४९८)। ८.९२९, ३१३०।

भाद्रपद = एक मास : २.१८; ८.१००७।

भारत = महाभारत युद्ध : १.४९; ७.१७२८। देखिये **महाभारत** भी।

भारतम् = महाभारत नामक महाकाव्य : १.४९।

भारतस्तवराज, एक स्तोत्र का नाम है (८.१०६)।

भावुक, एक वंश-प्रवर्तक का नाम है जिसके कुल में बिडाल का पुत्र नील उत्पन्न हुआ था (८.१०८५)। 'भावुकान्वयभूषणम्', (८.१३२५)।

भास, सुज्जि के एक सेवक का नाम है जो लोकपुण्य से भागकर अवन्तिपुर के राजा के पास आ गया (८.१४२९)। टिक्क ने इसे बन्दी बनाने का निश्चय किया (८.१४७४)। इसे मुक्त कराने के लिये राजा सिंहदेव ने पञ्चचन्द्र और सुज्जि को भेजा (८.१४७८)। टिक्क के भाग जाने का समाचार सुनकर यह उसके अनुचरों का वध करता हुआ सुज्जि के पास आया (८.१४८०)। राजा सिंहदेव ने इसे खेरी प्रान्त का प्रमुख अधिकारी बनाया

(८.१४८२)। इसने मार्ग से दस्युओं को मार भगाया (८.१५०९)। इसने युद्ध किया (८.२८३४)।

भि:खराज, कुलराज के चचेरे भाई का नाम है जिसने कोष्ठेश्वर पर प्रहार किया (८.२३१५)।

भिक्षाचर (बहुधा **भिक्षु** ही), हर्षपुत्र भोज की मरणोपरान्त उत्पन्न सन्तान का नाम है जो विभवमती ने गर्भ से उत्पन्न हुआ (८.१७)। काश्मीर पर आक्रमण के उद्देश्य से संघबद्ध पाँच राजाओं में से तीन सहायता के लिये इसके पास आये (८.५४१)। जब विद्रोहियों की सेना के साथ यह आगे बढ़ा तब इसका सेनापति दर्यक मर गया (८.५५०)। दर्यक की मृत्यु के कारण यह कुछ भी कर पाने में असमर्थ हो गया (८.५५१)। सुस्सल ने इसे वल्लापुर से बुलवाया (८.६२२)। विजय ने विषलाटा के मार्ग से इसे अपने पास बुला लिया (८.६८४)। मल्लकोष्ठ ने इसे बुलाने के लिये सैनिकों को विषलाटा भेजा (८.६९७)। तिळक ने इसके आने के लिये पर्वतीय मार्ग से प्रबन्ध कर दिया (८.७०१)। राजा सुस्सल ने इसकी चर्चा पर रोक लगा दी (८.७०५)। इसके आगमन का समाचार ज्यों-ज्यों प्रबल होने लगा त्यों-त्यों सुस्सल की चिन्ता में वृद्धि होने लगी (८.७११)। यह मयग्राम पहुँचा (८.७२९) । ८.७४४, ७७८ (विजय इसका सेनापति था) । जनकसिंह ने इसके साथ अपनी भतीजी का विवाह करने की बात पक्की की (८.७९१)। राजा सुस्सल के अनेक वीर इससे आकर मिलने लगे (७.७९२, ७९३)। लोगों की यह धारणा बन गई कि सुस्सल के चले जाने पर यह सम्पूर्ण धरती को स्वर्णमयी बना देगा (८.७९६)। 'क्व दृष्टा त्यागिता भिक्षोः कुतो वा तस्य संपदः', (८.७९७)। 'भिक्षुपक्षजये लोको हृष्यन्नासीद्विश्रृङ्खलः', (८.७९९)। 'भिक्षोर्मल्लकोष्ठाद्यैराप्तैः कृतगतागतैः', (८.८३९)। सुस्सल के राजधानी छोड़ देने के बाद जब राजा के रूप में यह नगर में आया तो इसको सम्मुख देखकर इसके शत्रु भी सशंक दृष्टि से इसे देखने लगे (८.८५३)। इसके राजा होते ही डामरगण यह प्रचार करने लगे कि यह कोई अवतारी पुरुष है (८.८५८)। बिम्ब के सर्वाधिकारी होने से यह नाममात्र का राजा रह गया (८.८६२)। राजा होते ही यह भोगविलास में फँसकर बावला हो गया (८.८६७)। इसके राज्य में पुराने दीनारों का प्रचलन बन्द कर दिया गया अतः अब पुराने १०० दीनार के बदले ८० दीनार ही मिलते थे (८.८८३)। सुस्सल के आक्रमण को विफल करने के लिये सेनापति बिम्ब को भेज देने के बाद यह निरंकुश होकर हर प्रकार की मूर्खतायें करने लगा (८.८८८)। इसने प्रयाग के भांजे और अपने विद्रोही सारथि को कैद करना चाहा किन्तु

वह सुस्सल के पास भाग गया (८.९११)। पराजित होने के बाद इसका सेनापति, बिम्ब, इसे छोड़कर राजा सुस्सल से मिल गया (८.९२७)। यह पृथ्वीहर तथा काण्डिलेत्र के एक वीर योद्धा को लेकर उन लोगों को परास्त करने निकला जो जनकसिंह जैसे राजद्रोहियों का संदेश लेकर सुस्सल के पास गये थे (८.९३०)। नाग की भीषण स्थिति का समाचार मिलते ही यह पृथ्वीहर को साथ लेकर राजधानी लौट आया (८.९३३)। यह तथा पृथ्वी-हर पराजित जनकसिंह का पीछा करने के लिये उद्यत हुये (८.९३८)। जनकसिंह के अश्वारोही इससे मिल गये (८.९४१)। इसने जनकसिंह के भाई तिलकसिंह के पुत्र को जनकसिंह के स्थान पर नियुक्त करके उसे विपक्षियों का घर गिराने का अधिकार दिया (८.९४२, ९४३)। सुस्सल के राजधानी में प्रवेश करते ही यह भाग कर लवन्यों के साथ क्षिप्तिका नदी के तट पर चला गया (८.९५५)। राजा सुस्सल ने इसके सम्पर्क में आई किसी भी वस्तु को सहन नहीं किया और इसलिये उसने उस सिंहासन तक के टुकड़े कर दिये जिस-पर यह बैठता था (८.९६२)। यह राज्य-भ्रष्ट होकर अपने सुहृद के पास रहने लगा जहाँ सोमपाल के दान-मान से इसका उत्साह ज्यों का त्यों हो गया (८.९६४)। इसने बिम्ब की अनुपस्थिति में उसकी पत्नी को अपने पास रख लिया था (८.९६६)। शूरपुर में वट्ट के पुत्र मल्ल को पराजित करके पृथ्वीहर इसे शूरपुर लाया और अपनी सत्ता स्थापित करने के लिये वहीं रहने लगा (८.९६८)। विजयेश्वर से जब हर्षमित्र पृथ्वीहर द्वारा पराजित होकर अवन्तिपुर चला गया तब शीघ्र ही सेना ने विजयक्षेत्र के भयभीत लोगों को चारों ओर से घेर लिया (८.९७३)। 'पुण्येऽह्नि शुक्लद्वादश्यां नभसः कुकृतं महत्। तद्भिक्षुः कृतवान्राज्यलक्ष्म्या भाग्यैश्च तत्यजे ॥', (८.९९३)। यह विजयक्षेत्र आया और वहाँ नागेश्वर पर अधिकार करके भीषण यातनायें भोगीं (८.९९६)। 'सर्ववीराग्रणीर्भिक्षुः', (८.१०१२)। 'भिक्षुपृथ्वीहरादिभिः', (८.१०१३)। इसका और पृथ्वीहर का युद्ध बहुत दिनों तक चला (८.१०१५) 'वीरो नान्यो भिक्षाचरात्क्वचित्', (८.१०१७)। 'भिक्षाचरगजेन्द्रेण', (८.१०१९)। पृथ्वीहर प्रत्येक रात्रि को इसके द्वार पर बैठकर जागरण किया करता था (८.१०२०)। 'भिक्षुर्महाभटः', (८ १०२१)। इसके उत्कृष्ट पौरुष को देखकर डामरगण सशंक हो उठे (८.१०२८)। इसकी सेना को राजा सुस्सल ने पराजित कर दिया (८.१०३७)। यह और पृथ्वीहर भागकर पुष्याणनाड चले गये (८.१०३८)। मल्लकोष्ठ के बुलाने पर यह और पृथ्वीहर शूरपुर के मार्ग से आकर पुनः एकत्र हुए (८.१०५१)। इसने

क्षिप्तिका नदी के तट पर सेना का पड़ाव डाला (८.१०५५)। सुस्सल की सेना को पराजित करने के बाद पृथ्वीहर इसके साथ राज्य पर अधिकार करने के लिये नगर के किनारे आ पहुँचा (८.१०७५)। काश्मीरक, शोभक, तथा काकवंशज अनेक वीर इसके पक्ष में सम्मिलित हो गये (८.१०७९)। गोप पर्वत पर चढ़े हुये इसके सैनिक शत्रुओं से घिर गये (८.११०४)। यह अपने घिरे सैनिकों की रक्षा के लिये अश्वारोहियों के साथ गोपपर्वत की ओर चला (८.११०५)। परस्पर युद्ध में इसने और राजा सुस्सल ने एक दूसरे की स्थिति को समझ लिया (८.१११५)। इसे साथ लेकर पृथ्वीहर अपने घर चला आया (८.११२४)। यशोराज, राजा सुस्सल के पक्ष को छोड़कर, इससे आकर मिल गया (८.११५१)। ८.११५८। 'भिक्षो राज्यं समर्थोऽयं दातुं हन्तुं ततश्च नः। भीत्या तैर्डामरैरेव स घातित इति श्रुतिः ॥', (८.११६२)। 'भिक्षुपक्षोपजीविनाम्', (८.११६५)। राजा सुस्सल ने उत्पल से इसका और ट्रिक का वध करने के लिये कहा (८.१२४८)। ८.१२६१, १२६२, १२६४ (भिक्षाचरो नष्टाश्रयो), १२६८ (भिक्षाचरो······शक्तिक्षयगुपागताः), १२६९, १३०६ (इसके एक गुप्तचर का नाम वाडौत्स सुखराज था), १३६३, १३६५, १३८३ (सुस्सल की मृत्यु के बाद सिंहदेव के राजा होते ही यह नगरों में प्रवेश करने के लिये आया), १३९५ (भिक्षुसैनिकाः), १३९७, १४३८, १४३९, १४४५ (डामरों ने इसका नाम 'हिमराज' रक्खा), १४४६, १४६३ (इसने मानवता के औचित्य का परित्याग करके राजा सुस्सल के कटे मुण्ड को राजपुरी भेजा), १४८८ (यह विजयेश्वर में डामरों को संघटित कर आक्रमण के अवसर की प्रतीक्षा करने लगा), १४८९, १४९६, १५१३ (यह सुज्जि का आक्रमण होते ही शूरपुर भाग आया), १५१७, १५२१ (इसने सिंहदेव के साथ युद्ध में अपनी पराजय को मान लिया), १५२२ (भैक्षवे बले), १५२५ (देशान्तरोन्मुखो भिक्षुराषाढे), १५८७ (यह कोष्ठकादि के बुलाने पर पुनः काश्मीर लौटा), १६५१ (ज्येष्ठपाल ने सुज्जि को इसके पक्ष में मिलाया), १६५२, १६५४, १६६२ (यह विषलाटा आया), १६६८, १६७० (सुज्जि इससे मिलने के लिए जालन्धर आया), १६७४ (वैशाख मास में सेनापति उदय ने इससे युद्ध आरम्भ कर दिया), १६७५, १६७८, १६८२ (इसे मुक्त कराने के उद्देश्य से कोष्ठेश्वर और त्रिल्लक ने राजा जयसिंह का प्रस्ताव मान लिया), १६८७ (कोष्ठेश्वर की मूर्खता से इसका विनाश निकट आ गया), १६८८ १६९३, १६९५ (टिक्क और लक्ष्मक प्रतीहार में हुई मित्रता को देखकर इसने अपना और कोष्ठेश्वर आदि का विनाश समीप देखा), १६९७, १६९९ (देङ्गपाल ने कुछ घातकों को

इसका वध करने का आदेश दिया), १७०२ (खश लोग प्रतीहार के पास एकत्र होकर इसका अन्त कर देने की योजना पर विचार करने लगे), १७०५, १७०७, १७१३ (इसने युद्ध के लिये शस्त्र उठाया), १७१५, १७१७ (बद्धः पलायमानोऽत्र सोऽयं भिक्षुरिति), १७१८, १७२२, १७३६ (भिक्षुराजोपजीविनाम्), १७४० (घातकों को युद्ध छेड़ने के लिये उत्सुक देखकर भी यह पासा खेलकर मन बहला रहा था) १७५०, १७५२ (रुरोधैकः शरासारैर्गर्गिको भिक्षुसंश्रितः), १७५५, १७५६ (एक सैनिक शूल हाथ में लेकर इसकी ओर दौड़ा), १७५७ (इसने आक्रमण करने वाले सैनिक का शूल छीन लिया), १७६२ (भिक्षाचरमृगेन्द्रस्य भञ्जतः शरपञ्जरान्), १७६४ (यह आहत होकर भूमि पर गिर पडा), १७६७ (महाकुलीनैः सहितो हतो भिक्षुरशोभत। वज्रावभुग्नः शिखरी पुष्पितैरिव पादपैः), १७६८ (राजा जयसिंह मृत भिक्षाचर के समक्ष मान या अपमान का कोई भी पद नहीं प्राप्त कर सका था) १७७३ (इसके मर जाने पर भी खशों ने इस पर प्रहार किया), १७७५ (लौकिक संवत् ४२०६ की ज्येष्ठ कृष्ण दशमी को तीस वर्ष नौ मास की अवस्था में इसकी मृत्यु हुई), १७८३ (इसके मुण्ड को देखकर राजा जयसिंह ने इसके उच्च भाव तथा औदार्य का स्मरण किया), १७९४ (जिस दिन इसकी मृत्यु हुई उसी दिन अन्य शत्रुओं ने राजधानी में अत्यन्त दुःखद स्थिति उत्पन्न कर दी), १८३४ (राजधानी लौटने पर जब जयसिंह से सैनिकों ने भिक्षाचर का मुण्ड दिखाकर पुरस्कार माँगा तब उसने उन सैनिकों की भर्त्सना करते हुये उस मुण्ड का अग्नि-संस्कार कराया), १८५४, १८५६, १८५७, १९०५, २१५८ (इसने सुज्जि पर अनेक आक्षेप किये थे), २२९७, २५०२ (भिक्षुर्मल्लार्जुनस्त्वासीदेक एव त्रयस्त्वमी), २६२६, २८५७, २९७८, ३००५ ३११४, ३३२५, ३३४०, ३४४६, ३४४७।

भिक्षु, बौद्ध भिक्षुओं के लिये प्रयुक्त हुआ है : १.१८४, १८६; ३.९, १२।

भिक्षुकीपारक, एक स्थान का नाम है (६.१९१)।

भिज्ज—'राजा भिज्जरे यत्सोऽभिमानी पितामहः', (८.११९०)।

भिन्ना, राजा मेघवाहन की पत्नी का नाम है (३.४६४)

भिश्रा, एक वेश्या का नाम है जो विरहभुजङ्गी के नाम से विख्यात और गुण नामक एक क्षुद्र भिक्षुक के साथ रहती थी (७.१६३७) :

भीम, एक पाण्डव का नाम है (४.५२१; ८.२९११)।

भीमकेशव, एक देवता का नाम है (६.१७८; ७.१०८०)।

भीमगुप्त, दिद्दारानी के पौत्र का नाम है जिसे उसने नन्दगुप्त के बाद

राजा बनाया (६.३१३)। ६.३२६, ३३० (इसे बन्दी बनाया गया), ३३२ (इसे कठोर यंत्रणायें दी गईं)। ८.३४३८।

भीमतिका, एक ग्राम का नाम है (७.६)।

भीमनायक, एक उत्कृष्ट पटहवादक का नाम है जिसे प्रसन्न हो कर हर्ष ने एक हाथी और हाथिनी दी (७.१११६)।

भीमशाहि, रानी दिद्दा के नाना का नाम है (६.१७८)। ७.१०८१।

भीमसेन, पूर्व देश के एक राजा का नाम है (४.५१९)। जब राजा जयापीड वेश बदल कर इसके दुर्ग में आया तब इसने उसे वैसे ही बन्दी बना लिया जैसे अजगर-रूपी नहुष ने पूर्वकाल में भीम (पाण्डव) को बन्दी बना लिया था (४.५२१)।

भीमस्वामी, एक गणेश का नाम है (३.३५२)

भीमाकर, इन्द्राकर के पिता का नाम है (८.१८१८)।

भीमादेव, एक व्यक्ति का नाम है जिसके घर हर्ष को पहुँचाने के सम्बन्ध में प्रयाग ने परामर्श किया था (७.१६२६)। यह उच्चल के पक्षपातियों में से था (७.१६२७)। यह एक प्रमुख डामर था जो राजा उच्चल के व्यवहार से क्रुद्ध हो गया (८.२१)। यह जनकचन्द्र के दल से युद्ध करने लगा (८.२८)। युद्ध में इसके एक अनुचर, कालपाश के पुत्र अर्जुन, ने जनकचन्द्र का अंग छिन्न-भिन्न कर दिया (८.२९)। यह जनकचन्द्र का वध करने के लिये हाथ में तलवार लेकर उसकी ओर दौड़ा (८.३१)। जनकचन्द्र का वध तथा गग्ग और सड्डु को आहत करके यह उस स्थान से भाग गया (८.३७)। "राजा उच्चल इसकी दो कल्याणकारी शिक्षाओं को सदा स्मरण रखता था। एक शिक्षा के अनुसार वह लोककल्याण के निमित्त सवेरे ही महल से निकल पड़ता और संध्या समय सूर्यास्त तक राज्य की स्थिति का निरीक्षण करता रहता था। दूसरी शिक्षा के अनुसार वह, यदि अर्धरात्रि के समय भी शत्रु की किसी कार्यवाही के सम्बन्ध में सुनता तो, तत्काल उसका दमन करने के लिये चल पड़ता था।' (८.४५–४७)। इसने दरदों के साथ मिल कर कुचक्र आरम्भ किया (८.२०९)।

भीमादेवी, एक स्थान का नाम है जहाँ सन्धिमति ने अनेक मठ–मन्दिरों का निर्माण कराया (२.१३५)।

भुःखार = तुःखार (देखिये वस्था)।

भुजंग, एक सामन्त का नाम है जो राजा संग्रामराज को तंग करने लगा (७.९१)।

भुट्ट, जल्ह के छोटे भ्राता और राजा जयसिंह के एक मंत्री का नाम है (८.२४२९)।

भुट्टपुर, एक नगर का नाम है जिसे जल्ह के छोठे भाई, भुट्ट, ने बसाया था (७.२४३१)।

भुट्टराष्ट्र, एक स्थान का नाम है : ८.२८८७।

भुट्टेश्वर, एक शिव का नाम है जिसे भुट्ट ने स्थापित किया (८.२४३२) ।

भुय्य, पालकी-वाहक कुय्य के पुत्र का नाम है (६.१६४)। यह सदाचारी पुरुष था (६.२९६) । दिद्दा ने इसे विष देकर मरवा डाला (६.३२२) । दिद्दा ने इसके स्थान पर वेलावित्त देवकलश की नियुक्ति कर दी (६.३२४) ।

भुवनचन्द्र, त्रिगर्तराज पृथिवीचन्द्र के पुत्र का नाम है (६.१४५) ।

भुवनमती, नीलपुर के राजा कीर्तिराज की पुत्री का नाम है जिससे राजा कलश का विवाह हुआ (७.५८२) । राजपुत्र हर्ष के सम्बन्ध में राजा कलश से जो शर्तें निश्चित हुई उसकी यह मध्यस्थ बनी (७.६८०) ।

भुवनराज, विग्रहराज के पौत्र एवं क्षितिराज के पुत्र का नाम है जिसने पिता के विरुद्ध विद्रोह कर दिया (७.२५२) । यह लोहर का राजा था जिसे राजा कलश ने कन्दर्पदेव के द्वारा निर्वासित करा दिया (७.५८१) । इसने पुनः लोहर प्रान्त पर अधिकार करने का उद्योग आरम्भ किया (७.९६५) ।

भुवनाभ्युदय, एक महाकाव्य का नाम है जिसकी शङ्कुक ने रचना की (४.७०५) ।

भू = पृथिवी : १.५८ ।

भूक्षीरवाटिका, एक ग्राम का नाम है जहाँ गोपादित्य ने लशुनभक्षकों को भेजा (१.३४२) ।

भूतबलि, एक प्रकार की बलि का नाम है (३.७) ।

भूतभर्तृ, भूतेश्वर का ही एक दूसरा नाम है (२.१६९) ।

भूतभावन = शिव : २.१५३ ।

भूतभिक्ष, एक कायस्थ का नाम है जिसने हर्ष के साथ विश्वासघात किया (७.१६९५) । उच्चल ने इसको अपमानित किया (८.९४) । यह भिक्षाचर के निकट रहने लगा (८.८६५) । देखिये **भूतिभिक्ष** भी ।

भूति, गौरीश्वर के मन्दिर के एक द्वारपाल का नाम है (७.२०७) ।

भूतिकलश, राजकलश के साथी, एक अन्य मंत्री का नाम है जो परास्त होकर अपने पुत्र, राजक, के साथ शूरमठ भाग गया (७.२६) । यह पुनः काश्मीर लौट आया (७.२९) । जब इसने तुङ्ग की हत्या का षडयन्त्र रचना आरम्भ किया तब तुङ्ग ने इसे पुनः निर्वासित करा दिया (७.३१) ।

भूतिभिक्ष, एक कायस्थ का नाम है जिसने, कुछ इतिहासकारों के अनुसार, क्षुद्र भिक्षुक को इल्लाराज के पास पहुँचाया (७.१६९५)। देखिये भूतभिक्ष।

भूतेश, हरमुख पर्वत पर स्थित एक शिवतीर्थ का नाम है (१.१०७)। राजा जलौक ने नन्दिक्षेत्र में इनके मन्दिर का निर्माण कराया (१.१४८)। १.३४७। राजा सन्धिमति इनका दर्शन करने के पश्चात् ही राज्यकार्य आरम्भ करता था (२.१२३)। ५.४६, ५२। देखिये भूतेश्वर भी।

भूतेश्वर = शिव : १.३४७; २.१६९; ४.१८९; ५.४०, ४८, ५५; ७.१०६; ८.११०, २७५६, ३३५६।

भूपादित्य = गोपादित्य (८.३४१९)।

भूपाल, सोमपाल के पुत्र का नाम है (८.२२१५)। इसका राजा जयसिंह की पुत्री, मेनिला, से विवाह हुआ (८.३३९४)।

भूभट—इसने शम्भुवर्धन को बन्दी बनाकर चक्रवर्मा के सम्मुख उपस्थित किया (५.३४८)। मंत्रि पर्वगुप्त ने राजा बनने के उद्योग में इससे मित्रता की (५.४२२)। इसने शर्बट आदि मंत्रियों से सन्धि कर ली (५.४२३)। यह मन्त्री हुआ (६.११५)। पर्वगुप्त ने इसके साथ अपनी एक कन्या का विवाह किया था (६.२११)।

भर्ज = भोजपत्र, जिसका लिखने के लिये कागज के रूप में प्रयोग होता था (७.५०८; ८.१००)।

भेड, एक पर्वत का नाम है (१.३५)।

भेडर, मडवराज्य के अन्तर्गत एक अग्रहार का नाम है जिसे बालादित्य ने ब्राह्मणों को दान किया (३.४८१)।

भैरव, एक शिव का नाम है : ५.५५, ५८; ७.१६०, २७९।

भोगदेव, एक चाण्डाल का नाम है जिसने राजा सुस्सल पर कटार से प्रहार किया (८.५२६)। राजा सुस्सल के सैनिकों ने इसका वध कर दिया (८.५२९)।

भोगसेन, एक विपन्न व्यक्ति का नाम है जिसे प्रसन्न होकर उच्चल ने अपने समीप रहने का अधिकारी बना दिया (८.१८१)। राजा सोमपाल ने इस विद्रोही को अपने द्वाराधीश के पद से हटा दिया (८.२९३)। सड्ड ने इसको धिक्कारा (८.२९८)। इसने सुस्सल पर भेद नीति के प्रयोग के सम्बन्ध में कुछ गुप्त बातें बताने की इच्छा करते हुये कहा कि सड्ड की बात भी टालने योग्य नहीं है (८.३००)। जब छुड्ड ने राजा उच्चल पर तलवार से वार किया तो यह भी वहाँ उपस्थित था (८.३२०)। ८.३२१। जब उच्चल का वध हो जाने पर उसका शूरट नामक सेवक शत्रुओं पर झपटा तब इसने

उसे बाहर फेंक दिया (८.३३२)। इसने अपने भ्राता की मृत्यु का समाचार सुना (८.३५२)। यह अपने कुछ साथियों को लेकर सुस्सल के पास आया (८.३९३)। इसकी पत्नी, मल्ला, को राजा सल्हण ने चुपके से इसके साथ रहने की अनुमति दे दी थी (८.४४५)।

१. भोज, राजा हर्ष के पुत्र का नाम है जिसे वंश-रक्षा की दृष्टि से मंत्रियों ने लोहर दुर्ग में भेज देने का परामर्श दिया (७.१४५२)। "जब सुस्सल कलशपुर को भस्म करने ही वाला था तो यह उससे युद्ध के लिये नगर से बाहर आया। इसका दूसरा नाम वुप्पा था (७.१५२५)।" इससे परास्त होकर सुस्सल रणभूमि से भाग गया (७ १५३७)। सुस्सल को परास्त करके यह शिविर में वापस आया (७.१५३८)। राजधानी से अग्नि की लपटें निकलती देख इसे अपने पिता की पराजय तथा राज्य के हाथ से निकल जाने का विश्वास हो गया (७.१५६६)। यह लोहर प्रान्त की ओर चल पड़ा (७.१५६८)। इसके चले जाने के बाद इसके लिये व्यग्र हर्ष ने चम्पक को इसका पता लगाने के लिये जाने की आज्ञा दी (७.१५८७)। यह हस्तिकर्ण पहुँचा (७.१६५०)। इसकी मृत्यु का समाचार सुनकर उच्चल को शान्ति मिली (७.१६५९)। गुण नामक भिक्षुक ने प्रयाग को इसकी मृत्यु का समाचार दिया (७.१६७०)। इसकी पत्नी, विभवमती, ने इसकी मृत्यु के बाद इसका एक पुत्र उत्पन्न किया जिसका नाम भिक्षाचर रक्खा गया (८.१६,१७)। जयराज और यशोराज भी इसी के पुत्र थे (८.१५१२)।

२. भोज, सल्हण के पुत्र का नाम है (८.२४८९)। ८.२५३५, २५७६, २५८२ (साल्हणिम्), २६०१ (साल्हणि भोजम्), २६७० (साल्हणिः), २६८२, २६८३ (साल्हणि), २६९३, २७०२, २७०३, २७१८ (यह एक राजा के समान कार्य करने लगा), २७२७, २७६५ (इसके पास अनेक देशों के सामन्त एकत्र हुये), २७६८ (साल्हणिः), २७६९ (राजवदन इससे मिला), २७७४ (इसकी बात सुन कर राजवदन आने वाली सेना की उपेक्षा करते हुये दरदराज की ओर जा मिला), २७८१ (विड्डसीह ने इसका समादर करके सेना को युद्ध के लिये भेजा), २७८३ (साल्हणिः), २८५४ (साल्हणिः) २८६९, २८७४ (साल्हणिम्), २८९२ (इसने पलायन किया), २८९४ (धन्य आदि को इसके लौटने का विश्वास था), २८९५ (इसे वापस लाने के लिये अलङ्कारचक्र स्वयं गया), २९०६ (इसके आगमन का समाचार जाने बिना ही राजवदन ने उदय तथा धन्य से सन्धि कर ली), २९०८, २९१६ (राजवदन इसे पुनः उकसाने लगा), २९२३, २९३० (इसे राजा जयसिंह

पकड़ने के लिये प्रयत्नशील था), २९३२, २९३६ (साल्हणिः), २९३९, २९४३ (यह भाग गया), २९४५, २९४६ (इसने अलङ्कारचक्र के साथ अमंगलकारी युद्ध छेड़ दिया) २९४७ (युद्ध में इसके सामर्थ्य ने इसका साथ नहीं दिया), २९४९ (यह भाग कर अपने देश आया और वहाँ अलङ्कारचक्र के पुत्रों से सन्धि करने का प्रयास करने लगा), २९५३, २९५९, २९६४ (राजा जयसिंह ने बलहर से इसका साथ छोड़ देने के लिये कहा), २९७३ (जयसिंह ने धन्य के पास संदेश भेजा कि यह नाग के बदले भोज को उसे दे देने को प्रस्तुत है), २९७९ (राजा जयसिंह इसे बिना शर्त ही सौंपने के लिये प्रस्तुत हो गया), २९८१, २९८४, २९८८ (इसके बदले में नाग को लेकर धन्य बलहर के पास आया), २९८९ (बलहर ने इसे देने के पहले नाग को माँगा), २९९४, ३००१ (इसे नाग के वध की बात का पता नहीं लगा), ३०१२, ३०१५ (इसे अन्तरंग लोगों पर भी विश्वास नहीं रहा और बाहर निकलने पर राजा जयसिंह का भय था), ३०२९, ३०४७, ३०५३, ३०५५, ३०५७ (कृत्रिम सरलता दिखाते हुये इसने राजा जयसिंह से संधि करने की उत्सुकता प्रगट की), ३०५९, ३०६० (दूत ने जाकर राजा जयसिंह को इसका मन्तव्य बताया), ३०८३ (साल्हणिः), ३०८८ (इसकी सेना में सहस्रों खश सम्मिलित हुये), ३०८९ (सल्हणसूनु), ३१११, ३११२, ३११३ (त्रिल्लक ने अपने पुत्र को इसके पास भेजा), ३११६ (साल्हणेर्बले), ३११७ ३१२२ (बलहर आदि इसे इसके निश्चय से विरत नहीं कर सके), ३१२५ (यह धन्य और रिल्हण के पास पहुँचा), ३१३४ (इसने बलहर की सेना को आगे बढ़ने से रोका), ३१३६, ३१४७ (साल्हणिः), ३१५४, ३१६६ (अदृष्ट-पूर्वं तं दृष्ट्वा श्रीखण्डोल्लिखितालकम् । कुङ्कुमालेपिनं चैते भोजोऽयमिति मेनिरे), ३१७९ (लौकिक वर्ष ४२२१ की ज्येष्ठ कृष्ण दशमी को तैंतीस वर्षीय इस युवक को राजा जयसिंह ने अपने वश में कर लिया), ३२२१ (इसने राजा जयसिंह की प्रशस्ति की), ३२४१ (राजा जयसिंह इसे रड्डादेवी के महल में ले गया), ३२४४, ३२४५, ३२४६, ३२५४, ३३२५ ।

३. **भोज,** कलशदेव के पुत्र का नाम है जिसे साथ लेकर भीमादेव दरदराज जगद्दल की सहायता के लिये आया (८.२०९)। यह अपनी भूमि पर लौट आया (८.२१२)। इसे बन्दी बना लिया गया (८.२१३)।

४. **भोज,** एक राजा का नाम है जिसने थक्कियवंशी एक राजकुमार का राज्य छीन लिया था, परन्तु शङ्करवर्मा ने उसे पुनः लौटा दिया (५.१५१)।

५. **भोज,** मालवाधिपति का नाम है जिसने कपटेश्वर में एक कुण्ड बनवाया (७.१९०)। इसने पापसूदन तीर्थ के पवित्र जल से मुखमार्जन एवं

स्नान करने की प्रतिज्ञा कर रक्खी थी (७.१९१)। 'भोज नरेन्द्रश्च', (७.२५९)।

भोजक, टिक्क के एक सम्बन्धी का नाम है (८.१५१२) ।

भौट्ट, एक देश के निवासियों का नाम है : १.३१२; ४.१६८ ।

भौम, एक असुर का नाम है (३.५४)।

म

मगध, एक देश का नाम है (४.२५९; ८.२९११)।

मगधेन्द्र = जरासन्ध, जिसका भीम (पाण्डव) ने वध किया था (८.२९११)।

मघा, एक नक्षत्र का नाम है (१.५६)।

मङ्क, नौनगर के एक डामर का नाम है जिसे साथ लेकर पृथ्वीहर काश्मीर के सेनापति को पराजित करने के लिये विजयक्षेत्र गया (८.९६९)। यह एक कापालिक की भाँति विजयक्षेत्र के अग्निकाण्ड के स्थान पर आया और मृतकों की विपुल धनराशि पाकर अत्यन्त प्रसन्न हुआ (८.९९५)।

मङ्ख (मङ्खक), अलङ्कार के भ्राता, एक कवि, का नाम है : 'संधिविग्रहिको मङ्खकाख्योऽलंकारसोदरः', (८.३३५४)।

मङ्खना, तुङ्ग की दूसरी पत्नी का नाम है (७.१०५)।

मङ्गल, एक व्यक्ति का नाम है जिसके घर पर राजदूत होकर राजपुरी जाने के पूर्व शुभ मुहूर्त की प्रतीक्षा में धम्मट रुका था (७.१०१८)।

मङ्गलराज, किसी अन्य वंश के राजा का नाम है जिसका पुत्र, तिल्ह, गर्गचन्द्र और सुस्सल के युद्ध में मारा गया (८.५१०)।

मञ्जरिकादेवी, वज्रादित्य की रानी का नाम है। इसकी मृत्यु के बाद इसका पुत्र पृथिव्यापीड काश्मीर का राजा हुआ और उसने केवल ४ वर्ष एक मास तक राज्य किया (४.३९९)।

मठ, रहने के स्थान (सराय) का नाम है : १.१७०, १९५, ३३५; २.१३५; ३.८, ४६०, ४७६ (ब्रह्ममठ); ४.५१२, ६९६; ५.३८, २४४, २४५; ६.८७, ८८, ९९, १०४, ३००, ३०४, ३०५, ३०८; ७.१२०, १४२, १४९, १८०, १८२, १८३, २१४, ६०८, ९६१, १६७८; ८.२४३, २४६, २४७, ६७३, २४०१, २४०८, २४१९, २४२०, २४२१, २४२२, २४२३, २४२६, २४३१, २४३३, २४३४, ३४३९, २४४२, २४४७, ३३१६, ३३५०, ३३५४, ३३५४, ३३५६, ३३५९।

मडव, एक राज्य का नाम है जहाँ तुञ्जीन के प्रभाव से तत्काल बोये गये

बीज से फल निकल आया (२.१५)। ३.४८१; ५.८४, ३०३, ४४७; ७.१२०७, १२२८, १२२९, १२४०, १३१७, १३२०; ८.४१, ७२३, ७५१, ७५३, ९६८, १००३, १०३९, १०५७, १०७७, १११६, ११४०, १५३९, २०६०, २०७६, २४३२ (मडवग्राम), २४९९, २७३६।

मणिधर, दरदों के राजा का नाम है जो गर्ग से मिलने आया (८.६१४)।

मणिपुर, एक स्थान का नाम है जहाँ एक नागकन्या ने मृत अर्जुन को पुनरुज्जीवित कर दिया था (२.९४)।

मण्डलम्, राजतरङ्गिणी में प्रायः सर्वत्र काश्मीर के लिये प्रयुक्त हुआ है : १.४३।

मण्डलेश्वर, (चन्द्रराज) हर्ष के मण्डलेश्वर का नाम है जो उच्चल से युद्ध करता हुआ मृत्यु को प्राप्त हुआ। यद्यपि उच्चल इसे मारना नहीं चाहता था तथापि जनकचन्द्र आदि डामरों ने इसकी हत्या कर दी (७.१३७३-१३७५)। इसकी स्वामिभक्ति की प्रशंसा (७.१३७६-१३७९)। इसकी माता का नाम गज्जा था जो इसकी मृत्यु के बाद चिता में जलकर मर गई (७.१३८०)।

मतङ्ग, परम कृपण सिन्धु के पुत्र का नाम है जिसे राजा संग्रामराज ने कोशवृद्धि के कार्य पर नियुक्त किया (७.११०)।

मथुरा, एक नगर का नाम है : १.५९; ४.५१३ (यहाँ के राजा का नाम प्रमोद था)।

मदन, राजा अनन्तदेव और उनके पुत्र कलश में वैर उत्पन्न करनेवाले एक व्यक्ति का नाम है (७.३०२, ५६७)। यह कम्पनाधिपति बना (७.५७९)। इसने हर्ष के अधीन भी कार्य किया (७.८८७, ९२३)। इसने कहीं से पर्माण्डि की पत्नी चन्दला का एक चित्र प्राप्त कर लिया और उसका प्रतीहार बनकर हर्ष से धनादि लेने लगा (७.११२५)। इसके कथा-प्रसङ्ग से धूर्त विटों की निर्लज्जता का आभास मिलता है (७.११२७)। राजा हर्ष ने इसे किसी समय सेनापति बनाया था परन्तु इसने हर्ष की आलोचना आरम्भ की (७.१२०५)। रानी सूर्यमती का शाप इस पर लगा (७.१२११)।

मदनपाल, सहजपाल के भ्राता और संग्रामपाल के चाचा का नाम है जो संग्रामपाल का राज्य छीनने का प्रयास करने लगा (७.५३४)। इसने कालान्तर में पुनः राजपुरी के राजा पर आक्रमण किया (७.५७४)। बप्पट ने इसे परास्त करके बन्दी बना लिया (७.५७५)।

मदनराज, सिद्धराज के पुत्र का नाम है (७.२६३)।

मदनादित्य, सुय्या के एक वंशज का नाम है (६.१३३)।

मद्रमण्डल, एक देश का नाम है जहाँ के लोगों में विधाता ने मानो त्याग की भावना की सृष्टि ही नहीं की (८.१५३१)।

१. **मधु,** एक प्राचीन असुर का नाम है जिसका विष्णु ने वध किया था (१.२६२)।

२. **मधु,** कुमारिय के पितामह का नाम है (८.१७५१)।

मधुभद्र, एक दरद सेनापति (?) का नाम है (८.२८६८)।

मधुमती, एक नदी का नाम है : १.३७; ७.११७९,११९४; ८.२४९२, २५०९, २७०९, २८८३ ।

मधुमास = वसन्त ऋतु : ८.२८८६ ।

१. **मधुरावट्ट,** अश्वसेना के सेनापति का नाम है जिसने विजयमल्ल तथा उत्कर्ष के आपसी झगड़े में मध्यस्थता की (७.७६६)।

२. **मधुरावट्ट,** धन्य के पुत्र का नाम है जिसकी धन्य की मृत्यु के पश्चात राजा जयसिंह ने धन्य के ही स्थान पर नियुक्ति की (८.३३२७)।

मधुसूदन = श्रीकृष्ण : १.७१; ३.२६३ (मातृगुप्त ने इनके मंदिर की स्थापना की)।

मध्यदेश, एक देश का नाम है (६.३००)।

मध्यमठ, एक मठ का नाम है जहाँ ब्राह्मण निवास करते थे (१.२००)।

मनीमुष, एक स्थान का नाम है : ८.१०११, ११३३ ।

मनु, आदिपुरुष का नाम है (४.६४१)। 'मनोरिव मनस्विनः', (८.१६०)।

मनुजेश्वर, पृथ्वीहर डामर के भ्राता का नाम है (८.१०६०)। इसने भिक्षु का साथ छोड़ दिया (८.१५२१)। ८.१५२४, १५९४ (पृथ्वीहरानुजः), १९८८, २०८१ (इसका वध)।

१. **मनोरथ,** राजा जयापीड के यहाँ रहनेवाले एक कवि का नाम है (४.४९७)। देखिये अगला शब्द भी ।

२. **मनोरथ,** राजा ललितापीड के एक मन्त्री का नाम है जिसने राजा को कुमार्ग पर चलते देखकर राज्यकार्य में हस्तक्षेप करना छोड़ दिया (४.६७१)।

३. **मनोरथ,** गुण नामक भिक्षुक के एक विश्वस्त ब्राह्मण मित्र का नाम है (७.१६९१)।

मन्दर, एक पर्वत (मन्दराचल) का नाम है : ७.१४२३; ८.२७४४, २८३२ ।

मन्दाग्नि, एक रोग का नाम है (७.११४)।

मन्दुराचक्रवर्ती, राजा सुस्सल के एक घोड़े का नाम है : ८.१२८५ ।

मन्देह, एक राक्षस का नाम है (४.५३)।

१. **मम्म**—मातृगुप्त ने मधुसूदन के मन्दिर की सेवा-पूजा के लिये जो ग्राम दिये थे उन्हें इसने अपने मन्दिर के लिये ले लिया (३.२६३)। यह राजा चिप्पट जयापीड का मामा था (४.६७९)। इसने मम्लस्वामी की स्थापना की (४.६९८–६९९)। अजितापीड की मृत्यु के बाद अन्य भ्राताओं के साथ यह २६ वर्ष तक शासन करता रहा (४.७०४)। उत्पल के साथ इसके युद्ध में इसके पुत्र यशोवर्मा ने अतुल पराक्रम प्रगट किया (४.७०६)। इसने अजितापीड को राज्यच्युत करके द्वितीय संग्रामपीड के पुत्र अनङ्गपीड को राजा बनाया (४.७०७)। इसके उत्कर्ष को देखकर इसके भ्राता, उत्पल, का पुत्र सुखवर्मा इससे ईर्ष्या करने लगा (४.७०८)।

२. **मम्म**, एक अन्धगायक का नाम है जिसे व्योमशिव ने अपने पास रख लिया (७.२९९)।

मम्मक, राजा सुस्सल के किसी प्रमुख मन्त्री के एक भृत्य का नाम है जिसका तिलकसिंह ने वध कर दिया (८.७८३)।

मम्मनिका, राजा कलश की सात रानियों में से एक का नाम है जो अन्य रानियों के साथ कलश की मृत्यु के बाद सती हो गई (७.७२४)।

मम्मस्वामी, एक देवता का नाम है (४.६९९)।

१. **मम्मा**, एक स्त्री का नाम है जिसके गर्भ से बप्पिय द्वारा उत्पन्न पुत्र संग्रामपीड (प्रथम) केवल सात दिन के लिये काश्मीर का राजा हुआ (४.४००)।

२. **मम्मा**, एक वेश्या का नाम है, जिसके गर्भ से उत्पन्न कन्दर्पसिंह के पुत्र का नाम विचित्रसिंह था (७.१०४)।

मम्मेश्वर, एक शिव का नाम है : ८.३३६० ।

मयग्राम, एक स्थान का नाम है : ७.१२६; ८.७२९ ।

मयुष्ट. एक ग्राम का नाम है जिसे मेघवाहन ने बसाया (३.८)।

मय्य, एक ब्राह्मण का नाम है जिसे रानी सूर्यमती ने दूत के रूप में कलश के पास भेजा (७.३७३)।

मय्यामत्तक, एक शस्त्रधारी का नाम है जिसे राजा हर्ष ने अपनी विधवा माता का प्रेमी समझ कर मरवा डाला (८.२७३)।

मय्यामन्तक, चन्द्राकर के पुत्र का नाम है जिसका संग्रामराज के समय कुछ अवधि के लिये काश्मीर में अच्छा प्रभाव रहा। (७.३२)।

मरिच, भोगसेन के पक्ष के एक योद्धा का नाम है जिसे सुस्सल की आज्ञा से सूली पर चढ़ा दिया गया (८.३९९)।

१. मल्ल, गुंगु के पुत्र, एक राजसेवक का नाम है जिसे राजा कलश ने पुरस्कृत किया (७.५१७)। इसे कलश ने नगरपति बना दिया। (७.५८३)। कुछ दिन के बाद इसे राजा ने द्वारपति बना दिया (७.५८४)। उरशानगर में प्रवेश के समय इसकी वीरता संसार में प्रसिद्ध हो गई (७.५८५)। इसने द्वारपति के पद को त्याग दिया (७.५९५)। एक चोर को लोगों ने इतना मारा कि उसकी मृत्यु हो गई; इससे इसका हृदय अत्यन्त खिन्न हुआ (७.६०२)। इसने उच्चल और सुस्सल नामक दो पुत्रों को लेकर दरदों पर भीषण आक्रमण किया (७.११८२)। 'प्रतापस्तु दिशः प्रायान्मल्लराजतनूजयोः', (७.१२०१)। 'मल्लसूनुः', (७.१२४६)। 'मल्लसूनोः', (७.१२५९)। यह गुङ्गु का पुत्र था (७.१३८६)। इसके उच्चल तथा सुस्सल नामक दो पुत्र हुये (७.१२८७)। राजा हर्ष इसके कुल पर विशेष कुपित था अतः उसने इसके कुल में उत्पन्न एवं रानी श्रीलेखा के भतीजे के पुत्र व्यड्डमङ्गल की हत्या करा दी (७.१४६७)। इसके साले की कन्या व्यड्डमङ्गल की पत्नी थी (७.१४६८)। 'मल्ल परमदाम्भिकः', (७.१४६९)। इसका वध करने की दृष्टि से हर्ष ने जब इसके महल को घेर लिया तब यह भी राजमहल से बाहर आया (७.१४७१)। इसने अपनी दूसरी पत्नी से उत्पन्न सल्हण आदि अनेक पुत्रों को राजा हर्ष के पास जमानत के रूप में रख दिया और शान्तिपूर्वक अपने घर पर रहने लगा (७.१४७३)। हर्ष ने इसका वध करके निर्दयतापूर्वक इसकी पीठ पर घोड़ा दौड़ाया (७.१४८४-१४८५)। इसकी पत्नी इसकी मृत्यु के बाद सती हो गई (७.१४८६)। 'मल्लात्मजन्मनो', (७.१४९७)। 'मल्लात्मजः', (७.१५३९)। 'मस्लसूनु', (७ १५४४)। एक अट्टमूद अपने को इसका रामल नामक पुत्र बताया करता था (८.२१६)। श्वेता नामक रानी से इसने सल्हण आदि पुत्र उत्पन्न किये थे (८.३७३)। ८.४७७, ११४१, ३२२३ (मल्लान्वये), ३४४२, ३४४५।

२. मल्ल, वट्ट डामर के पुत्र का नाम है जिसे सुस्सल ने खेरी का सेनापति नियुक्त किया (८.९६०)। पृथ्वीहर ने इसे शूरपुर में पराजित किया (८.९६७)। इसकी मृत्यु (८.१४१६)।

३. मल्ल (चाचरि), राजा हर्ष के एक योद्धा का नाम है जो सुस्सल से युद्ध करता हुआ स्वर्गवासी हुआ (७.१५०१)।

मल्लक, कोष्ठेश्वर के अनुचर, एक ब्राह्मण, का नाम है जिसने कोष्ठेश्वर के घातकों पर प्रहार किया (८.२३१९, २३२४)।

मल्लकोष्ट, कर्णकोष्ठ के पुत्र, एक विद्रोही का नाम है जिसे राजा सुस्सल ने बन्दी बना लिया (८.५१७)। राजा ने इसे कारागार से मुक्त कर दिया

(८.५८८)। राजा सुस्सल ने इसकी पदोन्नति कर दी (८.६०१)। गर्ग को इसके साथ स्पर्धा और अपमान सहन करना पड़ा था (८.६०२)। इसने गज्जक का वध कर दिया (८.६४१)। राजा सुस्सल ने इसके बड़े भाई, अर्जुन (कोष्ठ), को कैद कर लिया (८ ६४२)। यह बन्दीगृह से निकल कर लोहर भाग गया (८.६४५)। लोहर प्रान्त में शक्ति अर्जित करके यह राजा सुस्सल के साथ छेड़-छाड़ करने लगा (८.६६७)। विशेष प्रयास करके राजा सुस्सल इसके प्रताप को कुछ कम कर सकने में सफल हुआ (८.६८३)। भिक्षाचर को बुलाने के लिये इसने सैनिकों को विषलाटा भेजा (८.६९७)। इसने लोहर आये भिक्षाचर का स्वागत किया और फिर उसे राजसेनापति को परास्त करने के लिये भेजा (८.७२५)। राजा की सेना के प्रहार से त्रस्त हो जाने से इसका उत्साह उत्तरोत्तर क्षीण होने लगा (८.७४३)। 'भिक्षोर्मल्लकोष्ठाद्यैराप्तैः कृतगतागते.', (८ ८३९)। जब सुस्सल के राजधानी त्याग देने पर भिक्षाचर नगर में प्रविष्ट हुआ तब यह उसके पीछे-पीछे चलता हुआ कार्यों के सम्बन्ध में उपदेश दे रहा था (८.८४९)। भिक्षाचर के राजा होने के बाद इसमें और पृथ्वीहर में द्वेष बढ़ गया और दोनों राजधानी में अशांति का संचार करने लगे (८.८७६)। अमर्षवश इसने राजा भिक्षाचर तक को त्याग दिया (८.८७८)। इसने और जनक ने राज्य का त्याग कर चुके सुस्सल के पास दूत भेज कर उससे पुनः राज्य प्राप्त करने का उद्योग आरम्भ करने का आग्रह किया (८.८९७)। जनक तथा यह विद्रोही सेना के साथ हुष्कपुर पहुँचे (८.९४५)। इससे पराजित होकर पृथ्वीहर मडवराज्य से शमाला चला आया (८.१००३)। उल्हण ने राजा सुस्सल से कहा कि यह उसका (सुस्सल का) वध कर देना चाहता है (८.१०४१)। इसके आमन्त्रण पर भिक्षाचर, पृथ्वीहर, आदि शूरपुर के मार्ग से फिर एकत्र हुये (८.१०५१)। इसकी सेना ने नगर के भीतर प्रवेश कर के नागरिकों से युद्ध आरम्भ किया (८.१०५३)। राजा सुस्सल ने अपने प्रज्जि आदि सेनानायकों को इससे युद्ध करने का आदेश दिया (८.१०५८)। इससे युद्ध में प्रज्जि आहत हो गया (८.१०६०)। राजा सुस्सल ने इसे कैद कर लिया (८.१०६८)। इसकी सेना को व्यथित करता हुआ सैनिकों-सहित राजा सुस्सल वहाँ आ गया (८.११०८)। राजा सुस्सल ने गर्गवंशी पञ्चचन्द्र को इसका प्रतिद्वन्द्वी बनाया (८.११२१)। राजा सुस्सल इससे युद्ध करने के लिये अमरेश्वर आया (८.११२४)। राजा सुस्सल की अनुपस्थिति में इसने सदाशिव के पास स्थित सूनी राजधानी में आग लगवा दी (८.११२५)। सुस्सल से त्रस्त होकर यह दरद देश चला आया (८.११३०)। छुड्डा की हत्या का समाचार सुनकर यह भी दरदपुर के अपने

घर चला आया (८.११५३)। ८.१२६१, २००६, ३३१५ (इसकी मृत्यु)।

१. मल्ला, भोगसेन की पत्नी का नाम है जिसे राजा सल्हण ने अपने पति के पास रहने की गुप्तरूप से अनुमति दे दी थी (८.४४५)।

२. मल्ला, कालिञ्जर के राजा कल्ह की माता का नाम है। इसकी मृत्यु हो जाने पर सुस्सल को अत्यन्त दुःख हुआ (८.६१८)।

३. मल्ला, लोठन की पत्नी का नाम है जिसकी पुत्र-शोक में मृत्यु हो गई (८.१९१५)।

मल्लार्जुन, राजा सुस्सल के एक पुत्र का नाम है (८.१९३२)। लोठन को यह ज्ञात हुआ कि यह षडयन्त्रकारियों से मिल गया है (८.१९३५)। इसे कोट्टराज्य के राजपद पर अभिषिक्त किया गया है। (८.१९४१)। माञ्जिक ने इसे लोहर का राजा बनाया (८.१९४६)। इसके राज्य में दुराचारियों का बोलबाला हुआ (८.१९६२)। इसकी सेना (८.१९६५)। इसके अनुचरों ने संवर्धन का वध कर दिया (८.१९६६)। इसने चित्ररथ से सन्धि कर ली (८.१९६८) इसने चित्ररथ का कर चुकाया (८.१९७०)। ८.१९८०, १९८९ (लोठन ने इसे कैद कर लिया), १९९४, २००३, २००४, २०२२ (यह सुज्जि का सामना नहीं कर सका इसलिये किले को त्याग कर भाग गया), २०४५ (इसके परिवार के लोगों की बहुत पहले ही शीतज्वर से मृत्यु हो गई थी), २०४७ (इसने सञ्जपाल को अपने पास बुला लिया), २०४९, २१९१ (धन्य इसे छोड़ कर राजा का प्रेमपात्र बन गया), २२१९ (कोष्ठेश्वर ने इसके साथ मिलकर द्वैराज्य की स्थापना का प्रयास आरम्भ किया), २२६० (कोष्ठक ने इसे अग्रणी बनाकर एक पर्वतीय दुर्ग में अड्डा बनाया), २२७५, २३४१ (कोष्ठेश्वर की मृत्यु के समाचार से यह दुःखी हुआ), २५०२ (भिक्षुर्मल्लार्जुनस्त्वासीदेक एव त्रयस्त्वमी), ३२५३, ३३४०।

१. मल्हण, राजा दुर्लभवर्धन के पुत्र का नाम है जिसे ज्योतिषियों ने अल्पायु बताया था (४.४)।

२. मल्हण, तन्वङ्ग के एक पौत्र का नाम है जिसकी धम्मट के वध के बाद स्वयं राजा हर्ष ने रक्षा की (७.१०५३) : ८.१०८४

मल्हणपुर, एक नगर का नाम है जिसे राजा जयापीड ने बसाया था (४.४८४)।

मल्हणस्वामी, मल्हण द्वारा निर्मित एक मंदिर का नाम है (४.४)।

महापद्म, एक विशाल सरोवर तथा उसमें निवास करनेवाले नाग का

नाम है : १.३० (इसके नाग का नाम पद्म था); ४.५९३; ५.६८, १०४, ११८; ८.३१२८।

महाभारत : ७.१७२८; ८.१०६।

महाभाष्य = पतञ्जलिकृत व्याकरणग्रन्थ : १.१७६ (राजा अभिमन्यु ने इसके अध्ययन को पुनः प्रचारित किया); ४.४८८, ६३६।

महारथ, राजा शङ्करवर्मा के एक मंत्री का नाम है (७.८२)।

महावराह, एक देवता का नाम है (४.१९७)। वराहमूल में इनकी मूर्ति (७.१३१०)।

महासरित्, काश्मीर की एक नदी का नाम है : ३.३४५; ८.३३९, ७३३, ७५३, १०९९, ११००, ११५८, ३१३१।

महिमा, छोज के पुत्र का नाम है जिसका महलों में राजकुमारों की भाँति लालन-पालन हुआ था ।(६.२१२)। दिद्दारानी ने इसे राज्य की सीमा से बाहर करने के लिये आदमी भेजे (६.२१५)। इसने अपने आश्रम में रहनेवाले अनेक व्यक्तियों को लेकर विद्रोह किया (६.२२०)। इसके पक्ष के अनेक लोग दिद्दा रानी से मिल गये (६.२२५)। दिद्दा रानी ने अभिचार द्वारा इसको मरवा दिया (६.३२९)।

महीमान, एक उत्सव का नाम है (८.२०७२)।

१. **महेन्द्र,** एक पर्वत का नाम है (८.१७०)।

२. **महेन्द्र** = इन्द्र : ४.२२२, २२३, २३९; ८.१६५२।

महीश्वर = सूर्य देवता (७.७१०)।

महोदय, शूरवर्मा के द्वारपाल का नाम है (५.२८)।

महोदयस्वामी, एक देवता का नाम है (५.२८)।

माक्षिकस्वामी, एक देवमन्दिर का नाम है : (४.८८; ८.११७१)।

माघ, एक मास का नाम है (१.१४१)।

माञ्चिक, लोहर दुर्ग के एक प्रतीहार का नाम है (८.१८१७)। लोठन ने इसे सोमपाल के पास भेजा (८.१९०१)। यह लोठन के अभिप्राय को जानकर भयभीत हुआ (८.१९३०)। यह कारागार से निकल भागा (८.१९४१)। इसने राजा जयसिंह के सेवकों को तिरस्कृत करके मल्लार्जुन को लोहर का निष्कण्टक राजा बना दिया (८.१९४६)। यह मल्लार्जुन का श्वसुर तथा मुख्य मन्त्री था, परन्तु मल्लार्जुन ने इसका वध करा देने का संकल्प किया (८.२०१५)।

माणिक्य, एक सेनापति का नाम है जिसे शूरपुर की सरहद पर सुस्सल

ने परास्त किया (७.१३५२) । यह उच्चल का सेनापति बना, परन्तु एक दिन राजा ने इसे द्वार से लौटा दिया जिससे खिन्न होकर इसने संन्यास ले लिया (८.१७९) ।

मातृगुप्त, एक कवि का नाम है जो उज्जयिनी के राजा विक्रमादित्य के यहाँ रहता था (३.१२९) । "यह राजा की अत्यन्त निष्ठा के साथ सेवा करता था । इसकी निष्ठा की भली-भाँति परीक्षा लेने के बाद इसको पुरस्कृत करने के लिये विक्रमादित्य ने एक पत्र के साथ इसे काश्मीर भेजा । पत्र में निर्दिष्ट आदेश के अनुसार काश्मीर में इसका राज्याभिषेक कर दिया गया । इस घटना से आश्चर्यचकित होते हुये इसने राजा विक्रमादित्य के पास उपहार भेजे (३.१४६–२५२) ।" ३.१५९, १७४, १८९, १९१, २०४, २१०, २१९, २३६, २३९, २४६ । इसने अपने राज्य में कारम्भक नामक स्वर्ण मुद्रा का प्रचलन और वितरण आरम्भ किया (३.२५६-२५७) । कवि मेण्ठ ने इसके द्वारा प्रदत्त पुरस्कार को तुच्छ समझा (३.२६२) । इसने मातृगुप्तस्वामी नामक मन्दिर बनवा कर उसमें मधुसूदन की स्थापना की (२.२६३) । ३.२८१, २८२, २८७, २९३ (इसने विक्रमादित्य के प्रति आभार प्रकट किया), २९७ (इसने वाराणसी जाकर संन्यास लेने की इच्छा प्रगट की) । इसने प्रवरसेन को उपदेश देते हुये विकमादित्य की प्रशंसा की (३.३०८) । 'अथ वाराणसीं गत्वा कृतकाषाय संग्रहः । सर्वं संन्यस्य सुकृती मातृगुप्तोऽभवद्यतिः,' (३.३२०) । प्रवरसेन काश्मीर की सम्पूर्ण आय इसके पास भेज देता था (३.३२१) ।

मातृगुप्तस्वामी, एक विष्णु-मन्दिर का नाम है (३.२६३) ।

मातृग्राम, एक स्थान का नाम है : ८.२७७६ ।

मातृसिंह, मम्मा नामक वेश्या के गर्भ से कन्दर्पसिंह द्वारा उत्पन्न पुत्र का नाम है (७.१०४) ।

मान्त्रिक, नागों को वश में रखनेवाले व्यक्तियों के एक वर्ग का नाम है (१.२३४) । 'द्राविडो मान्त्रिकः', (४.५९४) ।

मान्धाता, पूर्वकाल के एक राजा का नाम है (४.६४१) । ५.१२२; ८.३३३१, ३३६२ ।

मारुति = हनुमान् : ८.४६९ ।

मार्ताण्ड = सूर्य : १.२९९; ३.४६२; ४.१९२; ७.७०९ (मार्ताण्ड), ७१५ (मार्ताण्ड), ७२२,१०९६, ३२८१, ३२८८, ३२९५ ।

१. मालव, राजा बालादित्य के एक मन्त्री का नाम है (३.४८३) ।

२. मालव—'मालवाधिपतिर्भोजः' (७.१९०) । 'मालवेन्द्रेण', (८.२२८) ।

माष, एक अन्न विशेष का नाम है (३.१८१) ।

मित्रशर्मा, राजा ललितादित्य के एक मन्त्री का नाम है (४.१३७) । इसने मित्रेश्वर नामक शिवमूर्ति की स्थापना की (४.२०९) । कुवलयापीड के राज्य त्याग कर चले जाने पर इसे अपार दुःख हुआ जिससे इसने अपनी स्त्री के साथ जाकर वितस्ता और सिन्धु के संगम पर शरीर त्याग दिया (४.३९१) । इसका पुत्र, देवशर्मा, राजा जयापीड के पास आया (४.४६९) । इसके पुत्र का नाम देवशर्मा था जो अत्यन्त स्वामिभक्त था (४.५८४) ।

मित्रेश्वर, एक शिवमूर्ति का नाम है (४.२०९) ।

मिल्ल, पित्थ के पुत्र का नाम है जिसकी राजा हर्ष ने सुस्सल से युद्ध के समय उपेक्षा की (७.१५३३) ।

मिहिरकुल, राजा वसुकुल के पुत्र का नाम है जो पिता के बाद काश्मीर का शासक हुआ (१.२८९) । इसके चरित्र का वर्णन (१.२९०) । इसका लंका अभियान (१.२९४) । इसने हाथियों को नष्ट किया (१.३०२) । इसकी मृत्यु (१.३०९) । १.३१८; ८.३४१५ ।

मिहिरदत्त, राजा चन्द्रापीड के गुरु का नाम है जिसने विश्वम्भर विष्णु की गम्भीरस्वामी नामक मूर्ति स्थापित की (४.८०) ।

मिहिरपुर, होलडा प्रान्त में स्थित एक नगर का नाम है जिसे मिहिरकुल ने बसाया (१.३०६) ।

मिहिरेश्वर = शिव : १.३०६ ।

मुकुन्द, एक देवता का नाम है : ८.२४३८ ।

मुकुल, एक व्यक्ति का नाम है जो महिमा के आश्रय में रहने लगा (६.२१८) । दिद्दा रानी ने इसे बन्दी बनाकर कारागार में डाल दिया (६.२५३) ।

मुक्त, चम्पक के सेवक, जलक, के रसोइये का नाम है जो हर्ष के पास आकर उसका सेवक बन गया (७.१६२३) । राजा हर्ष इसके साथ गुण नामक क्षुद्र भिक्षुक की कुटी में रात्रि-निवास के लिये आया (७.१६३८) । राज्यच्युत हर्ष इसका सहारा लेकर चल रहा था (७.१६३९) । यह और प्रयाग अत्यन्त कठिनाई से हर्ष को गुण नामक क्षुद्र भिक्षु की कुटी तक लाये (७.१६४०) । यह कुटी की दीवार फाँद कर उसके भीतर गया (७.१६४२) । यह प्रातःकाल कुटिया के मालिक, भिक्षुक, को कहीं से खोज लाया (७.१६६१) । इसने कुटिया की भूमि पर पानी छिड़का और तब हर्ष भीतर

प्रविष्ट हुआ (७.१६६२)। हर्ष ने इसे अपने पास बुलाया (७.१७०१)। इसे बाहर भेजकर हर्ष ने अपनी कटार निकाल ली (७.१७०२)।

मुक्तस्वामी, हुष्कपुर के एक शिवमंदिर का नाम है (४.१८८)।

मुक्ताकण, राजा अवन्तिवर्मा के शासनकाल में हुये एक प्रसिद्ध विद्वान का नाम है (५.३४)।

मुक्ताकेशव, एक देवता का नाम है (४.१९६, २०२)।

मुक्तापीड, राजा प्रतापादित्य और रानी नरेन्द्रप्रभा के एक पुत्र का नाम है (४.४२)। यह ललितादित्य के नाम से विख्यात हुआ (४.४३)। 'मुक्तापीडः पुरा राजा ज्वलिता मूर्ध्नि भूभुजाम्' (७.१४२८)। ८.३४२३, ३४२४। देखिये **ललितादित्य**।

मुक्ताश्री, एक नदी का नाम है : ८.२४९२ ।

१. **मुङ्कट,** उरशा राज्य के राजा का नाम है जो राजा कलश का अतिथि हुआ (७.५८९)।

२. **मुङ्कट,** राजा सुस्सल के एक वीर सैनिक का नाम है (८.१०९०)।

१. **मुम्मुनि,** एक राजा का नाम है जिसे प्रवरसेन ने पराजित किया (३.३३२)।

२. **मुम्मुनि,** एक राजा का नाम है जिसे राजा ललितादित्य ने तीन बार परास्त किया (४.१६७)। ४.५१६।

३. **मुम्मुनि,** राजा सुस्सल की सेना के एक वीर का नाम है (८.१०९०)। यह संगट का भ्राता था जिसका वध कर दिया गया (८.२१७९)।

मृगावती, राजा निर्जितवर्मा की पत्नी का नाम है (५.२८४)। इससे उत्पन्न द्वितीय पुत्र, शूरवर्मा, को राजा बनाया गया (५.२९२)।

मृत्युंजय, एक देवमन्दिर का नाम है जिसे रत्नादेवी ने निर्मित कराया था (८.२४३५)।

मेघमञ्जरी, राजा विजयपाल की पुत्री का नाम है जिसे, पिता की मृत्यु के बाद, कालिञ्जराधिपति कल्ह ने पाला और बाद में सुस्सल ने इससे विवाह किया (८.२०५)। इसकी मृत्यु (८.१२१६)।

मेघमठ, एक पुनीत मठ का नाम है जिसका मेघवाहन ने निर्माण कराया (३.८)।

मेघवन, एक अग्रहार का नाम है जिसे मेघवाहन ने ब्राह्मणों को दान किया (३.८)।

मेघवाहन, गोपादित्य के पुत्र का नाम है (२.१४६)। अपने पिता की

आज्ञा से यह राजा प्राग्ज्योतिषेश्वर की कन्या के स्वयंवर में गया जहाँ उस कन्या, अमृतप्रभा, ने इसके गले में वरमाला डाल दी (२.१४७–१४८)। आर्यराज के चले जाने पर काश्मीर की प्रजा तथा मन्त्री गान्धार-नरेश के पास आकर और उनसे माँग कर इसे काश्मीर लाये (३.२)। इसके शासन का विस्तृत वर्णन (३.१५ और बाद)। 'मेघवाहनराज्येऽपि', (३.३१)। वरुण ने इससे छत्र वापस लेकर इसकी उदारता की प्रशंसा की (३.५२ और बाद)। यह ३४ वर्ष तक राज्य करने के बाद स्वर्गवासी हुआ (३.९६)। इनकी पत्नी का नाम भिन्ना था (३.४६४)। इसके शासन का उल्लेख (५.६४)। 'मेघवाहनमुख्यानां कृत्ये लोकोत्तरे यथा; (७.११३७)। ८.३४१९।

मेघावली, बप्पिय वज्रादित्य की पत्नी का नाम है जिसका पुत्र त्रिभुवनापीड ज्येष्ठ होता हुआ भी राज्यकार्य से उदासीन रहने के कारण राज्य से वंचित रहा (४.६८९, ६९०)।

मेण्ठ, एक कवि का नाम हैं जिसने हयग्रीववध नामक काव्य की रचना की थी (३.२६०)। इसने राजा मातृगुप्त के पुरस्कार को तुच्छ माना (३.२६२)।

मेधाचक्रपुर, एक ग्राम का नाम है (८.१४०३)।

मेनिला, राजा जयसिंह की एक पुत्री का नाम है (८.३३८०)। इसका सोमपाल के पुत्र, भूपाल, से विवाह हुआ (८.३३९४)। इसके साथ विवाह हो जाने पर भूपाल को सोमपाल ने राज्यभार सौंप दिया (८.३३९७)।

१ **मेरु,** एक सैनिक का नाम है जिसकी सुज्जि और डामरों के युद्ध में मृत्यु हुई (८.१४१६)।

२. **मेरु**—सुमेरु पर्वत : ८.३१७३, ३३६६।

मेरुवर्धन, एक मंत्री का नाम है जिसने पुराणाधिष्ठान में मेरुवर्धनस्वामी नामक विष्णु की स्थापना की (५.२६७)। 'मेरुवर्धनसूनवः', (५.२८३)। चक्रवर्मा ने इसके पुत्रों के दोषों को देखते हुये भी उन्हें उच्चपद प्रदान किया (५.३००)। ५.४७०।

मोराक, प्रवरसेन के मंत्री का नाम है जो सिंहल आदि द्वीपों पर शासन करता था। इसने मोराकभवन नामक एक अतुलनीय और भव्य भवन बनवाया (३.३५६)।

मोराकभवन, प्रवरसेन के मंत्री, मोराक, द्वारा निर्मित करवाये गये एक अद्भुत भवन का नाम है (३.३५६)।

म्लेच्छ, एक हीन जाति के लोगों का नाम है : **१.१०७** (ये अशोक के विरोधी थे), ११५ (जलौक ने इन्हें बहिष्कृत किया), ११६, २८९, ३१२; ३.१२८ (शिव इनका उन्मूलन करेंगे); ४.३९७; ७.१६७ (इनके राजा दरदों से मिल गये), **१७५,** ११२२ (इनके देश में गोवध होता था); ८.८८७, २७६४, २७८२, २७८४, २८४३, २८९९।

य

यक्ष : १.१८४ (यक्ष विप्लवः); ३१९? ३.३४९।

यक्षदर, क्रमराज्य के अन्तर्गत एक ग्राम का नाम है (५ ८७)।

यदुकुलोद्वह = श्रीकृष्ण : १.७०।

यन्त्र, तन्त्र आदि में प्रयुक्त एक रेखाचित्र का नाम है : **३.**३५०. ४५४।

१. **यम,** मृत्यु के देवता का नाम है : (२.४७); ७.१४**१७**।

२. **यम,** उच्चल के एक द्वाराधीश का नाम है जो कुछ समय की प्रभुता के बाद कंगाल हो गया (८.१८५)।

यमराष्ट्र = यमलोक : ४.२९२; ८.२९७।

यमुना, भारत की एक प्रसिद्ध नदी का नाम है (१.२९६; ४,१४५)।

यमुषदेव, सूर्य-प्रतिमायुक्त एक वस्त्र का नाम है (१.२९९)।

यवन, एक जाति का नाम है : ८.२२६४.

१. **यशस्कर,** राजा जयसिंह के एक पुत्र का नाम है (८.३३७४)।

२. **यशस्कर,** अलंकारचक्र के एक सेवक का नाम है (८.२५९७)।

३. **यशस्कर,** पिशाचपुर के वीरदेव के पौत्र और कामदेव के पुत्र का नाम है (५.४७३)। ब्राह्मणों ने इसका काश्मीर के राज्य पर राज्याभिषेक किया (५.४७७) यशस्करदेवस्य राज्यप्राप्तिः, (५.४८०)। 'यशस्करभूपतिः, (५ ४८२)। इसके शासन तथा शासनकाल का वर्णन (६.१ और बाद)। 'व्यवहारा वचोनिष्ठा एव राज्ञि यशस्करे', (६.५३)। 'डोम्बोच्छिष्टानुगासङ्गादशुचित्वं यशस्करे', (५.८४)। इसने जिन लोगों को द्रोहभीरु समझ कर अपना पुत्र सौंपा था वही लोग इसके पुत्र को उच्छिन्न कर देने का चक्र रचने लगे (६.११९)। इसकी एक रानी का नाम नृपसुन्दरी था (६ १३८)। 'यशस्करस्य भूत्वाऽपि सचिवो भट्टफल्गुणः', (६.१६८)। यह रूखे स्वभाव का राजा था (८ १५७)। जनश्रुति के अनुसार लुड्ड आदि इसी के वंशज थे (८.२६१)। 'यशस्कर कुले', (८.३५७)। ८.१९५५, ३४३५।

यशस्करस्वामी, एक देवता का नाम है (६.१४०)।

१. **यशोधर,** ललितादित्यपुर निवासी एक व्यक्ति का नाम है जो महिमा

के आश्रय में रहने लगा (६.२१९)। दिद्दा रानी ने इसे उच्च पद प्रदान करके अपनी ओर मिला लिया (६.२२८)। इसने शाहिराज थक्कन पर आक्रमण किया (६.२३०)। इसे रानी दिद्दा के सैनिकों ने बन्दी बना लिया (६.२५०)। इसे कारागार में भेजा गया (६.२५३)।

२. **यशोधर**, दरदों के एक राजा नाम है (८.२४५४)। 'यशोधरम्,' (८.२४५८)।

यशोमङ्गल, राजा संग्रामराज की पत्नी श्रीलेखा के पिता का नाम है (७.१२३)।

यशोमती, यशोवती के नाम का ही दूसरा रूप है (८.३४०८)।

१. **यशोराज**, मण्डलेश्वर के साथी, एक वीर, का नाम है जिसका डामरों ने वध कर दिया (७.१३१३)।

२. **यशोराज**, काकवंशजों के एक सम्बन्धी का नाम है जो राजा सुस्सल द्वारा निर्वासित कर दिये जाने पर उच्चल-तनय सहस्रमङ्गल के पास चला गया (८.५३४)। जब इसके पुत्र, प्रास, ने काश्मीर पर आक्रमण किया तब सीमा पर राजा सुस्सल के सैनिकों ने इसका वध कर दिया (८.५३६)। इसने कभी परदेश में रहकर असाधारण ख्याति प्राप्त की थी (८.५५९)। इसके साले का नाम श्रीवक था (८.१००९)। देशान्तर से लौटने पर राजा सुस्सल ने इसे माण्डलेश्वर बना दिया (८.१११७)। इसे साथ लेकर राजा सुस्सल ने डामरों को पराजित किया (७.११२३)। शरद् ऋतु आ जाने से राजा इसके साथ शमाला आ गया (८.११३२)। 'आबाल्यात्संस्तुताश्लीलवचःपरुषभाषितैः। निर्गौरवैर्यशोराजो राज्ञि तस्मिन्व्यरज्यतः॥' (८.११४३)। यह भिक्षु से मिल गया (८.११५१)। ८.११५८। कुछ समय पश्चात् इसके पक्ष के लोगों ने ही इसे विपक्षी समझ कर इसकी हत्या कर दी (८.११५९)।

३. **यशोराज**, एक ब्राह्मण का नाम है जिसने सुस्सल की हत्या के बाद हुये विद्रोह में वीरगति प्राप्त की थी (८.१३४५)।

४. **यशोराज**, भोजक के एक पुत्र का नाम है जो टिक्क से मिला (८.१५१२)। यह जयराज का बड़ा भाई था ;(८.२७४१)। राजा के साथ यह भी पराजित हुआ (८.२७४५)। ८.२८०७।

यशोवती, राजा दामोदर की पत्नी का नाम है जिसका, पति की मृत्यु के पश्चात्, श्रीकृष्ण ने राज्याभिषेक कराया (१.७०)। ८.३४०८ (यहाँ 'यशोमती' पाठ है)। देखिये **यशोमती** भी।

१. **यशोवर्मा**—'यशोवर्माद्रिवाहिन्याः क्षणात्कुर्वन्विशोषणम्,' (४.१३४)।

इसने ललितादित्य के पास सन्धिपत्र भेजा (४.१३७)। इसके सन्धिपत्र के लेख का विवरण (४.१३८)। ललितादित्य ने इसका उच्छेद कर डाला (४.१४०)। यह ललितादित्य के गुणों पर मोहित हो गया (४.१४४)। 'यशोवर्मणमुल्लङ्घ्य हिमाद्रिमिव जाह्नवी; (४.१४६)।

२. यशोवर्मा, चिटपट जयापीड के मामा, मम्म के एक पुत्र का नाम है जिसने मम्म और उत्पल के युद्ध में अतुल पराक्रम प्रगट किया (४.७०६)।

यादव = बलराम : १.६३ ।

यामिक, उल्हण के चाचा, शील, के एक सेवक का नाम है (८.२१७२)।

१. युधिष्ठिर, पाण्डवों के सबसे बड़े भ्राता का नाम है जो उस समय शासन करते थे जब सप्तर्षि मघा नक्षत्र पर थे। इनका समय शककाल २५५६ माना जाता है (१.५६)। 'यौधिष्ठिरी स्थितिः,' (१.१२०)।

२. युधिष्ठिर, राजा खिङ्खिलान्य के पुत्र का नाम है जो सूक्ष्मनेत्र होने के कारण अन्धयुधिष्ठिर के नाम से विख्यात था (१.३५०)। इसके पतित शासन का वर्णन (१.३५१ और बाद)। यह राज्यच्युत होकर अपनी रानियों के साथ इधर-उधर भटकता हुआ एक दूसरे राज्य में पहुँचा जहाँ लोगों ने इसे आश्रय दिया (१.३६६, ३७३)। "वृद्धावस्था तथा मुनियों के शान्तिप्रद उपदेशों के कारण इसने राज्य को पुनः प्राप्त करने का विचार त्याग दिया। कुछ इतिहासकारों का यह भी कथन है कि जब यह राज्यच्युत होकर इधर-उधर फिर रहा था तब इसके मन्त्रियों ने इसे बन्दी बनाकर कारागार में डाल दिया था (२.२-४)।" सन्धिमति को इसके कुल में उत्पन्न एक राजपुत्र का पता लगा (२.१४४)। इसके प्रपौत्र, गोपादित्य, को गान्धारराज ने काश्मीर विजित करने के उद्देश्य से पाला-पोसा था (२.१४५)। ८.३४१६, ३४१९।

३. युधिष्ठिर, राजा प्रवरसेन द्वारा रानी रत्नप्रभा के गर्भ से उत्पन्न पुत्र का नाम है जिसने **३९** वर्ष **३** मास काश्मीर पर राज्य किया (३.३७९)। ८.३४२०।

४. युधिष्ठिर, सुस्सल के एक सैनिक का नाम है जिसकी युद्ध में मृत्यु हो गई (८.१९८)।

यूकदेवी, राजा मेघवाहन की दूसरी पत्नी का नाम है जिसने नडवन में एक विशाल विहार का निर्माण कराया (३.११)।

येदा, एक स्थान का नाम है जहाँ सन्धिमति ने अनेक मठों-मन्दिरों की स्थापना की (२.१३५)।

योगशायी, विष्णु के एक मन्दिर का नाम है (५.१००)।

योगिनी : २.१००, १०२, १०८।

योगेश, एक देवालय का नाम है (८.७८)।

र

रंग, एक डोम जाति के गायक का नाम है (५.३५४, ३९७–३९९)।

रंगपीठ, एक मंदिर का नाम है (७.१०९)।

रक्क, गवाक्ष सरोवर में साक्षात् श्रीदेवी को प्रत्यक्ष करनेवाले एक वीर ब्राह्मण का नाम है (५.४२४)। इसने रक्कादेवी की मूर्ति की स्थापना की (५.४२६)। राजा क्षेमगुप्त ने इसे सेनापति बनाया (६ १७०)। ६.१९७, २०२, २३३ (इसने दिद्दा रानी के मन में यशोधर के विरुद्ध द्वेष की भावना उत्पन्न की), २५९ (दिद्दा ने इसे कम्पनेश बनाया), २८४ (इसकी मृत्यु), ३२४ ३४२ (इसके पुत्र का नाम सुलक्कन था); ७.८९४ (इसके एक वंशज को हर्ष ने मंत्रिपद प्रदान किया)।

रक्कक, एक व्यक्ति का नाम है जिसे राजा उच्चल ने द्वाराधीश बनाया परन्तु बाद में पदच्युत कर दिया (८.१७८)।

रक्कजयादेवी, एक देवी का नाम है (५.४२६)।

रक्छटेश, एक देवता का नाम है (४.२१४)।

रक्तातिसरण, एक व्याधि का नाम है (७.४४८)।

रक्तिक, ज्येष्ठपाल के भ्राता का नाम है जो भिक्षाचर के पीछे चल रहा था (८.१७५१)। ८.१७५८। इसके मर्मस्थान में एक ऐसा बाण लगा कि यह निर्जीव-सा पृथिवी पर बैठ गया (८.१७६६)। इसके मर जाने पर भी खशों ने इस पर प्रहार किया (८.१७७४)।

रघु, श्रीराम दाशरथी के एक पूर्वज का नाम है (१.१९१; ३.४७३)। देखिये अगला शब्द भी।

रघुवंश—"पुरातन राजवंशों में केवल दो ही वंश श्रेष्ठ माने गये हैं—पहला रघुवंश और दूसरा गोनन्दवंश। रघुवंश में भगवान राम और गोनन्द-वंश में राजा रणादित्य ने अपनी प्रजा को स्वर्गसुख प्राप्त करा दिया था (३.४७२–४७३)।"

रङ्गवाट, एक वाटिका का नाम है जो हस्तिकर्ण के पास स्थित थी (७.१६५३)।

रट्ट, कर्णाट की एक रानी का नाम है जो दक्षिणापथ पर राज्य करती थी (४.१५२)।

रड्ड, एक साधारण शस्त्रधारी, सड्ड, के पुत्र का नाम है, जिसे राजा उच्चल

ने मंत्री बना दिया (८.१८३)। यह कामदेव का वंशज था और इसका भ्राता छुड्ड नगरपाल था (८.२५६)। 'क्रूरो रड्डच्छुड्डादीन्प्रैरयत्पूर्वचिन्तिते', (८.२७८)। इसे भोगसेन ने सुस्सल को तंग करने के लिये लोहर भेजा (८.२९६)। जब यह विद्रोहियों के साथ राजा उच्चल का वध करने गया तब आहत राजा ने कटार से इस पर भी वार किया (८.३१६)। यह एक रात के लिये काश्मीर के राज्य सिंहासन पर बैठा (८.३४२)। गर्ग ने इसका वध कर दिया (८.३४६)। इसने शङ्खराज नाम धारण किया था (८.३५६)। ८.३७८, ३४४३।

रड्डादेवी, राजा जयसिंह की रानी का नाम है (८.३२४१)। राजा जयसिंह ने इसके सबसे ज्येष्ठ पुत्र, गुल्हण, का लोहर राज्य में अभिषेक करा दिया (८.३३०१)। ८.३३७१ (इसके पुत्र), ३३८२ (इसकी धर्मशीलता), ३३९९।

रणरम्भा, राजा रणादित्य की पत्नी का नाम है जो साक्षात् वैष्णवी शक्ति थी (३.३९१)। "ये विन्ध्याचल की भ्रमरवासिनी का अवतार थीं। इन्होंने पूर्वजन्म में स्वयं ही रणादित्य को वर देकर उसकी पत्नी बनना स्वीकार किया था। इन्होंने चोलराज रत्नसेन के यहाँ जन्म लिया और स्वयं ही रणादित्य का वरण किया (३.४२३–४३६)।" "राजा रणादित्य ने रणेश्वर नामक एक शिवलिङ्ग की स्थापना की परन्तु इनके प्रभाव से उस शिवलिङ्ग के स्थान पर रणस्वामी विराजमान हो गये (३.४५३, ४५४)।" रणादित्य के स्वर्गवास के बाद वैष्णवी शक्तिरूपा यह देवी श्वेतद्वीप चली गई (३.४७१)।

रणस्वामी, श्रीनगर के एक शिवमंदिर का नाम है : ३.४५४, ४५७, ४६२; ५.३९५; ७.१०९६।

१. रणादित्य, राजा नरेन्द्रादित्य के छोटे भ्राता का नाम है जो उसकी मृत्यु के बाद काश्मीर का राजा हुआ। इसे तुञ्जीन भी कहते हैं (३.३८६)। "पूर्वजन्म में यह जुआड़ी था और इसने विन्ध्याचल पर अमोघदर्शना भ्रमरवासिनी भगवती का दर्शन करने का निश्चय किया। देवी का दर्शन प्राप्त करने पर इसने उनके साथ सहवास का वरदान माँगा। तदनन्तर देवी के वरदान से इस जन्म में यह रणादित्य के नाम से उत्पन्न हुआ और रणरम्भा के रूप में भगवती भ्रमरवासिनी के साथ विवाह किया (३.३९२–४३४)।" इसने रणेश्वर का अभिषेक किया (३.४३९–४५८)। इसने अन्य देव-मंदिर भी निर्मित कराये (३.४६०)। "इसने तीन सौ वर्ष तक काश्मीर पर राज्य किया। इस अवधि में इसने पाताल लोक का भी ऐश्वर्य प्राप्त किया तथा अन्त

में परमधाम चला गया (३.४७०) ।" 'रणादित्यस्य गोनन्दवंशे रामस्य राघवे । लोकान्तरसुखस्यापि ययोरंशभुजः प्रजाः ।।', (३.४७३) । ८.३४२१, ३४२२ ।

२. रणादित्य, अनन्तदेव के मंत्री का नाम है जिसे कलश के राज्याभिषेक की सामग्रियाँ एकत्र करने का कार्य सौंपा गया (७.२३२) । इसके व्यवहार से अनन्तदेव क्रुद्ध हुये (७.२३४) ।

रणारम्भादेव, एक मन्दिर का नाम है (३.४६०) ।

रणारम्भास्वामी, एक मन्दिर का नाम है (३.४६०) ।

रणेश्वर, एक शिवलिङ्ग का नाम है (३.४५३) । ४.४५७, ४६३; ६.७१; ७.११५ ।

१. रत्न, राजा उत्पलापीड के सान्धिविग्रहिक मंत्री का नाम है जिसने रत्नस्वामी का मन्दिर बनवाया (४.७११) ।

२. रत्न, एक सैनिक का नाम है (८.१०७९) ।

रत्नकलश, प्रशस्तकलश के भाई का नाम है जिसे प्रशस्तकलश ने सेनापति बनवाया (७.५९९) ।

रत्नप्रभा, राजा प्रवरसेन की पत्नी और युधिष्ठिर की माता का नाम है (३.३७९) ।

रत्नलिङ्ग—'संप्राप्य प्रातरप्लुष्टं रत्नलिङ्गं नृपाङ्गना । व्यक्रीणाल्लक्षसत्या टाकानां पार्श्वमीयुषाम् ।।', (७.४१४) ।

रत्नवर्धन, राजमंत्री शूर के पुत्र का नाम है जिसने सुरेश्वरी के प्राङ्गण में भूतेश्वर शिव की स्थापना की (५.४०) । इसने राजा अवन्तिवर्मा की मृत्यु के पश्चात् विविध प्रयत्नों द्वारा शूरवर्मा के पुत्र शङ्करवर्मा को काश्मीर का राजा बनाया (५.१२८) । इसने रत्नवर्धनेश्वर सदाशिव की स्थापना की (५.१६३) ।

रत्नवर्धनेश, एक सदाशिव का नाम है (५.१६३) ।

रत्नवर्ष, एक दुर्ग का नाम है जिसमें गर्ग ने डेरा डाला (८.५१५) ।

रत्नस्वामी, एक देवता का नाम है (४.७११) ।

रत्नाकर, काश्मीर के एक कवि का नाम है (५.३४) ।

रत्नाकरशेखर, एक पर्वतशिखर का नाम है (३.७२) ।

रत्नादेवी, राजा जयसिंह की रानी का नाम है (८.२४०२) । इसने अपने निवासस्थान के निकट ही अनेक भवनों और मठों आदि का निर्माण कराया (८.२४३३) ।

रत्नापुर, एक नगर का नाम है : ८.२४३४।

रत्नावली, रणादित्यपुत्र विक्रमादित्य के मंत्री, गल्लून, की पत्नी का नाम है (३.४७६)।

रमण्या, एक नागिन का नाम है (१.२६३)।

रमण्याखी, एक नदी का नाम है जिसे रमण्या नामक नागी ने पाषाण-वृष्टि करा कर नष्ट कर दिया (१.२६५)।

१. **रय्यावट्ट,** मल्लराज के पुरोहित का नाम है जो युद्ध में मर चुका था (७.१४८०)।

२. **रय्यावट्ट,** एक दीपधर (मशालची) का नाम है जिसने राजा उच्चल को बचाने का प्रयास किया (८.३२२)।

रल्ह, मल्ल के पुत्र का नाम है (७.१४८७)।

रल्हण, तन्वङ्ग के एक पौत्र का नाम है जिसकी धम्मट के वध के पश्चात् स्वयं राजा हर्ष ने रक्षा की (७.१०५३)।

राक्षस, लङ्का के निवासियों का नाम है (३.७६)। ३.३४२, ३४६; ४.५०३, ५०५, ५०६।

राघव=श्रीराम : १.२९८; ३.४७३ (राम राघवे); ८.१८०६, ३३७२।

१. **राजक,** भूतकलश के पुत्र का नाम है (७.२६)।

२. **राजक**—जब शत्रुओं ने राजा उच्चल पर प्रहार किया तब इसका पुत्र मज्जक वहाँ से भाग गया (८.३२४)।

३. **राजक,** त्रिल्लक के एक मंत्री का नाम है (८.२७४१, २७४५)।

राजकलश, ब्राह्मणों को तुङ्ग का विरोध करने का परामर्श देनेवाले एक व्यक्ति का नाम है (७.२०)। इसके परास्त होने पर इसके पक्षपाती, श्रीधर के पुत्र राज्यसेना से युद्ध करने लगे (७.२२)। सुगन्धसीह ने इसे बन्दी बना लिया और तुङ्ग ने इसे उसी अवस्था में अपने पास बुलाया (७.२४)। इसका पुत्र (?), प्रशस्तकलश, राजा कलश का अन्तरंग सेवक बन गया (७.५७२)।

राजकुलभट्ट—दिद्दा रानी की सेना के विद्रोहियों के साथ संघर्ष के समय इसने उपस्थित होकर राज्यसेना को आनन्दित किया (६.२४६)। हिम्मक ने इसपर प्रहार किया (६.२४९)।

राजगिरि, एक स्थान का नाम है (७.१२७०)।

राजतरङ्गिणी—'तदमन्दरसस्यन्दसुन्दरेयं निपीयताम् । श्रोत्रशुक्तिपुटैः

स्पष्टमङ्ग राजतरङ्गिणी ॥', (१.२४)। 'गोदावरी सरिदिवोरुमुलैस्तरङ्गैर्वक्त्रैः स्फुटं सर्पदि सप्तभिरापतन्ती। श्रीकान्तिराजविपुलाभिजनाब्धिमध्यं विश्रान्तये विशति राजतरङ्गिणीयम् ॥', (८.३४४९)।

राजद्वार, एक स्थान का नाम है (८.५७७)।

राजपुरी, एक स्थान का नाम है (६.२८६, ३४८, ३४९)। तुङ्ग ने इसमें आग लगवा दी (६.३५१)। ७.१०५, २६७, ५३३, ५३९, ५४१, ५४६, ५७४, ५७८, ५८९, ९६७, ९६८, ९७२, ९७३, ९७६, ९७७, ९७८, ९९१, १०१७, ११५०, ११५२, १२५६, १२६१, १२९३, १५९७, ८.२८९ ६२३, ८६१, ८८४, १२६६, १२७०, १४६३, १४६५, १६३२, १६४७, २०४४, २०४६, २८८९।

राजमङ्गल, राजवंश में उत्पन्न एक व्यक्ति का नाम है जिसे लक्ष्मक ने द्वाराधीश बनाया। यह सुज्जि का प्रतिद्वन्द्वी था (८.१६३४)।

१. **राजराज,** रानी सूर्यमती के पुत्र का नाम है (७.१८६)।

२. **राजराज,** एक डामर का नाम है (८.१९९२)।

१. **राजलक्ष्मी,** गर्गचन्द्र की एक पुत्री का नाम है जिससे राजा सुस्सल ने विवाह किया (८.४६०)। सुस्सल की मृत्यु के बाद यह भी सती हो गई (८.१४४४)।

२. **राजलक्ष्मी,** राजा जयसिंह को एक पुत्री का नाम है (८.३३८०. ३३९९)।

राजवदन, तेज (बलहर) के पुत्र का नाम है (८.२६९५)। इसका पुत्र भोज की अर्चना के लिये आया (८.२७१८)। इसने भोज को सहायता का आश्वासन दिया (८.२७२१)। षष्ठचन्द्र ने इसे घेर लिया (८.२७५१)। षष्ठचन्द्र के दो भाई भागकर इसके पास चले आये (८.२७५५)। इसने जयचन्द्र आदि को भोज के पास भेजा (८.२७६७)। यह भोज से मिला (८.२७६९)। इसने अत्यन्त दुर्जय सेना के साथ षष्ठचन्द्र से युद्ध किया (८.२७८५)। ८.२७९२, २८५१, २८५९, २८६१ (भोज को अपने पक्ष में मिलाने के उद्देश्य से नाग ने उसे इसका साथ छोड़ देने का परामर्श दिया), २८६७, २९०६ (भोज के आगमन का समाचार जाने बिना ही इसने धन्य आदि से सन्धि कर ली), २९१६ (यह भोज को पुनः उकसाने लगा), २९३३ (यह भोज के पास दिन्नाग्राम आया), २९६२ (राजा जयसिंह की तुलना में यह अधिक शक्तिशाली हो गया), ३००४, ३००५, ३१२७ (इसने धन्य आदि का वध करने का संकल्प किया), ३१६७, ३३०५

(इसने राजा जयसिंह की आज्ञा से जयचन्द्र पर आक्रमण कर दिया), ३३०९ ।

राजसंवाह, राजा शङ्करवर्मा द्वारा लगाये गये एक प्रकार के कर का नाम है (५.१९२) ।

राजस्थान, एक प्रान्त का नाम है जिसकी रक्षा के लिये राजा सुस्सल ने तिलक के काने भ्राता जनक की नियुक्ति की (८.५७३) । 'शेडराजस्थानाधिकारिणा', (८.५७६) । सुस्सल ने जनक को कैद कर उसके स्थान पर सुज्जि के सगे भाई, प्रज्जि, को यहाँ की रक्षा का अधिकारी बनाया (८.१०४६) ।

१. राजानक, हरिविजय नामक ग्रन्थ के रचयिता, एक प्रसिद्ध कवि, का नाम है (५.३४) ।

२. राजानक, एक उपाधि का नाम है (६.११७, २६१) ।

राजानवाटिका, एक स्थान का नाम है : ८.७५६, ७६८, ८९९ ।

राजेश्वर, अनन्तदेव के एक मंत्री का नाम है जो महेश्वर का पुत्र था (७.२२३) ।

राज्यश्री—देखिये **राजलक्ष्मी** ।

१. राम = रामदाशरथी : ३.४७३; ४.२७४ (इन्होंने केशव देव की मूर्ति स्थापित की थी), ५०५ (रामभक्त्या), ६४१ (रामाद्या···प्रवरा नृपाः); ७.१२०२ (रामलक्ष्मणावेताविति); ८.१०५५ (रामेण वानरी सेना यथा), ।

२. राम, तिलकसिंह के एक सेवक का नाम है (८.७८३) ।

रामचर, एक राजा का नाम है जिससे राजा जयसिंह के प्रधान न्यायाधीश, अलङ्कार, ने युद्ध किया (८.२९२६) ।

रामट उपाध्याय, एक महान वैयाकरण का नाम है (५.२९) ।

रामदेव, खार्खोदवासी एक व्यक्ति का नाम है जिसके द्वारा सुखवर्मा ने राजा गोपालवर्मा पर अभिचार कराया (५.२३९) । अपने कुकर्म का पता चल जाने के कारण इसने दण्ड के भय से आत्महत्या कर ली (५.२४१) । यह राजा यशस्कर का प्रपितृव्य था । इसके पुत्र का यशस्कर ने राज्याभिषेक कराया (६.९१) ।

२. रामदेव, राजा कलश के एक सहायक का नाम है जिसकी शत्रुओं ने हत्या कर दी (७.६७५) ।

रामपाल, एक वीर का नाम है (८.१०८५) ।

रामल, एक अट्टसूद का नाम है जो अपने को मल्ल का पुत्र बताया करता था (८.२१६)।

रामलेखा, कलश की पत्नी का नाम है (७.२५६)।

रामवर्धन, एक राजभक्त का नाम है जिसने पर्वगुप्त की सेना का सामना किया परन्तु मारा गया (६.१२६)।

रामस्वामी, एक देवता का नाम है : ४.२७४, ३२७, ३३४, ३३५।

रामायण, : १.१६६; ७.१७२८।

रामुष, एक अग्रहार का नाम है जिसे राजा तुञ्जीन ने ब्राह्मणों को दान किया (२.५५)। ८.२८१३।

१. रावण, इन्द्रजीत के पुत्र का नाम है जिसने ३७ वर्ष तक पृथिवी पर शासन किया (१.१९३)। यह बटेश्वर नामक शिवलिङ्ग का पूजन करता था (१.१९४)। 'रावणक्षोणिभृत्सूनुः सार्धामन्यो विभीषणः', (१.१९६)। ८.३४१३।

२. रावण, पूर्वकाल के एक प्रसिद्ध राक्षस का नाम है, जो ब्रह्मा की पूज्य दो मूर्तियों को उठा लाया और लङ्का में उनकी पूजा करने लगा (३.४४६–४४७)। 'रावणप्रतिमे', (७.१२०२)।

राहिल, एक वयोवृद्ध ताम्बूलदायक और सन्धि-विग्रह के अधिकारी विद्वान् का नाम है (८.१३०४)। सुस्सल पर प्रहार करते समय व्याघ्र ने इसे अन्य सहायकों को बुलाने से मना किया (८.१३१७)।

राहु, एक ग्रह का नाम है (८.२१७०)।

रिल्हण—इसने क्रमराज्य में कल्याणवाड आदि स्थानों को जीत लिया (८.१००५)। यह एक राजपुत्र था (८.१०८७)। सुस्सल ने इसे शूरपुर में नियुक्त किया (८.१२६६)। ८.१४०४ १६२४ (राजा जयसिंह ने इसे खेरी प्रान्त का राज्यपाल बनाया), १८३६ (राजा जयसिंह ने इसे लोहर भेजा), १९८५ (इसने राजा द्वारा सुज्जि की नियुक्ति का विरोध किया), २०५०, २०६४, २०६८, २०७७ (इसने अपने वैरी सुज्जि को भयभीत करने के लिये पञ्चचन्द्र को बुला लिया), २०८९ (इसके परामर्श पर राजा जयसिंह सुज्जि को राज्य से निर्वासित कर देने के लिये सहमत हो गया), २०९३ (सञ्जपाल ने राजा जयसिंह को इसे निर्वासित कर देने का परामर्श दिया), २०९७, (सञ्जपाल ने राजा जयसिंह से उसके स्थान पर उल्हण की नियुक्ति का परामर्श दिया), २११२, २१६३ (राजा जयसिंह ने इसके वध के लिये सञ्जपाल को भेजा), २१६४ (सुज्जि की मृत्यु का समाचार सुनकर यह क्षिप्तिका नदी के तट पर चला गया), २१७३, २२०५ (कोष्टेश्वर ने इसे

परास्त किया), २२६६ (राजा जयसिंह ने इसके साथ आकर गोवास में पड़ाव डाला), २३१२ (राजा जयसिंह ने कोष्ठेश्वर को बन्दी बनाने के लिये इसे नियुक्त किया), २३१३ (इसने कोष्ठेश्वर को पकड़ लिया), २३६८, २४०९ (इसने रिल्हणेश्वर शिव की स्थापना की), २७४३, २७५८ (राजा जयसिंह ने इसे चतुष्क से युद्ध करने का आदेश दिया), २७६० (अपने पक्ष के सैनिकों की दुर्बुद्धि के कारण इसका प्रभाव मन्द पड़ गया), २८१० (राजा जयसिंह ने चतुष्क को हटा देने के लिये इसे भेजा), २८१६ (इसके पराक्रम को देखकर शत्रु पीछे हट गये), २८१८, २८३९ (सञ्जपाल इसके पास आया), २९०९, (राजा जयसिंह के बुलाने पर भी यह शत्रुओं को समाप्त किये विना नहीं लौटा), २९८८ (भोज के बदले में नाग को लेकर धन्य इसके साथ बलहर के पास आया), ३०८२, ३१२४ (यह सेना सहित पाञ्चिग्राम पहुँचा), ३३५५ (इसके छोटे भाई का नाम सुमना था), ३३६४, ३३६८ (इसने रुक्मिणीपति के मंदिर पर एक विशाल स्वर्णछत्र लगवाया था)।

रिल्हणेश्वर, एक शिव का नाम है : ८.२४०९)।

रुक्मिणी—श्रीकृष्ण की रानी (८.३३६८)।

१. रुद्र—शिव : ७.१४१८; ८.३३५०, ३३९० (रुद्रो रुदेश्वरो नाम्ना श्रीमान्कश्मीरभूषणम्)।

२. रुद्र, एक कायस्थ का नाम है : ८.४७३ ।

रुद्रपाल, शाहिराज के पुत्र का नाम है जो हरिराज के पुत्र, राजा अनन्तदेव का मित्र था (७.१४४)। इसे प्रतिदिन डेढ़ लाख दीनार मिलता था (७.१४५)। ७.१४८, १४९ । इसने मीठी-मीठी बातों से राजा अनन्तदेव को कुपथ पर उतार दिया (७.१५३)। इससे द्वेष हो जाने के कारण ब्रह्मराज ने कार्य छोड़ दिया (७.१६६)। यह दरदराज अचलमङ्गल से युद्ध करने के लिये उपस्थित हुआ (७.१६८)। दरदाज के वध से इसकी कीर्ति में वृद्धि हुई (७.१७४)। इसने दरदराज का कटा हुआ मस्तक राजा अनन्तदेव को उपहार के रूप में दिया (७.१७६)। इसकी लूता रोग से मृत्यु हो गई (७.१७८)।

रुद्रेश्वर, एक मंदिर का नाम है (८.३३९०)।

रुरु, एक दानव का नाम है (७.१७०७)।

रेवा, एक नदी (नर्मदा) का नाम है (३.२४०)।

रौहीतक, एक देश का नाम है (४.११)।

ल

लःखण, राजा नरेन्द्रादित्य का दूसरा नाम है (३.३८३)।

१. **लक्कक,** गर्गचन्द्र के एक शत्रु का नाम है (८.४३२)। प्रचुर धन देकर सल्हण ने इसे द्वाराधीश बनाया (८.४५१)। गर्गचन्द्र से पराजित होकर यह सञ्जपाल के साथ सुस्सल के पास आया (८.४५५)। सुस्सल ने इसे पलायन करती हुई सेना को रोकने के लिये विजयक्षेत्र भेजा (८.५१२)।

२. **लक्कक,** एक पदाती का नाम है (८.४६७)।

लक्कनचन्द्र, एक डामर का नाम है (७.११७२)।

१. **लद्मक,** प्रयाग के भाँजे और भिक्षाचर के विद्रोही सारथि का नाम है। जब भिक्षाचर ने इसे कैद करने का प्रयास किया तब यह सुस्सल के पास भाग गया (८.९११)। ८.१२८६, १२८७ (इसके पुत्र का नाम शृङ्गार था), १३८२, १५३९, १६३०, १६३३ (इसने डामरों को अपने अधीन करके कुछ कीर्ति प्राप्त की), १६६०, १७२६, १७३८ (जब इसके सैनिक एक-एक करके भागने लगे तब टिक्क ने भयभीत होकर अपनी एक उँगली काट दी), १८४९, १८७३ (यह सेना-सहित भाग गया), १९०० (यह बन्दी हुआ), १९१८ (राजा जयसिंह ने छत्तीस लाख दीनार देकर इसे मुक्त कराया), २०३५, २०४६, २४७१ (काश्मीर में जब तक यह मन्त्री रहा तब तक शासन निष्कण्टक चलता रहा)।

२. **लद्मक,** सुज्जि के एक भ्राता का नाम है (८.२१७७)।

लद्मण, श्रीरामदाशरथी के अनुज का नाम है (४.२७४)। 'रामलक्ष्मणावेताविति'. (७.१२०२)। ८.३३७२।

लद्मणस्वामी, एक देवता का नाम है (४.२७६)।

लद्मी, धन की अधिष्ठात्री देवी का नाम है (२.१३९)। इनका वर्णन (५.५ और बाद)। ५.१३६; ७.२१५।

लद्मीधर, टक्क देश के निवासी एक मन्त्री का नाम है (७.१२०७)। राजा हर्ष ने मंत्री, कलशराज, को कैद करके इसके घर में रक्खा (७.१२१२)। मल्ल का छोटा पुत्र इसकी पत्नी से प्रेम करने लगा (७.१२४६)। इसने क्रोधपूर्वक उच्चल तथा सुस्सल के वध के लिये राजा हर्ष से निवेदन किया परन्तु हर्ष इसकी बात पर चुप रहा (७.१२४९)। हर्ष ने इसके द्वारा संग्रामपाल के पास उच्चल का वध कर देने का संदेश भेजा (७.१२५८)। डामरों ने इसे बन्दी बना लिया (७.१५०५)।

लङ्का = सिंहलद्वीप : १.२९८; ३.७३ (लङ्काधिराजस्तमुपतस्थे विभीषणः), ७५ (पतिर्लङ्काम्), ४४७; ४.५०३ (लङ्केन्द्रातपञ्च राक्षसान्)।

लङ्केश्वर = रावण : ८.३३५ ।

लम्बकूर्च = सुस्सल : ८.९०४, ९४८ ।

ललितपुर, एक नगर का नाम है (४.१८७) ।

१. **ललितादित्य–मुक्तापीड,** प्रतापादित्य के पुत्र, मुक्तापीड, का दूसरा नाम है (४.४३) । तारापीड के बाद यह काश्मीर का राजा हुआ (४.१२६) । यशोवर्मा रूपी पर्वत से उत्पन्न सेनारूपी नदी को अपने प्रताप से शुष्क कर देने के कारण ही यह प्रतापादित्य (प्रबल तेजस्वी) बन गया (४.१३३-१३४) । यशोवर्मा ने इससे युद्ध नहीं किया (५.१३५) । यशोवर्मा के साथ इसके सन्धिपत्र के लेख का विवरण (४.१३८) । इसके समय में महाप्रतीहारपीडा, महासन्धि विग्रह, महाअश्वशाला, महाभाण्डागार, और महासाधनभाग नाम के पाँच विरुदों का नूतन निर्माण हुआ (४.१४२) । इसको प्रणाम करते समय चरण्रूपी दर्पण में अपना प्रतिबिम्ब देखकर रट्टा देवी अत्यन्त प्रसन्न हुई (४.१५४) । इसकी दिग्विजय का वर्णन (४.१४७-१८०) । इसके द्वारा नगरों की स्थापना (४.१८१-१९३) । इसने परिहासपुर का निर्माण कराया (४.१९४) । इसकी एक पत्नी का नाम चक्रमर्दिका था (४.२१३) । कपित्थ-फल की कथा (४.२१९-२४१) । इसके मन्त्री का नाम चङ्कुण था (४.२४६-२६३) । इसने विष्णु की प्रतिमाओं की खोज की (४.२६५) । मरुस्थल के इसके अभियान (४.२७७-३०६) । इसने गौडराज का वध किया (४.३२३) । इसने प्रवरपुर को भस्म करने का प्रयास किया (४.३१०) । इसके अन्तिम आदेश (४.३४०) । इसने ३६ वर्ष, ७ मास, ग्यारह दिन तक राज्य किया (४.३६६) । "कुछ इतिहासकारों का मत है कि आर्याणक देश में सहसा अत्यधिक हिमपात होने के कारण इसकी उसी में दबकर मृत्यु हो गई । कुछ अन्य इतिहासकारों के अनुसार इसने अग्नि में प्रवेश करके मृत्यु प्राप्त की, की । कुछ यह भी कहते हैं कि यह अपनी सेना सहित उत्तरापथ में पृथिवी में समा गया । इस प्रकार इसके कार्यों की विचित्र गाथाओं की ही भाँति इसकी मृत्यु की भी अनेक कथायें कही जाती है (४.३६६-३७१) ।" इसके प्रयास से महापद्म सरोवर का कुछ जल निकाल दिया गया था जिससे कृषि के योग्य कुछ और भूमि उपलब्ध हो गई थी (५.६९) । इसकी आत्महत्या की कथा (७.१४२८) । ८.२४०० ।

२. **ललितादित्य,** राजा वज्रादित्य का एक दूसरा नाम है (४.३९३) ।

३. **ललितादित्य,** राजा जयसिंह के पुत्र का नाम है (८.३३७३,३३७५) ।

ललितादित्यपुर, एक स्थान का नाम है (६.२१९) । दिद्दा रानी ने यहाँ के ब्राह्मणों को अपने पक्ष में कर लिया (६.२१९, २२४) ।

ललितापीड, राजा जयापीड और रानी दुर्गा के गर्भ से उत्पन्न पुत्र का नाम है जो जयापीड के बाद काश्मीर का शासक हुआ (४.६६०)। इसने १२ वर्ष तक राज्य किया (४.६७३)। इसकी रखैल, एक कल्यपाल जाति की वेश्या, जयादेवी से उत्पन्न पुत्र, चिप्पट जयापीड, काश्मीर का राजा हुआ (४.६७६)। जयादेवी के सौन्दर्य पर मुग्ध होकर इसने उसे अपने अन्तःपुर में रख लिया था (४.६७७)। ८.३४२६।

लल्यान, एक भीषण वन का नाम है (६.१८३)।

लल्ला, राजा यशस्कर की एक रानी का नाम है (६.७४)। इसके और एक वेलावित्त (सेवक) के प्रेम-सम्बन्ध को हाडी नामक एक अधिकारी ने देख लिया (६.७७, ८१)।

लल्लिय, उत्तरापथ के एक प्रख्यात राजा का नाम है जिसकी राजधानी उद्भाण्डपुर थी (५.१५५)। प्रभाकरवर्मा ने उद्भाण्डपुर के शाहिराज्य को जीत कर इसके पुत्र, तोरमाण, को दे दिया (५.२३३)।

लव, अशोक के पूर्वज, एक राजा का नाम है जिसका पूर्वमिहिर ने वर्णन किया है (१.१८)। यह गोनन्द द्वितीय के कुछ समय बाद काश्मीर का राजा हुआ (१.८४)। इसने लोलोर नामक नगर बसाया (१.८६)। यह लेदरी नदी के तट पर बसे लेवार ग्राम को ब्राह्मणों को दान देकर स्वर्ग चला गया (१.८७)। इसके पुत्र का नाम कुश था (८.३४०९)।

लवट, एक कुली का नाम है (५.१७७, २०५)। इसका पुत्र, सड्ड, कुटिल व्यक्ति था और उसने उच्चल की मृत्यु के बाद लुड्ड आदि को राज्य हस्तगत कर लेने का परामर्श दिया (८.२६३)।

लवणोत्स, एक नगर का नाम है जिसे राजा बक ने बसाया था (१.३२९)। ६.४६, ५७; ७.७६२, १५३७, १६५८।

लवन्य, लोहर प्रान्त के निवासियों का नाम है (७.११७१)। राजा हर्ष ने यहाँ के डामरों का वध कराया (७.१२२९-१२३३)। 'लवन्यमुण्डैरुच्चण्डैर्विस्तीर्णास्तोरणस्रजः,' (७.१२३७)। ७.१२५५, १३७८; ८.७४७, ७७६, ७८०, ९१०, ९५५, ९५६, १०१०, १०३२, ११३८, १०६२, १११८, ११२७, ११३१, १२६८, १४५७, १५३८, १६६०, १६८७, १९९३, २१९७, २२०५, २२०८, २२२०, २३३८, २५३८, २६१०, २६७८, २६९९, २८०८ २८५८, २९५१, ३११६, ३१७८, ३२८४, ३२९७, ३४४७।

१. **लवराज,** मरिच के पिता का नाम है जिसे सुस्सल की आज्ञा से सूली पर चढ़ा दिया गया (८.३९९)।

२. **लवराज,** टक्कराज्य के राजा का नाम है जिसका पुत्र कमलिय, राजा

सुस्सल की ओर से युद्ध में अग्रणी बना हुआ था (८.१०९१)। इसके पुत्र का नाम कमलिय था (८.११९४)।

३. लवराज, एक ब्राह्मण का नाम है जिसने सुस्सल की हत्या के बाद हुये विद्रोह में वीरगति प्राप्त की थी (८.१३४५)।

लहर, एक स्थान का नाम है : ५.५१; ७.९११, १३६०, १३६१, १३७३; ८.३८, ४२७, ४३७, ५९५, ६०२, ६४१, ६४२, ६६७, ७२३, ७२४, ७२९, ७४३, ९३७, ९४६, ११०४, ११२८, ११३०, ११३२, ११३९, १३६४, ३११५। देखिये लोहर भी।

लाङ्गलध्वज—बलराम : १.६१।

लाट, एक देश का नाम है : १.३००; ४.२०९; ६.३००।

लाड, राजा शङ्करवर्मा के एक राजसेवक का नाम है जिसने राजा की मृत्यु के बाद अपना प्राण त्याग दिया (५.२२७)।

लिङ्ग = शिव : २.१२८, १२९, १३१, १३८; ३.४४५; ८.२३९८

लुड्डा, एक कुलटा धीवर स्त्री का नाम है (७.४०५)।

लुल्ला, लोहर के एक मंत्री का नाम है (८.१८३२)। यह फुल्लपुर में उपस्थित हुआ (८.१८४३)। इसे बन्दी बनाया गया (८.१८९९)।

लूता, एक कष्टकर व्याधि का नाम है : ४.५२४, ५२८; ५.१८५, १८७; ७.१७८; ८.१६०४, १६४१।

लेदरी, एक नदी का नाम है (१.८७)।

लेवार, लेदरी नदी के तट पर बसे एक गाँव का नाम है जिसे लव ने ब्राह्मणों को दान कर दिया (१.८७)।

लोकपुण्य, एक नगर का नाम है : ४.१९३; ७.१२२९, १३५७; ८.५२३, १४२९।

लोकालोक, एक पर्वत का नाम है (१.१३७)।

लोचनोड्डारक, एक ग्राम का नाम है : ८.१४२७।

लोचनोत्स, एक ग्राम का नाम है जिसे ललितापीड ने अग्रहार के रूप में ब्राह्मणों को दान किया (४.६७३)।

लोठक (लोष्ठक भी), डामर पृथ्वीहर के पुत्र का नाम है (८.२४९६, २७४८)। 'पृथ्वीहरजो लोठकोपतत्', (८.२७९९)। इसने रिल्हण से युद्ध किया (८.२८१४)। 'पार्थ्वीहरिः', (८.२८३७)। रिल्हण ने इसे पराजित किया था (८.२९१२)। इसने धन्य आदि के द्वारा नाग का वध करा दिया (८.२९९६)। राजा जयसिंह ने इसका वध करा दिया (८.३३१२)।

लोठन (**लोष्टन** भी), मल्ल द्वारा श्वेता के गर्भ से उत्पन्न एक पुत्र का नाम है जिसके वध के लिये शङ्कराज प्रयत्नशील था (८.३७४)। यह सल्हण का भाई था। किसी दिन सल्हण जिस स्त्री के साथ भोग करता था उसी से दूसरे दिन यह भी आनन्द करता था (८.४२०)। इसके श्वसुर, ओजः सूद को राजा सल्हण ने अपना द्वारपाल बनाया (८.४२२)। राजा सल्हण ने इसे गर्गचन्द्र के प्रति विद्रोह करनेवाले लोगों के साथ भेज दिया (८.४३३)। जब सुस्सल को देखकर राजसिंहासन बोल उठा तब यह व्यग्र हो गया (८.४७७)। लोहर में जाकर सुस्सल ने इसे तथा इसके भाई सल्हण को बन्दी बना लिया (८.५१९)। राजा सुस्सल ने इसे तथा इसके भाई, सल्हण, को कैदकर के लोहर पर्वत पर रक्खा था (८.१७९५)। जिस दिन भिक्षाचर की मृत्यु हुई उसी दिन लोहर दुर्ग के कर्मचारियों ने इसका राज्याभिषेक कर दिया (८.१७९६)। इसकी पत्नी के साथ दुर्ग के सब कर्मचारियों ने मिलकर एक जाली आज्ञापत्र बनाया (८.१८२२)। इसे लोगों ने लोहर दुर्ग में राज्योचित वेष-भूषा से अलंकृत होकर बैठे देखा (८.१८२६)। राजा सुस्सल ने इसकी पुत्री, पद्मलेखा, को शूर को देकर इसे कारगार में भेज दिया (८.१८४४)। इसने राजा जयसिंह के समक्ष आत्मसमर्पण किया (८.१८४६)। ८.१८५२, १८५९, १८७० (इसने सोमपाल की माँग को ठुकरा दिया), १९०१ (इसने शूर और माजिक को सोमपाल के पास भेजा), १९१० (इसकी सम्पदा कुवेर के समकक्ष हो गई), १९१४ (इसके एकमात्र पुत्र का नाम दिल्ह था), १९३०, १९३३, १९३५ (इसे ज्ञात हुआ कि मल्लार्जुन षडयन्त्रकारियों से मिल गया), १९४३ (लौकिक वर्ष ४९०० की फाल्गुन शुक्ल त्रयोदशी को छः वर्ष राज्य करने के बाद इसके हाथ से राज्य चला गया), १९७४, १९८९ (इसने मल्लार्जुन को पकड़ लिया), १९९६ (कोष्ठेश्वर ने इससे सन्धि कर ली), २००३, २००५ (इसे साथ लेकर कोष्ठेश्वर ने मल्लार्जुन पर आक्रमण किया), २००९, २११६ (यह भाग कर हाडिग्राम आया), २२२१ (मल्लार्जुन ने इसे बुलाया था), २४८१ (यह विड्डसीह को उकसाने लगा), २४८८ (यह अलङ्कारचक के पास आया), २५२५ (यह कर्णाट के दुर्ग से निकला), २५३३, २५९५, २६११, २६४१ (लौकिक वर्ष ४२१९ की फाल्गुन शुक्ल दशमी को साठ वर्ष की अवस्था में यह पुनः बन्दी हुआ), २६५१, २६६३ (इसने अपने को हीन माना), २६७५ (इसने और विग्रहराज ने संधि कर ली), २७२९ (यह बन्दी हुआ)।

लोठरथ, चित्ररथ के बड़े भाई का नाम है जिसने भाग कर एक नर्तकी के घर में शरण ली (८.२२५२)।

लोठिका, राजा संग्रामराज की पुत्री का नाम है जिसका विवाह दिद्दामठ के अध्यक्ष, प्रेम, के साथ हुआ (७.११)। इसने लोठिका मठ बनवाया (७.१२०)।

लोठिकामठ, राजा संग्रामराज की पुत्री, लोठिका, द्वारा बनवाये गये एक मठ का नाम है (७.१२०)। श्रीलेखा ने इस मठ में आग लगवा दी (७.१४१)। इसके मठाधीश का नाम केशव था (८.४३५)।

लोलाह, एक स्थान का नाम है जहाँ एकत्र होकर डामरों ने विशाल सेना एकत्र की (७.१२४१)।

लोलोर, एक नगर का नाम है जिसे लव ने बसाया था (१.८६)।

१. **लोष्टक,** ओवनाग्राम-निवासी एक ग्रामदेवज्ञ का नाम है (७.२९५)। इसको ग्रामक्षेत्रपाल की कृपा से मुट्ठी में रक्खी हुई वस्तु का ज्ञान हो गया जिससे इसका नाम मुष्टिलोष्ठक पड़ गया (७.२९६)।

२. **लोष्टक,** सेल्यपुर के एक डामर का नाम है जिसका वध करके उच्चल सेना-सहित सेल्यपुर में प्रविष्ट हुआ (८.२०२)।

लोष्टधर, हलधर के पौत्र का नाम है जिसने हर्ष को प्रसन्न करने के लिये उन्हें कलशेश्वर मन्दिर की सम्पदा छीन लेने का परामर्श दिया (७.१०७६)। इसने पूर्वसमय के भीमशाहि का उल्लेख किया (७.१०८०)। ८.११७।

लोष्टसाहि, राजा सुस्सल के विरोधी, एक काकवंशी प्रमुख डामर योद्धा, का नाम है जिसका सुस्सल के सैनिकों ने वध कर दिया (८.११०२)।

लोष्टावट्ट, उच्चल के एक सैनिक का नाम है जिसका कलशराज ठक्कुर के सैनिकों ने वध कर दिया (७.१२९५)।

लोष्ठ, एक देश का नाम है जहाँ के अनेक लोग विस्तता नदी पार करते समय पुल टूट जाने से मृत्यु को प्राप्त हुये (८.७१८)।

१. **लोष्ठक**—देखिये **लोठक**।

२. **लोष्ठक,** नाग के भ्रातृव्य का नाम है (८.२९९६, ३३०६, ३३०७)।

लोष्टन—देखिये **लोठन**।

लोस्तोन्पा, एक यूप का नाम है जिसका अल्लोर ने निर्माण कराया था (३.१०)।

लोहर, एक प्रान्त का नाम है : ४.१७७; ६.१७६; ७.१४०, ५८१, ५८९, ७०३, ७८१, ८६२, ९६५, ९६९, ९९६, १०००, १०४०, ११००, ११७१, १२९९, १३८६, १५६८, १५८६, १५९८, १६१३ (लोहरकोट्ट); ८.८, २०३, २०६, २९४ ३७९, ४११, ४४०, ५१९, ५६१, ५६७, ५८४, ६३९, ६४५, ७१७, ७६९, ८३१, ८८४, ९१४, १०४७, १११४, १२२७,

१२२८, १३६३, १६३०, १६३२, १७९५, १८३२, १८५८, १९०९, १९२९, १९३२, १९९६, २०१२ (लोहरेश्वरः), २०३५, २०९४, २२७७, २३४७, २७७६, ३३०१, ३३७१ (लोहरमहीपालम्), ३३७२। देखिये लहर भी।

व

वक्राङ्किसंग्राम—देखिये संग्रामदेव (वस्था०)।

वङ्गाल (बंगाल ?), एक देश का नाम है (३.४८०)।

१. वज्र, व्रजेन्द्र के पुत्र और राजा नरेन्द्रादित्य के मंत्री का नाम है (३.३८४)।

२. वज्र, गौरीश्वर के मन्दिर के द्वारपाल, भूति, के पुत्र का नाम है (७.२०७)।

३. वज्र, क्षेम के पुत्र का नाम है (७.८९४)।

४. वज्र = हीरा : ४.५१, ३३१।

वज्रधर, बब्बापुर के राजा का नाम है जो अन्य चार राजाओं के साथ मिलकर काश्मीर पर आक्रमण करने के लिये सन्नद्ध हुआ (८.५३८, ६२५)।

वज्रवृक्ष, एक प्रकार के वृक्ष (सेहुँड़) का नाम है (४.५२७)।

वज्रसार, राजा शङ्करवर्मा के राजसेवक का नाम है जिसने राजा की मृत्यु के बाद अपना प्राण त्याग दिया (५.२२७)।

१. वज्रादित्य, प्रतापादित्यपुत्र चन्द्रापीड का दूसरा नाम है (४.४३)।

२. वज्रादित्य, राजा ललितादित्य के दूसरे पुत्र का नाम है (४.३५५)। "कुवलयापीड़ के राज्य त्याग देने के बाद रानी चक्रमर्दिका के गर्भ से उत्पन्न कुवलयापीड का यह सौतेला भाई राजा हुआ। इसने बप्पियक और ललितादित्य नाम भी धारण किया (४.३९३)।" यह अत्यन्त क्रूर स्वभाव का व्यक्ति था (४.३९४)। इसने ७ वर्ष तक राज्य किया जिसके बाद क्षयरोग से इसकी मृत्यु हो गई (४.३९८)। ८.३४२४।

१. वजेन्द्र, अञ्जना के पिता का नाम है (३.१०५)।

२. वजेन्द्र, जयेन्द्र के पुत्र का नाम है जिसने भवच्छेदक नामक ग्राम बसाया (३.३८१)। वज्र और कनक नामक इसके पुत्र राजा नरेन्दादित्य के मन्त्री थे (३.३८४)।

वटेश्वर, एक प्रसिद्ध शिवलिङ्ग का नाम है : १.१९४, १९५।

१. वट्ट, रड्ड के एक सम्बन्धी का नाम है (८.३४५)।

२. वट्ट, एक अधिकारी का नाम है (८.५६८, ९६०, ९६७)।

३. वट्ट, मल्ल के पिता का नाम है (८.१४१६)।

वडोत्स, एक स्थान का नाम है (८.१३०६)।

वडोसक, एक स्थान का नाम है (८.१२६४)।

वत्सराज, एक प्रतीहार का नाग है (६.३४६)।

वनग्राम, एक ग्राम का नाम है (८.१४३८)।

वनप्रस्थ, लोहर के समीप स्थित एक स्थान का नाम है (८.१९२९)।

वनिकावास, एक ग्राम का नाम है (८,१८७७)।

१. **वराह,** एक देवता का नाम है जिनकी प्रतिमा वराहमूल में स्थापित थी (६.२०६)।

२. **वराह,** गौरीश्वर मंदिर के द्वारपाल, भूति, के पुत्र का नाम है। (७.२०७)। इसके पुत्र का नाम बिम्ब था (७.२१६)।

३. **वराह,** भगवान विष्णु के एक अवतार का नाम है (८.३३३३)।

वराहक्षेत्र, एक क्षेत्र का नाम है : ६.१८६, २०४, २०६; ७.१३०९ (वराहमूल), १३१० (जब उच्चल यहाँ वराहदेव का दर्शन करने आया तो भगवान् के मस्तक से एक माला खिसककर उच्चल के मस्तक पर आ गिरी); ८.२४२५।

वराहदेव, वितस्तात्रपुर-निवासी एक व्यक्ति का नाम है जिसे कलश ने द्वाराधिकारी बनाया (७.३६४)। राजा कलश ने इसके भ्राता, कन्दर्पदेव, को द्वारपति बनाया (७.५७६)।

वराहमूल, एक स्थान का नाम है : ७.१३०९; ८.४५१, ४५२, १२२९।

वराहवार्त, एक स्थान का नाम है (८.१९२)।

वरुण, जल के अधिष्ठाता का नाम है : 'वारुणं छत्रम्', (२.१४८)। 'वरुणं करुणानिधे', (३.५३)। 'वरुणं धरणीधरः', (३.६३)।

वर्णट, राजा यशस्कर के प्रपितृव्य, रामदेव के पुत्र, का नाम है जिसका राजा ने अभिषेक किया (६.९१)। इसने राजा यशस्कर की उपेक्षा की थी (६.९४)। राजा की आज्ञा से इसे बन्दी बना लिया गया (६.९६)। ६.११३; ८. ३५७, ३४३६।

वर्णसोम, एक वीर का नाम है जिसके वंश में उत्पन्न, विजय, भिक्षाचर का सेनापति था (८.७७८)।

वर्तुल, एक देश का नाम है (८.२८७)। यहाँ के राजा का नाम सहजपाल था (८.५३९)।

वर्धनस्वामी, एक देवता का नाम है (३.३५७; ६.१९१)।

वर्धमानेश, एक देवता, शिव, का नाम है (२.१२३)।

बर्हटचक्र, एक पर्वतीय स्थान का नाम है जहाँ अपने आप अग्नि उत्पन्न होती है (८.२५०)।

१. **वल्गा**, दिद्दारानी की एक दासी का नाम है (६.३०८)।

२. **वल्गा**, रानी सूर्यमती की एक दासी का नाम है जिसने रानी के सती होने के समय अग्नि में प्रवेश किया (७.४८१)।

वल्गामठ, वल्गादासी द्वारा निर्मित कराये गये एक मठ का नाम है (६.३०८)।

वल्लभा, मल्ल की पत्नी, कुमुदलेखा, की बहन का नाम है जो मल्ल की मृत्यु के बाद सती हो गई (७.१४८६)।

वल्लापुर, एक स्थान का नाम है ७.२२०, २७०, ५८८; ८.५३९, ५४२, ५४७, ६२२, १०८३, १४४४, २४५२।

१. **वसन्त**, एक ऋतु का नाम है (८.११५५)।

२. **वसन्त**, धन्य तथा उदय के भ्राता का नाम है, जिसकी पुत्री कोष्ठेश्वर को विवाहित थी (८.२३३७)।

वसन्तलेखा, राजा हर्ष की रानी का नाम है जिसने त्रिपुरेश्वर में मठों एवं अग्रहारों की स्थापना की (७.९५६)। जब राजमहल पर शत्रुओं का अधिकार हो गया तब बाहर निकलने का कोई मार्ग ने देखकर यह अग्नि में जलकर भस्म हो गई (७.१५७९।

वसिष्ठ, एक प्राचीन महर्षि का नाम है : ४.६४७; ८.२४३० (इन्हें ज्येष्ठ रुद्र का उपासक कहा गया है)।

वसुकुल, राजा हिरण्याक्ष के पौत्र का नाम है जिसने ६० वर्ष तक काश्मीर पर राज्य किया (१.२८८)। ३.५७; ८.३४१५।

वसुनन्द, राजा क्षितिनन्द के पुत्र का नाम है जिसने ५२ वर्ष २ मास तक काश्मीर पर राज्य किया। इसने कामशास्त्र के एक विस्तृत ग्रन्थ की भी रचना की (१.३३७)। ८.३४१५।

वसुन्धरा = पृथिवी : ४.२६४।

वह्निपुर, एक स्थान का नाम है (७.१४९८)।

वाक्पतिराज, एक कवि का नाम है (४.१४४)।

वाक्पुष्टा, तुञ्जीन की रानी का नाम है (२.११)।

वाक्पुष्टाटवी, उस स्थान का नाम है जहाँ रानी वाक्पुष्टा अपने पति के पार्थिव शरीर के साथ सती हुई थी (२.५७)।

वाग, शमाला के एक डामर का नाम है जिसे जयराज ने अपने पास बुला लिया (७.१०२२)।

वाग्देवी = सरस्वती : ५.१५९ ।

वाचस्पति = देवगुरु बृहस्पति (७.९४१) ।

वाट्टदेव, एक डामर का नाम है जो काश्मीर से निर्वासित था (७.१२९२) । उच्चल ने इसे अपने इच्छानुसार मार्ग से काश्मीर में प्रविष्ट होने की आज्ञा दी (७.१२९८) ।

वातगण्ड, एक पार्षद का नाम है (७.९९३) । मन्त्री आनन्द की एक उपाधि (७.११७७) ।

वातुलानक, एक स्थान का नाम है (४.३१२) ।

वानरेन्धन : ८.२६२७ ।

१. **वामन,** राजा, जयापीड के मन्त्रियों में से एक का नाम है (४.४९७) ।

२. **वामन,** जिष्णु के पुत्र, एक विट, का नाम है (६.१५५) ।

३. **वामन,** जयानन्द के एक सहायक का नाम है जिसे कलश ने सर्वाधिकारी बनाया (७.५६८) । कलश के अतिथि राजाओं की इसने पर्याप्त सेवा की (७.५९३) । यह कलश की अन्त्येष्टि कर रहा था (७.७२९) । राजा हर्ष ने इसके स्थान पर आनन्द को पादाग्र का अधिकार दिया (७.९९४) । जब राजा हर्ष ने धम्मट का वध कराने की योजना पर मंत्रियों से मन्त्रणा आरम्भ की तब इसने कहा कि जब तक कार्य हो नहीं जाता तब तक कोई मंत्री बाहर न जाने पाये (७.१०४३) । इसके पुत्र, क्षेम, ने राजा हर्ष को उकसाया (७.१०७३) ।

वारबाल, जलौक द्वारा स्थापित एक अग्रहार का नाम है (१.१२१) ।

वाराणसी, भारत के एक प्रसिद्ध नगर और तीर्थ का नाम है (३.२९७) । मातृगुप्त यहाँ आया (३.३२०) । ७.६४६,१००७, १०१०; ८.१३ ।

वालिन्, एक वानरराज का नाम है जिसका श्रीराम दाशरथी ने वध किया था (८.२९७६) ।

वाश्चिका, एक अग्रहार का नाम है जिसे गोपादित्य ने आर्यों के निवास के लिये प्रदान किया (१.३४३) ।

विक्रमराज, वल्लापुर के एक राजा का नाम है (८.२४५२) ।

१. **विक्रमादित्य,** एक विदेशी राजा का नाम है जो शकारि विक्रमादित्य से एक भिन्न व्यक्ति है (२.५–३) ।

२. **विक्रमादित्य**—उज्जयिनी में श्रीमान् हर्ष नामक चक्रवर्ती राजा विक्रमादित्य राज्य करता था (३.१२५) । इसने शकों और म्लेच्छ जाति के लोगों का उच्छेद कर दिया (३.१२८) । इसके शासन का विस्तृत वर्णन

(३.१२८ और बाद)। काश्मीर के मन्त्रियों ने एक राजा प्रदान करने के लिये इनसे प्रार्थना की थी जिसका ध्यान रखकर इन्होंने मातृगुप्त को राजा बनाने के लिये काश्मीर भेजा (३.२४२)। मातृगुप्त इनसे भी अधिक लोकप्रिय राजा सिद्ध हुआ (३.२५८)। प्रवरसेन ने इन्हें पराजित करने की इच्छा प्रगट की (३.२८२)। जब प्रवरसेन त्रिगर्त देश पर विजय प्राप्त करके आगे बढ़ा तब उसने इनकी मृत्यु का समाचार सुना (३.२८५)। प्रवरसेन ने इनके राज्य-च्युत पुत्र, प्रतापशील, को पुन: उज्जयिनी का राजा बना दिया (३.३३०)। इन्होंने काश्मीर का जो सिंहासन उज्जैन मँगवा लिया था उसे प्रवरसेन पुन: काश्मीर लाया (३.३३१)। एक पिशाच ने इनके धैर्य की प्रशंसा की (६.३४३)।

३. **विक्रमादित्य,** राजा रणादित्य के पुत्र का नाम है जो अपने पिता के बाद काश्मीर का राजा हुआ। इसने विक्रमेश्वर नामक शिव की स्थापना की (३.४७४)। ८.३४२१।

विक्रमेश्वर, एक शिव का नाम है जिनकी विक्रमादित्य ने स्थापना की थी (३.४७४)।

१. **विग्रहराज,** दिद्दा रानी के भ्राता के पुत्र का नाम (६.३३५)। यह काश्मीर से वापस चला गया (६.३४०)। इसने ब्राह्मणों से पुन: अनशन आरम्भ करा दिया (६.३४३)। यह गुप्त पत्र लिखकर राजा को तुङ्ग का वध कर देने की प्रेरणा देने लगा (७.७४)। इसने राज्य हस्तगत करने की चेष्टा में काश्मीर पर आक्रमण किया (७.१३९)। इसके पुत्र का नाम क्षितिराज था (७.२५१)।

२. **विग्रहराज,** सुस्सल के एक पुत्र का नाम है जिसे लोठन ने अपना प्रधान मंत्री बनाया (८.१९१६)। ८.२४८९, २५९५, २६६० (इसने अभयदान प्राप्त करने की इच्छा से राजा जयसिंह के चरणों का स्पर्श किया), २६७०, २६७५ (इसने और लोठन ने संधि कर ली)।

विचित्रसिंह, मम्मा वेश्या के गर्भ से कन्दर्पसिंह द्वारा उत्पन्न पुत्र का नाम है (७.१०४)।

१. **विजय,** एअ राजा का नाम है जिसने तुन्जीन के बाद ८ वर्षों तक काश्मीर पर राज्य किया। इसने विजयेश्वर शिव की स्थापना की और विजय-नगर नामक नगर बसाया (२.६२)। ८.३४१८।

२. **विजय,** मल्लराज के पुरोहित का नाम है जो युद्ध में मर चुका था (७.१४८०)।

३. **विजय,** देवसरस् के पुत्र और गर्गचन्द्र के साले का नाम है (८.

५०४)। इसने विजयेश्वर में सुस्सल के सेनापति हर्षमित्र का वध कर दिया (८.५०९) । ८.५१८, ५२२ (डामरो देवसरसोद्भवौ विजयगोत्रिणौ), ५२४ (विजये गर्गसंबन्धात्सदाक्षिण्यो महीपतिः), ५८७ (राजा सुस्सल इससे विशेष प्रेम रखता था), ६६३ (इसने टिक्क आदि अपने सगोत्रियों को एकत्र करके स्थाम में राजा की सेना को घेर लिया), ६६६, ६८४ (इसने हर्ष के नाती भिक्षाचर को अपने पास बुला लिया), ६९५ (इसके वध का उल्लेख), ७१४ (ज्येष्ठ शुक्ल षष्ठी को इसकी मृत्यु हुई), १०६९ (इसकी माता का नाम सिल्ला था) ।

४. **विजय,** राजा सुस्सल की सेना के एक प्रमुख अश्वारोही का नाम है (८.१०८७) । ८.११६० ।

५. **विजय,** वर्णसोम आदि प्रमुख शस्त्रधारियों के वंश में उत्पन्न एक वीर का नाम है जो भिक्षाचर की सेना का सेनापति था (८.७७८) ।

६. **विजय,** भवकीय के पुत्र का नाम है जिसके कल्याणपर में विद्यमान सब प्रासादों को राजा सुस्सल ने जलवा दिया (८.१२६३) । इसके भय से भवकीय का लघु भ्राता, सुस्सल की शरण में जाकर कैद हो गया (८.१२६५) । इसने और आनन्द ने एक दूसरे की हत्या की (८.२३५०) ।

विजयक्षेत्र, विजयेश्वर के क्षेत्र का नाम है (१.२७५); ७.३३६, ३६१, ६७१, ४३१, ५२४, ७१०, ७२७, १३७१, १४९८; ८.१७९, ५१२, ७४९ ९०८, ९६९, ९७१, ९९६ १००२, १०४३, १०५७, १०६२, ११४५, १५१०, १६७६, १७०३, १७७९, ३२९७ । देखिये **विजयेश्वर** भी ।

विजयपाल, एक राजा का नाम है। इसकी मृत्यु के बाद इसकी पुत्री मेघमंजरी को कालिञ्जराधीश कलह ने पालकर बड़ा किया और उसी से सुस्सल का विवाह हुआ (८.२०५) ।

विजयमल्ल, राजा कलश की पत्नी, पद्मश्री, से उत्पन्न पुत्र का नाम है जो उत्कर्ष से झगड़ने लगा (७.७३१) । हर्ष ने प्रयाग के द्वारा इसके पास यह संदेश भेजा : 'राजकुमार ! तुम्हारे होते हुये भी तुम्हार भ्राता हर्ष कारागार में है।' (७.७४९.७५०) । उत्कर्ष ने इसे वेतन देना बन्द कर दिया (७.७६०) । उत्कर्ष ने हर्षदेव का वध करा दिया है यह सोचकर यह क्रुद्ध हो उठा (७.८१०) । हर्ष को देखकर यह प्रसन्नता से कुछ क्षणों के लिये स्तब्ध सा हो गया (७.८१९) । जब एक विश्वस्त व्यक्ति ने हर्ष तथा उत्कर्ष का वध करके इसे राजा बन जाने का परामर्श दिया तब इस पर उसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा (७.८२२) । हर्ष ने इससे मंत्रणा की (७.८२६) । लोहर प्रान्त के ठक्कुरों और कारावास के समय के सैनिकों को नियुक्त करके हर्ष ने

विजयमल्ल का भय दूर कर दिया (७.८३५)। हर्ष इसे गुरु के समान आदरणीय मानकर इसके परामर्श के अनुसार राज्यकार्य करता था (७.८८४)। दुष्टों की बात में आकर यह विद्रोह करने के लिये उद्यत हुआ (७.८९९)। इसने हर्ष की अश्वशाला के अश्वों का अपहरण कर लिया (७.९०३)। इसके पुत्र, जयमल्ल, का राजा हर्ष ने गुप्त रीति से वध करा दिया (७.१०६९)। समरस्वामी के मन्दिर के पार्षद, सहेलक, को इसका सहायक समझ कर हर्ष उसपर कुपित था (७.११०५):

विजयमित्र, जिन्दुराज की सेना के वस्त्राधिकारी का नाम है जिसे कलश ने कम्पनेश बनाया (७.३६५)।

१. **विजयराज,** तन्वंग के एक पौत्र का नाम है जिसका राजा हर्ष के सैनिकों ने वध कर दिया (७.१०६५)।

२. **विजयराज,** पृथ्वीराज के पुत्र का नाम (८.२२२७)।

१. **विजयसिंह,** एक श्येनपाल का नाम है जिससे प्रसन्न होकर कलश ने नगरपाल बना दिया (७.५८०)। इससे नगरपाल का पद छीन कर कलश ने गुंगु-पुत्र मल्ल को दे दिया (७.५८३)। इसने हर्ष को राजसिंहासन पर बैठने का परामर्श दिया जिसका हर्ष ने अनुसरण किया (७.८२७)। इसने उत्कर्ष को बलात् बन्दी बना लिया (७.८३२)। उत्कर्ष को बन्दी बनाने के पश्चात् इसने राजा हर्ष को सारा वृत्तान्त बताया (७.८३४) हर्ष ने इसे इसके प्राचीन पद पर नियुक्त किया (७.८८७)।

२. **विजयसिंह,** तिलकसिंह के पिता का नाम है (८.१८४)।

विजयेश, कश्मीर के एक पवित्र तीर्थ और शिवमन्दिर का नाम है (१.३८)। राजा अशोक ने इसका जीर्णोद्धार किया (१.१०५)। १.१०६, ११३, १३१, ३१४; २.१२३ (राजा सन्धिमति इनका दर्शन करने के पश्चात् ही राजकार्य आरम्भ करता था), १२५; ५.४६; ६.९८; ७.१८३, १८४, ३५४, ४५२, ४६३, १५०४; ८.७३३, ९९८, १५०९, २२२२, २३७९। देखिये **विजयक्षेत्र, विजयेश्वर,** भी।

विजयेश्वर, एक तीर्थ का नाम है (१.३१४)। विजय ने विजयेश्वर शिव की स्थापना की (२.६२)। सन्धिमति इनका प्रतिदिन दर्शन करता था (२.१२५)। चिप्पटजयापीड के मामा, पद्म की पत्नी गुणादेवी, ने यहाँ एक मठ की स्थापना की (४.६९६)। ६.९८; ७.१८४, ३५४, ३५६, ३७१, ४०२, ४०९ (विजयेश्वरपत्तनम्), ४८२, ४८६, ४८७, ४९१, ९५२, १५०६, १५१५; ८.५०९, ५६१, ६५२, ७४६, ७४८, ८९९, ९७०, १०६९, ११४०, १४८८, १५७६, २७३३।

विडालवणिक, एक तान्त्रिक का नाम है (७.२८०)। इसने एक बिल्ली पाल रक्खी थी इसी से लोग इसे विडालवणिक कहते थे (७.२८१)।

विड्डसीह, दरदराज यशोधर के एक मंत्री का नाम है। यह यशोधर की पत्नी का उपपति बन गया और राज्य को धीरे-धीरे अपने वश में करने लगा (८.२४५६)। इसने पर्युक से सन्धि कर ली (८.२४६९)। लोठन इसे उकसाने लगा (८.२४८१)। इसने भोज के लिये राज्योचित उपकरण भेजे (८.२७१६)। भोज का समाचार पाकर इसने अनेक राजाओं को बुलाने के लिये दूतों को उत्तरापथ भेजा (८.२७६१)। इसने भोज का समादर करते हुये सेना को युद्ध के लिये भेजा (८.२७८१)। ८.२८७०, २८९९ (इसने भोज को अलंकारचक्र के साथ जाने की अनुमति दे दी), २९०१ (यह सन्धि करने के लिये उत्सुक हुआ), २९०३ (इसकी मृत्यु)।

वितस्ता, काश्मीर की एक प्रसिद्ध नदी का नाम है १.२९, १६३, १६४, २०२ (°पुलिने), २६०; ३.३५४, ३५८; ४.१९१, ३०१, ३९१ (वितस्ता-सिन्धुसंभेदे), ४८६ (पूर्वकाल में महर्षि कश्येप ने इसे काश्मीर में पुन: प्रगट किया था); ५.८८, ८९, ९०, ९७, १०३, १०४, ११८, २७२; ६.८९, १२८, २५५, ३०५ (वितस्तासिन्धुसंगमः); ७.१८०, २१४ (वितस्तासिन्धु-संगमः), ४७२ (वैतस्तं), ४७३, ४७४, ५००, ५९२, ९०९ (वितस्तासिन्धु संगमम), १०७७, १३३९, १३६८, १४८९, १५९५ (वितस्तासिन्धु संगमम्), १६०७, १६२५; ८.४१३, ४२४, ५०६ (वितस्तासिन्धुसंगमाः), ५७९, ७१८, १००४, १०५२, १०६१, १०७३, ११२७ (वितस्तातीरमुत्तमम्), ११७५, ११७९, १५०९, २४३७, ३१४९ (वितस्तासिन्धुसंभेदयात्रायाम्), ३३४९ (वितस्तापुलिने बाणलिङ्गे), ३३५२, ३३५६।

वितस्तात्र, एक स्थान का नाम है (१.१०२)। राजा अशोक ने यहाँ स्तूपों तथा मन्दिरों का निर्माण कराया (१.१०३)। ७.३६४।

वितोला, एक नदी का नाम (८.९२०)।

विदूरथ—'विदूरथादिवृत्तान्तम्', (८.१२७६))

विदेह, गर्गचन्द्र के पुत्र का नाम है जो अपने पिता के जीवित होने का समाचार सुनकर उनसे मिलने गया (८.६१०)।

१. **विद्याधर,** एक चक्रवर्ती का नाम है (१.२१८)।

२. **विद्याधर,** दररपुर के एक शाही राजा का नाम है जिसने विद्रोही विजयमल्ल का स्वागत किया (७.९१३)।

विनयादित्य, राजा जयापीड द्वारा धारण किया गया एक नाम है (४.५१७)।

विनयादित्यपुर, एक नगर का नाम है (४.५१७)।

विनायकदेव, सुस्सल की सेना के एक प्रख्यात वीर का नाम है जिसकी भिक्षाचर की सेना से युद्ध करते समय मृत्यु हुई (८.७३०)।

विन्ध्य, एक पर्वत का नाम है (३.२४०)। ३.३९४; ४.१५३ (विन्ध्याद्रिमार्गाः), १६१ (विन्ध्याद्रि); ५.१५२।

विन्नप, शूर के भतीजे का नाम है (५.२६)। इसके मंत्री, कर्णप, ने शूरवर्मा के द्वितीय पुत्र, सुखवर्मा, को युवराज बनाया (५.१२९)।

विपुलकेशव, एक देवता का नाम है (४.४८४)।

विभवमती, उरशा नरेश की पुत्री का नाम है जो हर्षपुत्र भोज की पत्नी थी। जीवित रहते भोज ने इससे दो-तीन संतान उत्पन्न की। भोज की मृत्यु के बाद भी इससे उसी के वीर्य की एक सन्तान उत्पन्न हुई जिसका नाम भिक्षाचर रक्खा गया (८.१६,१७)।

१. **विभीषण,** अथवा ३. गोनन्द (?) के पुत्र का नाम है जिसने ५३ वर्ष ६ महीने तक काश्मीर पर शासन किया (१.१९३)।

२. **विभीषण,** रावण के पुत्र का नाम है जिसने ३५ वर्ष ६ महीने तक काश्मीर पर शासन किया (१.१९६,१९७)। ८.३४१४।

३. **विभीषण,** लङ्का के राजा का नाम है जिसने राजा मेघवाहन का सत्कार किया (३.७३)। इसने राजा जयापीड के दूत का सत्कार किया (४.५०५)। ८.३४१३।

विभ्रमार्क, शाहिराज त्रिलोचनपाल की सेना के एक डामर वीर का नाम है (७.५८)।

विमलप्रभा, लःखण की पत्नी का नाम है (३.३८४)।

विरहभुजङ्गी, भिक्षा नामक वेश्या का नाम है जो गुण नामक एक क्षुद्र भिक्षुक के साथ रहती थी (७.१६३७)।

विलावग्राम, एक स्थान का नाम है (७.१०१६)।

विशाख, एक ब्राह्मण का नाम है (१.२०४)। इसने सुश्रवा नामक नाग की पुत्री को देखा और उसके सम्बन्ध में पूछा (१.२१५)।

विशोका, एक नदी का नाम है (६.१३०)।

विश्व, एक कोशाधिकारी (गञ्जाधिप) का नाम है (८.२४७६)।

विश्वंभर = विष्णु : ४.८०।

विश्वकर्मा, एक देवता का नाम है (३.३५७)। ८.२४३८।

विश्वामित्र, एक प्राचीन महर्षि का नाम है : ४.६४७, ६४९, ६५०।

विश्वेदेव, देवों के एकवर्ग का नाम है : ८.१०२१ ।

विश्वैकसार, एक मोक्षदायक क्षेत्र का नाम है (५.४४) ।

विश्शावट, अवन्तिपुर के एक ब्राह्मण का नाम है (७.३३७) । इसने हर्ष को यह परामर्श दिया कि वह कलश का वध करके राज्य करे (७.६१७) । इसने हर्ष को पुनः उक्त परामर्श दिया (७.६२१) । इसने स्वयं अपनी योजना का कलश से रहस्योद्घाटन कर दिया (७.६२९) । हर्ष के सैनिकों ने इसकी नाक-कान काटकर इसे सूली पर चढ़ा दिया (७.८९२) ।

विपलाटा, एक स्थान का नाम है : ८.१७७, ६८४, ६९७, १०७४, ११३१, १६६२, १७२९ ।

विष्णु ३.४४४, ४४६; ४.५०८ (विष्णुलोक); ५.११५, १२५ (वैष्णर्व धाम) ।

विष्णुस्वामी, एक देवालय का नाम है (५.९९) ।

विस्मय, एक मुसलमान राजा का नाम है (८.८८५) । बिम्ब इसके पास सहायता के लिये आया (८.९६५) ।

विहार, साधुओं इत्यादि के रहने के स्थान की संज्ञा है। काश्मीर के अनेक राजाओं ने विहारों का निर्माण कराया : १.९३, ९४, ९८, १०३, १४०–१४४ १४६, १४७, १६९, १९९, २००; ३.९, ११, १३, १४, ३५५, ३८०, ४६४, ४७६; ४.७९, १८४, १८८, २००, २१०, २१५, २१६, २६२, ५०७; ६.१७१, १७५, ३०३; ७.६९६, १३३६; ८.२४६, २४८, २४०२, २४१०, २४१७, २४३१, २४३३, ३३४३, ३३५२, ३३५३ ।

वीरदेव, पिशाचपुर के अच्छे गृहस्थ और यशस्कर के एक पूर्वज का नाम है (५.४६९) ।

वीरनाथ, राजा यशस्कर के सन्धिविग्रहिक मंत्री, एक योगी, का नाम है (६.११०) ।

वीरपाल, सुज्जि के एक अनुगामी का नाम है जो कोष्ठेश्वर के पास आ गया (८.२१८२) ।

वीरानक, एक स्थान का नाम है (५.२१४) । यहाँ अपने द्वारपाल का वध हो जाने के कारण राजा शङ्करवर्मा ने इस पर आक्रमण करके इसे समूल नष्ट कर दिया (५.२१५) । यह खशों की निवासभूमि थी (८.४०९) ।

वृद्धक्षत्र, एक पूर्वगामी राजा का नाम है जिनके पुत्र का नाम जयद्रथ था (७.८०४) ।

वृष्णि = यादव : १.६६ ।

वेलावित्त जयसिंह, राजा शङ्करवर्मा के एक कृतज्ञ सेवक का नाम है जिसने राजा की चिता में कूद कर प्राण दे दिया (५.२२६) ।

वैकुण्ठमठ, रत्नादेवी द्वारा स्थापित एक मठ का नाम है (८.२४३३) ।

वैतरणी, एक नदी का नाम है (७.१३५५) ।

वैन्यस्वामी, एक देवालय का नाम है जिसके निकट ही पूर्वकाल में सिन्धु और वितस्ता का संगम था (५.९७,९९) ।

वैवस्वत, सप्तम मन्वन्तर का नाम है (१.२६) ।

वैशाख, एक मास का नाम है : ८.६३५, ६६७, १६७४ ।

वैश्रवण = कुबेर (१.१५५) ।

व्यड्डु, एक साधारण शस्त्रधारी, सड्डु, के पुत्र का नाम है, जिसे राजा उच्चल ने मंत्री बना दिया (८.१८३) । आहत राजा उच्चल ने इसका भी समस्त शरीर कटार से विदीर्ण कर दिया (८.३१६) । दिद्दामठ के पास नागरिकों ने इसे राख और पत्थरों से मार कर धराशायी कर दिया (८.३४९) ।

व्यमड्डुङ्गल, मल्ल के कुल में उत्पन्न, एवं रानी श्रीलेखा के भतीजे के पुत्र का नाम है जिसकी हर्ष ने हत्या करा दी (७.१४६७) ।

व्यड्डुसूह, रानी श्रीलेखा के एक प्रेमी का नाम है (८.१९५७) ।

व्याघ्र, उत्पल के छोटे भाई का नाम है (८.१२८२, १३०२) । इसने सांकेतिक भाषा में उत्पल को राजा सुस्सल का वध कर देने के लिये कहा (८.१३११) । इसने राजा सुस्सल के वक्षःस्थल पर प्रहार किया (८.१३१५) । इसने सुस्सल पर पुनः दो-तीन नलिकाओं का प्रहार किया (८.१३१७) ।

व्यास, प्रसिद्ध पुराण-इतिहासकार एक महर्षि का नाम है (१.१२३) । इनके वंशज (२.१६) ।

व्योमशिव, भट्टारक मठ के मठाधीश का नाम है जिसने खुर्खुट सिद्धि प्राप्त करने का व्रत ले रक्खा था (७.२९८) ।

श

१. **शक,** एक संवत् का नाम है (१.५२,५६) ।

२. **शक,** एक जाति के लोगों का नाम है : २.६; ३.१२८ ।

शकारिविक्रमादित्य—यह वह विक्रमादित्य नहीं है जिसके वंशज, प्रतापादित्य, को अन्धयुधिष्ठिर के बाद राजा बनाया गया (२.६) ।

शकुनी, एक राजा का नाम है जो अशोक का पितामह था (१.१०१)

शक्तिसेन, पर्वगुप्त के नाती, महिमा के श्वसुर, का नाम है (६.२१६)। इसने महिमा को बहिष्कृत करने के लिये दिद्दा द्वारा भेजे आदमियों को समझा-कर वापस लौटाया (६.२१७)।

शक्र = इन्द्र : २.४७; ४.२२४, २३९, ३७२; ७.५३२ (शक्राधिक-वैभवः)।

शङ्करगौरीश, एक शिव का नाम है (५.१५८)।

शङ्करपुर, शङ्करवर्मा द्वारा स्थापित एक नगर का नाम है (५.१५६)।

शङ्करवर्धन, मंत्री मेरुवर्धन के ज्येष्ठ पुत्र का नाम है (५.२६९)। चक्र-वर्मा ने इसे गणनाधिकारी बनाया (५.३०१)। राजा चक्रवर्मा जब मडव-राज्य में था तब राज्य के इस अभिलाषी ने अपने छोटे भ्राता, शम्भुवर्धन, को दूत बनाकर तन्त्रियों के पास भेजा (५.३०३) इसके नेतृत्व में तन्त्री और पदाती भी चक्रवर्मा की डामरसेना से युद्ध के लिये उपस्थित हुये (५.३२८)। चक्रवर्मा ने इसका वध कर दिया (५.३३०)। 'अभूषयद्वीरशय्यां शूरः शङ्करवर्धनः', (५.३३६)।

१. **शङ्करवर्मा,** शूरवर्मा के पुत्र का नाम है जो अवन्तिवर्मा की मृत्यु के बाद काश्मीर का राजा हुआ (५.१२८)। इसने युवराज को परास्त करके अपनी विजय के महान् ओंकार का श्रीगणेश किया (५.१३४)। इसने कवियों द्वारा दिग्विजय-वर्णन की परम्परा को पुनः आरम्भ किया (५.१३९)। इसने भोज द्वारा छीना गया राज्य अपने एक प्रतीहार के रूप में कार्य कर रहे थक्कियवंशी राजकुमार को पुनः वापस करा दिया (५.१५१)। इसने शङ्करपुर नामक नगर बसाया जिसे बाद में लोग पत्तन कहने लगे (५.१५६, २१३)। उरशा में इसकी मृत्यु हुई (५.२२०)। इसके वंश का अन्त हो जाने पर प्रजा की प्रार्थना स्वीकार करके रानी सुगन्धा ने स्वयं राज्यकार्य का सञ्चालन करना आरम्भ किया (५.२४३)। सुगन्धा ने इसके नाती एवं सुखवर्मा की पत्नी गग्गा देवी के पुत्र निर्जितवर्मा को सजातीय होने के कारण राज्याधिकारी बनाने की इच्छा व्यक्त की (५.२५१)। इसका गंजाधिकारी (५.४७१)। ७.६८, ८२ (मन्त्री महारथो नाम योऽभूच्छंकरवर्मणः); ८.१९५३, २४८८, ३१३०, ३४३०।

२. **शङ्करवर्मा,** राजा उन्मत्तावन्ति (पार्थपुत्र) के छोटे भ्राता का नाम है (५.४२९)।

शङ्कुक, एक कवि का नाम है जिसने भुवनाभ्युदय नामक महाकाव्य की रचना की (४.७०५)।

शङ्ख, काश्मीर के एक नाग का नाम है (१.३०)।

शङ्खदन्त, राजा जयापीड के आश्रय में रहनेवाले एक कवि का नाम है (४.४९७)।

शङ्खराज—देखिये रड्ड भी, वस्था०। यह अत्यन्त कुकर्मी एवं विद्रोही राजा था (८.३५६)। यह सल्हण और लोठन आदि का वध करने के लिये प्रयत्नशील रहा (८.३७४)। ८.३४४३।

शची, काश्मीर के राजा शचीनर की माता का नाम है (८.३४११)।

शचीनर, जनक के पुत्र, और काश्मीर के एक राजा का नाम है (१.९९)। शमाङ्ग और असाशनार नाम के दो अग्रहारों का निर्माण कराकर यह निःसन्तान ही स्वर्ग चला गया (१.१००)। ८.३४११

शतकपालेश्वर, शिव की एक प्रतिमा का नाम है (१.३३५)।

शतद्वार, हर्ष के एक राजमहल का नाम है (७.१५५०, १५५६)।

१. **शत्रुघ्न,** राजा बालादित्य के एक मन्त्री का नाम है (३.४८३)।

२. **शत्रुघ्न,** श्रीराम दाशरथी के एक अनुज का नाम है (८.३३७३)।

शनार, शचीनर द्वारा स्थापित एक अग्रहार का नाम है (१.१००)।

शनैश्चर, एक ग्रह का नाम है (४.५८४)।

शबर, एक जाति का नाम है : ३.३३, ३४, ३८, ४१, ५२।

शमाङ्गासा, शचीनर द्वारा निर्मित कराये गये एक अग्रहार का नाम है है (१.१००)। गोपादित्य ने इसे ब्राह्मणों को दान किया (१.३४०)। ८.६५१।

शमाला, एक प्रान्त का नाम है : ७.१५९, १०२२; ८.५९१, १००३, १०११, ११३२, १२६४, १५१७, १५८५, २७४९, २८११, ३११३, ३१३०।

शम्भु = शिव : ३.२७४।

शम्भुवर्धन, मन्त्री मेरुवर्धन के एक पुत्र का नाम है जिसे चक्रवर्मा ने गृहकृत्यों का अधिकारी बनाया (५.३०१)। इसके बड़े भाई, शंकरवर्धन, ने इसे दूत बनाकर तन्त्रियों के पास भेजा (५.३०३)। बड़े भाई की मृत्यु के बाद यह चक्रवर्मा से युद्ध की तैयारी करने लगा (५.३४१)। भूभट ने इसे बन्दी बनाकर चक्रवर्मा के सम्मुख उपस्थित किया (५.३४८)। भूभट ने इसका वध कर दिया (५.३५०)। ८.३४३३।

शरद, एक ऋतु का नाम है (८.७९५, ११३२)।

शरदिय, संगट के भ्राता का नाम है जो भागते समय बन्दी हो गया (८.२१८३)। देखिये **शरद्भासी**।

शरद्भासी, सङ्गट के एक भाई का नाम है (८.१०९०) । यह राजसैनिकों के भय से भागते समय पकड़ा गया (८.२१८३) । देखिये **शरदिय** ।

शर्वट, एक मूर्ख मन्त्री का नाम है जिसने चक्रवर्मा की मृत्यु के बाद पार्थपुत्र अवन्तिवर्मा को सिंहासनासीन कर दिया (५.४१४) । इसने भूभट आदि अन्य मन्त्रियों से सन्धि कर ली (५.४२३) ।

शल्य, एक राजा का नाम है जिसने राजा मुक्तापीड को बन्दी बना लेने की प्रतिज्ञा की थी (७.१४३०) ।

शल्यक, एक पशु, साही, का नाम (५.३२०) :

शशाङ्क = शिव : १.१७५; ४.५४८ ।

शशिमणि = चन्द्रकान्त मणि (४.२५५) ।

शाक्य, बुद्ध की उपाधि है (१.१४१) ।

शाक्यसिंह = गौतम बुद्ध (१.१७२) ।

१. **शारदा** = सरस्वती (१.३७) ।

२. **शारदा,** एक तीर्थ का नाम है : १.३७; ४.३२५; ८.२५५६, २७०६ ।

३. **शारदा,** दिवंगत सुस्सल की एक पत्नी का नाम है जिसने विद्रोहिय का साथ दिया (८.१८२३) ।

शारम्बर, एक स्थान का नाम है : ८.१८७६ ।

शारिका, एक देवी का नाम है (३.३४९) ।

शारीटक, एक ग्राम का नाम है, जहाँ किसी यक्ष द्वारा निर्मित शारिकादेवी का मन्दिर था (३.३४९) ।

शालास्थल, एक ग्राम का नाम है (७.१५९)

शाहि, एक वंश का नाम है (४.१४३) । प्रभाकरवर्मा ने उद्भाण्डपुर के इस वंश के राज्य को जीत कर लल्लिय के पुत्र तोरमाण को दे दिया (५.१५५, २३३) । ५.२३८; ६.१७७, १७८, २३०; ७.४७, ६६, ६९, १०३, १४४, १७८, २७४, ९५६, १०८१, १४७०, १५५०, १५७१; ८.२२७, ३२३० ।

शाहि विद्याधर, एक दरद राजा का नाम है (७.९१३) ।

शिपाटक, काश्मीर के एक मन्त्री का नाम है जिसकी पृथिवीपाल के विरुद्ध युद्ध में मृत्यु हुई (६.३५०) ।

शिमिका, एक भयानक वन का नाम है (६.१८३; ७.३६९) ।

शिरःशिला, एक दुर्ग का नाम है (८.२४९२) ।

शिलिकाकोट्ट, एक पर्वत का नाम है (८ १५८८, २२६५) ।

शिव, एक भारतीय देवता का नाम है। काश्मीर के राजा इनके मूर्तिमान रूप होते हैं (१.७२)। ३.२७३, ३६५ (इनकी जटा से गङ्गा नदी निकली हैं)।

शिवदास, जयापीड के एक कोशाधिकारी का नाम है जो अत्यन्त लोभी था (४.६२२)।

१. **शिवरथ,** एक विद्वान् का नाम है जिसने शिवरात्रि के पर्व पर राजा उच्चल के समक्ष एक श्लोक का पाठ किया और राजा ने इसे सब विभागों का अध्यक्ष बना दिया (८.१११)।

२. **शिवरथ,** एक व्यक्ति का नाम है जिसे सुज्जि की मृत्यु के बाद राज-सेवकों ने कैद कर लिया (८.२१५६)। इसने आत्महत्या कर ली (८.२३८३)।

शिवरात्रि, एक पर्व का नाम है (८.७०)। शिवरात्रि के उत्सव पर शिवरथ नामक विद्वान् ने राजा उच्चल के समक्ष एक श्लोक का पाठ किया जिससे प्रसन्न होकर राजा ने उसे सभी विभागों का अध्यक्ष बना दिया (८.१११)।

शिवलिङ्ग : २.१२८, १३१, १३७ (पुष्पलिङ्ग), १३८ (हिमलिङ्ग); ३.४३९ (माहेश्वर: शैवलिंगे)।

शिवशक्ति, एक राजभक्त कर्मचारी का नाम है (५.१३१)।

शिवस्वामी, एक प्रसिद्ध विद्वान का नाम है जो अवन्तिवर्मा के शासनकाल में हुये थे (५.३४)।

शिशिर, एक ऋतु का नाम है (४.४०१)।

शील, उल्हण के चाचा का नाम है (८.२१७१)।

शीलादित्य, उज्जयिनी के राजा विक्रमादित्य के पुत्र का नाम है जो प्रतापशील के नाम से विख्यात था (३.३३०)।

शुकावली—प्रभाकरस्वामी की स्थापना के समय बाहरी शुकों के साथ आये हुये घरेलू शुकों ने जो मोती अर्पित किये थे उनके द्वारा श्रीप्रभाकर ने एक विख्यात शुकावली का निर्माण कराया (५.३१)। हर्ष इसे उठा ले गया, परन्तु उच्चल ने पुन: इसकी प्रतिष्ठा की (८.८०)।

शुक्रदन्त, राजा जयापीड के मुख्य मन्त्री का नाम है जिसके पास थविकय नामक एक महान पण्डित रहता था (४.४९४)।

शुभधर, हिम्मक आदि के पक्ष के एक विद्रोही का नाम है (६.२४०)। दिद्दा रानी ने इसे बन्दी बनाकर कारागार में डाल दिया (६.२५३)।

१. **शुष्क**, एक ग्राम का नाम है जहाँ जज्ज और जयापीड का युद्ध हुआ (४.४७३)।

२. **शुष्क**, उत्पल के पुत्र, और सुखवर्मा के भ्राता का नाम है जिसने सुखवर्मा का वध कर दिया (४.७१४)।

शुष्कक्षेत्र, एक स्थान का नाम है (१.१०२)। यहाँ हुष्क आदि तुरुष्क राजाओं ने मठों तथा चैत्यों का निर्माण कराया (१.१७०)। ४.४७३।

१. **शूद्रक**, एक राजा का नाम है जिसके धैर्य की एक पिशाच ने प्रशंसा की (३.३४३)।

२. **शूद्रक**—'कर्णशूद्रकनामानौ तन्त्रिणौ च सहोदरौ', (८.५०७)।

१. **शूर**, एक मन्त्री का नाम है जो सुखवर्मा के पुत्र, अवन्तिवर्मा, को राजा बनाने के योग्य समझकर उसके पक्ष का समर्थन करने लगा (४.७१५)। इसका आश्रित वन्दी कृतमन्दार राजा अवन्तिवर्मा की सभा में आर्या का पाठ किया करता था (५.३५)। इसने सुरेश्वरी क्षेत्र में अर्धनारीनटेश्वर के एक प्रासाद का निर्माण कराया (५.३७)। इसने शूरेश्वर की स्थापना की और एक मठ का निर्माण कराया (५.३८)। इसके पुत्र का नाम रत्नवर्धन था (५.४०)। इसकी पत्नी का नाम काव्यदेवी था (५.४१)। यह अपने राजा का इष्टदेव के समान पूजन करता था (५.४७)। इसके पुत्र का सेवक, धन्व नामक डामर, लोहर नामक प्रान्त में रहता था (५.५१)। जब इसने सुना कि भूतेश भगवान को शाक मात्र का भोग लगता है तो इसके कारण का पता लगाने लगा (५.५४)। इसकी आज्ञा से राजसैनिकों ने भैरव के समक्ष धन्व डामर का सर काट दिया (५.५८)। धन्व का वध कराने के बाद यह राजधानी लौट आया (५.५९)। लौटकर इसने राजा का समाचार पूछा (५.६१, १२४)। ८.३४२९।

२. **शूर**, सत्य के पुत्र का नाम है जिसे मुद्रिका लेकर उत्कर्ष ने सैनिकों के पास भेजा (४.८०२)। इसे आते देखकर हर्ष की रक्षा कर रहे सैनिक इसका वध कर देने के लिये उद्यत हुये (७.८०७)।

३. **शूर**, बहुस्थल के मुख्य अधिकारी का नाम है जिसके साथ लोठन की पुत्री पद्मलेखा का विवाह हुआ (८.१८४४)। यह अपने श्वसुर की सहायता के लिये आया (८.१८४५)। लोठन ने इसे सोमपाल के पास भेजा (८.१९०१)। ८.१९३८, २४८२।

शूरट, एक राज्यसेवक का नाम है जो उच्चल का वध करनेवाले शत्रुओं पर झपटा परन्तु भोगसेन ने रोक दिया। (८.३३२)।

शूरपाल, राजक के पिता का नाम है। इसका पौत्र, राजा उच्चल पर शत्रुओं के आक्रमण के समय, भाग गया (८.३२४)।

शूरपुर, काम्बुकघाटी का नाम है (३.२२७)। मन्त्री शूर ने अपने सरहद की यहाँ स्थापना की (५.३९)। बिज्ज यहाँ आया (७.५५८)। ७.१३४८, १३५२, १३५५, १५२०; ८.९६७, १०५१, ११३४, १२६६ १४०४, १५१३, १५७७, २७९९।

शूरमठ, श्रीनगर के एक मठ का नाम है : ५.३८, ४०; ६.२२३, २४३; ७.२६।

शूरवर्धमान, एक ग्राम का नाम है (२.२६९)।

१. **शूरवर्मा,** राजा अवन्तिवर्मा के सौतेले भ्राता का नाम है जिसे राजा ने युवराजपद पर अभिषिक्त किया (५.२२)। इसने खाधूय तथा हस्तिकर्ण नामक दो अग्रहार ब्राह्मणों को दिये (५.२३)। इसके द्वारपाल, महोदय, ने महोदयस्वामी की स्थापना की (५.२८)। इसने संसार के विशिष्ट विद्वानों को काश्मीर में आमन्त्रित करके नष्ट विद्याओं का पुनरुद्धार किया (५.३२)। राजा अवन्तिवर्मा ने इसे तथा इसके पुत्रों को सदा के लिये राज्योचित अधिकार प्रदान किये (५.४२)। राजा अवन्तिवर्मा की मृत्यु के बाद रत्नवर्धन नामक प्रतीहार ने इसके पुत्र, शङ्करवर्मा, को राजा बनाया (५.१२९)। यह निर्जित-वर्मा का पितामह था (५.२५२)। इसका गोकुल (८.२४३६)। यह पार्थ का प्रपितामह था (८.३४३२)।

२. **शूरवर्मा,** एक बालक का नाम है जिसे पार्थपुत्र उन्मत्तावन्ति के पश्चात् काश्मीर का राजा बनाया गया (५.४४६)। ८.३४३५।

३. **शूरवर्मा,** पंगु और रानी मृगावती से उत्पन्न दूसरे पुत्र का नाम है जो काश्मीर का राजा बना (५.२९२)। ८.३४३३।

शूरवर्मस्वामी, एक देवता का नाम (५.२३)।

शूरेश्वर, एक देवता का नाम है (५.३८)।

१. **शृङ्गार,** एक कायस्थ का नाम है जिसने राजा उच्चल को बचाने का प्रयास किया परन्तु अत्यन्त आहत हो गया (८.३२६)।

२. **शृङ्गार,** एक मन्त्री का नाम है (८.५०७)।

३. **शृङ्गार,** लक्ष्मक प्रतीहार के पुत्र का नाम है जिसने सुस्सल को उत्पल के कार्यक्रम से अवगत कराया (८.१२८७)। यह (?) राजा जयसिंह का एक विश्वस्त भृत्य था (८.२१२०)।

४. **शृङ्गार,** सज्जक के पुत्र का नाम है जो चित्ररथ का मुख्य मंत्री था

(८.२३६०)। ८.२३७५, २४६१, २४६९ (साज्जौ), २४७० (यह मृत्यु की कामना करने लगा), २४८० ।

५. शृङ्गार, चित्ररथ के एक सेवक का नाम है (८.२३५२)। इसने जनक को घूस देकर पृथक कर दिया और स्वयं राजा जयसिंह के पास जाकर अपने स्वामी चित्ररथ की सम्पत्ति का अधिकारी बन गया (८.२३५३)। ८.२३६८, २३६९ ।

६. शृङ्गार, मङ्ख के भ्राता, एक तन्त्रपति का नाम है जिसने श्रीद्वार में मठों आदि का निर्माण कराया (८.२४२२)।

शृङ्गारमठ, एक मठ का नाम है (८.२४२६)।

शृङ्गारसीह, एक अधिकारी का नाम है जिसकी सुस्सल की रक्षा करने के प्रयास में मृत्यु हुई (८.५२८)।

शेड, एक पद की संज्ञा है (४.६९१; ८.५७६)।

शेयराज—देखिये **शेषराज** ।

शेष, एक प्रमुख नाग का नाम है (१.५८; ३.५८)। 'सुखार्थी नागारिप्रतिभयशमात्प्रत्युत सुखं जहौ शेषस्तल्पीकृततनु निषेव्यासुररिपुम् । यतस्तेनामुष्मिन्नधिगतवता क्लेशसहतां श्रमादाथि न्यस्तं निरवधि धराभारवहनम् ।।', (३.२१५)। ३.५२९; ४.५०८; ६.३६८; ८.१२२ ।

शेषराज, एक अश्वारोही का नाम है जो चम्पक के साथ रह गया (७.१५९४)। राजा हर्ष ने युवराज भोजदेव का पता लगाने के लिये इससे कहा और मार्गव्यय के लिये इसे अपने गले का कण्ठहार दिया (७.१६०७ : यहाँ 'शेयराज' पाठ है)।

शेषशायी = विष्णु (४.५०८)।

शैनेय = सात्यकि (८.२७८९)।

शोभ, देग्राम निवासी एक एकाक्ष डामर का नाम है जो अनन्तदेव को अत्यन्त उद्विग्न किये हुये था । जिन्दुराज ने इसका वध कर डाला (७.२६६)।

शोभक, काकवंशी लोगों का नाम है (८.१०७९, १२६२)।

शौडोत्र, एक देश का नाम है (६.३००)।

श्येन, एक पक्षी का नाम है (३.८१)।

श्रावण, एक मास का नाम है : ८.७२३, १२३६ ।

श्रीकण्ठ, एक मठ का नाम है (६.१८६)। अलङ्कार के भाई, मङ्ख, ने श्रीकण्ठ शिव की स्थापना की (८.३३५४)।

श्रीचन्द्र, गर्गचन्द्र के एक पुत्र का नाम है जो राजवदन से मिल गया (८.२७५३)।

श्रीढक्क, एक स्थान का नाम है (५.३०६)।

श्रीदेव, एक ग्राम-चाण्डाल का नाम है जो जज्ज से युद्ध के लिये आया (४.४७५)।

श्रीद्वार, एक स्थान का नाम है (८.२४२२)।

श्रीधर, राजकलश के एक पक्षपाती का नाम है (७.२२)।

श्रीनगर, काश्मीर के एक बहुत बड़े नगर का नाम है जिसे राजा अशोक ने बसाया था (१.१०४)। १.१२४, १२९, ३०६; ४.६ (श्रीनगर्यां प्रतिष्ठाप्य दुर्लभस्वामिनं हरिम्)।

श्रीपर्वत, एक पर्वत का नाम है (३.२६७)। एक तीर्थ (४.३९०)।

श्रीभट्ट, एक सिद्ध का नाम है जो राजा अवन्तिवर्मा के शासनकाल में अवतीर्ण हुआ था (५.६६)।

श्रीलेखा, राजा संग्रामराज की पत्नी और श्रीयशोमङ्गल की पुत्री का नाम है (७.१२३)। संग्रामराज के पुत्र, हरिराज, की मृत्यु के बाद यह स्वयं अपना राज्याभिषेक कराने का उद्योग करने लगी (७.१३४)। जब विग्रह-राज काश्मीर पर आक्रमण करने के उद्देश्य से लोठिका मठ में रुका तो इसने उस मठ में आग लगवा दी (७.१४१)। इसके भतीजे के पुत्र, व्यड्डमङ्गल, की हर्ष ने हत्या करा दी (७.१४६७)। ८.१९५७।

श्रीवक, यशोराज के साले का नाम है जिसे सुस्सल ने खेरी प्रान्त का कार्याधिकारी बना दिया (८.१००९)। सुस्सल ने इसे सेनापति बनाया (८.१०४६)। सुस्सल की सेना के पलायन करने पर यह भागकर विपलाटा में खशों की शरण में आया (८.१०७४)। विपलाटा से इसे और जनक को लेकर जय्यक राजा सुस्सल के पास आया (८.११३१)। कल्याणपुर में राजा सुस्सल की ओर से पृथ्वीहर से युद्ध करते समय पराजित होकर यह रणभूमि से भाग गया (८.११३५)। ८.१४१४, १४१८, १४२० (इसे सुज्जि समझकर डामरों ने इसे लूट लिया), १४८२ (राजा सिंहदेव ने इसे द्वार प्रान्त का अधिकारी बना दिया)।

श्रीवर्धन, शहिराज त्रिलोचनपाल की सेना के एक वीर का नाम है (७.५८)।

श्रुतायुध, पूर्व समय के एक राजा का नाम है जिसकी अपनी गदा ही उसकी मृत्यु का कारण बनी (७.८०४)।

श्र्यानन्द, राजा सुस्सल के विरोधी, एक काकवंशी प्रमुख डामर योद्धा, का नाम है जिसका सुस्सल के सैनिकों ने वध कर दिया (८.११०२)।

श्रेष्ठसेन, राजा मेघवाहन के पुत्र का नाम है जो अपने पिता के बाद काश्मीर का राजा हुआ। आगे चलकर यह प्रवरसेन तथा द्वितीय तुञ्जीन के नाम से भी प्रसिद्ध हुआ (३.९७)। इसने ३० वर्ष तक पृथिवी पर शासन किया (३.१०१)।

श्वपाक, एक निम्न जाति के लोगों का नाम है : ५.२१८, ३९०–३९४, ४०५, ४०७, ४१३, ४१५; ८.१०८१।

श्वभ्र—राजा सुस्सल ने अपने सेनापति, तिलकसिंह, पर यह आक्षेप किया कि उसने 'श्वभ्र' नामक एक कम्पनेश का वध कर दिया (८.६८८)।

श्वेतकि, सुज्जि के बड़े भाई के पुत्र का नाम है जिसे कारागार में डाल दिया गया (८.२१८४)।

श्वेतद्वीप, एक स्थान का नाम है (३.४७१)। ८.२४३५।

श्वेता, मल्लराज की एक रानी का नाम है जिससे उसने सल्हण आदि पुत्र उत्पन्न किये थे (८.१७३)।

ष

षडर्हद्वन, एक स्थान का नाम है (१.१७३)।

षण्मुख, खशजातीय बाण के पुत्र तुङ्ग के एक भ्राता का नाम है (६.३१९)।

षष्ठचन्द्र, पञ्चचन्द्र के छोटे भाई का नाम है जो पञ्चचन्द्र की मृत्यु के बाद राजा हुआ (८.२५०५)। यह गर्गचन्द्र का पुत्र था (८.२५५६)। सल्हणपुत्र भोज ने सुना कि अलंकार की पत्नी इसके सौन्दर्य पर मुग्ध है (८.२५७१)। ८.२६६२, २६७३, २६७४, २७५१ (इसने राजवदन को घेर लिया), ५७५३ (इसके दो भाई, जयचन्द्र और श्रीचन्द्र, राजा जयसिंह से वेतन पाते थे), २७७७ (गार्गिन), २७८५ (राजवदन ने दुर्जय सेना लेकर इसपर आक्रमण किया), २७८८ (राजा जयसिंह ने अवशिष्ट सेना के साथ उदय और धन्य को इसकी सहायता के लिये भेजा), २८४७ (गर्गजः)। २८९१ (गार्गिम्), २९०७ (यह राजा जयसिंह के पास आया), २९५५ (यह दुर्नामक रोग से पीड़ित हुआ)। २९५८ (इसकी मृत्यु), २९८३।

स

संकटवर्मा, राजा गोपालवर्मा के भ्राता का नाम है जो गोपालवर्मा की

मृत्यु के बाद काश्मीर का राजा हुआ, किन्तु केवल १० दिन तक ही राज्य करके मर गया (५.२४२) । ८.३४३१ ।

१. **संगट,** उरशा के राजा (?) का नाम है (७.५८९) ।

२. **संगट,** सुज्जि के चचेरे भाई का नाम है जिसका राजसैनिकों ने वध कर दिया (८.२१७८) । 'शरदियो संगटभ्राता,' (८.२१८३) । देखिये मुङ्गट ।

संग्राम, एक डामर का नाम है (५.३०६) । इसके पास रक्का नामक एक वीर ब्राह्मण रहता था (५.४२४) । ६.१७१, २८०; ७.५८ (इसके वंशज) ।

संग्रामगुप्त, विशोका नदी के उस पार निवास करनेवाले एक कायस्थ, अभिनव, के पुत्र का नाम है (६.१३०) ।

संग्रामदेव, राजा यशस्कर के पुत्र का नाम है जिसे अपने वीर्य से उत्पन्न न समझकर राजा ने अपने प्रपितृव्य रामदेव के पुत्र वर्णट का अभिषेक किया (६.९०) । वर्णट के व्यवहार से दुखी राजा को उसके मन्त्रियों ने इसको ही राज्य देने के लिये प्रेरित किया (६.९५) । राजा यशस्कर ने इसका राज्याभिषेक किया (६.९९) । पर्वगुप्त के सैनिकों ने इसका वध कर दिया (६.१२६) । इसको वक्राङ्घिसंग्राम भी कहते थे (६.१२८) । ८.३४३६ ।

संग्रामपाल, राजपुरी के राजा सहजपाल के पुत्र का नाम है जिसका पिता की मृत्यु के बाद अल्पायु में ही राज्याभिषेक हुआ (७.५३३) । इसके चाचा से भयभीत होकर इसकी बहन तथा जस्सराज ठक्कुर राजा कलश के पास सहायता के लिये आये (७.५३५) । इसके मन्त्रियों को जयानन्द पर सन्देह होने लगा (७.५३७) । यह राजा कलश का अतिथि होकर आया (७.५८९) । यह भी दर्प में चूर्ण होकर हर्षदेव के विरुद्ध हो गया (७.९६७) । यह भयभीत होकर राजा हर्ष को कर तथा उपहार देने के लिये प्रस्तुत हुआ (७.११५४) । राजा हर्ष ने उच्चल का वध करा देने के लिये इसके पास सन्देश भेजा (७.१२५८) । यह राजा हर्ष के भय का परित्याग करके उच्चल का सम्मान करने लगा (७.१२६५) । जब उच्चल सेनासहित हर्ष के मंत्री कलशराज से युद्ध के लिये बढ़ा तब यह अपने नगर के बाहर के सेनाशिविर में था (७.१२९३) । इसकी मृत्यु के बाद इसका पुत्र सोमपाल राजा हुआ (८.२८८) ।

१. **संग्रामपीड,** बप्पिय द्वारा मम्मा के गर्भ से उत्पन्न पुत्र का नाम है जो पृथिव्यापीड के बाद सात दिन के लिये काश्मीर का राजा हुआ (४.४००) । इसके बाद बप्पिय का छोटा पुत्र जयापीड राजा हुआ (४.४०२) । ८.३४२५ ।

२. संग्रामपीड, जयापीड द्वारा रानी कल्याणदेवी के गर्भ से उत्पन्न पुत्र का नाम है जो ललितापीड के बाद काश्मीर का राजा हुआ (४.६७४)। "इसने अपना दूसरा नाम पृथिव्यापीड रक्खा था । इसने केवल सात वर्ष तक राज्य किया (४.६७५)।" मम्म आदि ने इसके पुत्र, अनङ्गपीड, को कश्मीर का राजा बनाया (४.७०७)। ८.३४२६, ३४२८ ।

संग्राममठ, एक मठ का नाम है (८.६०९)।

संग्रामराज, दिद्दारानी के भ्राता, उदयराज, के पुत्र का नाम है जिसे युवराज बनाया गया (६.३५५)। आपस में लड़ते हुये बालकों में से सब आहत हुये परन्तु इसे कहीं भी चोट नहीं लगी (६.३५८)। यह राजा हुआ (६.३६५)। मृदु होने के कारण छिपे धैर्य से सम्पन्न इसने कमलनाल से शोभित फणमण्डल में अपनी शक्ति छिपा रखनेवाले शेषनाग के समान अपनी भुजाओं पर समस्त पृथिवी का भार धारण किया (६.३६८)। इसे तुङ्ग के साथ मिल-जुलकर रहने की शपथ दी गई (७.८)। तुङ्ग की मृत्यु के बाद सामंत भुजङ्ग इसे तंग करने लगा (७.९१)। 'सत्यं विवेक्ता संग्रामराजो योऽन्याय्यतोऽर्जितम् । निजं ब्रुवाणो द्रविणं प्रपामपि न निर्ममें ।।', (७.१२२)। लौकिक वर्ष ४१०४ की आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा को इसकी मृत्यु हुई (७.१२७)। 'संग्रामराजदायादः', (७.४५५)। दिद्दारानी ने इसे काश्मीर का राजा बनाया था (७.१२८५)। इसके पुत्र का नाम अनन्तदेव था (४.१२८६)। ८.१९५७, ३४३९ ।

संग्रामि, (संग्राम का वंशज) = विभ्रमार्क (७.५८)।

संध्या, मूर्तिमान सन्ध्या के लिये प्रयुक्त हुआ है (१.३३)।

संवर्धन, चित्ररथ के एक सेवक का नाम है जिसका मल्लार्जुन के अनुयायियों ने वध कर दिया (८.१९६६)।

संसप्तक, एक जाति के लोगों का नाम है जिन्होंने महाभारत युद्ध में अर्जुन का प्रतिरोध किया था (८.२८११)।

सगर, एक प्राचीन राजा का नाम है (८.२३८२)।

१. सञ्जिक, सुज्जि के एक प्रतीहार का नाम है जिसका वध कर दिया गया (८.२१८१)।

२. सञ्जिक, लवराज के एक पुत्र तथा कमलिय के भ्राता का नाम है जो राजा सुस्सल का पार्श्वरक्षक बना (८.१०९३)। इसका नाम सञ्जिय भी था (८.३३४८)। इसने एक मठ का निर्माण कराया (८.३३५०)।

संज्ञिय—देखिये **२. सञ्जिक ।**

सज्ज, एक राजा का नाम है जिसके पुत्र, डोम्ब, की सुस्सल की ओर से पृथ्वीहर से युद्ध करते हुये मृत्यु हुई (८.११३३)।

१. सज्जक, मल्ल के एक सैनिक का नाम है जो युद्ध में मर चुका था (७.१४८०)।

२. सज्जक, शेडराजस्थान की सुरक्षा के अधिकारी का नाम है जो ग्रामीण शस्त्रास्त्र रखता था। इसने राजा प्रताप की आड़ में अनेक लोगों को परास्त किया (८.५७६)। पृथ्वीहर ने इसकी सेना का वध कर दिया (८.६७२)।

३. सज्जक, नागरिक शस्त्रागार के एक अधिकारी का नाम है जो उस स्थान पर गया जहाँ राजा सुस्सल का शव पड़ा था और वहाँ रक्षकों को परास्त करके शव का अग्निसंस्कार कर दिया (८.१४५९)।

४. सज्जक, ऋङ्गार के पिता का नाम है (८.२३६०)। ८.२४६९, २४८० ।

सज्जन, एक अश्वारोही का नाम है जिसकी सुज्जि और डामरों के युद्ध में मृत्यु हुई (८.१४१६)।

सज्जल, सुज्जि के पुत्र का नाम है जिसे बन्दी बनाकर कारागार में डाल दिया गया (८.२१८४)।

सञ्जपाल, दर्शनपाल के भाई का नाम है (८.२१०)। इसने सुस्सल के यहाँ नौकरी कर ली (८.२१२)। यह एक विशाल सेना लेकर सुस्सल के पास आ गया (८.४०१)। स्थान-स्थान पर शत्रुओं के साथ मुठभेड़ में यह तथा कुछ अन्य साथी ही सुस्सल के साथ रहे (८.४०८)। सुस्सल ने इसे कश्मीर पर दृष्टि रखने के कार्य पर नियुक्त किया (८.४५०)। इसके साथ निराश्रय लक्कक सुस्सल के पास आया (८.४५५)। इसके आने पर अन्तःपुर से निकलकर सुस्सल इससे मिला (८.४५६)। इसे साथ लेकर सल्हण राजा सुस्सल के पास आया (८.४६१)। यह भीतर आकर गर्ग के सैनिकों से युद्ध करने लगा (७.४६६)। यह अत्यन्त वीर था और थोड़ी सेना के साथ होते हुये भी गर्गचन्द्र की विशाल सेना से परास्त नहीं हुआ (८.५११)। यह राजा सुस्सल के साथ बराबर रहा (८.५१६)। राजा सुस्सल ने इसकी पूर्वसेवाओं को विस्मृत करके इसे राज्य से बहिष्कृत कर दिया (८.५३३)। प्रास द्वारा कश्मीर पर आक्रमण का समाचार सुन कर यह अत्यन्त दुखी हुआ और परदेश चला गया (८.५५८)। इसे वापस बुलाने के लिये लक्ष्मक ने दूत भेजा (८.१६३९)। सुज्जि से द्वेष होने के कारण लक्ष्मक ने इसे बुलाया (८.२०४६)। रिल्हण ने इसे अपना मित्र बना लिया (८.२०७०)। सुज्जि

इससे भयभीत हुआ (८.२०७८)। राजा जयसिंह ने इसपर सुज्जि की हत्या कर देने का भार रक्खा (८.२०८५) । इसने कोशपानपूर्वक सुज्जि से मैत्री कर ली (८.२०९१)। राजा ने रिल्हण और उल्हण का वध करने के लिये इसे भेजा (८.२१६३)। इसने उल्हण पर आक्रमण करके उसपर बहुत प्रहार किये (८.२१६५)। राजा जयसिंह ने इसे सेनापति बनाया (८.२१९०)। ८.२२६४, २२७०, २४५९, २७४२ (यह देवसरस की रक्षा के लिये गया), २७४४, २८३९ (यह रिल्हण के पास आया), ३२८० (इसने आक्रमण कर दिया), ३२८५, ३२८९ (इसके पुत्र का नाम गयपाल था), ३२९७ (इसने त्रिल्लक के घर में आग लगा दी), ३३२२ (इसकी मृत्यु) ।

१. सड्डु, डामर जनकचन्द्र के एक भ्राता का नाम है जो जनकचन्द्र का वध हो जाने पर भीमादेव पर झपटा परन्तु उसने इसे भी आहत कर दिया (८.३३) । देखिये **सड्डुचन्द्र** भी ।

२. सड्डु, एक साधारण शस्त्रधारी का नाम है जिसके तीन पुत्रों, रड्डु, छुड्डु, और व्यड्डु, को राजा उच्चल ने मंत्री बना दिया (८.१८३) ।

३. सड्डु, एक कुटिल प्रकृतिवाले कायस्थ का नाम है (८.२५८)। यह लवट नामक एक कुली का पुत्र था (८.२६३)। यह गञ्जाधिकारी बना (८.२७६) । इसे जब यह पता चला कि भोगसेन ने सुस्सल को तंग करने के लिये रड्डु-छुड्डु को भेजा परन्तु वहाँ जा कर वे दोनों सुस्सल के हितचिन्तक बन गये तब इसने भोगसेन को सरल हृदय समझ कर बहुत धिक्कारा (८.२९८) । जब इसने उच्चल की हत्या कर देने का परामर्श दिया तब इसकी बात को टालने के योग्य न समझते हुये भी भोगसेन ने कुछ गुप्त विचार व्यक्त करने की इच्छा प्रगट की (८.३००) । इसने उच्चल के मंडप को घेर लिया (८.३०७) । मृत राजा उच्चल का इसने इसलिये मस्तक काट लिया कि कहीं वह पुनरुज्जीवित न हो जाय (८.३२८) । उच्चल का वध हो जाने पर रड्डु काश्मीर के सिंहासन पर बैठा परन्तु उसी दिन गर्गचन्द्र ने उसका वध कर दिया (८.३४२, ३४८) । रड्डु के बाद यह काश्मीर का राजा हुआ परन्तु इसे मरण से भी अधिक कष्ट देने के उद्देश्य से हंसरथ आदि इसके अनुयायी कहीं भाग गये (८.३५१, ३५२) । यह केवल एक दिन राज्य करने के पश्चात् राजद्रोह का फल पाकर विद्रोही राजा शङ्ख जैसे कुकर्मियों की गति को प्राप्त हुआ (८.३५६) । यह जानकर कि यह काश्मीर में उपद्रव कराने के लिये सचेष्ट है, सल्हण ने इसका वध करा दिया (८.४४३) ।

सड्डुचन्द्र, हस्त के पिता का नाम है (८.६४३)। इसकी मृत्यु (८.३३१५) । देखिये **सड्डु** ।

सतीसर, एक प्राचीन सरोवर का नाम है जो हिमालय के मध्य में स्थित था (१.२५)।

१. **सत्य,** गरुड का एक नाम है (४.१००)।

२. **सत्य,** एक व्यक्ति का नाम है जिसके पुत्र, शूर, को राजा उत्कर्ष ने मुद्रिका लेकर सैनिकों के पास भेजा (७.८०२)।

सदाशिव, एक शिव का नाम है : ५.४१, १६३; ७.१८१ (श्रीनगर में सूर्यमती के मन्दिर को इस नाम से पुकारा जाता है), १८६, ६७३; ८.९३४, ११२५।

सन्धिमति, राजा जयेन्द्र के मन्त्री का नाम है (२.६५)। "यद्यपि लोगों के बहकाने से जयेन्द्र ने इसे मन्त्रिपद से हटा दिया तथापि छः दिनों के पश्चात् यह भविष्यवाणी हुई कि 'भविष्य में मन्त्री सन्धिमति काश्मीर का राजा होगा।' इसका समाचार सुनकर राजा ने इसको सूली पर चढ़ा कर मार डाला। इसकी मृत्यु का समाचार सुनकर इसका गुरु इसका दाह-संस्कार करने के लिये श्मशान आया। जब इसका गुरु, ईशान, इसका दाहसंस्कार करने को उद्यत हुआ तब उसने इसके ललाट पर लिखा यह श्लोक पढ़ा : 'यावज्जीवं दरिद्रत्वं दश वर्षाणि बन्धनम्। शूलस्य पृष्ठे मरणं पुना राज्यं भविष्यति ॥' थोड़ा सोच विचार करने के पश्चात ईशान इसके शव की रक्षा करने लगा। कुछ समय के पश्चात् योगिनियों ने आकर इसके शव को पूर्णाङ्ग बनाकर पुनरुज्जीवित कर दिया। योगिनियों ने इसके साथ यथेच्छ भोग करने के बाद ईशान से कहा कि यह दिव्य देहधारी सन्धिमति अब आर्यराज के नाम से विख्यात होकर काश्मीर का राजा होगा। तदनन्तर यह काश्मीर का राजा बना (२.६६–११८)। इसने ४७ वर्ष तक राज्य किया और इस अवधि में अनेक मन्दिरों आदि का निर्माण कराया (२.१३३–१४२)। इसने युधिष्ठिर के कुल में उत्पन्न एक राजपुत्र का पता लगाया (२.१४४)। इसने सिंहासन का परित्याग कर दिया (२.१५२)। यह भूतेश्वर चला गया (२.१६१)। ८.३४१८।

सन्धिमान, जयापीड के यहाँ रहनेवाले एक कवि का नाम है (४.४९७)।

सन्धीश्वर, एक शिवलिङ्ग का नाम है जिसकी सन्धिमति ने स्थापना की (२.१३४)।

समर, राजा अवन्तिवर्मा के दूसरे भ्राता का नाम है (५.२५)।

समरवर्मा, एक वीर का नाम है जिसके साथ शङ्करवर्मा ने युद्ध कर कीर्ति का अर्जन किया (५.१३५)।

समरस्वामी, एक देवता का नाम है ५.२५; ७.११०५।

समुद्रधारा, एक स्थान का नाम ((८.२७८४)।

सम्मा, राजा मेघवाहन की पत्नियों में से एक का नाम है (३.१४)।

सरस्वती, विद्या की अधिष्ठात्री देवी और एक नदी का नाम है (१.३५)।

सर्वज्ञमित्र, एक भिक्षुक का नाम है (४.२१०)।

सर्वरत्न, प्रवरसेन-पुत्र राजा युधिष्ठिर के एक मन्त्री का नाम है जिसने अनेक विहार और चैत्यों का निर्माण कराया (३.३८०)।

सर्षप—सरसों : ३.३३८।

सल्लार विस्मय, तुरुष्कों के एक नायक का नाम है (८.८८५)।

सल्ह, राजा हर्ष के पुत्र का नाम है जो सेना-सहित दरदराज की सहायता के लिये आया (८.२१०)। यह दरदराज के साथ ही चला गया (८.२१२)।

१. सल्हण, तन्वङ्ग के पौत्र (अथवा धम्मट के पुत्र ?) का नाम है (७.१०५३)।

२. सल्हण (सल्ह भी,) मल्ल की दूसरी पत्नी से उत्पन्न पुत्र का नाम है जिसे मल्ल ने राजा हर्ष के पास जमानत के रूप में रख दिया था (७.१४७३)। इसकी पत्नी का नाम आसमती था (७.१४८७)। मल्ल ने इसे श्वेता नामक अपनी रानी से उत्पन्न किया था (८.३७३)। इसका तथा इसके भ्राता लोठन का वध करने के लिये शङ्खराज प्रयत्नशील था (८.३७४)। गर्गचन्द्र ने इसका काश्मीर के राजा के रूप में राज्याभिषेक कराया (८.३७६)। ८.३७८। शोक से अभिभूत होने के कारण सुस्सल इसके राज्याभिषेक के समाचार को सुन नहीं पाया (८.३८१)। 'सल्हणो राजा', (८.३८५)। जब सुस्सल काष्ठवाट पहुँचा तब इसका हितैषी गर्गचन्द्र भी राजधानी से चल कर हुष्कपुर आ गया (८.३९०)। शत्रुओं का संहार करके गर्गचन्द्र इसके पास आकर इसका अधिपति बन गया (८.४१५)। जिस स्त्री से यह किसी दिन भोग करता था उसी से दूसरे दिन इसका भाई लोठन भी भोग करता था (८.४२०)। इसने गर्ग पर आक्रमण किया (८.४३३)। इसने सुस्सल का विरोध किया (८.४५१)। यह अपने छोटे भाई और सञ्जपाल को साथ लेकर सुस्सल के पास आया (८.४६१)। 'सचिवः सल्हराजस्य पतंगग्रामजो द्विजः', (८.४७२)। जब सुस्सल को देखकर सिंहासन बोल उठा तब इस कौतुक से यह व्यग्र हो उठा (८.४७७)। तीन दिन कम चार मास राज्य करने के बाद इसे सुस्सल ने कैद करके अपदस्थ कर दिया और स्वयं राजा बन गया (८.४८०)। लोहर जा कर राजा सुस्सल ने इसे तथा इसके भाई लोठन

को कैद कर लिया (८.५१९) । राजा सुस्सल ने इसे तथा इसके भाई लोठन को लोहर पर्वत पर बन्दी बना कर रक्खा था (८.१७९५) । 'भोजः सल्हण-जन्मा', (८.२४८९) । 'साल्हणेः', अर्थात् भोज (८.२५७२) । ८.३४४४ ।

सव्यराज, क्षत्रिका-भिञ्जिका के राजा का नाम है (८.१०८४) ।

१. **सहज,** कलश के एक सम्बन्धी का नाम है (७.६७४) ।

२. **सहज,** विश्व के एक सहायक का नाम है (८.२४७६) ।

१. **सहजपाल,** राजपुरी के राजा का नाम है । इसकी मृत्यु के बाद इसका अल्पवयस्क पुत्र, संग्रामपाल, राजा हुआ (७.५३३) ।

२. **सहजपाल,** वर्तुल देश के राजा का नाम है जो अन्य चार राजाओं के साथ मिलकर काश्मीर पर आक्रमण करने के लिये सन्नद्ध हुआ (८.५३९) ।

३. **सहजपाल (सहजिक** भी), रामपाल के पुत्र और भावुक के एक वंशज का नाम है (८.१०८५) । ८.१३२६, १५२० ।

१. **सहजा,** उत्कर्ष की एक रखेल का नाम है (७.८५०) । इसने अन्दर जाकर उत्कर्ष के गले से रक्त की धारा निकलते देखा (७.८५३) । अपने व्यवहार से यह वन्दनीय बन गई (७.८५७) । यह उत्कर्ष की मृत्यु के बाद सती हो गई (७.८५९) ।

२. **सहजा,** राजा अवकल्य की एक पुत्री का नाम है जो मल्ल-पुत्र सल्हण की पत्नी थी । इसने अग्नि में भस्म होकर प्राण त्याग दिया (७.१४८७) ।

३. **सहजा,** राजा सुस्सल की एक रानी का नाम है (८.१९३२) ।

सहजिक—देखिये **सहजपाल ।**

सहदेव, सुस्सल के एक सैनिक का नाम है जिसकी युद्ध में मृत्यु हुई (८.१९८) । इसके एक पुत्र का नाम कल्हण था (८.९२६) । इसके एक अन्य पुत्र का नाम उल्हण था (८.२०६६) । 'साहदेवि' अर्थात् उल्हण (८.२१७१) ।

सहस्रभक्त, एक उत्सव का नाम है (४.२४३) ।

सहस्रमङ्गल (सहस्र भी)—७.१०१८ । इसका पालक, गर्ग, इसे ही राज्यसिंहासन पर बैठाना चाहता था (८.५००) । राजा सुस्सल द्वारा निर्वासित, काक वंशजों का सम्बन्धी यशोराज, इसके पास चला आया (८.५३४) । 'देशाद्विनिर्गतैर्बिम्बप्रमुखैर्वर्धितप्रथे । तस्मिन्प्राप्ते सहस्रस्य प्रतिष्ठा लघुतामगात्', (८.५४३) । ८.५४४, ५५६ (इसके पुत्र) ।

सहेलक, समरस्वामी के मन्दिर के एक पार्षद का नाम है (७.११०५) । यह राजा हर्ष का महामंत्री बना (७.११७०) । जब उच्चल ने हर्ष के राज्य

पर आक्रमण किया तब यह द्वारपति तथा कम्पनेश दोनों था (७.१३१९)। हर्ष के सैनिक सुस्सल से पराजित होकर इसके पास लौट आये (७.१३५७)। सुस्सल के आक्रमण की आशंका से यह अपनी सेना और भागकर आये सैनिकों को लेकर राजधानी की ओर चला (७.१३५८)। हर्ष ने इसे पदच्युत कर दिया (८.९३)। सल्हण और गर्गचन्द्र में सन्धि कराने के लिये यह दूत के रूप में लोहर गया (८.४४०)। यह सुस्सल से मिल गया (८.४५७)। इसे पदच्युत कर के राजा सुस्सल ने कायस्थ गौरक को सर्वाधिकारी बनाया (८.५६०)।

सागर, राजा संग्रामराज के धात्रेय भ्राता का नाम है जिसने राजा की मृत्यु के बाद उसके अल्पवयस्क पुत्र अनन्तदेव का राज्याभिषेक करा दिया (७.१३५)।

सातवाहन—संग्रामराज के राज्यारोहण से इसके कुल का उत्थान आरम्भ हुआ (६.३६७)। यह दार्वाभिसार देश के नरवाहन का पौत्र और फुल्ल का पुत्र था। इसके पुत्र का नाम चन्द था (७.१२८३)। 'श्रीसातवाहनकुलेऽकृत कान्तिराजवंशे त्यजन्त्युदयराजकुले प्रतिष्ठाम्। शृङ्गं सुरैर्विरहितं जहती हिमाद्रे-र्दिव्ये तटे सुरगिरेरिव वासरश्रीः ॥,' (७.१७३२)।

साम्बवती, एक वेश्या का नाम है जिसने साम्बेश्वर शिव की स्थापना की (५.२९६)।

साम्बेश्वर, एक शिव का नाम है (५.२९६)।

साल, चम्पाराज्य के राजा का नाम है जिसे अनन्तदेव ने राज्यच्युत कर दिया (७.२१८)।

साल्हणि = भोज (दखिये वस्था०)।

सावर्णिका, लोहर राज्य के एक ग्राम का नाम है (८.२२७७)।

साह्य, स्थानक नामक खलिहान के एक रक्षक का नाम है (८.१२४५)।

सिकतासिन्धु, एक स्थान का नाम है (४.२७९)।

१. सिद्ध, राजा नर के पुत्र का नाम है (१.२७५)। इसने साठ वर्ष तक राज्य किया और फिर सदेह शिवलोक चला गया (१.२८२)। 'सिद्धश्रेष्ठ सिद्ध सदेह स्वर्ग आ रहा है,' इस प्रकार की जय-घोषणा करते हुये देवताओं ने सहर्ष सात दिनों तक देवलोक में उत्सव मनाया (१.२८५)। ८.३४१४।

२. सिद्ध, राजा जज्ज के भ्राता का नाम है (४.५२०)।

सिद्धपथ, एक स्थान का नाम है (८.५५७)।

सिद्धराज, इन्दुराज के पुत्र और मदनराज के पिता का नाम है (७.२६३)।

सिद्धिक्षेत्र, एक स्थान का नाम है जहाँ प्रवरेश्वर का मन्दिर है (३.३७८)।

सिन्दूर—८.२०१०।

१. सिन्धु, पंजाब और काश्मीर की प्रमुख नदी का नाम है (४.३९१)। ५.९७, २१६; ६.३०५ (वितस्तासिन्धुसंगमः); ७.२१४ (वितस्तासिन्धु-संगमः), ९०९ (वितस्तासिन्धुसंगमम्), ११७९, १५९५ (वितस्तासिन्धु-संगमम्); ८.५०६ (वितस्तासिन्धुसंगमाः), १०४२, १०६३ (गम्भीरा-सिन्धुसेतुरभज्यत), ११२९ (निःसेतुं तरतः सिन्धुं दतिभङ्गाद्ययुर्जले), १८६८ (सैन्धवकैरपि), २४४४, २४९२, २५०७, ३१४९ (वितस्तासिन्धुसंभे-दयात्रायां)।

२. सिन्धु, पालकीवाहक कुय्य के पुत्र का नाम (६.२६४)। यह पर्वगुप्त का प्रिय सेवक था, और धीरे-धीरे गञ्जाध्यक्ष बन गया (६.२६६)। इसने रानी दिद्दा को नरवाहन के घर जाने से रोका (६.२६९)। इसका भ्राता, भुय्य, सदाचारी पुरुष था (६. २९६)। ७.११०।

सिन्धुगञ्ज, एक पद का नाम है (६.२६६)।

सिफिन्नाग्राम, एक स्थान का नाम है (८.६७८)।

सिम्ब, एक विद्रोही सेनानायक का नाम है जिसे साथ लेकर तिलक हुष्कपुर आया (८.९४४)। इसने सुस्सल की ओर से युद्ध करते हुये डामरों को परास्त करके समस्त मडवराज्य की भूमि को विप्लवविहीन कर दिया (८.१००२, १०३९)। राजा सुस्सल इसके साथ विजयक्षेत्र आया (८. १०४३)। सुस्सल ने इसे सूली पर चढ़वा दिया (८.१०४५)।

सिल्लन, रानी सूर्यमती के एक भ्राता का नाम है (७.१८३)।

सिल्लराज, एक लवन्य डामर का नाम है। इसका बड़ा भाई इसके साथ द्रोह रखता था (६.१२५५)।

सिल्ला, विजय डामर की माता का नाम है (८.१०६९)।

सिल्हार, उत्कर्ष के एक मन्त्री का नाम है जिसे बन्दी बनाकर हर्षदेव ने कारागार भेज दिया (७.८६६)।

१. सिंह, पृथ्वीहर के एक सम्बन्धी का नाम है (८.९५७, १००६)।

२. सिंह, सिम्ब के एक भ्राता का नाम है (८.१०४५)।

सिंहदेव (जयसिंह) राजा सुस्सल के पुत्र का नाम है (८.१२३७, १२३८)। जिस समय यह शय्या पर विश्राम कर रहा था उसी समय प्रेम ने आकर इसे राजा सुस्सल की हत्या का समाचार दिया (८.१३४९)। यह

विलाप करने लगा (८.१३५० और बाद) । यह राजा हुआ (८.१३७८ और बाद) । भिक्षाचर की सेना को छोड़कर धन्य इसके पास चला आया (८. १४३८) । इसने सुज्जि को अपनी ओर मिलाने का प्रयत्न किया (८.१६६९) । देखिये जयसिंह ।

सिंहपुर, राजा जयसिंह द्वारा दान किये गये एक मुख्य ग्राम का नाम है (८.२४४३) ।

सिंहरथ, राजा शङ्करवर्मा के एक मन्त्री, महारथ के पुत्र, का नाम है जिसने तुङ्ग की रक्षा करते हुये अपना प्राण दे दिया (७.८२) ।

सिंहराज, एक खश राजा का नाम है जो लोहर आदि अनेक दुर्गों पर शासन करता था । इसने क्षेमगुप्त से अपनी कन्या, दिद्दा, का विवाह किया (६.१७७) । दिद्दा रानी ने इसके नाम से सिंहस्वामी का मन्दिर बनवाया (६.३०४) । यह चन्दराज का पुत्र था और इसने अपनी पुत्री, दिद्दा, का काश्मीर नरेश क्षेमगुप्त के साथ विवाह किया (७.१२८३, १२८४) ।

सिंहराजमठ, एक मठ का नाम है (७.१५६८) ।

सिंहराजस्वामी, लोहर के एक देवालय का नाम है (८.१८२२) ।

सिंहरोत्सिका, एक ग्राम का नाम (३.४६२) ।

सिंहल, भारत के दक्षिण में स्थित एक द्वीप का नाम है (१.२९४) । 'सिंहलेषु नरेन्द्रांघ्रिमुद्राङ्कः क्रियते पटः,' (१.२९५) । 'सिंहलेन्द्रेण,' (१.२९७) । 'सिंहलादीन्यो द्वीपान्,' (३.३५६) ।

सिंहस्वामी, एक देवता का नाम है (६.३०४) ।

१. सुखराज, राजा शङ्करवर्मा के एक मन्त्री का नाम है (५.२०७) । इसका भांजा राजा का द्वारपाल था जो अपने ही प्रमाद से वीरानक नामक स्थान पर मार डाला गया (५.२१४) । जब आहत राजा शङ्करवर्मा की मार्ग में मृत्यु हो गई तब इसने इस समाचार को गुप्त रक्खा (५.२२३) ।

२. सुखराज, एक डामर का नाम है (६.१३०६) ।

१. सुखवर्मा, चिप्पट जयापीड के मामा उत्पल के पुत्र का नाम है जो अपने चाचा, मम्म, के उत्कर्ष को देखकर उससे ईर्ष्या करने लगा (४.७०८) । उत्पल की मृत्यु के बाद इसने अजितापीड के पुत्र उत्पलापीड को राजा बनाया (४.७०९) । अपनी शक्ति के बल पर यह एक प्रकार से राजा ही था किन्तु शुष्क नामक इसके भ्राता ने इसका वध कर दिया (४.७१४) । शूर नामक मंत्री इसके पुत्र, अवन्तिवर्मा, को राजा बनाने का प्रयास करने लगा (४.७१५) । ८.३४३० ।

२. सुखवर्मा, शूरवर्मा के दूसरे पुत्र का नाम है (५.१२९)। इसका पुत्र (५.२५१)।

सुगन्धसीह, खशजातीय बाण के पुत्र, तुङ्ग, के एक भ्राता का नाम है (६.३१९)। राजकलश के पक्षपातियों को परास्त करके इसने उसे बन्दी बना लिया (७.२४)। कालान्तर में इसने राजकलश को मुक्त कर दिया (७.२७)। इसकी मृत्यु (७.४५)। इसके पुत्र, त्रिभुवन, से श्रीलेखा का प्रगाढ़ प्रेम हो गया (७ १२४)।

सुगन्धा, उत्तरपथ के एक राजा, स्वामिराज, की पुत्री और शङ्करवर्मा की पत्नी का नाम है (५.१५७)। "जब शङ्करवर्मा एक चाण्डाल के बाण से आहत होकर गिर पड़े तब यह विलाप करती हुई उसे सम्हाल कर बैठी। उस समय राजा ने अपने पुत्र, गोपालवर्मा, को इसे सौंपा (५.२२०–२२१)।" शंकरवर्मा कश्मीर का राजा हुआ (५.२२८)। शंकरवर्मा के वंश का अन्त हो जाने पर इसने स्वयं राज्यकार्य का संचालन आरम्भ किया (५.२४३)। इसने तन्त्रियों और पदातियों के एक ऐक्यबद्ध मण्डल के साथ मैत्री करके दो वर्ष तक राज्यकार्य का संचालन किया (५.२४९)। पदातियों आदि ने पार्थ को राज्यसिंहासन पर बैठा कर इसे राज्यच्युत कर दिया (५.२५६)। एकांग के सैनिक हुष्कपुर जाकर इसे पुनः राजधानी में लाये (५.२५९)। इसका निष्पालक विहार में देहान्त हो गया (५.२६२)। मेरुवर्धन-पुत्र प्रभाकरदेव इसका प्रेमी भी बन गया (५.४७२)। ८.३४३१।

सुगन्धादित्य, एक व्यक्ति का नाम है जिसके साथ मंत्री मेरुवर्धन ने गुप्त रूप से मैत्री कर ली (५.२६९)। 'सुगन्धादित्यबीजाप्तो व्यवायविधिसेवया,' (५.२८१)। 'सुगन्धादित्यमौत्सुक्यात्साऽपि देवी मृगावती। स्वयं संबुभुजेभ्यऽर्थ्य कान्ता कामितकामिनी।,' (५.२८४)। ८.१९५४।

सुगन्धेश, एक शिव का नाम है (५.१५८)।

सुगला, राजपुत्र हर्ष की पत्नी का नाम है जिसका अपने श्वसुर कलश के साथ अवैध सम्बन्ध हो गया और यह अपने पति की हत्या का षडयन्त्र करने लगी (७.६८५)। हर्ष के जीवित होने का विश्वास दिलाने के लिये उत्कर्ष ने इसे हर्ष के अभूषण के साथ विजयमल्ल के पास भेजा (७.८१२)। यह अपने अनेक अपराधों को छिपाती हुई हर्ष के साथ सिंहासन पर बैठ गई (७.८३०)।

सुग्रीव, एक वानरराज का नाम है जिसके बड़े भाई, बालि का श्रीराम दाशरथी ने वध किया था (८.२९७६)।

सुजनवर्धन, सुस्सल के एक प्रियपात्र का नाम है जो गौरक पर क्रुद्ध हो उठा (८.६३०)।

सुजनाकर, एक राजभृत्य का नाम है। जब विद्रोही, राजा उच्चल पर प्रहार करने लगे तब यह उसके पास से भाग गया (८.३१२)।

सुज्जक, राजा हर्ष के एक द्वारपति का नाम है जिसे उच्चल ने बन्दी बना लिया (७.१३०१)।

सुज्जि, प्रज्जि के सहोदर भ्राता का नाम है (८.१०४६)। मल्लकोष्ठ से युद्ध करते समय पृथ्वीहर के अनुज ने इसे परास्त कर दिया (८.१०६०)। यह युद्धकार्य में निपुण हो गया था (८.१०८८)। यह बार-बार पृथ्वीहर से क्षिप्तिका तटपर युद्ध करता रहा (८.११२६)। इसने काकवंशी शोभक को जीवित ही पकड़ लिया (८.१२६२)। ८.१२७९, १२८० (यह उत्पल पर विश्वास नहीं करता था), १३८८ १४०२, १४१५, १४१६, १४२०, १४२२, १४२९, १४७८ (भास आदि स्वपक्षियों को मुक्त कराने के लिये सिंहदेव ने पञ्चचन्द्र आदि के साथ इसे भेजा), १४८० (टिक्क के अनुचरों का वध करके भास इसके पास आ गया), १४८२, १४८३ (अधिकार प्राप्त रहने पर भी यह राजा के मुख्य मन्त्री का मुखापेक्षी बना रहता था), १४९७ (यह युद्ध के लिये गम्भीरा नदी के तट पर आया), १५०७, १५१६, १५८६ (इसने हाडिग्राम को जलाकर भस्म कर दिया), १५९९, १६०३, १६०८ (जयसिंह के रोगग्रस्त हो जाने पर इसने उसके गुणलेखा से उत्पन्न पुत्र, पर्माण्डि, को राजा बनाना चाहा), १६०९, १६१७, १६२०, १६२५, १६३० (यह पर्णोत्स की ओर चला), १६३४, १६३५, १६३९, १६४२ (सोमपाल आदि इसे राजा के विरुद्ध उकसाने लगे), १६४६ (इसके प्रति सोमपाल के आदरभाव में ह्रास होने लगा), १६५० (यह गङ्गायात्रा के लिये चला), १६६१, १६६५, १६६७ (यह गङ्गायात्रा से लौटा), १६६९, १६७० (यह भिक्षाचर से मिलने जालन्धर चला गया), १८५३ (यह भी सोमपाल के कुचक्र में सम्मिलित था), १८६७, १८७१, १८७२, १८७४, १८७९, १८९१, १८९२ (इसने नग्न प्रतीहार को देखकर अपना मुँह ढँक लिया), १९०० (इसने प्रतीहार लक्ष्मक को पकड़ कर सोमपाल को सौंप दिया), १९२१ (यह लोठन का मन्त्री बन गया), १९२४, १९३१, १९३८, १९३९, १९४५ (इसकी सहायता से लोठन ने कुछ धन प्राप्त किया), १९८०, १९८१, १९८२, १९८५, १९८६, २०२०, २०३५, २०४३ (इससे विवाह-सम्बन्धी नाता जुड़ जाने पर चित्ररथ प्रजा का उत्पीड़न करने लगा), २०४४ (इसने धन्य आदि मन्त्रियों की सहायता की), २०४६, २०४७, २०५६, २०५९, २०६३, २०७२, २०७६, २०७८ (यह सञ्जपाल से भयभीत रहने लगा), २०८० (यह राजा जयसिंह का विद्रोही बन गया), २०८८, २०८९, २०९१

(सञ्जपाल ने इससे मैत्री कर ली), २०९२, २११० (राजा जयसिंह इसकी हत्या कराने के लिये तत्पर हुआ), २१११ (इसे राजा के अभिप्राय का पता लग गया), २११२, २१२९, २१३६, २१३८, २१४४ (जब कुलराज ने इसपर छुरे से प्रहार कर दिया तब इसके सेवकों ने चारों ओर से द्वार बन्द करके कुलराज का वध करने का प्रयास किया), २१४७ (कुलराज आदि ने इसका सर काटकर आँगन में फेंक दिया), २१५४ (सुज्जौ हते क्षते वापि), २१५५, २१५६, २१५७, २१७६ (इसके भृत्यों का वध), २१७७ (इसके छोटे भाई लक्ष्मक को सैनिकों ने मार डाला), २१८० (इसके साले का वध), २१८१ (इसके अन्यान्य आश्रितों का वध किया गया), २१८४ (इसके पुत्र का नाम सज्जल था), २१८९ (अयुक्तं नृपतिः सुज्जिवधं मेने प्रजाः पुनः), २२४० (द्विजानुद्वेजयन्सुज्जिर्द्विजादेवासदद्वधम्), २४८०, ३२५३, ३३३४।

सुदास, एक पूर्ववर्ती राजा (कल्माषपाद) का नाम है (४.६२६)।

सुधांशु = चन्द्रमा (४.३९४)।

सुनिश्चितपुर, एक नगर का नाम है (४.१८३)।

सुन्दरीभवन, एक स्थान का नाम है (५.१००)।

सुन्न, वज्र के पुत्र का नाम है जिसे हर्ष ने मन्त्रिपद प्रदान किया (७.८९४)। राजा हर्ष ने इसे दण्डनायक बनाया (७.९५१)। इसने हर्ष के के साथ विश्वासघात किया (७.१५४०)। इसने अनुचित परामर्श दिया (७.१५८५)। इसने हर्ष का साथ छोड़ दिया (७.१६१९)।

सुभटा, रानी सूर्यमती का दूसरा नाम है (७.१८०)।

सुभटामठ, रानी सूर्यमती द्वारा निर्मित कराये गये एक मठ का नाम है (७.१८०)। ८.२१८३।

सुमना, रिल्हण के भाई का नाम है जो मठ, अग्रहार, तथा देवमन्दिरों के जीर्णोद्धार आदि सत्कर्मों द्वारा धर्मात्माओं के समकक्ष हो गया (८.३३५५)।

सुमनोन्तक, एक ब्राह्मण का नाम है जिसे दिद्दा ने अपनी ओर मिला लिया (६.३३९)। तुङ्ग ने इसे बन्दी बना लिया (६.३४७)।

सुमेरु, एक पर्वत का नाम (८.३१०)।

सुयोधन = दुर्योधन कौरव (७.१५३)।

सुय्य—राजा अवन्तिवर्मा के पुण्यप्रताप से प्राणियों की प्राणरक्षा के लिये स्वयं अन्नपति सुय्य के रूप में अवतीर्ण हुये (५.७२)। "सुय्या नामक एक चाण्डाली को घड़े में पड़ा एक बालक मिला जिसे उसने ग्रहण कर लिया। उसी बालक का नाम सुय्य पड़ा (५.७४–७८)।" काश्मीर की नदियों आदि

के जल को नियन्त्रित करने के इसके प्रयासों का वर्णन (५.८२ और बाद)। 'सुय्येनाद्भुतकर्मणा', (५.९१)। 'संगमो नगरोपान्ते स सुय्योपक्रमस्तयोः', (५.९८) । 'सुय्यस्याभ्यर्चितस्तटेः' (५.१००)। 'न कश्यपेनोपकृतं न यत्संकर्षणेन वा । हेलया मण्डलेऽमुष्मिस्तत्सुय्येन सुकर्मणा ॥', (५.११३)। 'भूमेर्जलादुद्धरणं द्विजक्षेत्रे तथार्पणम् । सेतुबन्धोऽश्मभिस्तोये यमनं कालियस्य च ॥ चतुर्षु सिद्धमिति यद्विष्णोः सत्कर्मजन्मसु । सुय्यस्य तत्पुण्यराशेरेकस्मिन्नेव जन्मनि ॥', (५.११४-११५)। इसने सुय्याकुण्डल नामक ग्राम ब्राह्मणों को दान किया और सुय्यासेतु का निर्माण कराया (५.१२०)। इसने सुय्यासेतु का निर्माण कराया (५.१९०)। मदनादित्य इसका वंशज था (६.१३३)।

सुय्यपुर, एक स्थान का नाम है (५.११८; ८.३११८)।

सुय्या, पूर्वकाल की एक चाण्डाली का नाम है (५.७४)। "इसे एक मिट्टी का घडा मिला जिसका ढक्कन खोलने पर उसमें एक शिशु दिखाई पड़ा। इसने उसे ग्रहण कर लिया। उस बालक का नाम सुय्य पड़ा (५.७४-७८)।" ६.१३३ ।

सुय्याकुण्डल, एक ग्राम का नाम है (५.१२०)।

सुय्यासेतु, सुय्य द्वारा निर्मित एक सेतु का नाम है (५.१२०)।

सुरगुरु = बृहस्पति (६.२७४)।

सुरेन्द्र, खगेन्द्र के पुत्र का नाम है जो पिता के बाद काश्मीर का राजा हुआ (१.९१) । 'शतमन्यु शान्तःमन्त्रोर्गोत्रभिद्गोत्ररक्षिणः । लेभे यस्य सुरेन्द्रस्य सुरेन्द्रो नोपमानताम् ॥', (१.९२)। इसने दरद देश के पास सोरक नामक एक नगर बसाया और नरेन्द्रभवन तथा सौरस नाम के दो विहार भी निर्मित कराये (१.९३-९४)। ८.३४१० ।

सुरेन्द्रवती, राजा शङ्करवर्मा की एक रानी का नाम है जो राजा की चिता में कूदकर सती हो गई (५.२२६)।

सुरेश्वरी, एक क्षेत्र का नाम है (५.३७)। इसके प्राङ्गण में शूरपुत्र रत्नवर्धन ने भूतेश्वर शिव की स्थापना की (५.४०)। इस क्षेत्र में राजमन्त्री शूर की पत्नी काव्यदेवी ने अपने नाम से एक शिव की प्रतिष्ठा की (५.४१)। ६.१४७; ८.५०६, ७४४, २३४४, २३६३, २४१८, ३३६५ ।

सुलक्कन, रक्क के पुत्र का नाम है (६.३४२)।

सुल्ला, राजा उच्चल की बहन का नाम है (८.२४८)।

सुल्लाविहार, एक विहार का नाम है जिसका राजा जयसिंह ने जीर्णोद्धार कराया (८.२४८, ३३१८)।

सुल्हण, एक विद्रोही सेनानायक का नाम है जिसे साथ लेकर तिलक हुष्कपुर आ गया (८.९४४)।

सुल्हरी, एक स्थान का नाम है (८.१५३०, १५९६)।

सुवर्ण, गोधर के पुत्र का नाम है जो पिता के बाद काश्मीर का राजा हुआ। इसने कराल देश में सुवर्णमणिकुल्या नदी बहाई (१.९७)। ८.३४१० ।

सुवर्णकेतकी, एक पुष्प का नाम है (४.१५१)।

सुवर्णपार्श्व, एक ग्राम का नाम है जिसे ललितापीड ने अग्रहार के रूप में ब्राह्मणों को दान किया (४.६७३)।

सुवर्णमणिकुल्या, एक नदी का नाम है (१.९७)।

सुवर्णसानूर, एक ग्राम का नाम है : ७.१५११; ८.११३४, ११३६ ।

सुव्रत, एक प्राचीन इतिहासकार का नाम है जिसके ग्रन्थ को कल्हण ने क्लिष्ट और विद्वत्तापूर्ण होने के कारण इतिहास का ज्ञान कराने के लिये अनुपयुक्त बताया है (१.११-१२)।

सुश्रवा, एक नाग का नाम है (१.२०३) 'सुश्रवसः सुतें', (१.२१७)। इसने नरपुर को नष्ट कर दिया (१.२५८)। इसकी बहन का नाम रमण्या था (१.२६३)। १.२६७; ८.९९१ ।

सुषुम्णा, शरीर की एक नाड़ी का नाम है (८.२३३३)।

सुस्सल, गुंगु के पौत्र और मल्ल के पुत्र का नाम है (७.११८३)। यह मन्त्री लक्ष्मीधर की पत्नी से प्रेम करने लगा (७.१२४६, १२४८)। यह भाग कर उत्रास ग्राम के निवासी डामरों के पास चला गया (७.१२५४)। इसने कालिञ्जर में शरण ली (७.१२५६)। इसने कश्मीर पर आक्रमण किया ((७.१३४८)। राजा हर्ष ने उच्चल की ओर से ध्यान हटाकर इससे युद्ध के लिये सैनिक भेजे (७.१३५४)। इसने हर्ष के सैनिकों को परास्त कर दिया और इसके आक्रमण के भय से सहेल सेना-सहित राजधानी की ओर लौट पड़ा (७.१३५८)। जब इसने हर्ष के सैनिकों को परास्त कर दिया तब तारमूल में उच्चल का प्रभाव पुनः बढ़ने लगा (७.१३५९)। अपने पिता की हत्या का समाचार पाकर यह अत्यन्त क्रुद्ध हुआ और वह्निपुर तक के समस्त गाँवों को भस्म करता हुआ विजयक्षेत्र की ओर बढ़ा (७.१४९८)। इसे आते देखकर हर्ष के पट्ट आदि योद्धा विजयेश्वर के मंदिर में छिप गये (७.१५०४)। विजयेश्वर के कोशभवन की छत से इसने हर्ष के भयत्रस्त सैनिकों को देखा (७.१५०६)। इसके सैनिकों ने पट्ट आदि को रस्सी में बाँध कर विजयेश्वर के मंदिर के ऊपर चढ़ाया क्योंकि ऊपर जाने के लिये सोपान

नहीं था (७.१५०८)। इसके समक्ष लज्जित हो पट्ट आदि ने विदेश जाने की आज्ञा माँगी जिसे इसने स्वीकार किया (७.१५०९)। इसने अत्यन्त निर्दय कर्म किया (७.१५११)। यह जिस छत पर बैठा था वह हर्ष के सैनिकों से छीने गये शस्त्रास्त्रों के भर गया (७.१५१७)। यह स्वयं राज्य हस्तगत करना चाहता था अतः इस बात के लिये सदैव सतर्क रहता था कि इसका बड़ा भाई, उच्चल, कहीं राज्य न प्राप्त कर ले (७.१५२२)। दो ही तीन दिन में निकटस्थ स्थानों पर अधिकार करके यह राजधानी के समीप पहुँच गया (७.१५२४)। इससे युद्ध के समय राजा हर्ष ने पित्थ के पुत्र मिल्ल की उपेक्षा की (७.१५३३)। भोज से परास्त होकर यह रणभूमि से भागकर लवणोत्स आ गया (७.१५३७)। उच्चल के दण्डनायक ने उसे बताया कि यदि वह तत्काल राजधानी नहीं पहुँच जाता तो राज्य सुस्सल को प्राप्त हो जायगा (७.१५४०)। हर्ष के नगराधिकारी, नाग, ने इसे पराजित किया था (७.१५४३)। यह अपने बड़े भाई उच्चल का राज्य हस्तगत करना चाहता था (८.१९१)। 'असंख्यै सौस्सलैर्योधैराहवायासनिःसहैः,' (८.१९७)। इसके पराजित हो जाने पर गग्ग को इसके अनेक घोड़े प्राप्त हुये (८.१९९)। इसने कालिञ्जराधीश कल्ह की दौहित्री, और विजयपाल की पुत्री, मेघमञ्जरी से विवाह किया (८.२०५)। यह धैर्यपूर्वक दुर्गम मार्गों से चलता हुआ कई मास में अपनी भूमि, लोहर, पहुँचा (८.२०७)। सञ्ज-पाल ने इसके पास नौकरी कर ली (८.२१२)। इसके घर एक भाग्यशाली पुत्र का जन्म हुआ (८.२३८)। इसने इस बालक का नाम जयसिंह रक्खा (८.२३९)। भोगसेन ने इसे पराजित करने के लिये लोहर की ओर प्रस्थान किया (८.२९४)। इसे जब अपने ज्येष्ठ भ्राता, उच्चल, की मृत्यु का समाचार मिला तब यह शोक से पागल सा हो गया (८.३७९)। इसके भय से मुक्त होने के लिये सल्हण के मंत्रियों ने मंत्रणा की (८.४२३)। यह शक्तिहीन हो गया था (८.४३८)। गर्गचन्द्र ने इससे मैत्री कर ली (८.४४२)। यह गर्गचन्द्र के साथ संधि करके भी भयभीत रहता था (८.४५०)। निराश्रय लक्कक संजपाल के साथ इसके पास आया (८.४५५)। सहेल ने सल्हण से कहा कि वह इसके साथ उसकी संधि करा देगा (८.४५७)। इसके सैनिक गर्गचन्द्र के आक्रमण की आशंका से चिन्तित थे (८.४६३)। यह उस स्थान पर आया जहाँ युद्ध हो रहा था (४.४७५)। जब यह राजमहल के आँगन में पहुँचा तब वहाँ राज्यसिंहासन से 'महाराज सुस्सल की जय हो', यह ध्वनि निकलने लगी (८.४७६)। इसने आगे बढ़कर सल्हण और लोठन को गले से लगाकर कहा : 'तुम लोग अभी बच्चे हो।' यह कह कर इसने उन दोनों का शस्त्र

रखवा लिया (८.४७८)। इसने ज्योंही राज्यसिंहासन पर अधिकार किया उसी समय लोगों ने क्षोभ त्याग दिया (८.४८१)। नैपुण्य में इससे बढ़कर कोई अन्य राजा नहीं हुआ (८.४९७)। इसके राज्य में स्वप्न में भी दुर्भिक्ष का नाम नहीं सुन पड़ता था (८.४९८)। इसने अपने पिता के मामा के पुत्र कुमारपाल पर पुत्रवत् प्रेम किया (८.५४६)। अपने भाइयों का वध कराकर सोमपाल इसकी शरण में आ गया (८.६२०)। यह अत्यन्त धैर्यशाली था क्योंकि यद्यपि इसका राज्य अहर्निश शत्रुओं के प्रहार से त्रस्त रहता था तथापि इसका धैर्य यथावत् बना रहा (८.७३९)। लोगों की यह धारणा बन गई कि इसके चले जाने पर भिक्षाचर सम्पूर्ण धरती को स्वर्णमयी बना देगा (८.७९६)। ४१९६ लौकिक वर्ष के मार्गशीर्ष कृष्ण षष्ठी को विद्रोहियों से विकल होकर इसने राजधानी छोड़ दिया (८.८१९)। इसके राजधानी छोड़कर चले जाने के बाद जो कोश बाकी रह गया था वह नये राजा भिक्षाचर के लिये कुबेर के भण्डार के समान अटूट हो गया (८.८५४)। इसके आक्रमण को विफल करने के लिये राजा भिक्षाचर ने सेनापति बिम्ब को राजपुरी के मार्ग से लोहर भेजा (८.८८४)। राजा भिक्षाचर के सेनापति की ओर से आया एक तुरुष्क अश्वारोही एक रस्सी से इसे बाँधने की गर्वोक्ति करता फिरता था (८.८८६)। पहले जो प्रजा इसकी निन्दा करती थी वही अब इसकी सराहना करने लगी (८.८९३)। राजा भिक्षाचर के विरुद्ध अनशन करनेवालों ने इसका 'लम्बकूर्च' नाम रक्खा था (८.९०४)। समस्त नागरिक इसे वापस लाने के लिये प्रयत्नशील थे (८.९०७)। जब भिक्षाचर ने प्रयाग के भाञ्जे और अपने विद्रोही सारथि को कैद करने का प्रयास किया तब वह इसके पास भाग आया (८.९११)। सोमपाल और बिम्ब आदि इससे लड़ने के लिये पर्णोत्स आये (८.९१४)। वैशाख शुक्ल त्रयोदशी को इस स्वाभिमानी राजा ने सोमपाल-बिम्ब आदि से युद्ध करना आरम्भ किया (८.९१६)। भिक्षाचर के जो राजद्रोही कर्मचारी इसके पास जनक आदि का सन्देश लाये थे उन्हें परास्त करने के लिये भिक्षाचर उद्यत हुआ (८.९३०)। भिक्षाचर क्रोध के कारण इसके सम्मुख उपस्थित नहीं हुआ (८.९३१)। लम्बकूर्च सुस्सल ने राजसेना को घेर लिया (८.९४८)। "विजयी होकर इसने सेनासहित पुनः नगर में प्रवेश किया। इस प्रकार ४१९७ लौकिक वर्ष की ज्येष्ठ शुक्ल तृतीया को छः मास बारह दिन बाद यह पुनः अपनी राजधानी लौटा (८.९५३, ९५४)।" यह प्रजासंहार का समाचार सुनकर युद्ध के लिये निकला (८.९९९)। "सौस्सले

बले', (८.१०१३)। 'सौस्सले सैन्ये', (८.१०१८)। 'दस्यूनां सुस्सलो राजा मेने तत्स्वहितं मतन्', (८.१०३३)। इसने भिक्षाचर की सेना को पराजित कर दिया। (८.१०३७)। इसने वैशाख मास में प्रज्जि आदि सेनानायकों को मल्लकोष्ठ आदि से युद्ध करने का आदेश दिया (८.१०५८)। जब इसने सुना कि लवन्य लोगों ने नगर को हस्तगत कर लिया है तब यह सेनासहित विजयक्षेत्र की ओर चला (८.१०६२)। इसकी सेना के असंख्य योद्धाओं को पृथ्वीहर ने कैद कर लिया, (८.१०७२)। सम्पूर्ण सेना नष्ट हो जाने पर भी इसने थोड़े से सैनिकों को लेकर शत्रुओं को घेर लिया (८.१०८२)। जब यह शत्रुओं के आघात की प्रतीक्षा कर रहा था तब अपने छोटे भ्राता के साथ प्रज्जि भी इसकी सहायता के लिये रणाङ्गण में आ गया (८.१११०)। यह विद्रोहियों से त्रस्त होकर सैन्यसाधन एकत्र करने में व्यस्त था (८.११५६)। ८.११६०, १२०० (इसने अकेले ही अनेक शत्रुओं को खदेड़ दिया), १२३२ (इसने आषाढ़ मास की प्रतिपदा को युवराज का अभिषेक करके अश्रुगद्गद् कण्ठ से उसे राजतन्त्र-सम्बन्धी बातें बताईं), १२५३। उत्पल आदि विद्रोहियों के घातक प्रहार से इसकी मृत्यु (८.१३१६)। फाल्गुन की अमावस्या को पचपन वर्ष की अवस्था में इसकी हत्या की गई (८.१३४८)। 'केनाप्यसति सुस्सले', (८.१३६५)। 'हतः सुस्सलः', (८.१३८६)। 'ददर्श सौस्सलं मुण्डमथ भिक्षुरुपागतम्', (८.१४४६)। ''सौस्सलि', अर्थात् सिंहदेव (८.१५२९)। 'सुस्सलक्ष्मापतेर्धैर्ये', (८.१५३६)। जहाँ इसका प्रताप भंग हो चुका था उस हाडिग्राम को असाधारण वीर सुज्जि ने जलाकर भस्म कर दिया (८.१५८६)। सुज्जि इसकी अस्थियों को लेकर गङ्गायात्रा के लिये प्रस्थित हुआ (८.१६२६)। इसने लोहर पर्वत पर सल्हण तथा लोठन नामक दो सौतेले भाइयों को बन्दी बना रक्खा था (८.१७९५)। इसकी एक पत्नी का नाम शारदा था (८.१८२३)। इसने लोठन की पुत्री, पद्मलेखा, को शूर को दे दिया (८.१८४४)। ८.१९०५, १९२६ (सौस्सलिः), १९३२, १९३६, १९४९, २११५, २४८९ (विग्रहराजाख्यः सूनुः सुस्सलभूपतेः), २६९६ (सौस्सले सैन्ये), २८०९, ३३४७, ३४४५, ३४४६, ३४४८।

सुस्सला, रिल्हण की पत्नी का नाम है जिसके नाम पर रिल्हण ने भलेरक प्रपा नामक स्थान पर एक विहार बनवाया (८.२४१०)। ८.२४१४।

सूद्मटिक, देवसरस डामर के पुत्र का नाम है जो अपने भाई, वृहट्टिक्क के साथ मिलकर सुस्सल के विरुद्ध विप्लव करने की योजना बनाने लगा (८.५२२)। यह राजा सुस्सल के सैनिकों से बचकर निकल गया (८.५२९)। देखिये **टिक्क** भी।

सूर्य, गर्गचन्द्र के एक सेनानायक का नाम है जो एक विशाल सेना लेकर सुस्सल के सामने डट गया (८.४०२)। सुस्सल ने पूर्ववैर का स्मरण करके इसे बन्दी बना लिया (८.६४४) । ८.६७९ ।

सूर्यक, एक व्यक्ति का नाम है जिसे राजा सुस्सल ने पुत्रसहित सूली पर चढ़वा दिया (८.६७९)।

१. सूर्यमती, जालन्धरनरेश इन्दुचन्द्र की छोटी पुत्री का नाम है जिससे रुद्रपाल ने राजा अनन्तदेव का विवाह करा दिया (७.१५२)। 'देवी सूर्यमती भर्तुर्दर्पणस्येव बिम्बिता', (७.१७९) । इसका दूसरा नाम सुभटा था (७.१८०)। इसने अपना सारा धन देकर पद्मराज के ऋण से राजसिंहासन तथा राजमुकुट को मुक्त कराया (७.१९७)। भूति नामक द्वारपाल का पुत्र हलधर इसकी सेवा में रहता था (७.२०८)। इसने अनन्तदेव से दो दिन तक कलश के विरुद्ध युद्ध स्थगित रखने का अनुरोध किया (७.३७२)। इसका अनन्तदेव से कलह हुआ (७.४४०)। यह सती हो गई (७.४७२)। इसके शाप के अनुसार जयानन्द की मृत्यु हो गई (७.५६२)। ७.६७३, १२११ (शापः सूर्यमतीं देव्याः)।

२. सूर्यमती, चित्ररथ की पत्नी का नाम है जो पहले ही स्वर्गवासी हो चुकी थी (८.२३४२)।

सूर्यमतीगौरीश, एक मन्दिर का नाम है (७.६७३)।

सूर्यमती मठ, एक मठ का नाम है जहाँ रुके उच्चल से उसका भाई सुस्सल आकर मिला (७.१६५८)। राजा जयसिंह ने इसका जीर्णोद्धार कराया (८.३३२१)।

सूर्यवर्मचन्द्र, एक डामर का नाम है। (७.३५७)। इसके पुत्र, जनक, ने उच्चल को काश्मीर आने के लिये प्रोत्साहित किया (७.१२६४)। 'स सूर्यवर्मचन्द्रस्य न जातः कश्चिदन्वये। उपयोगाय यो नागान्मल्लाभिजनजन्मनाम् ॥', (८.२७८०)।

सूर्यामूलक, एक मठ का नाम है (७.९५२)।

सेनट, राजा अनन्तदेव के प्रेमास्पद, वप्पट, के एक वंशज का नाम है जिसने राजा की मृत्यु के बाद वैराग्य धारण कर लिया (७.४८२)।

सेनामुखी, रणादित्य की रानी का नाम है (३.४६१)।

सेल्यपुर, एक स्थान का नाम है (७.४९४)। ८.२००, २०२।

सोदर, एक तीर्थ का नाम है (१.१२३-१२६, १२८, १२९)।

सोदराम्बु, एक तीर्थ का नाम है (२.१६९)।

सोमतीर्थ, एक तीर्थ का नाम है (८.३३६०)।

१. **सोमपाल,** दर्शनपाल के चाचा का नाम है जिसे साथ लेकर उच्चल ने शत्रुओं से युद्ध किया (७.१३३७)।

२. **सोमपाल,** चम्पा के राजपुत्र का नाम है (८.३२३)।

३. **सोमपाल,** राजपुरी के राजा संग्रामपाल के पुत्र का नाम है जो पिता की मृत्यु के बाद राजपुरी की गद्दी पर बैठा (८.२८८)। यह सुस्सल का मित्र बन गया (८.५१९)। इसने अपने सगे भाई नागपाल और सौतेले भाई प्रतापपाल का वध करा दिया (८.६१९)। यह अपने भाइयों के वध को गुप्त रखने के लिये अपने आमात्य का वध करके सुस्सल की शरण में भाग आया (८.६२०)। पहले तो राजा सुस्सल इस पर क्रुद्ध हुआ परन्तु फिर उसने इसका राजपुरी में राज्याभिषेक कराने का निश्चय किया (८.६२१)। यह नागपाल को राज्य देकर कहीं भाग गया (८.६२४)। यह मन्त्री बना (८.६३४)। नगर में प्रवेश करके इसने राजा सुस्सल की अट्टालिकाओं को लूटा और उनमें आग लगा दी (८.७६४)। जब सुस्सल के आक्रमण को विफल करने के लिये राजा भिक्षाचर ने अपने सेनापति, बिम्ब, को राजपुरी के मार्ग से लोहर भेजा तब बिम्ब ने इसके द्वारा अपनी सहायता के लिये सल्लार में तुरुष्कों की सेना भी बुला ली (८.८८५)। बिम्ब के साथ यह सुस्सल से युद्ध करने के लिये पर्णोत्स आया (८.९१४)। यह राजा सुस्सल का मामा था (८.९२०)। सुस्सल से युद्ध में इसकी मृत्यु हो गई (८.९२३)। इसने भिक्षाचर की रक्षा की (८.९६४)। राजा सुस्सल ने इसकी कुटिलता का स्मरण करके राजपुरी को नष्ट कर देने का निश्चय किया (८.१२७०)। ८.१४६४, १४९१, १५१४ (सोमपालदूतः पलायितः), १५२९ (इसने भिक्षु को आश्रय नहीं दिया), १६४२ (इसने सुज्जि को राजा के विरुद्ध उकसाना आरम्भ किया), १६४३, १६४६ (सुज्जि के प्रति इसके आदरभाव में ह्रास होने लगा)। इसने कल्हणिका की पुत्री, अम्बापुत्रिका, का पाणिग्रहण किया (८.१६४८)। ८.१६६९, १६७३ (इसके बार-बार आग्रह करने पर भिक्षाचर से मिलने का विचार त्यागकर सुज्जि काश्मीर की ओर चला), १८५० (उदयन ने इसे प्रचुर धन देकर अपने राजा की सहायता के लिये बुलाया), १८५३ (यह कपट-हृदय से राजा के पास आया), १८५४ (जब इसे भिक्षाचर के पक्ष से फोड़ा गया तब भी इसने दूतों से धन माँगा), १८६०, १८७० (लोठन ने इसकी माँग को ठुकरा दिया), १८९५ (खश लोग प्रतीहार को पकड़ कर इसके पास लाये), १८९८, १९०० (सुज्जि ने लक्ष्मक प्रतीहार को पकड़ कर इसे सौंप दिया), १९७६, १९८३, २२१५ (यह अपने पुत्र से त्रस्त होकर राजा

जयसिंह की शरण में चला आया (८.२२१५) । ८.२२२२, ३३९४ ।

सोमला, पद्मरथ की कन्या का नाम है जिसके साथ मल्लार्जुन ने विवाह किया (८.१९२३, १९७५) ।

सोमानन्द, एक सिद्ध योगी का नाम है (७.१६३५)

सोमेश्वर, सोमानन्द नामक एक सिद्ध योगी द्वारा स्थापित एक शिवमंदिर का नाम है (७.१६३५) ।

सोरक, एक नगर का नाम है जिसे सुरेन्द्र ने बसाया था (१.९३) ।

सौडोत्र, एक देश का नाम है (६.३००) ।

सौभाग्यलेखा, राजपुरी में रह रही उच्चल की पुत्री का नाम है जिसने राजा सुस्सल के मुण्ड को देखकर उसे लानेवाले अनुचरों का वध करा देने का निश्चय किया (८.१४६४) ।

सौमरस, सुरेन्द्र द्वारा निर्मित कराये गये एक विहार का नाम है (१.९४) ।

सौराष्ट्र, भारत के पश्चिमी समुद्र-तटवर्ती एक देश का नाम है (३.३२८) ।

स्कन्दगुप्त, प्रवरसेन-पुत्र राजा युधिष्ठिर के एक मन्त्री का नाम है जिसने अनेक विहार और चैत्यों का निर्माण कराया (३.३८०) ।

स्कन्दपुर, एक ग्राम का नाम है जिसे गोपादित्य ने ब्राह्मणों को दान किया (१.३४०) ।

स्कन्दभवन, एक विहार का नाम है (६.१३७) । इसके समीप चिता बनवा कर राजा सुस्सल की चार रानियाँ सती हो गईं (८.१४४२) ।

स्थानक, उत्पल के पिता का नाम है (८.१२४५) ।

स्थानपाल, एक स्थानीय पुरोहित का नाम है (८.८११) ।

स्थानेश्वर, एक डामर का नाम है (६.२८३) ।

स्थामन्—'अथोज्जगाम स्थामस्थः सह व्यूहेन सादिनाम् । नगराधिकृतो नागस्तस्याग्राद्भूरिसैनिकः ॥,' (७.१५४२) । ८.६६३, ६६४ ।

स्मर = कामदेव (४.१८) ।

स्मरशास्त्र की वसुनन्द ने रचना की थी (१.३३७) ।

स्रष्टा = ब्रह्मा (२.४७) ।

स्वयंभू : १.३४; २.१३६; ३.४५५; ८.७८, २५०, २४३० ।

स्वयंवर—गान्धार के एक स्वयंवर का उल्लेख (१.६६) । अमृतप्रभा का स्वयंवर (२.१४७) ।

स्वर्णाद्रि=सुमेरु पर्वत (८.३०४५) ।

स्वापिक, एक दुर्ग का नाम है (७.५९६) ।

स्वामिराज, उत्तरापथ के एक राजा का नाम है जिसकी पुत्री, सुगन्धा देवी, शंकरवर्मा की पत्नी थी (५.१५७) ।

ह

हंस, एक पक्षी का नाम है (१.३५, ३०८) ।

हंसरथ, उपद्रवियों के गिरोह के एक नायक का नाम है (८.२७९) । यह सड्ढ के राजा होने के बाद उसे त्रस्त करने के उद्देश्य से कहीं भाग गया (८.३५१) । इस बात का पता पाकर कि यह काश्मीर में उपद्रव करने के लिये सचेष्ट है, राजा सल्हण ने इसका वध करा दिया (८.४४३) । ८.१०८४ (?)

हंसराज, काश्मीर के एक मंत्री का नाम है जिसकी पृथिवीपाल के विरुद्ध युद्ध में मृत्यु हुई (६.३५०) ।

हंसी, रंग नामक एक गायक डोम्ब के साथ की एक सुन्दरी कन्या का नाम है (५.३६०) । राजा चक्रवर्मा ने इस पर मुग्ध होकर इसे महारानी बना दिया (५.३८७) ।

हनुमत्, ऊड्डतनय का नाम है जो दुर्लभक का मंत्री था (४.९) ।

हम्ब, बिद्दक के भ्राता का नाम है जिसका सुस्सल ने वध करा दिया (८.६७७) ।

हम्मीर, एक तुरुष्क सेनापति का नाम है (७.४७, ५३) । 'हम्मीरः समुच्छ्वसन्', (७.६४) । ८.११९० ।

हयग्रीववध, कवि मेण्ठ रचित एक काव्य का नाम है (३.२६०) ।

हयविद्या—अश्वशास्त्र (४.२६५) ।

हर = शिव : १.९०; ३.४५१, ४५२ ।

हरांशज = कृष्ण (१.७२) ।

हरि, राजा क्षेमगुप्त के एक प्रिय सेवक का नाम है (६.१६६) ।

हरिगण, एक जाति के लोगों का नाम है (५.१४२) ।

हरिराज, राजा संग्रामराज के एक पुत्र का नाम है जो लौकिक वर्ष ४१०४ की आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा को राजा के स्वर्गवास के बाद काश्मीर का राजा हुआ (७.१२७) । यह केवल २२ दिन राज्य करके श्रावण शुक्ला अष्टमी को स्वर्गवासी हो गया (७.१३१) । ८.३४४० ।

हरिविजय, एक प्रसिद्ध कवि, राजानक, की रचना का नाम है (५.३४) ।

हरिश्चन्द्र, एक प्राचीन राजा का नाम है : ४.६४९, ६५०; ७.७९७।

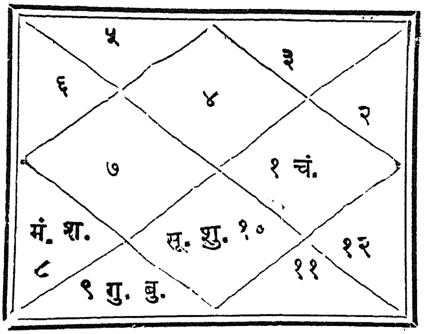
१. हर्ष एक विदेशी राजा का नाम है जिसने कुछ समय के लिये प्रतापादित्य से काश्मीर का राज्य हस्तगत कर लिया (२.७)।

२. हर्ष, उज्जयिनी के चक्रवर्ती राजा विक्रमादित्य का नाम है (३.१२५)।

३. हर्ष, बप्पिका के गर्भ से कलश द्वारा उत्पन्न पुत्र का नाम है जिसे अनन्तदेव और रानी सूर्यमती ने कलश के दुराचार से खिन्न होकर राजा बनाने की इच्छा की (७.३१९)। राज्य देने के उद्देश्य से रानी सूर्यमती ने इसे अपने पास बुला लिया (७.३९१)। यह विजयेश्वर क्षेत्र में रहते हुये अपने पिता से द्वेषभाव रखने लगा (७.४८६)। अपने विविध सद्‌गुणों और अनुपम पुरुषार्थ के कारण यह अत्यन्त प्रख्यात हो गया (७.६०९)। राजमंत्री नोनक ने राजा कलश को इसका वध करा देने का परामर्श दिया (७.६८३)। इसकी पत्नी, सुगला, का कलश से अवैध सम्बन्ध हो गया और वह इसके वध का षडयन्त्र करने लगी (७.६८५)। मंत्री नोनक ने इसे विष देने का षडयन्त्र किया (६.६८६)। इस षडयन्त्र का पता चलने पर यह अपने जीवन से निराश हो गया (७.६८८)। राजा कलश इसे राज्य देना चाहता था परन्तु मंत्रियों की इच्छा इसके विरुद्ध थी (७.७०३)। राजा कलश ने मंत्रियों से कहा कि वह इसे देश से निर्वासित कर देना चाहता है (७.७०५)। इसके रचित गीतों को सुनकर कलश उत्सुकतापूर्वक इसका स्मरण करने लगा (७.७१७)। मरणासन्न कलश इसे कुछ देने के लिये उत्कर्ष से कहना चाहता था परन्तु उसकी जिह्वा जड़ हो गई और वह केवल 'हर्ष-हर्ष' कहता रहा (७.७२०)। राजा कलश इसे जितना वेतन देते थे उतना ही वेतन विजयमल्ल को देने की उत्कर्ष ने प्रतिज्ञा की (७.७३२)। यद्यपि उत्कर्ष राजा हुआ तथापि वह इसका अभ्युदय चाहनेवाले नागरिकों के हृदय में स्थान नहीं बना सका (७.७३५)। जिस दिन इसके पिता, कलश, मार्तण्ड मन्दिर में मृत्यु के लिये गये उस दिन इसने भोजन नहीं किया (७.७३७)। विजयमल्ल ने इसे मुक्त करने का प्रयास करने का आश्वासन दिया (७.७५३)। विजयमल्ल से उसके मध्यस्थों ने कहा कि हर्ष के बन्दी रहने और विजयमल्ल के देशत्याग से उत्कर्ष को निष्कण्टक राज्य मिल जायगा (७.७६३)। विजयमल्ल के सैनिकों ने राजधानी पर आक्रमण करके इसे मुक्त कराने की घोषणा की (७.७७२-७७४)। इसने ठक्कुरों को भेज कर परास्त राज्य-सैनिकों को तटस्थ रहने का संदेश भेजा (७.७७५)। जब बाहर से कुछ लोगों ने द्वारा खोलने के लिये कहा तो इसने तत्काल द्वार खोल दिया (७.७८०)। नोनक मंत्री ने उत्कर्ष से कहा

था कि हर्ष का सर काट कर दिखाते ही विद्रोह शान्त हो जायगा (७.७८२)। उत्कर्ष के सैनिकों ने इस पर प्रहार नहीं किया (७.७८६)। यह अत्यन्त उदार और मिलनसार था, अतः उत्कर्ष के भेजे सैनिक उसकी आज्ञा के विपरीत इसके हितैषी बन गये (७.८०६)। जब सैनिकों ने शूर के पास वह मुद्रिका देखी जो हर्ष को मुक्त कर देने की संकेतक थी तो वे प्रसन्न होकर हर्ष के पास आये (७.८०८)। उत्कर्ष ने इसका वध करा दिया, ऐसा विचार करके विजयमल्ल क्रुद्ध हो उठा (७.८१०)। उत्कर्ष ने इसके जीवित होने के प्रमाण-स्वरूप इसकी पत्नी को इसका आभूषण लेकर विजयमल्ल के पास भेजा (७.८१२)। उत्कर्ष ने इसे मुक्त कर देने में ही अपना कल्याण देखा (७.८१३)। नोनक आदि ने इसे कारगार से मुक्त किया (७.८१४)। जब यह कारागार से चला तो स्थान-स्थान पर नागरिकों ने पुष्पवर्षा करके इसका स्वागत किया (७.८१६)। इसे देखकर विजयमल्ल अत्यन्त प्रसन्न हुआ (७.८१९)। एक विश्वस्त व्यक्ति ने इसका तथा उत्कर्ष का वध करके राजा बन जाने का विजयमल्ल को परामर्श दिया (७.८२१)। विजयमल्ल और उस विश्वस्त व्यक्ति के बात-चीत के ढंग से इसने परिस्थिति को समझ लिया (७.८२२)। यह राजसिंहासन पर बैठा (७.८२९)। वेश्याकाल में सहजा इसकी भी प्रेमिका रह चुकी थी (७.८६०)। इसने नोनक आदि को बन्दी बना कर कारागार में भेज दिया (७.८६६)। इसने एक ही दिन में राज्य-परिवर्तन का कार्य कर दिखाया (७.८६७)। इसकी कथा का वर्णन (७.८७३ और बाद)। जब इसे यह पता लगा कि डामरगण विजयमल्ल से मिलकर राज्य में उपद्रव कर रहे हैं तो यह उन्हें दबाने का उद्योग करने लगा (७.९१४)। विजयमल्ल के विद्रोह के कारण इसका राज्य-वैभव कुछ समय तक संकुचित रहा (७.९१९)। इसे दाक्षिणात्य पद्धति अधिक प्रिय थी, इसलिये इसने अपने राज्य में गोलाकार टंक सिक्के चलाये (७.९२६)। इसकी प्रशंसा सुनकर कवि बिल्हण कर्णाट से पुनः काश्मीर चला आया (७.९३७)। इसने राजपुरी पर आक्रमण किया (७.९६७)। इसने कन्दर्प को भगा दिया (७.९९६)। जयराज के विरुद्ध षडयन्त्र (७.१०२७)। धम्मट को नष्ट किया (७.१०४६)। इसने देव-सम्पत्तियों को लूटा और धातु की देवमूर्तियों को निकलवा लिया (७.१०९१)। 'ग्रामे पुरेऽथ नगरे प्रासादो न स कश्चन। हर्षराजतुरुष्केण न यो निष्प्रतिमीकृतः॥' (७.१०९५)। पुरातनकाल में राजाओं की मूर्खता पर जो कटाक्ष किये जाते थे वे सब इस राजा की मूर्खता के समक्ष तुच्छ प्रतीत होने लगे (७.१११५)। 'हर्षनृपतेः', (७.११२३)।

इसके आश्चर्यजनक कुकर्मों का वृत्तान्त सुनकर लोग विश्वास नहीं करेंगे (७.११३८)। अन्तःपुर में पहुँचे हुये युवक और यौवनोन्मत्त नवयुवतियाँ इसका संहार करने का षडयन्त्र करने लगीं (७.११४३)। इसके कुकृत्यों के कारण इसकी 'प्रताप चक्रवर्ती' उपाधि मलिन हो गई (७.११६२)। दुर्गघात पर आक्रमण किया (७.११७१)। 'हर्षप्रताप' (७.११८६)। डामरों को नष्ट कराया (७.१२२७)। 'किमन्यद्राक्षसः कश्चित्सुरतीर्थर्षिपूजितम्। निहन्तु मण्डलमिदं हर्षव्याजादवातरत्', (७.१२४३)। उच्चल और सुस्सल ने इसके विरुद्ध विद्रोह किया (७.१२५२)। इसने ठक्कुर कलशराज को पुष्कल धन देकर राजपुरी भेजा (७.१२६७)। यह राजा कलश का पुत्र था (७.१२८७)। सेना सहित उच्चल को अग्रसर होता देख कर यह भय से काँप उठा (७.१३०३)। इसने उच्चल को पराजित किया (७.१३३४)। जब इसने परीहासकेशव की मूर्ति को उखड़वाया तब उस समय जंगली कबूतरों के पंख के समान धूसरवर्ण धूल उड़ने लगी और तब तक उड़ती रही जब तक इसका सर नहीं कट गया (७.१३४५)। इसकी सेना में इसका मण्डलेश्वर चन्द्रराज ही एक स्वामिभक्त व्यक्ति था जिसने अपने प्राणों की आहुति दे दी (७.१३७६)। मंत्रियों ने इसे राज्य छोड़कर लोहर प्रान्त में चले जाने का का परामर्श दिया (७.१३८६ और बाद)। इसके सैनिक इससे घृणा करने लगे (७.१४५७)। चन्द्रराज की मृत्यु हो जाने से इसे निराशा हुई (७.१५०३)। इसके ममेरे भ्राता का नाम जासट था (७.१५१२)। इसने अपने पुत्र, भोज, को नियुक्त किया (७.१५२०)। राजप्रासाद में इस पर आक्रमण हुआ (७.१५४७)। इसने युवराज भोज का पता लगाने के लिये चम्पक को भेजा (७.१५८७)। इसकी सेना इसे छोड़कर भाग गई (७.१६०६)। इसने श्रीनगर से पलायन किया (७.१६१६)। चलते-चलते यह एक श्मशान में पहुँचा और वहीं रुक गया (७.१६३५)। युवराज भोज की मृत्यु का समाचार सुनकर उच्चल को शान्ति मिली और उसने इसे जीवित रहते हुये भी नगण्य समझा (७.१६५९)। इसे भोज का समाचार मिला (७.१६७०)। इसके साथ छल किया गया (७.१६९०)। प्रयाग के बहुत आग्रह करने तथा क्षुधा से पीड़ित होने पर भी इसने कोई भोजन ग्रहण नहीं किया (७.१६९८)। ४१७७ लौकिक वर्ष के भाद्रपद शुक्ल पञ्चमी को इसकी मृत्यु हुई (७.१७१७)। इसकी कुण्डली में दुर्योधन की ही भाँति अपने कर्मों से अपने वंश के मूलोच्छेद का योग था (७.१७१८)। इसकी कुण्डली इस प्रकार है (७.१७१९) :—



रामायण तथा महाभारत की कथा के समान राजा हर्ष की कथा भी बहुत बड़ी, वर्णनातीत और आश्चर्यजनक घटनाओं से ओत-प्रोत है (८.१७२८)। कनक नामक गायक ने मृत्यु का वरण करके इसके सेवकों में एक उच्च पद प्राप्त कर लिया (८.१३)। इसके पुत्र ने अपनी विभवमती नामक पत्नी से भिक्षाचर आदि पुत्र उत्पन्न किये (८.१६)। जिस लौकिक वर्ष में इसकी मृत्यु हुई उसी वर्ष में इससे ठीक तीन पक्ष बाद, मलमास के द्वितीय भाद्रपद में जनकचन्द्र की भी मृत्यु हुई (८.३५)। राजा उच्चल के समय जैसे उत्सव आदि होने लगे थे वैसे इसके समय में कभी नहीं हो सके (८.७१)। इसने परिहासकेशव की जो मूर्ति उखड़वा दी थी उसे उच्चल ने पुनः प्रतिष्ठित किया (८.७९)। इसने जिस सिंहासन को उखड़वा दिया था उसे उच्चल ने नवीन रूप में पुनः निर्मित कराया (८.८१)। इसकी रखैल के पुत्र का नाम भी भोज था (८.२१०)। जब इसके पिता का देहान्त हो गया तब यह अपनी विधवा माता के पास रहने लगा (८.२७२)। इसने मय्यामत्तक नामक व्यक्ति को अपनी माता का प्रेमी समझ कर मरवा डाला (८.२७३)। इसके पौत्र का नाम बिम्ब था (८.५४३, ५४४)। ८.६६९, ६८१, ३८४ (नप्तारं हर्षदेवस्य भिक्षाचरम्), ७२२ (हर्षनरेन्द्रवत्), ११९१, १३३१, १७६८, १९६०, २५४६, २६८६, ३४४१, ३४४६।

हर्षट, कपिल के पुत्र का नाम है जिसे सुज्जि ने लोहरकोट्ट का मण्डलेश्वर बना दिया (८.२०२९)।

हर्षमित्र, राजा सुस्सल के मामा के पुत्र का नाम है जो उसका सेनापति था। विजय ने विजयेश्वर में इसका वध कर दिया (८.५०९)। ८.९६०, ९७०, ९९८।

हलधर, गौरीश्वर के मन्दिर के द्वारपाल, भूति, के एक पुत्र का नाम है (७.२०७)। यह रानी सूर्यमती की सेवा में रहता था और अपनी प्रतिभा

से सर्वाधिकारी बन गया (७.२०८)। इसने वल्लापुर को मुक्त कराया (७.२२०)। इसे आशाचन्द्र ने बन्दी बना लिया (७.२२५)। यद्यपि इसने राजा को रोका, तथापि वह अपने पुत्र, कलश, को राज्य-भार सौंपने के लिये उद्यत हो उठा (७.२३०)। इसने अनन्तदेव से बनावटी क्रोधपूर्वक वार्तालाप किया (७.२४१)। इसका स्वर्गवास (७.२६८)। इसके पुत्र का नाम कनक था (७.२८८)। सूर्यमती ने इसके साथ अपने दुराचार को लक्ष्य करके अपनी पवित्रता की सौगन्ध खाई (७.४७७)। इसने जिन्दुराज को लाञ्छित किया था (६.५५४)। इसके पौत्र का नाम लोष्ठधर था (७.१०७६)।

हलाहा, एक स्थान का नाम है : ८.५१४।

हस्त, सड्ढ के पुत्र का नाम है जिसे राजा सुस्सल ने बन्दी बना लिया (८.६४३)।

हस्तिकर्ण, एक अग्रहार का नाम है जिसे शूरवर्मा ने ब्राह्मणों को दिया (५.२३)। ७.१६५०।

हस्तिशाला, गोधर द्वारा ब्राह्मणों को दान किये गये एक अग्रहार का नाम है (१.९६)।

हाटकेश्वर, एक मंत्र का नाम है (३.४६५)।

हाडिग्राम, एक स्थान का नाम है : १.३४०; ८.६७२, १५८६, २१९६।

हाडी, राज्य के एक अधिकारी का नाम है जिसने लल्ला और वेलावित्त के प्रेमसम्बन्ध को देख लिया (६.८१)।

हायाश्रम, एक स्थान का नाम है (८.२९३७)।

हार, एक अलङ्कार का नाम है (५.३५९)।

हालाह, एक स्थान का नाम है (८.४२५)।

हिंग्वादि, एक गन्धयुक्त मसाले या औषधि का नाम है (७.१२२१)।

हितहित, सुस्सल के एक सौतेले भ्राता का नाम है। इसे अपना वैरी समझकर गर्ग ने वितस्ता नदी में फेंकवा दिया (८.३९२, ४१३)।

हिमराज, डामरों द्वारा रक्खा भिक्षाचर का एक नया नाम है (८.१४४५)।

हिमवत् = हिमालय (५.१५२)।

हिमाचल = हिमालय पर्वत (३.२२५; ४.५१५)।

हिमाद्रि = हिमालय : १.२५; ३.१३८; ४.१४६, ५८२; ७.१७३२; ८.११८१, १५९१, २६६६, ३०३६, ३१०२, ३३६६।

हिमालय, भारत के उत्तरवर्ती विशाल पर्वत का नाम है (१.२५; ३.४४८; ५.१५२)।

हिम्मक, एक उच्छृङ्खल व्यक्ति का नाम है जिसे साथ लेकर महिमा एवं पाटल ने विद्रोह करने का परामर्श किया (६.२१३)। यह महिमा के आश्रय में रहने लगा (६.२१८)। इसने यशोधर के प्रति दिद्दा के व्यवहार से क्षुब्ध होकर पुनः विद्रोह कर दिया (६.२३८)। 'हिम्मको भीमविक्रमः,' (६.२४८)। इसका वध कर दिया गया (६.२५०)।

हिरण्य, राजा श्रेष्ठसेन के पुत्र का नाम है जो अपने पिता के बाद राजा हुआ (३.१०२)। यह ३० वर्ष २ मास राज्य करने के बाद निःसन्तान ही स्वर्गवासी हुआ (३.१२४)। ८.३४२०।

हिरण्यकशिपु, वराह क्षेत्र में स्थापित एक निर्हित्र प्रतिमा का नाम है (८.२४२५)।

हिरण्यकुल, हिरण्याक्ष के पुत्र और काश्मीर के एक राजा का नाम है जिसने ६० वर्ष तक राज्य किया (१.२८८)। ८.३४१४।

हिरण्यपुर, एक स्थान का नाम है (१.२८८)। यहाँ के ब्राह्मणों ने उच्चल का राज्याभिषेक कराया (७.१३८५)। ८.७३०।

हिरण्याक्ष, राजा उत्पलाक्ष के पुत्र, काश्मीर के एक राजा, का नाम है जिसने अपने नाम के आधार पर एक नगर बसाया और ३७ वर्ष ७ मास तक राज्य किया (१.२८७)। ८.३४१४।

हिरण्योत्स, हिरण्यकुल द्वारा बसाये गये एक स्थान का नाम है (१.२८८)।

हिल्ल, कलश के पिता का नाम है (८.२१५७)।

हुडुक्का, एक वाद्य विशेष का नाम है (८.११७३)।

हुष्क, दामोदर के बाद हुये तीन तुरुष्क राजाओं में से एक का नाम है, जिसने अपने नाम के आधार पर हुष्कपुर नामक नगर बसाया (१.१६८)। ८.३४१२।

हुष्कपुर, एक स्थान का नाम है : १.१६८; ४.१८८; ५.२५९; ६.१८६; ७.१३११; ८.३९०, ७१९, ८२२, ९४४।

हृषीकेश, एक देवता नाम है (५.१००)।

हेमन्त, एक ऋतु का नाम है : ३.१७२; ४.४०१; ८.११०१, १६५०, २२८७।

हेलाचक्र, एक डामर का नाम है जिसने राज्यसैनिकों से युद्ध किया (७.९७) ।

हेलाराज, एक विप्र का नाम है जिन्होंने १२,००० श्लोकों में 'पार्थिवावलि' नामक ग्रन्थ की रचना की थी (१.१७) ।

हेलुग्राम, एक ग्राम का नाम है (५.३९७, ३९८) ।

होल, एक राजद्रोही का नाम है जिसके बदले में धन्य ने अलङ्कारचक्र को भोज्यसामग्री देना स्वीकार किया (८.२५९७) ।

होलडा, एक प्रान्त का नाम है (१.३०६) । यह मडवराज्य के अन्तर्गत था (७.१२२८) । ८.७३३. १४३०, २८०८, ३११५ ।

राजतरंगिणी से सकंलित

सुभाषित

वन्द्यः कोऽपि सुधास्यन्दास्कन्दी स सुकवेर्गुणः ।
येनायाति यशःकायः स्थैर्यं स्वस्य परस्य च ॥ १.३ ॥

अमृत के प्रभाव को भी तुच्छ कर देनेवाला एवं अनिर्वचनीय सुकविजनों का गुण वन्दनीय है । उनके प्रभाव से अपना और पराया यशरूपी शरीर अमर हो जाता है ।

दायादादिबलैर्नष्टा दृष्टा भूयः समुत्थिता ।
श्रीर्विप्रावज्ञया राज्ञामपुनःसंभवा पुनः ॥ १.१६१

शत्रु द्वारा अपहृत राजलक्ष्मी कालान्तर में पुनः प्राप्त हो सकती है, किन्तु ब्राह्मणों के अपमान से नष्ट सम्पदा का पुनः मिलना दुर्लभ होता है ॥

यात्याश्रितः किल समाश्रयणीयलभ्यां
निन्द्यां गतिं जगति सर्वजनार्चितां वा ।
गच्छत्यधस्तृणगुणः श्रितकूपयन्त्रः
पुष्पाश्रयी सुरशिरोभुवि रूढिमेति ॥ १.२८४ ॥

अपने स्वामी के साथ भला या बुरा बर्त्ताव करने वाले सेवक अपने को लोक तथा परलोक में वन्दनीय अथवा निन्दनीय बना सकते हैं । जैसे घास की बनी रस्सी घड़े का साथ करके कूएँ में नीचे गिरती है और पुष्पों के साथ देवताओं के मस्तक पर चढ़ती है ।

पत्यौ भक्तिर्व्रतं स्त्रीणामद्रोहो मन्त्रिणां व्रतम् ।
प्रजानुपालनेऽनन्यकर्मता भूभृतां व्रतम् ॥ २.४८ ॥

पतिभक्ति स्त्रियों का व्रत है, निर्वैर भाव से प्रजा के व्यवहारों का संचालन मंत्रियों का व्रत है, और अन्य सभी कार्यों को छोड़कर प्रेमपूर्वक प्रजापालन राजा का व्रत होता है ॥

वेधाः परां धुरमुपैति परीक्षकाणामिक्षोः
फलप्रजननेन कृतश्रमो यः ।
विस्मारितोद्धुरसुधारसयोग्यतां तत्तस्मा-
दुदेत्य किमिवाभ्यधिकं विदध्यात् ॥ २.६० ॥

विधाता सच्चा परीक्षक इसलिये कहा जाता है कि उसने ईख को अत्यन्त मधुर समझ कर उसमें फल नहीं लगाये; क्योंकि उसे इस बात का पूर्ण विश्वास था कि अमृत से भी श्रेष्ठ इस ईख से बढ़कर और कौन सी वस्तु श्रेष्ठ हो सकती है ।

दग्धाङ्गारकदम्बके विलुठतः स्तोकोन्मिषत्तेजसो
वेधा वह्निकणस्य शक्तिमतुलामाधातुकामो हठात् ।

तन्निर्वापणमिच्छतः प्रतनुते पुंसः समीपस्थिते
संतापद्रुतभूरिसर्पिषि घटे पानीयकुम्भभ्रमम् ।। २.७८ ।।

जले हुये कोयले में तनिक सी चमकती हुई चिनगारी को दैव यदि बरबस भड़काना चाहता हो तो उसे बुझाने का उद्योग करनेवाले मनुष्यों को ताप से पिघला हुआ घृत का घड़ा जल-कलश के रूप में दृष्टिगोचर होता है ।

तत्तत्कर्मव्यतिकरकृतः पारतन्त्र्यानुरोधात्सज्जाः सर्वे
व्यवसितहठोन्मूलनाय प्रयत्नात् ।
चित्रं तत्राप्युदयति विधेः शक्तिरप्यद्भुतेयं यन्माहात्म्याद्वि-
विधघटनासिद्धयो निर्निरोधाः ।। २.६३ ।।

संसार का प्रत्येक प्राणी विविध प्रयत्नों द्वारा हठात् दैवी-विधान का प्रतिरोध करना चाहता है । तथापि अघटितघटनापटीयान् विधाता का विलक्षण प्रभाव और उनकी अद्भुत शक्ति अपना कार्य कर ही जाती है ।

रत्नोज्ज्वलाः प्रविकिरंल्लहरीः समीरैरब्धि
क्रियते यदि रुद्धतटाभिमुख्य ।
दोषोऽर्थिनः स खलु भाग्यविपर्ययाणां
दातुर्मनागपि न तस्य तु दातृतायाः ।। ३.१६७ ।।

रत्नों जैसी उज्ज्वल तरङ्गों को इधर-उधर उछालनेवाला सागर देने को उद्यत हो, किन्तु यदि विपरीत वायु के वेग के कारण पाने वाले उसे न पायें तो इसे उन पाने वालों का अभाग्य ही कहेंगे, क्योंकि माँगी हुई वस्तु की प्राप्ति के विषय में दाता की अपेक्षा याचक का भाग्य ही विशेष उपयोगी माना जाता है ।

तिष्ठन्ति ये पशुपतेः किल पादमूले
संप्राप्यते झटिति तैर्नहि भस्मनोऽन्यत् ।
ये तद्वृषस्य तु समुज्जवलजातरूपप्राप्त्या
न कानि सुदिनानि सदैव तेषाम् ।। ३.१६६ ।।

जो लोग शंकर जी के चरणों की उपासना करते हैं उन्हें भस्म के अतिरिक्त और कुछ नहीं मिलता । किन्तु जो उनके वृषभ, नन्दी, की सेवा करते हैं उन्हें चमकीला सुवर्ण प्राप्त होता है और उत्तरोत्तर सुदिनों की प्राप्ति होती है ।

भवेद्धि प्रायशो योषित्प्रेमविक्रीतचेतना ।
निवेदयन्ती दौःशील्यपिशाचावेशवैकृतम् ।। ३.५०५ ।।

प्रायः देखा जाता है कि प्रेम के मूल्य पर अपना तन यारों के हाथ बेचने वाली कुलटाओं के शरीर में रहनेवाली अनीतिरूपिणी पिशाचिनी का कुकृत्य छिपा नहीं रह जाता ।

स्त्रीति नामेन्द्रियार्थोऽयमिन्द्रियार्था यथापरे ।
तथैव सर्वसामान्या वशिनामत्र काः क्रुधः ।। ३.५१४ ।।

अन्यान्य प्रकार के इन्द्रियभोग्यविषयों के समान ही स्त्री भी एक इन्द्रिय का भोज्यविषय है । इसी कारण संयमी पुरुष इनपर क्रोध नहीं करते ।

निसर्गतरला नारीः को नियन्त्रयितुं क्षमः ।
नियंत्रणेन किं वा स्याद्यत्सतां स्मरणोचितम् ।। ३.५१५ ।।

स्वभावतः चंचल स्त्री-जाति का नियन्त्रण भला कौन कर सकता है ? और फिर इनका नियन्त्रण करने पर सज्जन पुरुषों को ऐसा कौन-सा लाभ हो जायगा कि उसे वे स्मरण कर सकें ।

गुणदारिद्र्यनिर्निद्रैः क्षुद्रैः कौशलशालिनाम् ।
प्रसिद्धिस्पर्धया वन्ध्यैर्बाध्यन्तेऽसूययासवः ।। ४.८६ ।।

प्रायः गुणहीन एवं क्षुद्र पुरुष सदा कार्यकुशल सज्जनों से द्वेष करते हैं, क्योंकि वे उनकी समता करने में असमर्थ रहते हैं । अतएव उन्हें निद्रा नहीं आती और वे निरन्तर अपने से श्रेष्ठ सज्जन पुरुषों को दुःख देने का उपक्रम करते रहते हैं और कभी-कभी उनके प्राण तक ले लेते हैं ।

नानन्यजः पितृद्वेषी नारागी निरपत्रपः ।
नाक्षुद्रविद्यः पापीयानिति भूतार्थसंग्रहः ।। ४.९२ ।।

जारज पुत्र ही पितृद्रोही होता है, कामी पुरुष ही निर्लज्ज होता है और क्षुद्र विद्वान पुरुष ही पापी होता है ।

योऽयं परापकरणाय सृजत्युपायं तेनैव
तस्य नियमेन भवेद्विनाशः ।
धूमं प्रसौति नयनान्ध्यकरं यमग्निर्भूत्वा-
ऽम्बुदः स शमयेत्सलिलैस्तमेव ।। ४.१२५ ।।

मनुष्य दूसरों का विनाश करनेवाला जो उपाय करता है उसी उपाय से स्वयं उसका भी विनाश होता है । अग्नि औरों की आँखें अन्धी करने के लिये धुएँ की सृष्टि करता है, किन्तु वही धुआँ मेघ बनकर अग्नि को ही बुझा देता है ।

द्वेषादिवैकृतवतः प्रतिभासतेऽन्यो मिथ्यैव
चित्रमधिको विशदात्मनोऽपि ।
चन्द्रादि पश्यति पुरो द्विगुणं प्रकृत्या
तेजोमयं तिमिरदोषहतं हि चक्षुः ।। ४.३१४ ।।

जैसे तिमिरदोष से दूषित नेत्र चन्द्रमा आदि तेजस्वी पदार्थों को द्विगुणित

देखते हैं उसी प्रकार राग-द्वेष के वशीभूत होकर भले लोग भी मानवमात्र को विपरीत दृष्टि से देखने लगते हैं।

तत्कुर्वतेऽन्तःसुषिरा गूढं येनातनुक्षयम्।
दह्यन्ते जीर्णतरवः कोटरस्थानला इव ॥ ४.३१७ ॥

जैसे पुराने वृक्ष के कोटर में उत्पन्न अग्नि समस्त वृक्ष को भस्म कर डालती है वैसे ही अन्तःकरण में उत्पन्न गुप्त क्लेश मनुष्य को क्षीण कर देता है।

प्रियमनुचितं क्ष्मापण्यस्त्रीक्षणप्रभुरीश्वरो रमयति
यतो धिक्तान्भृत्यान्स्ववृत्तिसुखार्थिनः।
नृपमपथगं पान्ति प्राणानुपेक्ष्य निजानपि
प्रसभमिह ये तैः पूतोयं महात्मभिरुर्वरी ॥ ४.३२१ ॥

अनेक राजसेवक अपना स्वार्थ-साधन करने तथा सुखप्राप्ति के हेतु इस पृथिवीरूपिणी वेश्या का थोड़े समय उपभोग करनेवाले स्वामी को अनुचित व्यसन में फँसाकर उसे पतित बना देते हैं। ऐसे नीच पुरुषों को धिक्कार है। है। इसके विपरीत जो अपने जीवन की भी उपेक्षा करके स्वामी को कुमार्ग से रोकता है उसी के समान विवेकवान् भृत्य के पुण्य से यह पृथिवी पुनीत मानी जाती है।

प्रत्यासत्तिं मदकरटिनो दानगन्धेन
वायुर्गर्जोद्भूतिं प्रकटितरुचिश्चञ्चलैवाम्बुदस्य।
चेष्टास्पष्टं वदति मतिमन्नैपुणोन्नेयतत्त्वा
जन्तोर्जन्मान्तरपरिचितां निश्चलां चित्तवृत्तिम् ॥ ४.३५४ ॥

जैसे बहनेवाली वायु द्वारा मद के गन्ध से युक्त गजराज के समीप होने की सूचना मिलती है और गर्जन तथा विद्युत की चमक से मेघ का पता लगता हैं, वैसे ही विचारवान् तथा सूक्ष्मदर्शियों को मानव का आचरण देखकर ही उसके पूर्वजन्म के संस्कारजनित स्वभाव तथा उसके सच्चे स्वरूप का ज्ञान हो जाता है।

अम्भोजानि घनाघनव्यवहितोऽप्युल्लाघयत्यंशुमान्
दूरस्थोऽपि पयोधरोऽतिशिशिरस्पर्शं करोत्यातपम्
शक्तिः काप्यपरिक्षताऽस्ति महतां स्वैरं दविष्ठान्य हो
यन्माहात्म्यवशेन यान्ति घटनां कार्याणि निर्यन्त्रणाम् ॥४.३६५॥

जैसे सूर्यनारायण मेघाच्छन्न रहने पर भी कमलों को विकसित कर देते हैं और दूर रहता हुआ भी मेघ आतप को शीतल बना देता है, उसी प्रकार महापुरुषों में कोई ऐसी अद्भुत शक्ति विद्यमान रहती है जिससे दूरस्थ तथा कठिन कार्य भी निर्बाध पूर्ण हो जाता है।

यातोऽस्तं द्युमणिः पयोधिसलिलं कैश्चित्प्रविष्टोऽपरैः
संप्राप्तो दहनं गतः किल परैर्लोकान्तरं कीर्त्यते ।
जायन्ते महतामहो निरुपमप्रस्थानहेवाकिनां निःसामान्य-
महत्त्वयोगपिशुना वार्ता विपत्तावपि ।। ४.३७१

जैसे सायंकाल को होनेवाले सूर्यास्त के विषय में कोई कहता है 'सूर्य अस्त हो गया,' कोई कहता है 'सूर्य अस्ताचल को चला गया, कोई कहता है कि 'सूर्य समुद्र में डूब गया,' कोई कहता है कि 'सूर्य ने अग्नि में प्रवेश किया,' तथा अनेक लोग यह भी कहते हैं कि 'सूर्य लोकान्तर को चला गया,' उसी प्रकार महापुरुषों का अन्तकाल होता है : तब उनके विषय में भी नाना प्रकार की विचित्र कथायें प्रचलित हो जाती हैं ।।

अकार्याण्यपि पर्याप्य कृत्वापि वृजिनार्जनम् ।
विधीयते हितं यस्य स देहः कस्य सुस्थिरः ।।
कृतघ्नस्यास्य कायस्य हेतोरगलितस्ततः ।
हन्तव्यः कस्य पन्थानः प्रतिभान्त्यनपायिनः ।। ४.३८३,३८४

जिसके लिये नाना प्रकार के कुत्सित कार्य करके बड़े-बड़े भयानक पातकों का संग्रह किया जाता है वह शरीर भी किसका सदा के लिये स्थिर रहा है ? ऐसी स्थिति में इस कृतघ्न तथा नाशवान शरीर के लिये कौन विवेक-सम्पन्न पुरुष अविनाशी पुण्यमार्ग का विनाश करेगा ।

ह्यः पश्यद्भिरकारणस्मितसितं पाथोजकोशाकृति
श्मश्रूद्भेदकठोरमद्य रभसादुत्तप्तताम्रप्रभम् ।
प्रातर्जीर्णवलक्षकेशविकृतं वृद्धाजशीर्षोपमं वक्त्रं नः
परिहस्यते ध्रुवमिदं भूतैश्चिरस्थायुभिः ।। ३.३८६ ।

अभी कल जिस सुकुमार बालक 'का कमल कोश के समान स्मित मुख-मण्डल दिखाई दे रहा था उसी के मुख पर आज तप्त ताम्र जैसी दाढ़ी-मूछ उगी दिखाई देती है । कल उसी युवक के मुख पर वृद्धावस्था के कारण बकरे जैसी दुर्दर्शनीय श्वेत दाढ़ी-मूछ की झाड़ी देखकर दीर्घायु विद्वान् इस काया की अनित्यता पर हँसा करते हैं ।

लोलश्रोत्रपुटो मदोकमधुपापातात्ययेऽपि द्विपः
सिंहोसत्यपि पृष्ठतः करिकुले व्यावृत्त्य विप्रेक्षिता ।
मेघौन्मुख्यशमेप्यशान्तवदनोद्गीर्णस्वरो बर्हिणश्चेष्टानां
विरमेन्न हेतुविगमेप्यभ्यासदीर्घा स्थितिः ।। ४.४२८ ।।

मदलोभी भौंरों का त्रास समाप्त हो जाने पर भी गजराज अपना कान

हिलाता ही रहता है, हाथियों का झुण्ड पीछे न रहने पर भी सिंह मुड़-मुड़कर पीछे की ओर देखा करता है, और मेघों के द्वारा तृष्णा-शान्ति की आशा न रहने पर भी मयूर कूँका करते हैं; क्योंकि दीर्घकाल के अभ्यासवश जो आदत पड़ जाती वह छूटती नहीं।

अपश्यद्भिर्महास्वादान्भावान्स्वादुविवेकिभिः।
किं ज्ञेयमशनादन्यत्क्ष्मापैरन्धैरिवोऽक्षभिः ॥ ४.५०० ॥

केवल भोज्य-पदार्थों का स्वाद जाननेवाले, एवं ललित-कला सम्बन्धी चित्ताकर्षक वस्तुओं तथा सुभाषित आदि के सरस भावों के स्वाद से अनभिज्ञ राजा बैलों के समान अज्ञानान्ध होते हैं। उन्हें उत्तम ज्ञान भला कैसे प्राप्त हो सकता है?

आरूढस्य चितां कृतानुमरणोद्योगप्रियालिङ्गनं
पुण्ड्रेक्षुद्रवपानमुल्बणमहामोहप्रलुप्तस्मृतेः।
वीतासोरवतंसमाल्यवलयामोदश्च यादृग्भवेद्भावानां
सुभगः स्वभावमहिमा निश्चेतसस्तादृशः ॥ ४.५०१ ॥

जैसे चिता पर रक्खे हुये शव को सती होती हुई प्रियतमा के आलिङ्गन, मूर्च्छित व्यक्ति को ईख के रसपान का आनन्ददायक स्वाद, और मृत व्यक्ति को पुष्पमाला की सुगन्धि एवं आभूषण-धारण के आनन्द का अनुभव नहीं होता, उसी प्रकार असहृदय तथा शुष्क स्वभाववाले मनुष्य के समक्ष ललितकलामय पदार्थों के सौन्दर्य का कोई महत्त्व नहीं होता।

यः सर्वकालमबुधैः परिहस्यमानो
मूलाङ्कुराद्यपि न जातु पुरस्करोति।
व्यापत्सु शास्त्रविटपी स फलं प्रसूय पुंसः
किलैकपद एव लुनात्यलक्ष्मीम् ॥ ४.५३० ॥

शास्त्ररूपी सुवृक्ष का मूर्ख लोग उपहास करते हैं क्योंकि उसके अंकुर, पुष्प, तथा फल प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर नहीं होते। किन्तु वही सुवृक्ष संकटकाल में फली-भूत होकर मनुष्य का दारिद्रय तत्काल दूर कर देता है।

दैवस्याम्बुमुचश्च नास्ति नियमः कोप्यानुकूल्यं प्रतिव्यञ्जन्यः
प्रियमुत्कटं घटयते जन्तोः क्षणादप्रियम्।
क्षिप्रं दीर्घनिदघवासरविपत्संतापनिर्वापणं प्रादुष्कृत्य
वनस्पतेः प्रकुरुते विशुद्धिसर्गं च यः ॥ ५.५४५ ॥

दैव और मेघ ये दोनों सदा अनुकूल नहीं रहते, क्योंकि दैव पहले थोड़ी सी अनुकूलता दिखाकर बाद में प्राणी के ऊपर भयानक तथा असह्य विपत्तियाँ डाल देता है। इसी प्रकार मेघ भी ग्रीष्म के सन्तापदायक एवं दीर्घ दिनों के

ताप से झुलसे वृक्षों को कुछ शीतल बूंदों से तापशान्ति की आशा दिलाकर तत्काल विद्युत्पात के द्वारा उन्हें नष्ट कर देता है।

दावानलोल्बणभुवो गिरयो निदाघे
यत्रैव दूरमितरे परिवर्जनीयाः।
तत्रैव संभवति सान्द्रहिमद्रवार्द्रश्चित्रं
तुषारशिखरी नितरां निषेव्यः ॥ ४.५८२ ॥

ग्रीष्म ऋतु में जब अन्य पर्वतों को दावानल से सन्तप्त होने के कारण त्यागना पड़ता है, उसी समय हिमजल से अतिशय शीतल हिमालय-पर्वत सबका सेव्य बन जाता है : यह कितने आश्चर्य की बात है।

मन्यते क्ष्माभुजः क्रीडामुन्नतानां विमाननाम्।
यावज्जीवं तु सश्वासं मरणं तां विदन्ति ते ॥ ४.६१२ ॥

राजा लोग उन्नत पुरुषों का अपमान खेल समझते हैं; वे यह नहीं समझते कि स्वाभिमानी पुरुष के लिये वह अपमान जीवित दशा में ही मरण के सदृश दुःखदायी होता है।

उपेक्ष्यपक्षे भूपानां मानः स्वार्थस्य सिद्धये।
स तु प्राणानपेक्ष्यापि ग्राह्यपक्षे मनस्विनाम् ॥ ४.६१३

राजा लोग स्वार्थ के लिये स्वाभिमान की उपेक्षा कर देना अनुचित नहीं समझते। किन्तु स्वाभिमानी पुरुष प्राणों को भी तुच्छ समझकर अपने स्वाभि-मान की रक्षा के लिये सदा सतर्क रहता है।

महतो येऽवमन्यन्ते घटन्ते च विमानितैः
मनःस्वरूपाभिज्ञत्वं तेषां केनानुमीयते ॥ ४.६१४

जो लोग माहपुरुषों का अपमान करते हैं और जो अपमानित पुरुषों का साथ देते हैं उनके मन की स्थिति का ज्ञान भला किसे हो सकता है।

कुर्मः किल्बिषमेतदेव हृदये कृत्वेति कौतूहलात्
स्वैरिण्यः क्षितिपाश्च धिक्चपलतां क्रौर्यं च कुर्युः सकृत्।
पापाक्रान्तधियो भवन्त्यथ तथा नान्त्यान्स्पृशन्त्योऽपि ता
दूयन्ते न च ते यथा स्वपितरौ घ्नन्तोऽपि शान्तत्रपाः ॥४.६२७

कोई व्यभिचारिणी स्त्री अथवा राजा जब एक बार दुष्कर्म करना प्रारम्भ कर देता है तो बाद में वह उस ओर से मुँह मोड़ने का कितना ही प्रयास क्यों न करे, वैसा नहीं कर सकता; क्योंकि अधिक अभ्यासवश वह व्याभिचारिणी नीच से भी नीच पुरुष के साथ दुराचार करने में, और उस राजा को अपने पिता की हत्या करने में भी खेद नहीं होता।

तथा भूभृन्मत्स्या द्रविणकलुषाम्भऽकृततृषः स्थितिं
स्वामुज्झन्तो विरधति कुमार्गानुसरणम् ।
क्रियन्ते कार्तान्तानुगविकृतकैवर्तनिवहैर्यथा
ह्येतेऽकस्मात्स्थिरनिरयजालप्रणयिनः ।। ४.६५८

राजा लोग और मत्स्य धन एवं मलिन छल की आकांक्षावश अपनी मर्यादा त्यागकर कुमार्ग पर चल पड़ते हैं, जिससे उन्हें क्रमशः यमदूतों तथा धीवरों के अधीन होकर नरक अथवा जालबन्धन की यातना प्राप्त होती है ।

कुम्भाः पयोनिधिपयोहरणप्रवृत्ता नित्यं
वहन्ति किल ये विफलश्रमत्वम् ।
चित्रं क्षणादिह तदेकसमुद्भवेन
संदर्शिता निखिलवारिधिपानलीला ।। ४.७१८ ।।

अगणित कुम्भ समुद्र के जल को उलीच देने के लिये नित्य व्यर्थ परिश्रम करते हैं क्योंकि उनके इस प्रयत्न से समुद्र सूख नहीं सकता । किन्तु यह कितने आश्चर्य की बात है कि इन्हीं कुम्भों में से एक कुम्भ के पुत्र (कुम्भज अगस्त्य) ने सम्पूर्ण समुद्र का क्षणभर में पान करके संसार को चकित कर दिया ।

कृतज्ञः क्षान्तिमान्दमाभृन्मन्त्री भक्तः समयोज्झितः ।
अभङ्गुरोऽयं संयोगः सुकृतैर्जातु दृश्यते ।। ५.४

कृतज्ञ तथा क्षमावान राजा और अनुरक्त तथा विनयी सेवक इन दोनों का अविनाशी संयोग बड़े पुण्य से कभी ही कभी हो पाता है ।

गोभुजां वल्लभा लक्ष्मीर्मातङ्गोत्सङ्गलालिता ।
सेयं स्पृहां समुत्पाद्य दूषयत्युन्नतात्मनः ।। ६
स नास्ति कश्चित्प्रथमं यः प्रदर्श्यानुकूलताम् ।
संताप्यते न चरमं नीचप्रीत्येव नानया ।। ७
चपलाभिः प्रवृद्धेयं स्वर्वेश्याभिः सहाम्बुधौ ।
तदेकचारिणीवृत्तमनया शिक्षितं कुतः ।। ८
निःस्नेहा नान्वगात्कांश्चित्सुचिरं संस्तुताऽप्यसौ ।
परलोकाध्वगान्भूपानपाथेयानबान्धवान ।। ५.६ ।।

'गोभुजों, अर्थात् गोभक्षकों अथवा पृथिवीरक्षकों की प्रिया, तथा मातंगोत्संगलालिता अर्थात् चाण्डालों की गोद में खेली अथवा हाथियों की पीठ पर विलास करनेवाली यह राजलक्ष्मी बड़े-बड़े महात्माओं का मन भी विकृत कर देती है ।। ६ ।। नीच पुरुषों की प्रीति के समान चंचला लक्ष्मी ने पहले अनुकूलता प्रदर्शित करके बाद में जिसे संतप्त न किया हो, ऐसा कोई भी पुरुष इस संसार में नहीं है ।। ७ ।। अपने पिता, समुद्र, के घर में चंचल प्रकृतिवाली स्वर्गीय

अप्सराओं के साथ यह पली है, अतः इसका चंचल होना भी स्वाभाविक ही है। किन्तु अकेले भ्रमण करने की कला को इसने किससे सीखा यह नहीं मालूम होता ॥ ८ ॥ चिरकाल तक इसकी स्तुति करनेवाले राजा भी पाथेयहीन तथा बान्धवविहीन होकर परलोक चले गये, किन्तु यह निष्ठुर उनमें से किसी के साथ भी नहीं गई ॥ ९ ॥

या वारिराशिसलिलान्तरसंनिधानसं-
सेवयाऽपि सततं मलिनैव लक्ष्मीः ।
पात्रेषु रोरशिखिभागिषु सा विमुक्ता
वैमल्यमेति हरिणीव हुताशशौचा ॥ ५.१५ ॥

निरन्तर बहुत समय तक समुद्र के अथाह जल में रहने पर भी लक्ष्मी सदा मलीन ही रहती है; किन्तु यदि उसे दारिद्र्यरूपी अग्नि से भरे पात्र में डाल दिया जाय, अर्थात् वह गरीबों को दे दी जाय तो अग्निशौच हरिणी के समान पवित्र हो जाती है। जैसे आग दिखाने से वस्त्र पवित्र हो जाते हैं उसी तरह मृगचर्म को भी आग दिखा देने से उसके रोयें शुद्ध हो जाते हैं ॥

दायादा व्ययभीरुतापरिहृतारब्धेर्भवन्त्युन्नता
भृत्याः प्रत्युपकारकातरमतेः कुर्युर्न केऽपि प्रियम् ।
राशीभूतधनस्य जीवितहृतौ शश्वद्यतेरन्निजा
भूभर्तुः क्रियते द्विषेव रभसाल्लोभेन किं नाप्रियम् ॥ ५.१६१ ॥

व्यय के भय से साहसिक कार्य न आरम्भ करनेवाले राजा के दायाद प्रबल पड़कर यत्र-तत्र विद्रोह कर देते हैं; राज्य के कर्मचारी भी समुचित सेवा करने पर उसके बदले किसी पारितोषिक प्राप्ति की आशा न रहने के कारण कोई उत्कृष्ट कार्य नहीं करते; और केवल धन-संचय में संलग्न राजा के स्वजन भी द्रव्य के लोभ से उसके प्राण तक लेने को उद्यत हो जाते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि इस लोभ-रूपी शत्रु से राजा को क्या-क्या हानि नहीं उठानी पड़ती।

तीर्थस्थितः स्वकुलजांस्तिमिरत्ति भुङ्क्ते
मौनी बकस्तिमिमुपेत्य वनान्तवासी ।
व्याधो निहन्ति तु बकं प्रभवन्ति ते ते
पात्राण्युपर्युपरि वञ्चनचञ्चुतायाः ॥ ५.३०५ ॥

नदी या जलाशय में रहनेवाला तिमि मत्स्य अपने ही वंश की मछलियों का भक्षण कर जाता है; उस तिमि का वनवासी एवं मौनी बगुला भक्षण कर जाता है; और बहेलिये बगूले का ही भक्षण कर लेते हैं। इस प्रकार संसार

में वंचना-कार्य करने में निपुण व्यक्ति को एक से बढ़कर एक धूर्त मिल ही जाया करते हैं।

ऊर्ध्वारोहे य आलम्बहेतुर्भूभृच्छिनत्ति तम्।
कुठारिकस्तरुस्कन्धमिवाधोगमनोन्मुखः ॥ ५.३११ ॥

वृक्ष पर चढ़ते समय सीढ़ियों का कार्य करनेवाली डालियों को लकड़हारा नीचे उतरते समय अपनी कुल्हाड़ी से काटता हुआ उतरता है। उसी प्रकार राजा लोग राज्य प्राप्त कर लेने पर अपने सहायक को ही समाप्त कर देते हैं।

धीधैर्यादिप्रकर्षेण येनोपक्रियते नृपः।
प्राप्तोदयः स तेनैव शङ्क्यं वेत्युपकारिणम् ॥ ५.३१२ ॥

राजाओं के उत्कर्ष में जिन लोगों के बुद्धि एवं धैर्य आदि गुण उपकारक होते हैं उन्हीं के गुणों पर समृद्ध राजा शंका करने लगते हैं।

अस्मिन्स्थिते विपद्भूदिति संचिन्त्य वर्ज्यते।
मूढैः परिवृढैरापत्सेवको मङ्गलेच्छुभिः ॥ ५.३१३ ॥

ये मूढ़ राजा उन्नत दशा में पहुँच जाने के बाद विपत्ति में सहायक अच्छे सेवकों को यह कहकर त्याग देते हैं कि 'इसी दुष्ट के कारण मुझे विपत्ति भोगनी पड़ी थी'।

संपद्यापत्सहायस्य विस्मृतोपक्रिया नृपाः।
मध्ये प्रमादस्खलितमुत्पन्नं हृदि कुर्वते ॥ ५.३१४ ॥

विपत्ति के समय अपने उपकारी सेवकों के उपकार को तो अभ्युदयकाल में ये राजा विस्मृत कर देते है; किन्तु उपकार करते समय सेवक से यदि प्रमादवश कोई त्रुटि हो गई हो तो उसे जीवन-पर्यन्त स्मरण रखते हैं।

आमयार्तिरिपुत्रासक्षुदादौ दृष्टवैकृतान्।
लब्धोदया ह्रीभयेन क्ष्मापा घ्नन्त्यनुयायिनः ॥ ५.३१५ ॥

अभ्युदय को प्राप्त राजा अपने रोगजनित कष्ट, शत्रुभय, भूख और प्यास इत्यादि से उत्पन्न कष्टों के प्रत्यक्षदर्शी सेवकों को देखकर लज्जा तथा भय का अनुभव करते हैं और इसी कारण वे उन्हें त्याग देते हैं।

राज्ञः सतोपि नाश्वासो यस्येभस्येव कर्णयोः।
अविशुद्धप्रकृतयो ध्वनन्ति मधुपा इव ॥ ५.३१६ ॥

अच्छे-अच्छे राजाओं को भी प्रत्यक्ष देखी हुई घटनाओं की अपेक्षा सुनी हुई बात पर शीघ्र विश्वास हो जाता है। इसका कारण यह है कि जिस प्रकार काले भौंरे मदमत्त हाथियों के कानों पर गुनगुनाते रहते हैं, उसी प्रकार मलिन बुद्धिवाले और झूठे धूर्त नित्य राजाओं के कान भरा करते हैं।

दिवसे संनिधानेन पिशुनप्रेरणा प्रभोः ।
ईर्ष्यालुना स्वैरिणीव रक्षितुं यदि पार्यते ॥ ५.३१७ ॥

रात के समय व्याभिचारिणी स्त्री की तरह, दिन में चुगलखोरों की प्रेरणा, समीप रहने के कारण सदैव त्रस्त करती रहती है; अतएव प्रत्येक ईर्ष्यालु एवं विवेकवान् पुरुष को उससे सदा सतर्क रहना चाहिये ।

कथंचिदह्नि हृदये कुशलैर्विनिवेशिता ।
शिक्षा गौरखरेणेव राज्ञा विस्मार्यते निशि ॥ ५.३१९ ॥

कार्य-कुशल मन्त्रीगण दिन में किसी तरह राजा के हृदय में उपदेश की जो बात वैठाते हैं उसे राजा लोग नीलगाय के समान कामुक बनकर रात को विस्मृत कर दिया करते हैं ।

नमन्नपि हरिर्हन्यादाश्लिष्यन्नपि पन्नगः ।
विहसन्नपि वेतालः स्तुवन्नपि महीपतिः ॥ ५.३२३ ॥

सिंह विनम्र होकर, सर्प आलिङ्गन करके, पिशाच हँसकर और राजा प्रशंसा करके अपने शिकार को मारता है ।

वेश्यानुरागस्य महेन्द्रचापधाम्नो हरिद्रारसरञ्जनस्य ।
उपाङ्गगीतस्य च हारिणोऽपि सौन्दर्यमस्थैर्यहतप्रकर्षम् ॥५.३८२॥

वेश्या का प्रेम, इन्द्रधनुष की शोभा, हल्दी का रंग, मनोहर उपाङ्ग, और गीत की मधुरता, ये सभी वस्तुयें क्षणिक हुआ करती हैं ।

एकाकिनीं रहः क्षीवां लब्ध्वा दुर्लभयोषितम् ।
अप्रौढोऽनुपभुज्याऽन्यदिने दूत्यार्थयेत यः ॥
विभूति रभसावाप्तां यश्च संत्यज्य तत्क्षणम् ।
नीत्या कामयतेऽन्येद्युः शोच्यस्ताभ्यां परोऽस्ति कः ॥५.४५९–४६०॥

अत्यन्त दुर्लभ स्त्री को एकान्त में मदिरा से मत्त अवस्था में पा करके भी संकोचवश उस समय उसके साथ भोग न करके दूसरे दिन दूती भेज कर संभोग की अभिलाषा प्रगट करने, और बरबस पास आई हुई विभूति को उस समय त्याग कर दूसरे दिन नीति से प्राप्त करने की इच्छा करनेवाले, इन दोनों ही प्रकार के लोगों से अधिक शोचनीय भला और कौन हो सकता है ।

दग्धं वेणुवनं परस्परमहासंघर्षजेनाग्निना
तन्मूलोद्धृतिरम्भसा क्षणधृतोद्रेकेण संपादिता ।
वात्यावेगविपाटितं विटपिनं प्राप्तं कुतश्चिद्दृढां
रूढिं नेतुमहो महाद्रिकुहरे धात्रा न किं सूत्रितम् ॥ ५.४७८ ॥

जैसे परस्पर महासंघर्ष से उत्पन्न दावानल द्वारा सारा वेणु-वन जल जाता है और प्रबल वर्षा से उन बाँसों की जड़ तक उखड़ कर बह जाती है; उसी

प्रकार आँधी के वेग से उड़कर आये हुये किसी वृक्ष की जड़ को पर्वत की कन्दराओं में या अन्यत्र कहीं फिर से दृढ़मूल करने के लिये भी विधाता कौन-कौन से उपाय नहीं करता।

रागी मधुप्रणयवान्विहिताक्षसक्तिर्यः
सख्यमेति मधुपैर्हृतकोशसारैः।
पद्मे प्रयाति दिनमात्रमपि प्रसक्तिं
श्रीस्तत्र चेत्किमिव तन्न कुतूहलाय ।। ६.१५४

कामुक, मद्यप्रेमी, जुआड़ी एवं खजाने का धन हड़पनेवाले मधुप लोग जिस राजा की सेवा करते हैं उसको रागी, मधुप्रणयवान तथा विहिताक्षसक्ति एवं कोश का सार हरनेवाले भौंरों से सेवित कमल पर निवास करनेवाली लक्ष्मी नहीं त्यागती तो इसमें आश्चर्य की क्या बात है।

एकः प्रयात्युपरमं द्रविणं तदीयं
हृत्वाऽपरः प्रसममुद्वहति प्रेमादम्।
नो वेत्ति तत्स्वनिधने परकोशगामि
धिग्वासनामसममोहकृतान्धकाराम् ।। ६.१७४ ।।

एक मनुष्य जब संसार को छोड़कर चला जाता है तब दूसरा मनुष्य उसका धन पाकर बहुत प्रसन्न होता है, किन्तु उसको यह नहीं मालूम होता कि वह धन उसके भी हाथ से निकलकर दूसरे के अधीन हो जानेवाला है। इस भीषण अन्धकारमयी मोहस्वरूपा वासना को धिक्कार है।

उर्वीपतेश्च स्फटिकाश्मनश्च शीलोज्झितस्त्रीहृदयस्य चान्तः।
असंनिधानात्सततस्थितीनामन्योपरागः कुरुते प्रवेशम् ।। ६.२३४ ।।

राजा, स्फटिक पत्थर, तथा दुःशीला स्त्री, इनके पास सदा रहनेवाले लोग यदि किसी कारण दूर हो जाते हैं तो उन पर समीप रहनेवाले अन्य लोगों का रंग चढ़ जाता है।

स्वचित्तसंवादि वचो वदन्तो धूर्ता वितन्वन्ति मनः प्रवेशम्।
पृथग्जनानां गणिकावधूनां विटाः प्रभूणामपि गर्भचेटाः ।।६.२३५।।

मूर्खों तथा वेश्याओं के पास झूठ और खुशामद की बातें करके जैसे धूर्त लोग उनके हृदय में स्थान बना लेते हैं उसी तरह गर्भदास लोग भी राजाओं की चापलूसी करके उन्हें अपनी मुट्ठी में कर लिया करते हैं।

कुलिशं सर्वलोहानामम्भसां शैलसेतवः।
अभेद्याः प्रतिभाव्यन्ते न किंचिदसतां पुनः ।। ६.२७३ ।।

वज्र, अर्थात् हीरा, सब प्रकार के लौहों से और पत्थर का बाँध जल-समूह

से अभेद्य होता है, किन्तु दुष्ट मनुष्यों के आगे कोई भी वस्तु अभेद्य नहीं रह जाती ।

ये बालादपि संमूढाः प्राज्ञाः सुरगुरोरपि ।
तेषां न विद्मः के तापन्निर्माणपरमाणवः ।। ६.२७४ ।।

जो धूर्त बालक से भी अधिक अबोध और बृहस्पति से भी अधिक बुद्धिमान होते हैं, मैं नहीं जानता कि वे किन परमाणुओं से बने होते हैं ।

विश्वासोज्झितधीः शिशून्कलयते काकोऽन्यदीयान्निजात्
हंसः क्षीरपयोविभागकुशलस्त्रस्यत्यसारानाद्भुत् ।
लोकावेक्षणतीक्ष्णधीः खलगिरं जानाति सत्यां नृपो
धिग्वैदग्ध्यविमुग्धताव्यतिकरस्पृष्टं विधानं विधेः ।। ६.२७५ ।।

संसार भर में किसी के ऊपर विश्वास न करनेवाला चालाक कौआ दूसरे पक्षी, अर्थात् कोयल, की संन्तान को अपनी सन्तति मानकर पालता है; नीर-क्षीर का विलगाव करने में निपुण हंस निःसार मेघ को देखकर भयभीत हो जाता है; और रात-दिन विभिन्न स्वभाव के मनुष्यों पर शासन करने के कारण तीक्ष्णबुद्धि राजा खल पुरुषों की बात सत्य मान लेता है : इस प्रकार चातुर्य एवं मूर्खता से मिश्रित विधाता को धिक्कार है ।

राज्ञः स सचिवः सत्यं दुष्प्रापो लुप्तचण्डिमा ।
कुर्याद्यः सुखसेव्यत्वं हेमन्त इव भास्वतः ।। ६.२६८ ।।

राजा की क्रूरता को नष्ट कर देनेवाला सज्जन एवं चतुर मन्त्री वास्तव में अतिशय दुर्लभ होता है, क्योंकि वह सूर्य को सुखसेव्य बना देनेवाली हेमन्त ऋतु की भांति राजा को सारी प्रजा के लिये सुसेव्य कर देता है ।

तीर्थासेवनमौनभागपि तिमिः सक्तः स्वकुल्याशने
वाताशान्ग्रसते शिखी घनपयोमात्राशनोऽप्यन्वहम् ।
विश्वस्ताञ्जलचारिणः प्रकटितध्यानोऽपि भुङ्क्ते बकः
सत्कर्माचरणेऽपि दोषविकृतौ न प्रत्ययः पापिनाम ।। ६.३०६ ।।

नित्य तीर्थ-सेवन तथा मौन धारण किये रहनेवाला तिमिमत्स्य अपने वंशजों को ही खाने के लिये उद्यत रहता है; केवल वर्षा का जल पीनेवाला मयूर सदा सर्पों का भक्षण करता है, और निरन्तर ध्यानमग्न रहनेवाला बगूला विश्वस्त मछलियों को निगला करता है । अतएव पापियों के सत्कर्म करने पर भी यह निश्चय नहीं रहता कि कब उनकी प्रवृत्ति कैसी हो जायगी ।

स्रोतोधिराज्यमधिगम्य विराजमा-
नात्सिन्धोः प्रसूय कमलाल्पपयोनिकेते ।

जाते सरस्यविरतं जलजे प्रसक्ता
नार्यो महाभिजनजा अपि नीचभोग्याः ॥ ६.३१७ ॥

जैसे समस्त संसार के जलाशयों के प्रभु, समुद्र, से उत्पन्न होनेवाली लक्ष्मी अल्पजलयुक्त सरोवर में उत्पन्न होनेवाले कमलों पर मुग्ध हो जाती है, उसी प्रकार प्रसिद्ध तथा उच्चकुल में उत्पन्न होनेवाली भी नारियाँ नीच पुरुषों से भोग करने लग जाती हैं।

धिङ्निर्विचारान्कुपतीन्येषां विषमचेतसाम्।
फल शून्या स्तुतिस्तोषे दोषे प्राणधनक्षयः ॥ ६.३२३ ॥

ऐसे विचारशून्य तथा दुर्हृदय स्वामियों को धिक्कार है जिनके प्रसन्न होने पर केवल शुष्क-प्रशंसा मिलती है, और रुष्ट हो जाने पर अपने बहुमूल्य प्राणों से हाथ धोना पड़ता है।

शूरस्य लभ्यं शौर्येण भीरोर्भीरुतया।
कार्यं हि प्रतिभात्यस्तत्र भवेन्न तदन्यथा ॥ ६.३६२

वीर पुरुष अपनी वीरता से कार्य सिद्ध करने का निश्चय करता है, और इसके विपरीत, भीरु को भीरुता, अर्थात् सावधानी से कार्य करने पर सिद्धि-प्राप्ति का भरोसा रहता है। यह बात स्वभावसिद्ध है।

काष्ठं वह्न्युज्झितमपि भवेच्छीतशान्त्यै कपीनां
लोम्नां शुद्ध्यै सलिलमनलश्चाग्निशौचैणकानाम्।
जन्तोर्भावा विदधति यथा भाविनः कार्यसिद्धिं
तत्त्वं तेषां क्वचन सहजं वस्तुतोनास्ति किंचित् ॥ ६.३६४

अग्नि के स्पर्श से विहीन काष्ठ भी वानरों का शीतनिवारण करता है, और अग्निशौच मृगों के रोयें शुद्ध करने के लिये अग्नि ही जल का कार्य करने लगता है। तात्पर्य यह कि प्रत्येक प्राणी की भावना ही उसका कार्य सिद्ध करती है; इसमें किसी वस्तु का स्वाभाविक गुण-धर्म कुछ नहीं करता।

कालक्रमत्रुटितसंश्रयभूः स्वमूलमा-
त्राश्रयी तटतरुः सरितोऽम्बुपूरैः।
यैः शङ्क्यते निपततीति वितीर्णमृद्धि-
स्तैरेव तस्य हि भवेत्स्थितिभूमिदार्ढ्यम् ॥ ७.३६ ॥

नदी के तटवर्ती जिस वृक्ष की आश्रयभूमि नष्ट हो गई रहती है, जो केवल अपनी जड़ों के सहारे खड़ा रहता है, और जिसके बाढ़ में बह जाने की आशंका की जाने लगती है, वही वृक्ष नदी के प्रवाह द्वारा बहाकर लायी हुई मिट्टी के ढेर से पुनः बद्धमूल होकर सुरक्षित हो जाता है।

इन्द्रियैरिन्द्रचन्द्राद्या ह्रेपिता यैः सुरा अपि ।
अपरिम्लानमानत्वं तैर्मर्त्यस्याथ वा कथम् ॥ ७.३१५ ॥

जब इन्द्रियों के कारण इन्द्र और चन्द्रमा जैसे देवताओं को भी लज्जित होना पड़ा तब इन्द्रियों के वशीभूत मनुष्यों का मान म्लान हुये बिना कैसे रहता ।

प्रागुन्मीलति दुर्यशः सुविषमं गर्ह्योऽभिलाषस्ततो
धर्मः पूर्वमुपैति संक्षयमथो श्लाघ्योऽभिमानक्रमः ।
संदेहं प्रथमं प्रयात्यभिजनं पश्चात्पुनर्जीवितं
किं नाभ्येति विपर्ययं विगलने शीलस्य चिन्तामणेः ॥७.३१६॥

पहले भीषण अपयश उत्पन्न होता है, उसके बाद निन्दनीय कामवासना जागृत होती है; पहले धर्म का नाश होता है, उसके बाद कुलपरम्परागत एवं श्लाघनीय स्वाभिमान लुप्त होता है; पहले अपने कुल की मर्यादा सन्दिग्ध होती है, उसके बाद जीवन ही सन्देहास्पद हो जाता है; इस प्रकार सदाचार-रूपी चिन्तामणि के नष्ट हो जाने पर किस-किस वस्तु का विनाश नहीं हो जाता ?

मिथ्योपकरणं नारीर्गणयन्ति नृणां जनाः ।
परिणामे तु नारीणां क्रीडोपकरणं नराः ॥ ७.४२४ ॥

जो लोग स्त्री-जाति को उपभोग्य वस्तु समझते हैं वे भूल करते हैं; अन्त में पुरुष को ही स्त्री के खेल का उपकरण बनना पड़ता है ।

द्वेषोन्मेषात्प्रसक्ताभिर्विरक्ताभिरसूयया ।
के नाम नात्र कान्ताभिः कृतान्तस्यातिथीकृताः ॥ ७.४२५ ॥

द्वेष की उत्पत्ति से प्रसक्त (अपकारपरायण) तथा मात्सर्य से विरक्त स्त्रियों के द्वारा कितने पुरुष कृतान्त (यमराज) के अतिथि नहीं बनते ?

रूपं काश्चिद्बलं काश्चित्प्रज्ञां काश्चिच्च कार्मणैः ।
पुंस्त्वं काश्चिदसून्काश्चिद्भर्तृणां जह्रुरङ्गनाः ॥ ७.४२६ ॥

इन स्त्रियों में से कुछ महिलाओं ने अपने जादू से पति का रूप, कुछ ने बुद्धि, कुछ ने पौरुष, और कुछ ने तो प्राण तक ले लिये हैं ।

हरन्ति ग्रावभिरिव क्ष्मां पुत्रैरन्यगोत्रजैः ।
मत्ताः पयोधरौन्नत्यात्तरङ्गिण्य इवाङ्गनाः ॥ ७.४२७ ॥

अपने पयोधर (कुच अथवा मेघ) की उन्नति के प्रभाव से नदियों की भाँति उन्मत्त नारियाँ अन्यगोत्रज (दूसरे पर्वतों पर उत्पन्न) पत्थरों की तरह अन्यगोत्रज (दूसरे वंश में जायमान) पुत्रों के द्वारा पृथ्वी का अपहरण करती हैं ।

विसंवादिनमाकाराचारैर्बन्धुविरोधिनम् ।
पुत्रं पितुरसंस्निग्धं जानीयादन्यरेतसम् ।। ७.४३५ ।।

जिस पुत्र की आकृति और आचार-व्यवहार पिता के विपरीत हो, जो अपने बन्धुजनों से द्वेष रखता हो, अपने पिता के साथ स्नेहविहीन व्यवहार करता हो, ऐसे पुत्र को किसी दूसरे ही मनुष्य से उत्पन्न समझना चाहिये ।

विधेया नारीणां तनयनिहिताशेषविभवाः
कृतम्लानौ भृत्ये पुनरुदितविस्रम्भरभसाः ।
नयन्तो गण्यत्वं प्रसभमभियोगैर्लघुमरिं
नयत्यक्ताः क्ष्मापाः प्रलयमुपगच्छन्ति न चिरात् ।।७.४४९।।

स्त्रियों की आज्ञा शिरोधार्य करनेवाले, अपने पुत्र को राज्यशासन का समस्त अधिकार दे देनेवाले, एक बार धोखा खा करके भी अपने विश्वासघातक सेवकों पर विश्वास करनेवाले, और साधारण शत्रु को अनावश्यक महत्त्व देते हुये तरह-तरह के लांछन लगाकर उस पर बार-बार आक्रमण करनेवाले नीतिविहीन राजाओं का शीघ्र विनाश हो जाता है ।

भावा यत्रनिसर्गभङ्गुरतरास्तिष्ठन्ति नैते चिरं चेतः
काचघटस्य तस्य घटते दीर्घोऽयमेको गुणः ।
यत्तस्मिन्निहितप्ररूढि न गलत्यायाति न म्लानतां
धत्ते नापचयं चमत्कृतिपचो गीर्वाणगङ्गापयः ।। ७.४८३ ।।

इस संसार के सभी प्राणी स्वभावतः क्षणभंगुर होने के कारण अधिक समय तक नहीं टिक पाते, किन्तु मनुष्य के हृदय और काँच की कुप्पी में यह बड़ा गुण है कि उसके भीतर रक्खी हुई अद्भुत बातें तथा गंगाजल कभी भी नहीं बिगड़ते और न कभी पुराने ही पड़ते हैं ।

प्राणान्धारयते निपीय मरुतः शेते तमोन्धे बिले
संभोगे परदत्तमिच्छति पटं नग्नत्रपाशान्तये ।
विस्तार्येति कदर्यतामहिरवत्यन्यस्य हेतोर्नि-
धीन्नान्यः कोपि परं परोपकृतिषु प्रौढोस्ति लुब्धं विना ।।७.५०२।।

लोभी मनुष्य वायु पीकर जीता है, अन्धकाराच्छन्न बिल में सोता है और नग्न होने पर लाज बचाने के लिये वह औरों से वस्त्र माँगकर पहनना चाहता है; इस प्रकार अपनी कृपणता का विस्तार करके वह दूसरों के लिये धन का संग्रह करता है । अतएव लोभी मनुष्य से बढ़कर परोपकारपरायण व्यक्ति और कोई नहीं हो सकता ।

अर्था भाग्योदये जन्तुं विशन्ति शतशः स्वयम् ।
दिग्भ्योभ्युपेत्य सर्वाभ्यः सायं तरुमिवाण्डजाः ।। ७.५०४

जैसे सन्ध्या-समय पक्षिगण विभिन्न दिशाओं से आकर वृक्ष पर पहुँच जाते हैं उसी प्रकार भाग्योदय के समय सैकड़ों प्रकार की सम्पत्तियाँ भाग्यशाली मनुष्य के पास पहुँच जाती हैं।

स्रोतांसि प्रबलत्वमेत्य वसुधां मूलेषु पुष्णन्त्यधो
व्योम्नोम्भः पतति त्यजन्ति हरितो वारि प्रणालीमुखैः।
इत्थं शुष्कसरः पयोदसमये संपूर्यते सर्वतो
भाग्यानामुदये विशन्ति शतशो द्वारैर्न कैः संपदः ॥ ७.५०५ ॥

बरसात के समय सूखे सरोवर में उसके तल से अनेक प्रबल सोते फूटकर उसे जल से भर देते हैं, आकाश से मेघ जल की वर्षा करते हैं, और चारों ओर के नाले अलग जल लाकर उसमें उड़ेल देते हैं : इस प्रकार वर्षा ऋतु में वह सरोवर जल से परिपूर्ण हो जाता है। इसी प्रकार भाग्योदय के समय मनुष्य के पास सैकड़ों द्वार से सम्पत्तियाँ दौड़ आती हैं।

प्रभुर्वीतक्षान्तिः सुहृदतिशठः स्त्री परुषवाक्सुतो
गर्वोन्नद्धः परिजन उदात्तप्रतिवचाः।
इयान्सोढुं शक्यो ननु हृदयदारो परिकरो न तु
श्रोतावज्ञालुलितनयनान्तं परिभवन् ॥ ७.६१६

क्षमाहीन स्वामी, अतिशय शठ मित्र, कटुभाषिणी स्त्री, अत्यन्त अभिमानी पुत्र और उत्तर देनेवाला हृदयदाही भृत्यवर्ग सहा जा सकता है, किन्तु श्रोताओं की तिरस्कार भरी दृष्टि गायकों एवं वक्ताओं को असह्य हो जाती है।

भूतग्रहादिभवमोषधिभिर्विरोधिजातं
बलैः प्रहरणप्रभवं तनुत्रैः।
निर्वाप्यते प्रतिभयं पृथिवीपतीनां सार्वत्रिकं
तु रभसाद्भुवि बुद्धिवृद्धैः ॥ ७.६६६

इस धरती पर बुद्धिमान मन्त्री भूतग्रह आदि से ग्रस्त राजा की औषधियों से, शत्रुजनित संकट के समय सेना से, शस्त्र-संकट के समय कवच से, और सार्वत्रिक संकट के अवसर पर उस भय से भी भीषण भय उपस्थित करके उसकी रक्षा करते हैं।

हठत्यागासक्तिः प्रिययुवतिसंप्रेरणवचः
खलासङ्गः पूर्वप्रणयपरिहारो जनयितुः।
आमात्येन भ्रात्रा सममपरमात्राथ कलहः
कुमाराणां बुद्धिं पितरि विपरीतां प्रतनुते ॥ ७.६७८

हठधर्मिता तथा दुराग्रह पर आसक्ति, प्रिय युवती के प्रेरणादायक तथा

उत्तेजक वाक्य, शठ पुरुषों का संग, पिता के पूर्व-प्रेम में अन्तर, आमात्य-बान्धव तथा सौतेली माता के साथ कलह, इन्हीं कारणों से राजपुत्रों का मन अपने पिता के विषय में विकृत हो जाया करता है।

अधीकारप्राप्त्या तृणमिव विदन्विश्वमखिलं
नियोगी जातार्तिर्नमति गृहदासीरपि रुदन्।
नदन्मूर्खो ज्ञानी बहुदुरुपदेशाधिगमतः करोति
प्राणान्ते शिशुरिव च किं किं न विगुणम्॥ ७.७११

अधिकार के मद से मत्त होकर समस्त विश्व को तृणवत् समझनेवाला अधिकारी विपत्ति में घर की दासियों का भी पैर पकड़कर रोने लगता है। किसी पाखण्डी गुरु से उपदेश लेकर अपने आपको सबसे बड़ा ज्ञानी माननेवाला मूर्ख मनुष्य संसार के समक्ष पाण्डित्य की बड़ी-बड़ी बातें करता है किन्तु किसी प्राणान्तक प्रसंग के अवसर पर वह बच्चों के समान किस-किस प्रकार के पागलपन नहीं करता?

प्राणावसानसमये परिसंकुचन्ती
स्वप्नप्रसङ्ग इव धावनशक्तिराज्ञा।
प्रोचुर्यदा खलु रुजो मरणोद्भवाया
मर्मव्यथां प्रथयते पृथिवीपतीनाम्॥ ७.७१८

जैसे स्वप्नावस्था में दौड़ने की शक्ति कुण्ठित हो जाती है, उसी प्रकार मरणासन्न राजा की आज्ञा नहीं चलती। ऐसी परिस्थिति में उसे वह बात भीतर ही भीतर बाण की तरह चुभती है और मृत्यु के समय होनेवाली असह्य पीड़ा को और भी अधिक बढ़ा देती है।

अन्विष्यन्ति रुदत्य एव तरला गत्यन्तरं योषितो
योगक्षेमकथां चितान्तिकगता एवात्मजाः कुर्वते।
अन्येषां शतशोऽवसानसमये चर्चां विचार्येदृशीं
स्त्रीपुत्रादिकृते कुकर्मभिरहो संचिन्वतेऽर्थं जडाः॥ ७.६३४

मूर्ख संसारी लोग सैकड़ों बार औरों की मृत्यु के समय रोती हुई चंचल-चित्तवाली स्त्रियों को अपना आश्रय खोजते और चिता के पास खड़े पुत्रों को स्वतः प्राप्त होनेवाली सम्पत्ति के लिये परस्पर झगड़ते देखकर भी अपनी स्त्री तथा पुत्र के लिये कुत्सित कर्मों द्वारा धन-संचय करते हैं, यह कितने आश्चर्य की बात है।

धत्ते श्रियं सृजति कीर्तिमघं लुनीते
मित्रत्वमानयति हन्त विरोधिनोऽपि।

यात्यध्वभिः प्रतिपदं सुमनोऽनुकूलैर्गौः
कामधुक्मिव नापहरत्यनर्थम् ॥ ७.७८६ ॥

मधुरवाणी लक्ष्मी प्रदान करती है, यश की वृद्धि करती है, पाप नष्ट करती है, शत्रु को भी अपना मित्र बना देती है, अपने अनुकूल सज्जनों को विरुद्ध नहीं होने देती और सभी अनर्थों का निवारण करती है। इस प्रकार कामधेनु-स्वरूपा मधुर वाणी कौन सा कार्य सम्पन्न नहीं करती और किस अनिष्ट का निवारण नहीं करती ?

द्विपद्वीपिक्रव्यादुरगतुरगादिभ्रमकृतो
यथाऽस्यां भिद्यन्ते दिवि किल त एवाम्बुदलवाः ।
तथा सौम्यक्रूरक्रमविकृतिभाजस्तनुभृतां
क्षणानां नानात्वान्ननु हृदि विकारोर्मय इमाः ॥७.७६२॥

जैसे आकाश में दृष्टिगत होनेवाले मेघों में अनेक हाथी, घोड़े, गैंडे, मांसाहारी पशु तथा सर्पों की आकृतियाँ बनती-बिगड़ती प्रतीत होती हैं, उसी प्रकार मनुष्य के मानसिक विकारों में मृदु एवं तीक्ष्ण विचारों की तरंगें सदैव उठती रहती हैं।

ग्रीष्मस्योष्मा व्रजति घनतां नूनमासन्नवृष्टेर्नैशं
गाढीभवति तिमिरं संनिकृष्टप्रभातम् ।
जन्तोरेवं प्रसभविभवस्फारसंपत्प्रचारा-
न्निष्क्रामन्ती विपदुपचितोपद्रवोद्रेकमेति ॥ ७.७६५ ॥

जब वर्षा ऋतु आनेवाली होती है तब गर्मी अपनी पराकाष्ठा पर पहुँच जाती है, और जब प्रभात होने को होता है तब रात्रि का अन्धकार और सघन हो जाता है। इसी प्रकार जब विपुल सम्पदा आनेवाली होती है तब शीघ्र नष्ट हो जानेवाली विपत्तियाँ विशेष दुःखदायी हो जाती हैं।

यः पातार्थमुपार्जितोऽन्यशिरसस्तेनैव सिन्धु-
प्रभुर्वृद्धक्षेत्रधराधवः स्वशिरसः पातं वरेणान्वभूत् ।
दिव्या स्वैव गदा श्रुतायुधनृपं हन्तावधीदाहवे
यत्त्राणाय विगण्यते विधितशात्तेनैव नाशो भवेत् ॥७.८०४॥

'वृद्धक्षेत्र के कुल में जायमान एवं सिन्धु देश के राजा जयद्रथ के मस्तक को जो धरती पर गिरा देगा उसकी तत्काल मृत्यु हो जायेगी', यह वरदान उसके पिता ने पहले से ही प्राप्त कर रक्खा था; किन्तु जयद्रथ का मस्तक स्वयं उसके पिता के हाथ से गिरकर उसी की मृत्यु का कारण बन गया। इसी तरह राजा श्रुतायुध की दिव्य गदा भी श्रुतायुध के ही मस्तक पर गिरकर उसी की मृत्यु का कारण बन गई। इस प्रकार, जिस वस्तु को रक्षा का उपाय

समझा जाता है वही विधाता के विलक्षण विधान से विनाश का कारण बन जाती है।

आसन्नाभ्रजलस्य दावविगमे विद्युद्भयं शाखिनो
नक्रास्यागद्लतश्च मज्जनमयी शङ्का भवेद्वारिधौ।
भोक्तव्यस्य विधिः शुभस्य रभसात्स्वादुत्व-
निष्पत्तये जन्तोः संतनुते निराकृतभियो भीत्यन्तरोत्पादनम्॥७.८२४॥

वर्षा से वृक्षों का दावानलजनित क्लेश नष्ट हो जाता है, किन्तु उसके साथ ही बादलों से बिजली गिरने का संकट सामने आ उपस्थित होता है, और समुद्र में मगर के मुख से बचकर निकले हुये मनुष्य को पानी में डूब जाने का भय घेर लेता है। उसी प्रकार निकटवर्ती भावी शुभफल का अधिकाधिक आनन्द देने के लिये विधाता एक भय के दूर होते ही दूसरा भय सामने खड़ाकर देता है।

व्रजति रजनी त्यक्त्वा क्वापि क्षये क्षणदाकरं
पदमुपगतस्यास्तं संध्या रवेरनुगच्छति
इति परिणतौ प्रेमण्युच्चावचे परिचिन्तिते क्वचन
नियमान्निन्द्या वन्द्या न वा सुधियां स्त्रियः॥ ७.८५६

रात्रि चन्द्रमा को क्षीण देखकर उसका साथ छोड़ देती है, किन्तु सन्ध्या सूर्य का साथ न छोड़कर उसके साथ अस्त हो जाती है। अतएव बुद्धिमानों को कदाचित् प्रेम का परिपाक हो जाने के समय ही उसमें परिवर्तन दृष्टिगत हो सकता है। ऐसी स्थिति में स्त्रियों को सर्वथा निन्द्य अथवा वन्द्य नहीं कहा जा सकता।

यदुल्लासाय संरम्भो धीरैर्विस्तार्यते महान्।
कृत्यं हिनस्ति तद्दैवमत्यल्पेनैव वस्तुना॥ ७.९१७॥
उन्मीलनं तिग्मरुचिः प्रयत्नाद्येषां सहस्रेण करैः करोति।
उन्मूलयत्येककरेण तानि पद्मानि धाता कुपितो द्विपेन॥७.९१८॥

जिस कार्य को सफल बनाने के लिये धैर्यशाली लोग बड़े-बड़े उपाय करते हैं, उस कार्य को दैव एक नन्हीं सी घटना के द्वारा तहस-नहस कर देता है॥ ९१७॥ तीक्ष्ण दीप्तिवाले सूर्य भगवान अपनी सहस्रों किरणों से जिन कमलों को विकसित करते हैं, उनको दैव के कुपित होने पर हाथी का केवल एक सूँड उखाड़ फेंकता है॥ ९१८॥

कुण्ठार्ताङ्घ्रियुगः शिखी बहुपदं गृह्णाति धावन्नहिं
भानुः पादसहस्रभाक्प्रतिपदं संचार्यतेऽनूरुणा।

वञ्च्यन्ते बलिनोऽपि यल्लघुबलैः सामर्थ्यहीनैश्च यद्
भ्राम्यन्ते परिपूर्णवृत्तय इदं दैवस्य लीलायितम् ॥७.६५९॥

जिसके दोनों पैरों में कुष्ठ रोग रहता है वह मयूर अनेक पैरोंवाले सर्प को धर दबोचता है, सहस्रों चरणों (किरणों) से सम्पन्न सूर्य को अनूरु (बिना पैर का) अरुण चलाता है : बड़े-बड़े बलवान् भी दुर्बल मनुष्यों द्वारा ठग लिये जाते हैं और असमर्थ लोग समर्थ पुरुषों को बचा देते हैं, यह सब दैव की लीला है ।

प्रगल्भभावः प्रतिभानमोजः प्रयोगचातुर्यमसंभ्रमश्च ।
महाशयानामतिसंकटेषु धैर्योपनद्धां न धियं जहाति ॥ ७.६८५ ।

भीषण संकटकाल में भी महापुरुषों की धैर्यशालिनी बुद्धि को प्रागल्भ्य (साहस), प्रतिभा, ओज, प्रयोग, चातुर्य, तथा असंभ्रम-ये गुण नहीं त्यागते ।

दूत्यार्होऽयमिति प्रहाय निकटाद्देशान्तरं वाग्मिनं
सूरिं बन्धुवियोगकृन्ननु वचोऽमुष्येति संत्यज्य च ।
शूरो राज्यमसौ हरेदिति तया हित्वा विचारोज्झितो
धूर्तप्रेरणयाऽबुधो नृपपशुर्नायाति नाशं चिरात् ॥ ७.६६८

पशुओं के समान विचारहीन एवं मूर्ख राजा, मिथ्यावादी तथा स्वार्थी लोगों की बात में आकर विद्वान् तथा वक्ता को अपने पास न रखकर यह सोचते हुये उसे बाहर भेज देते हैं कि 'वह दूत का कार्य भली भाँति कर सकता है ।' आप्तजनों के साथ विरोध हो जाने के भय से वे बुद्धिमान् मन्त्री को भी त्याग देते हैं । 'यह कहीं राज्य ही न ले ले', ऐसा विचार कर वे प्रबल मन्त्री को पास नहीं रखते । धूर्तों की प्रेरणा से ऐसा करनेवाले राजे शीघ्र नष्ट हो जाते हैं ।

स्वैराहारोदितगुरुमदाः शृङ्गकण्डूतिशान्त्यै
दुर्वारेर्ष्याकलुषमतयो यत्र दुर्मन्त्रिमेषाः ।
घ्नन्त्यन्योन्यं भवति गणितैर्वासरैरेव कैश्चि-
न्मध्यस्थाणोरिव नरपतेस्तत्र सर्वाङ्गभङ्गः ॥ ७.१०१२

जैसे भरपूर भोजन मिलने के कारण उन्मत्त मेढ़े सींग की खुजली मिटाने के लिये परस्पर ही लड़कर माथा टकराने लगते हैं और उन दोनों के बीच का खम्भा उनकी टक्कर से चूर हो जाता है; उसी प्रकार मनमाना कार्य करने के अभ्यासवश उद्दण्ड, दुर्दमनीय, तथा ईर्ष्या से कलुषित बुद्धिवाले मन्त्री जब आपस में ही लड़ते हैं तब राजा अति शीघ्र नष्ट हो जाते हैं ।

आलेख्यं गगने लिखामि बिसिनीसूत्रैर्वयाम्यम्बरं
स्वप्नालोकितमानयामि कनकं ग्रथ्नामि वप्रं हिमैः ।

इत्याद्युक्तमपि स्फुटं जडमतिर्जानाति सत्यं नृपो
यस्तादृक्त्रपया न वक्ति स गतप्रौढिः परं वञ्च्यते ।। ७.१०७८

'मैं आकाश पर चित्र बना लेता हूँ, मृणालतन्तुओं से कपड़े बुन देता हूँ, स्वप्न में देखी हुई स्वर्णराशि ले आ सकता हूँ और बरफ से प्राकार का निर्माण कर सकता हूँ' : इस प्रकार धूर्त मनुष्य के द्वारा कही हुई बातों पर भी विश्वास करके मूर्ख तथा जड़बुद्धिवाले राजे इन बातों को सत्य मान लेते हैं ।

अधिगतवतां लोके विद्याद्भुतामपि संपदं
न खलु विरतिर्दुष्कर्मभ्यो धनार्जनकांक्षिणाम् ।
किमपि कमलावाप्त्यै पद्माकरोद्धृतिपातकं
भजति कमलालीलावासो भवन्नपि हि द्विपः ।। ७.१०६६ ।

समस्त संसार की दृष्टि में चकाचौंध उत्पन्न कर देनेवाली विलक्षण एवं अगणित धनराशि प्राप्त करके भी उसकी अपेक्षा और अधिक धन पाने के लोभी लोग किसी भी प्रकार का कुकर्म करने में संकोच नहीं करते, क्योंकि हाथी भी लक्ष्मीजी के विलासभवनस्वरूप कमलों को उखाड़कर फेंक देने का पाप कर ही देते हैं ।

अल्पापकारमपि पार्श्वगतं निहन्ति
नीचो न दूरमसमागसमप्यरातिम् ।
श्वा निर्दशत्युपलमन्तिकमापतन्तं
तत्त्यागिनं न तु विदूरगमुग्ररोषः ।। ७.१२०४

तनिक से अपराध पर नीच मनुष्य अपने सेवक को मार डालता है, किन्तु अत्यधिक अपराधी दूर देश के मनुष्य को कुछ नहीं कहता । जैसे क्रोधी कुत्ता अपने ऊपर गिरनेवाले पत्थर को काटने दौड़ता है किन्तु दूर से पत्थर फेंककर मारनेवाले मनुष्य पर कोप नहीं करता ।

क्लीबच्छन्नवपुस्त्वचा सह वसत्यच्छेद्यया कच्छपो
निर्वर्मा रणकर्मसाहसमहोत्साहश्च सिंहः सदा ।
धिक्प्रादुष्कृतपक्षपातरभसो नीचेषु मुग्धो विधि-
र्वीराणां कुरुते शरीरमभितो वैकल्यशल्याहतम् ।। ७.१३२६

कछुआ दुर्बल तथा भीरु होता है । अतएव शरीर पर अच्छेद्य कवच धारण किये रहता है; किन्तु युद्धकर्म में साहसी तथा उत्साही सिंह कवचविहीन होता है । इसका तात्पर्य यह है कि मूढ़ विधाता नीच लोगों का विशेष पक्षपात करके उनकी रक्षा करता है और वीरों के शरीर को असुरक्षित रखकर चारों ओर बाणों से छेदवाता है : ऐसे विधाता को धिक्कार है ।

कालेन याति क्रिमितां महेन्द्रो महेन्द्रभावं क्रिमिरप्युपैति ।
अयं प्रथीयानयमप्रतिष्ठ इत्येष निष्ठाऽनुचितोऽभिमानः ।। ६.१३६६ ।

समय के प्रभाव से एक साधारण क्रमि इन्द्र बन जाता है और इन्द्र को क्रमि बनना पड़ता है । अतएव यह सोचना मिथ्या अभिमानमात्र है कि अमुक व्यक्ति बहुत बड़ा है और अमुक तुच्छ ।

लब्धस्थितिः स्फीतविभूतिपात्रं दीनोऽभियोक्ता परपिण्डवृत्तिः ।
आद्ये कथं नाम पराभवः स्याद्भयं भवेच्चेह न तत्र भावः ।। ७.१३६८

जिसकी उच्च स्थिति है, जो निर्भय है और जिसके पास उत्कृष्ट विभूतियाँ विद्यमान हैं, वह पुरुष उन लोगों के द्वारा कैसे पराजित या भयभीत हो सकता है जो दीन हैं, कायर हैं, और परमुखापेक्षी हैं ?

नृत्यच्छिन्नशिरोधरोद्धुरनटे ज्यालाबुवीणागुण-
प्रक्वाणिन्युदयच्छिवामुखशिखिज्वालाप्रदीपाङ्कुरे ।
धन्याः केऽप्युपलभ्य वीरशयने शान्ताभिमानज्वरो-
ल्लाघश्लाघ्यशरीरतासफलितस्निग्धाशिषः शेरते ।। ७.१४०३

किसी वीर पुरुष का जब मस्तक कट जाता है और उसका मस्तकविहीन कबन्ध रणाङ्गण में नृत्य करने लगता है तब धनुष की प्रत्यञ्चा की टङ्कार वीणा के तारों की झंकार के समान उस नृत्य में संगत करती है और शृगालों का झुण्ड उसके समक्ष जाकर मुख से निकलनेवाली अग्नि की लपटों के दीपकों द्वारा उसकी आरती उतारते हैं । उस समय उसका शारीरिक अभिमान शान्त हो गया रहता है और शरीरलाभ की सफलता से पूर्णकाम तथा धन्य होकर वह वीर सानन्द मृत्युशय्या पर सोता है ।

क्षुत्क्षामस्तनयो वधूः परगृहप्रेष्यात्रसन्नः सुहृ-
द्दुग्धागौरशनाद्यभावविवशा हम्बारवोद्गारिणी ।
निष्पथ्यौ पितरावदूरमरणौ स्वामी द्विषन्निर्जितो
दृष्टो येन परं न तस्य निरये भोक्तव्यमस्त्यप्रियम् ।। ७.१४१४ ।

जो अपने घर में भूखों मरते बच्चों, पराये घर में सेवाकार्य करनेवाली स्त्री, दुःख सहन करते हुये सच्चे मित्र, क्षुधा से पीड़ित दुधार गाय, रुग्णावस्था में पथ्य न मिलने से मरणासन्न पिता, एवं शत्रु से पराजित होते हुये स्वामी को देख चुका हो उसे इससे बढ़कर नरक में भी और कौन-सी यातना सहनी पड़ेगी ?

रुद्रोपेन्द्रमहेन्द्राद्याः प्रयातारो यदध्वना ।
उपस्थितायां नियतौ तत्र मर्त्यस्य काः शुचः ।। ७.१४१८

जब नियति का निर्दिष्ट समय आ जाने पर रुद्र, उपेन्द्र और महेन्द्र को भी मृत्यु के मार्ग से अवश्य जाना पड़ता है, तब उसके विषय में मनुष्य क्यों शोक करे ।

कार्यारम्भः फलोल्लासमालोक्य प्रायशो जनैः ।
अनानुगुण्यगणनां कुर्वाणैर्न विगर्ह्यते ॥ ७.१४२२

मनुष्य को यदि किसी भी उद्योग में सफलता प्राप्त हो जाती है तो कोई उसे बुरा नहीं कहता और न यही सोचता है कि वह उद्योग उस समय के अनुरूप था या नहीं ।

गच्छञ्शरीरविच्छेदादपि भस्मावशेषताम् ।
कर्पूरः सौरभेणेव जन्तुः ख्यात्याऽनुमीयते ॥ ७.१४३५

जैसे जलता हुआ कपूर अपनी सुगन्ध से पहचाना जाता है, वैसे ही शरीर के नष्ट हो जाने पर भस्मावशिष्ट प्राणी अपनी ख्याति से जाना जाता है ।

शान्तयोर्जीवितस्थानं द्वयमत्यद्भुतं द्वयोः
अनङ्गस्याङ्गनापाङ्गः स्तोतृजिह्वा यशस्विनः ॥ ७.१४३६ ॥

शान्त (मरे हुये) यशस्वी पुरुष और शान्त कामदेव, इन दोनों के लिये क्रमशः स्तुतिपाठक (बन्दीजन) की जिह्वा, और सुन्दरी स्त्री के कटाक्ष ये दोनों विलक्षण जीवनस्थान हैं ।

ख्यातिसंरक्षणं नाम जन्तोः कल्पान्तरस्थितिः ।
वर्तने कीर्तिकायस्य संपूर्णाः परमाणवः ॥ ७.१४३७

अपनी ख्याति की रक्षा करने से ही प्राणी कल्पान्तपर्यन्त अपना स्थायित्व सिद्ध कर सकता है, क्योंकि कीर्तिरूपी शरीर को स्थिर रखने से ही परमाणुओं का काम पूरा होता है ।

धीरैर्विधिश्च निर्ध्येयो विरोधिष्ववधानवान् ।
यस्तेषामुन्नतिधनध्वंसाय यततेऽन्वहम् ॥ ७.१४३८ ।

धैर्यशाली पुरुषों को चाहिये कि अपने विरोधियों के विषय में सदा सावधान रखनेवाली विधि की ओर ध्यान देते रहें, क्योंकि विरोधी नित्य उनकी उन्नति तथा धन का विनाश करने के लिये सचेष्ट रहता है ।

तुङ्गावपातनहठव्यसनी विधाता-
स्वोत्पत्तिपद्मकुलजेऽपि सरोजषण्डे ।
संकोचिनि द्विजपतावपि शुद्धिबन्ध्ये
मातङ्गहस्तपतनैः कुरुतेऽवमानम् ॥ ७.१४३९

उन्नत पुरुष को बरबस नीचे गिरा देने का विधाता को जैसे व्यसन हो

गया है । इस व्यसन के अनुसार वह अपनी ही उत्पत्ति के स्थानस्वरूप कमल-वन को चन्द्रमा के उदित होते ही संकुचित तथा मतवाले हाथियों के सूँड़ से अपमानित कराता है ।

जातिः क्ष्माभृति वंशजाश्रयतया ख्यातिप्रतिष्ठामिमा-
मुद्दीप्यानलमुज्झितस्वबपुषः केऽप्यत्र वेत्राङ्कुराः ।
त्रातुं हन्त विदन्तिये न विधिना क्रुद्धेन पृथ्वीभृता
द्वारि द्वाःस्थकरैर्गतागतखलीकाराणि संप्रापिताः ।। ७.१४४१

उच्चकुल में जन्म लेने के कारण राजाओं में से जो अपनी ख्याति को उज्ज्वल करके अच्छे वेत्रांकुर की भाँति अपने को अग्नि में जलाकर भस्म कर डालते हैं, वैसे साहसी राजा संसार में बिरले ही मिलते हैं । इसके विपरीत जो अपनी ख्याति तथा प्रतिष्ठा की रक्षा नहीं करते उन्हें विधाता के कोप से शत्रु-राजाओं के द्वारपालों का हाथ पकड़कर बार-बार राजद्वार पर आना-जाना पड़ता है ।

कृतघ्नभावं पितरि प्रपन्ने विगर्हणां नार्हति तत्प्रसूतिः ।
कल्कीभवेच्चेत्तिलमुज्झयते किं तैलेन दत्तः कुसुमाधिवासः।।७.१५३१।।

जिसका पिता कृतघ्न हो उसकी सन्तान भी यदि कृतघ्न हो जाय तो इसे अनुचित कैसे कहा जा सकता है । तिल घुने हुये ही क्यों न हों, सुरभित सुमनों के सहवास से जायमान होनेवाली सुगन्धि उनके तेल से कदापि पृथक् नहीं हो सकती ।

सर्वैर्यथा निखिलरन्ध्रमुखेन वंशः
संपूरितो न खलु शब्दमपाकरोति ।
तैस्तैस्तथा बहुपथप्रचयेन मन्त्रः
संकल्पितः किल न निश्चयमभ्युपैति ।। ७.१६०१ ।।

जैसे बाँसुरी के सभी छिद्रों में एक साथ हवा भर जाने से मधुर स्वर निकलना असम्भव हो जाता है वैसे ही परस्पर विरुद्ध अनेक मतों से बाधित विचार कोई एक निश्चित स्वरूप नहीं प्राप्त कर पाते ।

पर्यापतत्कालकरस्थभोगिसंदर्शनेनेव मतिप्रदीपः ।
क्षिप्रं प्रशान्त्युन्मुखतामुपैति विनाशकालेषु शरीरभाजाम् ।।७.१६२६।।

जैसे सर्प के निहारते ही दीपक बुझने लग जाता है वैसे ही प्रत्येक प्राणी का बुद्धि रूपी दीपक विनाशकाल उपस्थित होने पर समयरूपी सर्प की दृष्टि पड़ते ही बुझ जाता है ।

गर्भवास इव पौरुषे स्फुरत्किं न कर्म पुरुषश्चिकीर्षति ।
कर्मवायुरिव संस्पृशन्हठान्मूढमेव कुरुते तु तं विधिः ।। ७.१६५२ ।।

माता के गर्भ में बैठे हुये जीव के समान मनुष्य अपने पौरुष से क्या-क्या नहीं करना चाहता, किन्तु जैसे गर्भ से बाहर आते ही प्रारब्ध की हवा जीव को मोह में डाल देती है वैसे ही बड़े लम्बे-चौड़े मंसूबे बाँधनेवाले मनुष्य को भी दैव बरबस ही मोहित कर देता है।

लोकैकचक्षुषि गते परलोकमर्के लोकः
स्वपित्यखिल एव सुखं गृहेषु।
कोन्यो विचिन्तयितुमर्हति विश्वमेत-
त्तिष्ठेन्मया विरहमेत्य कथं किलेति ॥ ७.१६८५ ॥

जब कि समस्त विश्व को प्रकाश प्रदान करनेवाले सूर्य के अन्य लोक चले जाने पर सब लोग अपने-अपने घरों में आनन्दपूर्वक सोते हैं, तब दूसरे किसी पुरुष को यह सोचने का क्या अधिकार है कि 'मेरे न रहने पर संसार कैसे टिकेगा ?'।

गोप्यं रहस्यभणितमत्यल्पहृदयातिथि।
अमृतं पारदमिव नोल्पसत्त्वैः सुदुर्जरम् ॥ ७.१६९० ॥

जैसे पारे के भस्म को कोई दुर्बल व्यक्ति नहीं पचा सकता, उसी प्रकार क्षुद्रहृदय मनुष्य किसी रहस्य को अपने मन में नहीं रख पाता।

भाग्याम्बुवाहतडितस्तरलाः श्रियस्ता-
स्तच्चावसानविरसं प्रसभोन्नतत्वम्।
तत्रापि नैष बत मोहहताशयानां
शान्तिं प्रयाति विभवानुभवाभिमानः ॥ ७.१७२६ ॥

सम्पदायें भाग्यरूपी मेघ में चमकनेवाली बिजली के समान चञ्चल होती हैं। उसी प्रकार अत्यन्त उत्कट वैभव का अन्त भी नीरस होता है। फिर भी मोह से जिनकी बुद्धि नष्ट हो गई रहती है, उनका कल्पित वैभव के अनुभव का अभिमान कभी भी शान्ति नहीं होने आता।

नादौ किंचिद्भवति नियतं यच्च पश्चान्न किंचिद्
मध्येऽकस्मात्सपदि घटयन्सौख्यदौःख्यानुरोधम्।
निःशीर्षोङ्घ्रिर्नट इव मुहुः कोपि जन्तुर्नटित्वा
नो जानीमो भवजवनिकान्तर्हितः क्व प्रयाति ॥७.१७३१॥

आदि में कोई भी वस्तु स्थायी नहीं होती और यही दशा अन्त में भी होती है। मध्य में एकाएक सुखद या दुःखद स्थितिवश कोई कृति अल्प समय के लिये सम्पन्न हो जाती है और वह प्राणी बिना सिर-पैरवाले अभिनेता के समान इस मिथ्या भासमान संसार-रूपी पट के पीछे छिपकर कहाँ चला जाता है इस रहस्य को हम नहीं जानते।

जातिः पङ्करुहाद्वपुः कपिलताक्रान्तं शिरः खण्डन-
प्रभ्रश्यच्छुचिशीलतादिविगुणाचारप्रदुष्टं यशः ।
विश्वस्रष्टुरिति प्रसूतविषयव्याप्तिस्पृशो दुःसहा
दोषा यत्र पुरोऽस्तु तत्र कतमो निर्दोषतोत्सेकभूः ॥८.१६७॥

जिनका जन्म कमल से हुआ, शरीर पर पीलापन छा गया, शिव जी के हाथों जिनका सर कटा और अपनी ही पुत्री के प्रति दुर्भाव प्रदर्शित करने के कारण जिनके शुचिता-शीलता आदि सद्गुणों की तीव्र आलोचना हुई, उन सर्वव्यापी विश्वरचयिता ब्रह्मा में जब इतने दुःसह दोष विद्यमान हैं, तब उनकी सृष्टि में भला कोई सर्वथा निर्दोष व्यक्ति कैसे उत्पन्न हो सकता है ।

पलायनैर्नापयाति निश्चला भवितव्यता ।
देहिनः पुच्छसंलीना वह्निज्वालेव पक्षिणः ॥ ८.२२२ ॥

जैसे किसी पक्षी की पूँछ में लगी आग उसके भागने से नहीं शान्त होती, वैसे ही मनुष्य की भी भवितव्यता उसके पलायन करने से पीछा नहीं छोड़ती ।

रोहत्यन्तिकसीमनि प्रतिविषावीरुद्विषद्मारुहः
काले प्रावृडुपद्रुताच्छसलिले मूर्च्छत्यगस्त्योदयः ।
सर्गच्छेदविधिक्षमानुदयतो दृष्ट्वा किलोपद्रवान्
संधत्ते प्रतिकारकल्पनमहो दीर्घावलोकी विधिः ॥८.२३७॥

विष वृक्ष के पास ही प्रतिविष, अर्थात् विष की शक्ति का शमन करनेवाला वृक्ष उग आता है, और वर्षा के उपद्रव से जब नदियों तथा सरोवरों का जल गन्दा हो जाता है, तब अगस्त्य का उदय होता है । इसी प्रकार अपनी सृष्टि में बाधा डालने के लिये उदीयमान उपद्रवों की शान्ति के हेतु वह दूरदर्शी विधाता पहले से ही प्रतीकार की कल्पना कर लेता है ।

तिर्यग्भ्यस्त्रिजगज्जयी परिभवं लङ्केश्वरो'लब्धवान्
प्रापाशेषनृपोत्तमः कुरुपतिः पादाहतिं मूर्धनि ।
इत्यन्ते बहुमानहृत्परिभवः सर्वस्य सामान्यवत्
तत्को नाम भवेन्महानहमिति ध्यायन्धृताहंक्रियः ॥८.३३५॥

तीनों लोकों को जीत लेनेवाला रावण बन्दरों से हार गया था और समस्त राजाओं में श्रेष्ठ कुरुपति दुर्योधन को सर पर चरण-प्रहार सहना पड़ा था । इस प्रकार अन्तकाल में बड़े-बड़े अभिमानियों को भी अपमानपूर्वक पराजय प्राप्त करनी पड़ती है; तब कौन ऐसा पुरुष है जो अहंकार के साथ अपने को महान कह सकता हो ।

दावोद्दीपनकूटयन्त्रघटनैः सिंहादिसंहारिणो
यान्त्याकस्मिकगण्डशैलपतनैरन्तं किराता वने ।

एकेनैव ननु प्रधावति जनः सर्वोऽपि मृत्योः पथा
हन्ताहं निहितोयमेष तु मितं कालं विभेदग्रहः ।।८.३५८।।

दावानल के भड़कने तथा छिपे हुये जालों में फँसाकर सिंह आदि बड़े-बड़े पशुओं को मारनेवाले किरात, वन में अकस्मात् पर्वत की किसी चट्टान से गिर कर मर जाते हैं। संसार के सब प्राणी एकमात्र मृत्यु के पथ पर तीव्र गति से दौड़ रहे हैं। फिर भी अत्यन्त दुःख से कहना पड़ता है कि लोग यह कहते हैं कि मैंने अमुक व्यक्ति को मार डाला या अमुक व्यक्ति अमुक व्यक्ति के हाथों मारा गया।

चिकुरनिचये यत्कौटिल्यं विलोचनयोश्च या
तरलतरता यत्काठिन्यं तथा कुचकुम्भयोः।
वसति हृदि तद्यासां पिण्डीभवन्ननु ता इमा
गहनहृदया विज्ञायन्ते न कैश्चन योषितः ।। ८.३६५ ।।

स्त्रियों के केशों में जो कुटिलता रहती है, नेत्रों में जो चञ्चलता रहती है, और कुचों में जो कठोरता रहती है, वह तीनों अवगुण, अर्थात् कुटिलता, चञ्चलता तथा कठोरता, उनके हृदय में जाकर पिण्डाकार बन जाते हैं, इसी कारण उनका हृदय अत्यन्त गहन होता है और उन्हें कोई भली-भाँति नहीं जान पाता।

प्रविष्टानां युद्धे गहनकविकर्मप्रणयिनां
प्रसक्तानां द्यूते नरपतिधुरायां विहरताम्।
तटस्थत्वे वक्तुं स्खलितमसकृत्सोऽर्हति परं
प्रयोगे वैकल्यं स्वयमविकलो यो न भजते ।।८.६८२।।

युद्ध में प्रविष्ट, किसी गहन कविता के निर्माण में संलग्न, जूए के खेल में मग्न और राज्य का भार वहन करनेवाले लोगों के असंख्य दोष एक तटस्थ व्यक्ति दिखा सकता है, किन्तु विशेषता तो तब होती है जब वह तटस्थ व्यक्ति स्वयं उस काम में लगकर निर्दोष रूप से उसको सम्पन्न कर दे।

पटं वह्निस्पर्शज्वलितमहिदष्टां त्वचमरेः
श्रुतिं यातं मन्त्रं पतननिरतां जीर्णवसतिम्।
असेवाज्ञं भूपं व्यसनविमुखं स्निग्धमजह-
न्नधीरोऽप्युत्थानोपहतमहिमा शर्म लभते ।। ८.६९२ ।।

जिसमें आग लग जाय वह वस्त्र, जिसमें साँप काट ले वह त्वचा, शत्रु के विषय में सुनी गई मंत्रणा, गिर जाने लायक जीर्ण मकान, सेवा का महत्त्व न समझनेवाला राजा और व्यसन के कारण पराङ्मुख स्नेहीजनों को त्याग देने-वाला धैर्यशाली मनुष्य सब तरह से कल्याण प्राप्त करता है।

त्राणं सिंहनखा द्रुमाद्रिगहनस्यारादरण्यस्य ये
तेषां बालगलाश्रयादपि भवेत्कालातिवाहः क्रमात् ।
ये दन्ताः करिणां रणप्रहरणं तेप्याप्नुयुर्दीव्यतां
क्रीडायां करताडनानि न दृढा शौर्यस्य रूढिः क्वचित् ॥ ८.८२८॥

जो सिंह के नख बड़े-बड़े वृक्षों तथा पर्वतों से युक्त वनों में उसकी रक्षा का कार्य करते हैं, वे ही समय के फेर से बच्चों के गले में बँधकर समय व्यतीत करते हैं। हाथी के जो दाँत वन में सिंह आदि से बचने के लिए शस्त्र का कार्य करते हैं, वे ही समय आने पर चौसर आदि खेल के पासे बनकर क्षण-क्षण पर हाथ का प्रहार सहन करते हैं। अतएव यही कहना पड़ता है कि वीरता की कोई निश्चित स्थिति नहीं होती।

विकासः केषांचिन्नयनविषमैर्विद्युदुदयैः
परेषामुद्भूतिः श्रवणकटुभिर्दीर्घरसितैः ।
न चेष्टा काप्यन्योपकृतिपरिहीना जलमुचो
जडो वर्षादन्यं गणयति गुणं नास्य तु जनः ॥ ८.१५५६

आखों में चकाचौंध उत्पन्न कर देनेवाली बिजली से बहुतों के नेत्र खुल जाते हैं और कानों को कटु लगनेवाले भीषण गर्जन से कितनी ही वस्तुओं की उत्पत्ति होती है। किन्तु जड़ मनुष्य मेघ की समस्त चेष्टाओं को निरुपकारी मानते हैं और साधारण श्रेणी के लोग तो बरसात के अतिरिक्त मेघ का और कोई गुण ही नहीं जानते।

सह स्ववृद्धैः समशीर्षिका प्रभोर्न युज्यते प्राप्तसमुन्नतेः क्वचित् ।
श्रितोन्नतेर्दर्दुरवृन्दलङ्घनं सरोजषण्डस्य महाविडम्बना ॥ ८.१५७४

प्रभु की समता प्राप्त करके समुन्नत हो जाने को उन्नति नहीं समझना चाहिये, क्योंकि जल-निवासी कमल अपनी महिमा से असाधारण उन्नति कर लेते हैं किन्तु जब उनपर मेढक उछलने लगते हैं तब उनकी कितनी बड़ी विडम्बना होती है।

पदे श्रीखण्डस्यानुचितमुचिते वर्ष्मणि निजे
वृषाङ्कः प्रक्षेप्तुं प्रभवति चिताभस्म रभसात् ।
न तत्स्वेच्छायत्तत्रिजगदुदयापायघटनोऽ-
प्यसौ तद्गन्धेन स्फुटमिह पटुः संघटयितुम् ॥ ८.१६३८

चन्दन लगाने योग्य अपने शरीर में शंकर जी चिता की भस्म मल सकते हैं, किन्तु अपनी इच्छामात्र से तीनों लोकों की सृष्टि तथा प्रलय करने का सामर्थ्य रखते हुये भी वे उस चिताभस्म में चन्दन की सुगन्धि उत्पन्न नहीं कर सकते।

छाया निरङ्कुशमतिः स्वयमातपस्तु
छायान्वितः शतश एव निजप्रसङ्गम् ।
दुःखं सुखेन पृथगेवमनन्तदुःख-
पीडानुवेधविधुरा तु सुखस्य वृत्तिः ॥ ८.१९१३

वैसे तो छाया स्वतन्त्र होती है, किन्तु जब उसका धूप के साथ संयोग हो जाता है तब वह अपने सैकड़ों रूप दिखाती है। इसी प्रकार दुःख भी निरंकुश रहता है किन्तु सुख के साथ मिलकर वह उसमें अनेक प्रकार की पीड़ायें उत्पन्न करके उसकी वृत्ति को ही बदल देता है।

उत्सारणप्रियतया परिरुद्धसर्व-
द्वारं गृहे निरनुरोधतया वसन्तः ।
संपन्नघूकृतधियोऽप्रतिघप्रवृत्ते-
र्धिग्जानते न रभसान्नियतेर्निपातम् ॥ ८.२०००

मृत्यु को दूर रखने के लिये घर के सब खिड़की-दरवाजे बन्द करके लोग उसमें रहते हैं. मौत का प्रतिरोध करने के लिये पानी की तरह पैसा बहाते हैं : फिर भी, अबतक कोई यह भेद नहीं जान सका कि नियति वहाँ कैसे जा पहुँचती है।

मुक्ता इमा इति जलं नलिनेषु लीनं
ज्ञातृत्वमेतदिति जाड्यमिनेषु लग्नम् ।
यज्ज्ञायते किमपि हन्त विमोहिनी सा
शक्तिः श्रियः स्फुरति कापि तदाश्रयायाः ॥ ८.२०२६

कमल-पत्र पर पड़े हुये जलबिन्दु को देखकर ऐसा भान होता है कि वह जल का बिन्दु नहीं मोती है। इस मिथ्याज्ञान को देखकर यही सोचना पड़ता है कि भगवान की कोई ऐसी मोहनी शक्ति है जो अपने प्रभु के अधीन रहकर जगतीतल के प्राणीमात्र को मोह में डालती रहती है।

रत्नज्योतिर्हुतवहधिया त्यज्यते दृष्टिपातैः
श्यावाक्षाणामितरविषयः स्वस्य संभाव्यते च ।
वस्त्वेकैकं यदिह न मृषा तन्मृषा यन्मृषा तत्
तथ्येनेत्थं किमिव न जनैर्दृश्यते तत्त्वशून्यैः ॥ ८.२०८४

तत्त्वज्ञान से हीन लोग दीप्तमान रत्न को आग की चिनगारी समझ कर त्याग देते हैं। उन अज्ञानान्ध लोगों को औरों की वस्तु अपनी दिखाई देती है। जो वस्तु मिथ्या नहीं होती, उसे वे मिथ्या के रूप में और मिथ्या वस्तु को तथ्य के रूप में देखने लग जाते हैं।

गङ्गाद्युमार्गलुठिता जठरात्कथंचि-
देकस्य संहृतवतो निसृता महर्षेः ।
ग्रस्तापरेण कृतसागरगर्तपूर्तिः
शक्तो न कोऽपि भवितव्यविलङ्घनायाम् ।। ८.२२८०

गंगा देवलोक से नीचे उतरीं तो उन्हें जह्नु ने सोख लिया; किसी प्रकार उनके उदर से निकलकर जब उन्होंने समुद्र का गढ़ा भरा तब अगस्त्य ने समुद्र को ही सोख लिया। तात्पर्य यह कि भवितव्यता का उल्लङ्घन करने की सामर्थ्य किसी में नहीं है।

वैदग्ध्यदिग्धमनसामयमेक एव
कोऽप्यस्ति वञ्चनविधेरुचितः प्रकारः ।
येनात्मना किल विशङ्कितशक्तयस्ते
मुग्धेऽपि वैरिणि विचारहतोद्यमाः स्युः ।। ८.२५२२

चातुर्य से जिन लोगों का मन भर जाता है उनके ठगे जाने का यह एक उचित प्रकार देखने में आता है कि वे अपनी शक्ति पर सशंक होकर मूर्ख वैरी के प्रति किये जानेवाले विचार के समय हतोत्साह हो जाते हैं।

अविश्रान्तो वातो दहन इव सोऽयं जनयति
प्रसक्तिं सातत्याद्दलयति कुलाद्रीनपि जलम् ।
प्रसूते कृत्येषु व्यवसितिरनिर्व्यूढसुदृढा
फलावाप्तिं लोके प्रतिकलमसंभाव्यविभवाम् ।। ८.२५५१

अविराम गति से चलता हुआ पवन अग्नि का कार्य कर देता है और सदा बहता हुआ पानी बड़े-बड़े पर्वतों को छेद डालता है। इसी प्रकार संसार में तन्मयता के साथ किया हुआ कार्य अकूत वैभव-सम्पन्न एवं असम्भव सिद्धि भी सुलभ कर देता है।

प्रबन्धं निर्बध्नन्नरिमुपचरञ्छादितरुषं
महाहिं संगृह्णन्नयकुटिलचेष्टं व्यवहरन् ।
स भूमिः सिद्धीनां दधदुचितकर्त्तव्यपरतां
भवेद्यो निर्व्यूढावपि सुदृढसंरम्भरभसः ।। ८.२६०६

अपना क्रोध छिपाये हुये शत्रु को सुप्रबन्ध के द्वारा अपने अनुकूल करके उससे कार्य सिद्ध करना और कुटिल चेष्टावाले महान सर्प को पकड़ना, ये दोनों कार्य एक जैसे हैं; जो मनुष्य उचित कर्त्तव्यपरायणता दिखाता हुआ अनेक कठिनाइयों के विपरीत भी दृढ़ता के साथ अपना कार्य करता है वह समस्त सिद्धियों का मूल आधार माना जाता है।

नायाति वाडवशिखिकथनेन तापं
शैत्यं हिमाद्रिपयसा विशता न चाब्धिः ।
कश्चिद्गभीरमनसां सततं विषाद-
काले प्रमोदसमये च समोऽनुभावः ॥ ८.२६६६

बडवानल के ताप से समुद्र न तो गरम होता है और न हिमालय को नदियों का ठंडा जल मिलने से उसमें शीतलता ही आती है, क्योंकि गम्भीर हृदयवाले लोगों का स्वभाव ही कुछ ऐसा होता है कि वे विषाद अथवा आनन्द दोनों ही अवसरों पर एक समान रहते हैं ।

छिद्रान्तराणि सुलभानि सदैव हन्त पातालरन्ध्रसरणेरिव दण्डनीतेः ।
बह्वीभवत्प्रसरमन्तरसंप्रविष्टो यात्यप्रतर्क्यनियमात्पतनं भजेद्वा ॥ ८.२९९३

बड़े खेद की बात है कि दण्डनीति में पातालरन्ध्र सदृश अनेक छिद्र सदैव सुलभ रहते हैं । वे छिद्र एक से अनेक होकर बराबर फैलते जाते हैं जिसके परिणामस्वरूप प्राणी तथ्य के भीतर प्रविष्ट हुये बिना ही किसी अतर्क्य नियम के अनुसार पतनोन्मुख हो जाता है ।

उद्यद्दुःसहवित्ततानवतया बद्धावधानेमन-
स्युन्मार्गभ्रमणेऽवशस्य।रभसाच्छ्वभ्रे परिभ्राम्यतः ।
अन्योपाहितकोशपृष्ठलुठनात्संदर्शिताङ्गक्षते-
र्जन्तोर्हन्त तनोति दुर्गतिशमं रम्यानुलोम्यो विधिः ॥ ८.३०००

धन की कमी के कारण जब प्राणी के समक्ष दुःसह स्थिति आ जाती है तब सावधानी रखने पर भी मन अटपटे मार्गों पर भ्रमण करता हुआ बड़े वेग से किसी दुःखरूपी गर्त में गिर जाता है और उसी में चक्कर काटने लगता है । तदनन्तर वह किसी अन्य पुरुष की सहायता से प्राप्त धनकोष्ठ की पीठ पर लोटने लगता है । इससे उसके अंगों में घाव हो जाते हैं । किन्तु इस प्रकार रमणीय उलट-फेर करनेवाला विधाता सहसा उसकी दुर्गति का अन्त कर देता है ।

उग्राभिषङ्गमनुषङ्गि परस्य दुःखं
हन्ताश्लथं व्यथयति प्रसभार्द्रभावम् ।
बद्धः सरोजकुहरे विरहार्तनादै-
श्चक्राभिधस्य मधुपोऽधिकमेति दैन्यम् ॥ ८.३०१७

उग्र तिरस्कार से परिपूर्ण पराया दुःख भी मनुष्य को विशेष आर्द्रभावापन्न करके पीडित कर देता है । जैसे सम्पुटित कमल में आवद्ध भ्रमर वियोग के कारण करुणक्रन्दन करनेवाले चकवा-चकवी के आर्तनाद को सुनकर और भी दुखी हो उठता है ।

अम्भोऽपि प्रवहत्स्वभावमशनैराश्यानमश्मायते
ग्रावाम्भः स्रवति द्रवत्वमुदितोद्रेकेषु चावेयुषः ।
कालस्यास्खलितप्रभावरभसं भाति प्रभुत्वेऽद्भुते
कस्यामुत्र विधातृशक्तिघटिते मार्गे निसर्गः स्थिरः ।। ८.३४०६

बहता हुआ जल भी कभी वज्र बन जाता है, मृदु वस्तु पत्थर बन जाती है, पत्थर पानी बनकर बहने लगता है और वह बहाव कभी बहुत प्रबल हो जाता है; क्योंकि कराल काल का अस्खलित प्रभाव सर्वत्र व्याप्त रहता है। विधाता की शक्ति से घटित एवं अद्भुत प्रभुत्व-सम्पन्न मार्ग में कौन वस्तु या कौन प्राणी स्वभावतः स्थायी रह सकता है ?

राजतरंगिणी में वर्णित काश्मीर

के

राजाओं की कालक्रमगत

तथा

वंशक्रमगत तालिकायें

प्रथम तरङ्ग

कलि संवत ६५३ (लौकिक संवत ६२८) में राजा हुआ

इन सब राजाओं ने मिलकर कुल १२६६ वर्षों तक काश्मीर पर राज्य किया (रा० १.५४)

गोनन्द-वंश

शासन की अवधि		
वर्ष	मास	दिन
३५		
५३	६	
३५		
३०	६	
३५	६	
४०	९	
६०		
३०	६	
३७	७	
६०		
६०		
७०		
६३		१३

राजाओं के नाम	शासन की अवधि		
	वर्ष	मास	दिन
क्षितिनन्द	३०		
वसुनन्द	५२	२	
नर २	६०		
अक्ष	६०		
गोपादित्य	६०		६
गोकर्ण	५७	११	
खिङ्खिल-नरेन्द्रादित्य	३६	३	१०
युधिष्ठिर	३४	३	१

द्वितीय तरङ्ग

राजाओं के नाम	शासन की अवधि		
	वर्ष	मास	दिन
प्रतापादित्य १	३२		
जलौकस	३२		
तुञ्जीन १	३६		
विजय	८		
जयेन्द्र	३७		
सन्धिमति-आर्यराज	४७		

तृतीय तरङ्ग

राजाओं के नाम	शासन की अवधि		
	वर्ष	मास	दिन
मेघवाहन	३४		
श्रेष्ठसेन–प्रवरसेन १ (तुञ्जीन २)	३०		
हिरण्य (तोरमाण सहित)	३०	२	
मातृगुप्त	४	९	१
प्रवरसेन २	६०		
युधिष्ठिर २	३९	३	
लःखण–नरेन्द्रादित्य	१३		
रणादित्य (तुञ्जीन ३)	३००		
विक्रमादित्य	४२		
बालादित्य	३६	८	

चतुर्थ तरङ्ग

कार्कोट-वंश

राजाओं के नाम	शासन की अवधि वर्ष	मास	दिन
दुर्लभवर्धन-प्रज्ञादित्य	३६		
दुर्लभक-प्रतापादित्य २	५०		
चन्द्रापीड वज्रादित्य	८	८	
तारापीड-उदयादित्य	४		२४
मुक्तापीड-ललितादित्य	३६	७	११
कुवलयापीड	१		१५
वज्रादित्य-बप्पियक-ललितादित्य	७		
पृथिव्यापीड	४	१	
संग्रामापीड १			७
जज्ज	३		
जयापीड-विनयादित्य	३१		
ललितापीड	१२		
संग्रामापीड २ (पृथिव्यापीड)	७		
चिप्पटजयापीड-बृहस्पति	१२		
अजितापीड	३७		
अनङ्गापीड	३		
उत्पलापीड	२		

पञ्चम तरङ्ग

उत्पल-वंश

राजाओं के नाम	राज्यारोहण का लौकिक संवत	शासन की अवधि वर्ष	मास	दिन
अवन्तिवर्मन्	३९३१			
शङ्करवर्मन्	३९५९			
गोपालवर्मन्	३९७७	२		
संकट			१०	
सुगन्धा		२		
पार्थ				
निर्जितवर्मन् (पङ्गु)	३९९७			
चक्रवर्मन्	३९९८			
शूरवर्मन् १	४००९	१		
पार्थ (पुनः राजा हुआ)				
चक्रवर्मन् (पुनः राजा हुआ)	४०११			
शङ्करवर्धन्	४०११			
चक्रवर्मन् (पुनः राजा हुआ)	४०१२			
उन्मत्तावन्ति	४०१३			
शूरवर्मन् २	४०१५			

षष्ठ तरङ्ग

राजाओं के नाम	राज्यारोहण का लौकिक संवत्	शासन की अवधि (जहाँ इसका उल्लेख है) वर्ष	मास	दिन
यशस्करदेव	४०१५	९		
वर्णट	४०२४			१
संग्रामदेव	४०२४			
पर्वगुप्त	४०२४			
क्षेमगुप्त	४०२६			
अभिमन्यु	४०३४			
नन्दिगुप्त	४०४८			
त्रिभुवनगुप्त	४०४९			
भीमगुप्त	४०५१			
दिद्दा	४०५६			

सप्तम तरङ्ग

प्रथम लोहर-वंश

राजाओं के नाम	राज्यारोहण का लौकिक संवत्	शासन की अवधि (जहाँ इसका उल्लेख है) वर्ष	मास	दिन
संग्रामराज	४०७९			
हरिराज	४१०४			२२
अनन्त	४१०४			
कलश	४१३९			
उत्कर्ष	४१६५			२२
हर्ष	४१६५			

अष्टम तरङ्ग

राजाओं के नाम	राज्यारोहण का लौकिक संवत्	शासन की अवधि (जहाँ इसका उल्लेख है) वर्ष	मास	दिन
उच्चल	४१७७			
रड्ड-शङ्कराज	४१८७			१
सल्हण	४१८७		३	२७
सुस्सल	४१८८			
भिक्षाचर	४१९६		६	१२
सुस्सल (पुनः राजा हुआ)	४१९७			
जयसिंह (सिंहदेव)	४२०३	२२		

राजतरङ्गिणी में वर्णित काश्मीर

के

राजाओं की वंशक्रमगत तालिकायें

प्रथम तरङ्ग

(नीलमतपुराण से गृहीत राजा : रा. १. १६)

गोनन्द १
|
दामोदर १ (यशोवती से विवाहित)
|
गोनन्द २

३५ राजा (वर्णन नहीं मिलते)

(हेलाराज द्वारा वर्णित राजा : रा. १. १८)

लव
|
कुश
|
खगेन्द्र
|
सुरेन्द्र

गोधर (अन्य वंश के)
|
सुवर्ण
|
जनक
|
शचीनर

(छविल्लाकर द्वारा वर्णित राजा : रा. १. १९-२०)

अशोक
(शकुनि के प्रपौत्र)
|
जलौक

दामोदर २

हुष्क, जुष्क, कनिष्क

अभिमन्यु

गोनन्दीय वंश

गोनन्द ३
|
विभीषण १
|
इन्द्रजित्
|
रावण
|
विभीषण २
|
नर १
|
सिद्ध
|
उत्पलाक्ष
|
हिरण्याक्ष
|
हिरण्यकुल
|
वसुकुल
|
मिहिरकुल
|
वक
|
क्षितिनन्द
|
वसुनन्द
|
नर २
|
अक्ष
|
गोपादित्य
|
गोकर्ण
|
खिङ्खिल-नरेन्द्रादित्य
|
युधिष्ठिर १

द्वितीय तरङ्ग

प्रतापादित्य १ (विक्रमादित्य का एक सम्बन्धी)
|
जलौकस
|
तुञ्जीन १

विजय
|
जयेन्द्र

सन्धिमति—आर्यराज

तृतीय तरङ्ग

पुनः प्रतिष्ठापित गोनन्दीय वंश

युधिष्ठिर १
|
...
|
...
|
गोपादित्य
|
मेघवाहन
|
श्रेष्ठसेन-प्रवरसेन १ (तुञ्जीन २)

हिरण्य — तोरमाण (युवराज)

तोरमाण (युवराज)
|
प्रवरसेन २
|
युधिष्ठिर २

लक्ष्मण-नरेन्द्रादित्य — रणादित्य तुञ्जीन ३

रणादित्य तुञ्जीन ३

विक्रमादित्य — बालादित्य

बालादित्य
|
अनङ्गलेखा, दुर्लभवर्धन से विवाहित

चतुर्थ तरङ्ग

कार्कोट-वंश

- दुर्लभवर्धन-प्रज्ञादित्य (अनङ्गलेखा से विवाहित)
  - मल्हण
  - दुर्लभक-प्रतापादित्य २
    - चन्द्रापीड-वज्रादित्य
    - तारापीड-उदयादित्य
    - मुक्तापीड-ललितादित्य
      - कुवलयापीड
      - वज्रादित्य-वप्पियक-ललितादित्य
        - त्रिभुवनापीड
          - अजितापीड
            - उत्पलापीड
        - पृथिव्यापीड
        - संग्रामापीड १
        - जयापीड-विनयादित्य
          - ललितापीड
            - चिप्पटजयापीड-बृहस्पति
          - संग्रामापीड २ (पृथिव्यापीड)
            - अनङ्गापीड

पञ्चम तरङ्ग

उत्पल-वंश

- उत्पल
  - सुखवर्मन्
    - अवन्तिवर्मन्
      - शङ्करवर्मन् (सुगन्धा से विवाहित)
        - गोपालवर्मन्
        - सङ्कट
    - शूरवर्मन्
      - सुखवर्मन्
        - निर्जितवर्मन् (पङ्गु)
          - पार्थ
            - उन्मत्तावन्ति
              - शूरवर्मन् २
          - चक्रवर्मन्
          - शूरवर्मन् १
    - समर

षष्ठ तरङ्ग

वीरदेव
- कामदेव
  - प्रभाकरदेव
    - यशस्करदेव
      - संग्रामदेव
- रामदेव
  - वर्णट

अभिनव (एक दिविर)
- संग्रामगुप्त
  - पर्वगुप्त
    - क्षेमगुप्त

भीमशाहि (काबुल के)
- सिंहराज (लोहर के)

क्षेमगुप्त (जिनका……दिद्दा से विवाह हुआ)
- अभिमन्यु
  - नन्दिगुप्त
  - त्रिभुवन (गुप्त)
  - भीमगुप्त

सप्तम तथा अष्टम तरङ्ग

लोहर वंश

